कैरी साहब का मुंशी

[उपन्यास]

प्रमथनाथ बिशी

रूपान्तरकार

हंस कुमार तिवारी

वोरा एण्ड कम्पनी पब्लिशर्स प्राइवेट लि.

बम्बई २ * इलाहाबाद

प्रथम संस्करण १९६६

●

मूल्य १२·००

●

प्रकाशक :
के० पी० जैन
वोरा एण्ड कम्पनी पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड,
१७, महात्मा गाँधी मार्ग,
इलाहाबाद

●

प्रधान कार्यालय :
३, राउण्ड बिल्डिंग
कालबादेवी रोड,
बम्बई २

●

मुद्रक :
पियरलेस प्रिंटर्स
१, बाई का बाग
इलाहाबाद
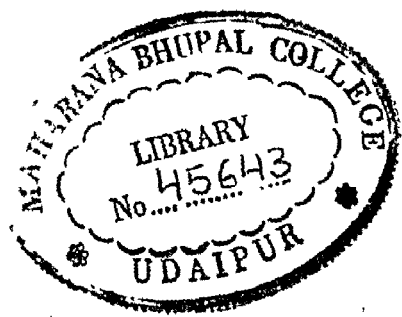
प्राक्कथन

बंगला में इस मूल पुस्तक की अच्छी-खासी कद्र हुई। कुछ ही दिनों में इसके कई सस्करण हो गए। निकलते ही पुस्तक पर फिल्म बनी और वह फिल्म भी बड़ी लोकप्रिय हुई। बेशक ऐसी लोकप्रियता के तत्व और वास्तविक विशेषतायें इस पुस्तक में है और उन विशेषताओ में अन्यतम है इसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि।

पिछले दिनों कलकत्ता पर लिखे गए जिन कुछ उपन्यासों की बंगला में प्रशंसा हुई, 'कैरी साहब का मुंशी' उनमे से एक है। तीरथ की धूल का हर कतरा जैसे तीरथ ही होता है, कलकत्ते की एक-एक ईंट वैसे ही ऐतिहासिक स्मृतियों से सप्राण है। इसकी एक-एक घाट-बाट, गैल-गली, महल-मकान, उद्यान-मैदान मानो इतिहास के होंठ हों—अनबोले बोलते-से। भारत जैसे प्राचीन और बड़े विशाल देश में ऐतिहासिक शहर यों तो भरे पड़े हैं, लेकिन कलकत्ते का व्यक्तित्व ही अलग है, इसकी एक विशिष्ट विशेषता है। वह यह कि प्राचीन और नवीन युग की सरहद पर अवस्थित है। इसीलिए इसका कण-कण कथा-रस के अनूठे वैभव से अनुप्राणित है। लेखक ने बहुत सक्षेप मे अपनी यह बेबसी कबूल की है कि "बहुत-सी खामियों के बावजूद इसे प्यार किए बिना नही रहा जा सकता, क्योंकि यह मेरा समकालीन है। समकालीनता का दावा इस शहर का सबके प्रति है। 'कैरी साहब का मुशी' का भी वही दावा है—उससे अधिक और ऐश्वर्य इसमे है, ऐसा नही लगता।"

प्रस्तुत उपन्यास ऐतिहासिक उपन्यास की कोटि में गिना जाएगा या नही—नहीं जानता, लेकिन इसकी कथावस्तु सन् १७६३ से १८१३ इन बीस वर्षो के इतिहास पर आधारित है। लेखक ने इतना भर दावा किया है कि अपनी जान मे कहीं भी ऐतिहासिक सत्य पर आँच नही आने दी

है। सच पूछिए तो उपन्यास में दो तरह के चरित्र हैं—ऐतिहासिक और काल्पनिक। इस काल्पनिक शब्द को लेखक ने अपने ढंग से स्वीकारा है—इतिहास की संभावना-संजात। लेखक के मुताबिक "इतिहास का सत्य और इतिहास की सम्भावना ही ऐतिहासिक उपन्यास के उपादान है। इतिहास का सत्य अविचल होता है, उसे विकृत नहीं किया जा सकता। इतिहास की सम्भावना के मामले में लेखक को कुछ आजादी है। सो मैंने सत्य का दुरुपयोग नहीं किया है और सम्भावना के यथा-साध्य सदुपयोग की कोशिश की है।"

उपन्यास की इस इमारत की नींव दरअसल दो चरित्र पर है—राम वसु और विलियम कैरी। ये दोनों ही इतिहास के जीते-जागते पात्र हैं। बंगला साहित्य के इतिहास में बंगला-गद्य के प्रारंभिक निर्माताओं में इनका विशिष्ट स्थान है। राम वसु तत्कालीन कलकत्ता-प्रवासी अंग्रेजों और स्थानीय लोगों के बीच एक योजक कड़ी थे और कैरी ईसाई धर्म के प्रचारक एक धार्मिक पुरुष। उन्होंने श्रीरामपुर में पहले प्रेस की स्थापना की थी आदि-इत्यादि। इन दोनों के अलावा भी कुछ समकालीन ऐतिहासिक व्यक्तियों के चरित्र आए हैं—जैसे, राममोहन, मृत्युंजय विद्यालंकार, टामस आदि। किन्तु रेशमी, टुशकी, फुलकी, जॉन स्मिथ, लिजा, मोती राय आदि काल्पनिक हैं, जिन्हें लेखक ने ऐतिहासिक सम्भावना-संजात कहा है। मतलब कि उस समय ऐसे ही स्त्री-पुरुष होते। उन्हीं पर मूल चरित्रों का विकास-प्रकाश सम्भव हुआ है। लेकिन यही एक ऐसा नाजुक काम है, जहाँ समर्थ से समर्थ प्रतिभा चूकती है। बिशि साहब ने लेकिन वह स्वाधीनता लेने में अपनी समर्थता का सुन्दर परिचय दिया है। शैली, वस्तु-योजना, घटना-चयन सब पर उस क्षमता की छाप है।

—हंसकुमार तिवारी

कैरी साहब का मुंशी

चाँदपाल घाट

चाँदपाल घाट।

सन् १७६३ साल का ग्यारह नवंबर।

उस पार के बबुर बन्ने के छोर पर हेमन्त का सूरज डूब चला था।

घाट अब तक प्रायः सूना पड़ा था, अब धीरे-धीरे लोग आने लगे, लोगों के साथ-साथ गाड़ी-घोड़े भी।

विलायती जहाज का आना एक बड़ी घटना है। आज प्रिंसेस मैरिया आनेवाला था।

बढ़ती हुई भीड़ से अलग नीम के नीचे दो जने खडे थे। एक लंबा छरहरा, दाढ़ी-मूँछ घुटी हुई, बोलते वक्त उसके कपाल पर बहुत-सी रेखाएँ उभर आतीं; दूसरा नाटे कद का, गठा हुआ मजबूत शरीर, गला-गर्दन एक हुआ-सा।

लम्बे आदमी ने कहा, पार्वती भैया, तुम्हे पैरों में चट्टी और बदन पर नामावली डालकर आने के लिए क्यों कहा था, समझा ?

नहीं वसुजा, सच बता दूँ, मैं समझ नहीं सका। चूंकि तुमने कहा,

इसलिए इसी बाने मे आया। भला यह भी कोई पोशाक है घाट पर आने की! लेकिन सोचा, इन मामलो मे बसुजा मुझसे ज्यादा समझता है, लिहाजा मैंने एतराज नहीं किया।

अच्छा ही किया। इन पादरियों का स्वभाव क्या है, जानते हो? जो खिचे-से रहते है, उन्ही की ओर इनका ज्यादा खिचाव रहता है। कोट-पतलून पहन लो, खाना खाओ, देख लो, दो दिन के बाद बात भी नही पूछेंगे। और कही अपनी चपली-चादर, नामावली, चुटिया रखे रहो, थोडी-बहुत संस्कृत बोल दिया करो, ये तुम्हारे पीछे-पीछे डोलते फिरेंगे।

यह तो तुम्हे देखकर ही समझ सकता हूं। जाने कितने साल तो चैंबर्स साहब की मुशीगिरी की, फिर जाने कितने साल डाक्टर टामस के साथ घूमा किए, मगर न तो तुम्हारे बदन पर अंगरेजी पोशाक चढ़ी, न जो-सो खाया-पिया। मगर देखता हूं, उनका खिचाव सबसे ज्यादा तुम्हीं पर है। बता सकते हो, क्यों?

बाइबिल की निषिद्ध फलवाली कहानी समझ लो, और क्या! जिस फल की मनाही हो, उसके लोभ का अंत नही। जहाज घाट पर पहुंचने की देरी तक बर्दाश्त नही। चिट्ठी पर चिट्ठी आई टामस साहब की, मुंशी जी, घाट पर हाजिर रहना।

मगर इस बेचारे बूढे पार्वती ब्राह्मण की बुलाहट क्यों?

तुम्हारी कीमत तो तुम्हारा ब्राह्मणत्व ही है। एक ब्राह्मण को ईसाई बना सकना हजार शूद्रों को ईसाई बनाने के बराबर है।

मगर किसी शूद्र को ही ईसाई कहां बना सके वे? अच्छा, यह तो बताओ बसुजा, ईसाई होने के लिए तुमपर दबाव क्यों नही डालते हैं?

डालते नही है!

फिर?

फिर क्या? टामस साहब से कहता हूं, साहब, ईसाई होकर ईसाई धर्म का प्रचार किया, तो क्या बड़ी बात हुई। लेकिन ईसाई हूं नहीं और ईसाई धर्म का प्रचार करता हूं, जरा इसके असर को सोच देखिए। साहब

ने कहा, ठीक है।

फिर तुमने क्या कहा ?

मैंने फिर कुछ नहीं कहा। साहब को डोम टोली के एक जुए के अड्डे पर ले गया। सारी जमा-पूँजी गँवाकर दूसरे दिन साहब ने कहा, मुंशी जी, जुए का अड्डा साक्षात नरक है। मैंने कहा, और क्या! साहब ने कहा, यह रुपया-पैसा जो है, वह है वेजेस ऑव सिन। मैंने कहा, इसीलिए वह सब नरक में गया। खैर, अब तो आप हलके हुए, अब स्वर्ग जाइए।

बिलकुल मर जाने को कह दिया ?

राम कहो, गिरजा जाने का संकेत किया! फिर मरने पर वह स्वर्ग ही जाएगा, यह किसने कहा ?

मन बड़ा सरल है उसका।

सरल मन होने से ही अगर हर कोई स्वर्ग जाता, तो भीड़ से वहाँ काली-कोठरीवाली दुर्घटना होती!

अब की किसे साथ ला रहा है ?

सुना है, कैरी नाम के एक पादरी को।

अकेले राम से रिहाई नहीं, सुग्रीव साथ में।

सिर्फ सुग्रीव क्यों, साथ मे कुमार अंगद, तारा, नील, नल — बहुतेरे है।

परिवार सहित आ रहा है ? लगता है, यहीं रहेगा।

सिर्फ रहेगा ही ? बाइबिल का अनुवाद करेगा, अँधेरे को दूर भगाएगा, ईसा मसीह की दया बरसाएगा।

और साथ-साथ कुछ चाँदी भी बरसाएगा!

बेशक। चैबर्स को मै बाइबिल के अनुवाद मे मदद करता था। खुली मुट्ठी का आदमी है।

भैया बसुजा, होशियार हो जाओ, इतने दिनों के बाद अब खास पादरी के पाले पड़ोगे। चैबर्स है अदालत का दुभाषिया, टामस है डाक्टर, लेकिन सुना है, यह कम्बख्त खाँटी पादरी है।

इतना ही ? केरी कभी जूता सीता था, अब चंडी पाठ करता है। ऐसा कोई काम ही नही, जो वह न जानता हो। टामस साहब ने सब खोलकर लिखा है न।

इतने मे उन्हे सुनाई पड़ा कोई गुनगुना रहा था —

कलकत्ते के बाबू-भैया
काम करे भरपूर ;
दिन में पिया करें गंगाजल
रात नशे मे चूर।

कौन, अब्राहम ?

जी हाँ। सलाम बोस साहब।

अब्राहम और रामराम वसु, दोनों डिगाभाँगा हलके के रहनेवाले ; एक दूसरे को खूब पहचानते थे। अब्राहम के माँ-बाप में से किसी एक का कोई पुरखा पोर्तुगीज था, किन्तु कई पीढियों में मातृ-पितृ परिचय का कुछ भी बच नही रहा था, रह गया था सिर्फ धर्म, पोशाक और नाम।

पहली बार जब परिचय हुआ, तो उसने अपना नाम बताया, डान अब्राहम डि लेमेप्स। कोई उसकी अंगरेजी का मजाक उड़ाता तो कहता, अंगरेजी मेरी अपनी भाषा थोड़े ही है ! फिर नाज के साथ कहता, डान अब्राहम डि लेमेप्स की भाषा है पोर्तुगीज। दूसरा सवाल करने का मौका ही नही देता, कोई गीत गुनगुनाने लगता। गीतों की खासी पूँजी थी उसके पास।

राम वसु ने पूछा, यहाँ ?

पार्वती चरण ने कह दिया, देश के लोग आ रहे है, उन्हें देखने !

अब्राहम नाराज न हुआ, हँस उठा। राम वसु के जरिए पार्वती चरण से भी उसकी जान-पहचान थी। बोला, देश के लोगों को देखने का जी तो होता ही है। मगर ठीक उसके लिए नहीं, आया हूँ व्यापार के सिलसिले में।

पार्वती चरण ने पूछा, तुम्हारा काहे का व्यापार है ?

अब्राहम होठों में मुस्कुराकर बोला, कच्चे चमड़े का।

दोनों ठठाकर हँस पड़े — बहुत खूब, बहुत खूब।

व्यापार चलता कैसा है ?

अब वैसा कहाँ चलता है। नया जहाज आ रहा है, कै दिन जो चल जाए!

मैंने सुना, कम्पनी गोरे जहाजियों के लिए सेलर्स होम खोल रही है ?

जी हाँ, दो-एक खोला तो है।

फिर तो तुम्हारे व्यापार का सदर दरवाजा ही बन्द।

मगर खिड़कीवाला पीछे का दरवाजा ? इसे बन्द करे, किसकी मजाल।

सो क्या ?

पहले लोगों के जमीन पर उतर आने पर गाहक की खोज होती थी, अब जहाज से ही जुटाना पड़ता है, इतना ही फर्क है। मिहनत ज्यादा करनी पड़ती है, खतरा भी बढ़ गया है, लेकिन उसी हिसाब से दर भी बढ़ गई है। ज्यादा पैसा देकर गोरे खलासियों की जान जाती है, मेरे मुनाफे में कौन हाथ डाले!

दोनों ने कच्चे चमड़े के व्यवसाय का अता-पता जानने की उत्सुकता दिखाई।

अब्राहम ने कहा, तो सुनिए। उस दिन 'विलियम ऐंड मैरी' जहाज आया। पहले तो बेखटके जहाज पर जा धमकता था, अब वह छूट नहीं रही, पास लेना पड़ता है। करूँ तो क्या, एक डोंगी ली और जहाज के पास पहुँचा। कप्तान को ठोंका एक लंबा सलाम और पूछा, हुजूर, जॉन टामसन नाम का कोई यात्री आया है ? कप्तान ने कहा, नहीं, उस नाम का कोई यात्री नहीं है।

मैंने जैसे अपने आपके लिए ही कहा, बड़ी मुसीबत हुई, अब मैं क्या करूँ। फिर कप्तान से कहा, हुक्म दें तो मैं जरा जहाज में लोगों से पूछ आऊँ कि किसी को उसका कोई पता है ? ऐसा भी तो हो सकता है, जहाज खुलने के पहले किसी ने उसे देखा हो।

कप्तान ने कहा, कोई हर्ज नहीं। आकर खोज करो। देखना, पानी में मत गिर जाना।

कहने भर की देर, टप् से चढ गया जहाज पर और गोरो के दल मे पिल गया। फिर क्या, रतन रतन को चीन्हता है। उन्हे समझाया कि सेलर्स होम मे कितनी तकलीफ है, वहाँ के कायदे-कानून कितने कड़े है। नौ बजे के बाद रात को निकलने नही देते। और मेरे यहाँ टिकोगे तो जो चाहोगे, वही पाओगे, मौज-मजा — लागत नाम की।

सबने कहा, अपना पता बताओ।

पता क्या, अब्राहम की कोठी, लाल बाजार या फ्लैग स्ट्रीट कहने से ही कुत्ता तक राह दिखा देगा। ठीक-ठाक करके उतर आया।

रामराम बसु ने पूछा, फिर क्या हुआ, सो बताओ। लोग गए थे तुम्हारी कोठी पर ?

इसका जवाब न देकर अब्राहम बोल उठा, वह देखिए, जहाज दिखाई पड़ने लगा। मैं चला हुजूर, बहुत-बहुत सलाम।

और वह डोंगी के लिए चल पडा।

इन दोनों ने देखा, सच तो, प्रिंसेस मैरिया ने बीच गंगा मे लंगर डाला। पाल बटोरने की तैयारी चल रही है। बातो मे वे ऐसे मशगूल हो गए थे कि उधर ध्यान ही न गया।

घाट की ओर ताका। वहाँ तंजाम, पालकी, सीडेनचेयर, लैंडो, बग्घी, ब्राउनबेरी, फिटन आदि विचित्र सवारियाँ भर गई थी। सवारियाँ ज्यादा-तर खाली ही थी — यात्रियों के लिए आई थी। बहुतेरे मेम-साहब आने-वाले अपनों के स्वागत के लिए आए थे। तरह-तरह की भाषाओं की कौतुक-गूंज से घाट मुखर हो रहा था।

राम बसु सोचने लगा, लेकिन स्मिथ साहब तो अभी तक नही आया। बात क्या है ?

चाँदपाल घाट में

हलो, मुंशी !

गुड इवनिंग मिस्टर स्मिथ !

स्मिथ ने कहा, तुम लोग आ गए, अच्छा ही हुआ। मिस्टर चैंबर्स ने तुम्हें यहाँ मौजूद रहने को कहा था। डाक्टर कैरी तुम्हें देखने को बड़ा उतावला हो उठा है।

राम बसु ने कहा, आपको न देख पाकर मैं भी घबड़ा गया था।

ठीक है, मुझे कुछ और पहले आना चाहिए था।

राम बसु ने अंगरेजी पढ़ना-बोलना सीखा था। जब जैसा मौका, अंगरेजी या बंगला का प्रयोग करता था। अभी बातचीत अंगरेजी में ही हुई।

मि० चैंबर्स सुप्रीम कोर्ट मे फारसी का दोभाषिया था। कलकत्ते के साहबों में मशहूर। टामस साहब का मित्र भी था और ईसाई धर्म प्रचार का असीम आग्रही भी। उसी ने स्मिथ और कैरी का सूत्र जोड़ा था। तै यह हो पाया था कि टामस और परिवार सहित कैरी स्मिथ के मेहमान होंगे।

स्मिथ धनी व्यवसायी था। बरियल ग्राउंड रोड मे घर था।

आज स्मिथ के आने मे देर होने का कारण था। शिकार में जाने की बात थी उसके। पिता जॉर्ज ने ऐसे समय कहा, जॉन, शिकार में न ही गए तो क्या हुआ। मेरी तबीयत ठीक नही लग रही है। तुम जहाज घाट जाओ और मान्य अतिथियों को लिवा आओ।

जॉन ने कहा, कह क्या रहे हैं आप? शिकार मे निकल रहा हूँ और....

बूढे जॉर्ज ने कहा, तो फिर मुझे ही जाना पड़ेगा।

इतने मे जॉन की बहन लिजा बोल उठी, जाओ जॉन, जाओ। देखना, जाने का नतीजा अच्छा ही होगा।

अच्छा क्या देखा तुमने?

आँखें होतीं, तो तुम भी देख पाते। कलकत्ते के क्वाँरे जवानों को

गिरजा जाने का इतना आग्रह क्यो होता है ?

क्यों होता है, तुम्ही बताओ ।

भावी पत्नी की खोज ।

लेकिन यह आग्रह क्या एकतरफा होता है ?

बेशक नही । जभी तो मै कभी गिरजा जाना नही भूलती । लेकिन जहाज घाट आखिर गिरजा तो नही है ।

उससे भी ज्यादा । क्वाँरी लडकियो का पल्ला थामने के लिए ही वहाँ इतनी भीड़ लगती है ।

अपने को वैसा आग्रह नही है ।

फिर तो तुम्हारे नसीब मे खिदिरपुर असाइलम की जॉच ही लिखी है ।

खैर, खिदिरपुर असाइलम के डर मे, चाहे कर्तव्य के नाते जॉन शिकार में नही गया, घाट पर पहुँचा । उसके विलंब का यही कारण था ।

राम वसु ने कहा, मि० जॉन, इनसे तुम्हारा परिचय नही है, अब तक परिचय करा देना उचित था । ये है पार्वती पण्डित । हिंदू शास्त्र के बेजोड़ विद्वान । मेरे मित्र टामस और चैवर्स से इनकी पुरानी जान-पहचान है ।

बडी खुशी की बात है । शायद वे उस डोगी पर आ रहे है ।

स्मिथ यह कहकर आगे बढा ।

राम वसु और पार्वती ने देखा, हाँ, बेशक वही है । टामस साफ पहचान में आ रहा है — बाकी सब कैरी के परिवार के है ।

अरे ओ पार्वती भैया, यह तो सारा कुनबा ही है ।

देश मे दाना नही नसीब होता है ।

अरे, नाराज क्यों हो रहे हो ? हमारा अन्न यो ही नही खाएगा । अन्न खाएगा तो रोशनी भी बाँटेगा ।

अच्छा रामू, तुम क्या सच ही पादरीपने पर यकीन करते हो ?

पागल ! राम वसु कुछ का भी विश्वास नही करता और फिर उसे कुछ पर अविश्वास भी नहीं । सारे संस्कारो को घोल-घालकर वह पी गया और नीलकंठ हो गया है ।

नीलकंठ के बजाय लालकंठ कहना ही ठीक होगा, क्योंकि आम तौर से उस चीज का रंग लाल ही होता है — पार्वती चरण ने कहा।

अरे बाप रे, किस गजब का गंजा है! कहाँ कपाल खत्म हुआ और कहाँ से गंजापन शुरू हुआ यह बता सके, किस साले की मजाल है।

नहीं भैया, मुझे लगता है, ठेलते-ठेलते उसका कपाल ब्रह्मतालु तक उठ गया है। जो भी कह लो, आदमी है दराज नसीब का। नसीब आजमाने आया है, देखा जाएगा, कितना बड़ा कपाल है।

कहना फिजूल है, कपाल-प्रशस्ति का यह लक्ष्य स्वयं पादरी कैरी था। डोंगी बहुत करीब आ गई।

वही शायद कैरी की स्त्री है।

बिलकुल बुढ़िया है यह तो!

उस छोकरी से खामी मिटा ली है। खूब है देखने में।

बहन है क्या?

बहन ही लगती है, मगर पत्नी की। नहीं तो सात समंदर पार इतनी दूर नहीं लाता।

सो चाहे बहन हो, चाहे साली, स्मिथ देर से आकर भी घाटे में नहीं रहेगा।

राम बसु ने कहा, देखो, देखो, मेरा कहा सच है या नहीं! जरा स्मिथ का उतावलापन देखो। उछल पड़ेगा क्या डोंगी पर? वह देखो, गिरा कीचड़ में।

वास्तव में स्मिथ कीचड से थोड़ा लांछित हुआ।

रामू भैया, चलो, आगे बढ़े।

पागल तो नहीं हो गए! ऐसे हंगामे मे भी जाया जाता है कहीं। पहले सख्त जमीन में कदम रखने दो फिर सरफराजी की जाएगी। फिर बात यों है कि जो दस हजार मील की दूरी तै कर आए, वे इस दस गज के फासले को भी पार कर आएँगे, हमारी मदद की जरूरत न होगी।

इस बीच मेम-साहबों की जमात सूखी जमीन पर आ पहुँची। जिनके

अपने जन आए थे, वे तो घर की गाडी मे रवाना हो गए। जिनके कोई न थे, वे किसी सवारी पर बैठे और कहा — बरा पोचखाना !

बग्घी, फिटन, पालकीवाले इस शब्द से खूब परिचित थे। वे जानते थे कि बरा पोचखाना कहने से किसी बडे होटल मे ले चलना है। किसी युवती को अविवाहित यानी लावारिस पाया कि युवकों ने घेर लिया। एक जवान कैरी साहब की डोंगी की तरफ लपका था, मगर पहले से ही वहाँ स्मिथ का आसन जमा देखकर लौट आया।

कलकत्ते का गोरा-समाज डिचर्स कहलाता। इन डिचरों को इस एक अभाव के सिवाय और कोई अभाव न था। वे चिरंतन नारी-दुर्भिक्ष के अभिशापित थे। गौरांगी की कमी श्यामांगी से पूरी करना उन दिनों एक अर्ध-सामाजिक रीति-सा स्वीकृत हो चुका था। जब तक स्वयं कोई जनानखाने की चर्चा न करे, कोई भी वह प्रसंग नही उठाता। वह दुनिया निषिद्ध फल की थी।

घाट से घर

स्मिथ की दो बड़ी-बड़ी बुग्घ गाडियों पर लदकर सब घाट से घर को रवाना हुए। सामने की गाड़ी के एक आसन पर कैरी साहब और उसकी पत्नी। गोद मे नन्हा शिशु जैबेज। दूसरे आसन पर राम बसु तथा टामस। पिछली गाडी में जॉन स्मिथ, कैरी की साली — कैथेरिन प्लैकेट और कैरी के दो लड़के — फेलिक्स तथा पीटर। दोनों ही बालक। पार्वती चरण अपने घर लौट गया। कह गया, कल सवेरे जाकर भेंट करूँगा। राम बसु भी लौट जाना चाह रहा था, लेकिन कैरी ने जान नही छोड़ी। समुद्र मे दस हजार मील तैरते रहने के बाद तिनका मिले, तो कौन छोड़े ! टामस ने चाँदपाल घाट मे ही कैरी और उसकी पत्नी से सबका परिचय करा दिया था। गाडी पर जमकर बैठकर बातचीत शुरू हुई। बातें मुख्यतः कैरी, टामस और राम बसु में ही चल रही थीं। डोरोथी कभी-कभी महज

एकाध बात कह देती। वह नाखुश-सी चुप बैठी रही। गनीमत यही थी कि साँझ के झुटपुटे में कोई उसकी बनी हुई शकल को देख नहीं पाया।

गाड़ी चाँदपाल घाट से दाएँ एसप्लेनेट, बाएँ कौंसिल हाउस तथा गवर्नर की कोठी छोड़कर एसप्लेनेड रो में सीधे पूरब को जा रही थी। आगे-पीछे और बहुत-सी गाड़ियाँ, किस्म-किस्म की। हर गाड़ी के आगे-आगे अँधेरा हटाते हुए मशालची दौड़ रहे थे। पीछे चोबदार चिल्ला रहा था — सामनेवाले हटो, पीछेवाले होशियार! मशाल की रोशनी में कोचवान का चपरास झकमका उठता था। मशालों की एक पाँत पूरब को दौड़ रही थी, एक पाँत दौड़ रही थी मैदान के बीच से दक्खिन की ओर। पच्चीस-पचास गाड़ियों के चक्कों की घर्घर, दो-तीन सौ मशालचियों तथा चोबदारों की सावधानी हाँक — अँधेरी रात, अजाना मुल्क — सब मिल-जुलकर नए आगंतुकों के मन में कौन-से भाव पैदा हुए, कौन कहे!

कुछ ही देर में गाड़ी मुड़ी और चौरंगी रोड से दक्खिन को चलने लगी। ठीक इसी समय दाईं ओर के जंगल से स्यारों ने रात के पहले पहर की घोषणा की। हुआ, हुआ, हुआ....क्का हुआ, क्का हुआ — लहर पर लहर उठाता हुआ दूर से दूर चला गया।

चकित कैरी-पत्नी ने पति से पूछा — काहे की आवाज है?

कैरी ने कहा, स्यारों की।

स्यार? सही-सही स्यार हैं ये? निश्चित कह सकते हो ये भेड़िये नहीं हैं?

कैरी ने हँसकर कहा, बिलकुल निश्चित। टामस ने भरोसा दिया, ये निरे निरीह जानवर हैं। बरियल ग्राउंड रोड में जाने कितने मिलेंगे।

व्हाट? कहाँ?

टामस ने कहा, जहाँ लिवा चल रहे हैं — बरियल ग्राउंड —

उसका वाक्य पूरा होने के पहले ही डोरोथी दबी गर्जना कर उठी — विल, तुम्हारे जी में आखिर यही था। विदेश में लाकर मुझे बरियल ग्राउंड लिए जा रहे हो!

डियर, तुमने टामस की बात पूरी सुनी नहो, नाहक ही डर रही हो।' बरियल ग्राउंड नहीं, बरियल ग्राउंड रोड — एक रास्ते का नाम है।

टामस ने कहा, वहाँ बहुतेरे धनी लोग रहते हैं। हाँ, पास ही एक बरियल ग्राउंड जरूर है।

ओ, वे सब शैतान के पडोसी हैं — यह कहकर नाराज-सी डोरोथी चादर को बदन पर सरकाकर चुप हो रही।

बीवी के इस व्यवहार से कैरी शर्मिन्दा हुआ। बात का मोड बदलने की आशा से राम बसु से पूछा, मिस्टर मुंशी, ये जो मशालें जल रही हैं, ये राह को उजाला करने के लिए, क्यों ?

आपने ठीक ही समझा है।

जंगल के भीतर से वह उधर को जो जा रही है मशाल, वह कौन-सी दिशा है।

वह है दक्खिन।

हम लोग किधर जा रहे हैं ?

हम भी दक्खिन की ही तरफ जा रहे हैं। ये दोनो रास्ते प्रायः समानांतर हैं। बीच मे बहुत बडा मैदान और जंगल है।

वह रास्ता किस मुहल्ले को गया है ?

उस रास्ते पर पहले पड़ता है खिदिरपुर, उसके बाद गार्डेनरिच, गार्डेनरिच ठीक गंगा के किनारे है, और अंदर की तरफ है अलीपुर।

और यह ?

भवानीपुर, रसा होकर कालीघाट।

कॉलीगॉट ! मजे का नाम है। वहाँ क्या है ?

काली माता का मंदिर। जीती-जागती देवी यानी ऑलमाइटी गॉडेस।

राम बसु पादरियों के भरोसे का केन्द्र है। उसके मुंह से काली की बड़ाई कैरी को अच्छी नहीं लगी। कहा, मि० मुंशी, तुम्हारा देश बडा बुत-परस्त है।

राम बसु ने कहा, अब आप लोग आ पहुँचे, कोई चिंता नहीं।

टामस ने उत्साहित होकर कहा, ठीक कहते हैं। उसके बाद कैरी से बोला, क्यों, मैंने कहा था न ?

कैरी ने कहा, बहुत ठीक। मि० मुंशी, ब्रदर टामस से मैंने आपकी सारी बातें सुनी हैं। मैं जानता हूँ, आप सगे-संबंधियों के डर से सत्य धर्म नहीं ग्रहण कर रहे हैं।

बजा कही आपने। अब आप सपरिवार आ गए हैं, देखिए न, मैं भी सपरिवार गिरजे में दाखिल होता हूँ।

मन ही मन बोला, काली मैया, अन्यथा न सोचना। असुरों से ऐसा कहना ही पड़ता है। तुमने भी तो माँ उनके निधन में कुछ सहज तरीका नहीं अपनाया। जो भी हो, अपराध न लेना। अगली अमावस्या को पूजा चढ़ा आऊँगा।

क्या सोच रहे हैं मुंशी ?

प्रभु ईसा पर एक गीत लिखा था। उसी को याद करने की कोशिश कर रहा हूँ।

सच ?

इन बातों में भी झूठ कह सकते हैं भला ?

कौन-सा गीत है ?

पास में नहीं है। जल्दी ही लाकर दिखाऊँगा।

मिस्टर मुंशी, आपके बिना हमारा नहीं चलेगा। आज से ही, मैंने आपको अपना मुंशी बनाया। मगर अभी बीस रुपए माहवार से ज्यादा देने की जुर्रत नहीं है।

राम बसु ने कहा, धरम के काम में रुपया कोई चीज नहीं।

यह तो हिदेन जैसी बात नहीं !

साहब, क्या बताऊँ, आधा ईसाई तो मैं हो चुका हूँ।

टामस ने कहा, आप यहाँ ईसाई धर्म के सुबह के पंछी हैं।

राम बसु अपने तई बोला, क्या, मुर्गा ?

तीनों में बंगला में ही बातचीत हो रही थी। विलायत से आते हुए

जहाज पर फेरी ने टामस से बंगला लिखना-बोलना सीख लिया था। लेकिन सफाई नहीं आई थी अभी, बातें साफ नहीं होतीं, भाव के अनुरूप झट शब्द नहीं सूझते। कुहासे में जैसे आदमी दिखाई देता है, पहचाना नहीं जाता, फेरी के मुंह की बंगला भाषा ठीक ऐसी ही थी। लेकिन राम बसु बहुत दिनों से साहबों की बंगला से परिचित था, इसलिए फेरी की बंगला समझने में उसे दिक्कत नहीं हुई। टामस बंगला खूब पट-बोल लेता, पढ़े-लिखे बंगालियों की तरह। आम लोगों के लिए फेरी की बंगला अभी अबोध्य थी।

दूसरी गाड़ी में अबोध बालकों को छोड़कर सयाने दो ही थे — जॉन स्मिथ और कैथेरिन प्लैकेट। उनमें जो बातें चल रही थीं, वे मनोहारी थीं, मगर धर्म-संबंधी नहीं, इसके लिए एक ही तथ्य काफी है। मिस्टर स्मिथ और मिस प्लैकेट अब आपस में जॉन और केटी थे। ऐसे परिवर्तन साधारणतया इतनी जल्दी नहीं होते, लेकिन जहां भीड़ ज्यादा और जगह कम होती है, वहां साधारण नियम लागू नहीं होता। बहुत बार अशोभनीय ढंग से कुर्सी पर रूमाल बांधकर अपना हक सुरक्षित रखना पड़ता है।

केटी कह रही थी, जॉन, तुम्हारे रास्ते का नाम तो बड़ा रोमांटिक है — बरियल ग्राउंड रोड।

जॉन कह रहा था — और, पास ही सुन्द्रीवन है। कल तीसरे पहर तुम्हें लेकर घूमने चलूंगा वहां।

केटी ने दो-एक बार शब्द को जबान पर हिला-डुलाकर देखा। न तो शब्द ही कब्जे में आया, न उसका अर्थ। उसने पूछा, जॉन, यह सुन्द्रीवन कैसा वन है, कभी नाम तो नहीं सुना?

अनुवाद करें तो होगा — फारेस्ट ऑव ब्युटीफुल वीमेन। यह वन इस देश के सिवा और कहीं नहीं है।

नकली अचरज के साथ केटी बोली, सो क्या, और कहीं नहीं है? ओ, जभी तुम इस देश का पल्ला छोड़ना नहीं चाहते हो। गजब! अब भला देश की कोई तुम्हारे मन में जंचेगी!

देखा जाएगा। तो कल चलती हो न ?

सच ही ले चलोगे तो सच ही जाऊँगी।

उसके बाद केटी गुनगुनाकर गाने लगी —

अंडर दि ग्रीन उड ट्री
हू लव्स टु लाइ विथ मी...,

इसमे भी तुम्हे संदेह है केटी ?

ऐसे समय पास ही बंदूक की कई आवाजें हुई। केटी ने पूछा, यह क्या ?

बंदूक की आवाज है। नेटिव मुहल्ले में लोग डाकू भगा रहे है।

डकैत भी हैं ? फिर तो शेरउड फारेस्ट हो गया।

हो ही तो गया। ऐसा कि राबिनहुड और मेड मैरियन की भी कमी न होगी।

मिसेस कैरी ने पूछा, डा० टामस, यह काहे की आवाज है ?

टामस ताड़ गया था कि डकैत का नाम लिया नहीं कि मिसेस कैरी हाँव-हाँव कर उठेगी। सो उसने कहा, वह कुछ नहीं। नेटिव टोले में उत्सव हो रहा है, उसी की धूम-धाम है।

गाडी मोड़ घूमकर बरियल ग्राउंड रोड में घुसी और कुछ ही देर मे स्मिथ के फाटकवाले मकान के हाते मे दाखिल हुई।

जॉर्ज स्मिथ ने मान्य अतिथियो के स्वागत-सत्कार में कोई कोर-कसर नहीं रक्खी। आतिशबाजी की गई थी। गाडी-बरामदे के पास दोनों ओर कतार मे खड़े सौ से ज्यादा दास-दासी। खानसामा, सरकार, खिदमतगार, सरदार बैरा, बवर्ची, आया, दरवान, साईस, माली, मेहतर-मेहतरानी, भिश्ती, चपरासी, धोबी, चोबदार, हुक्काबरदार आदि-आदि अपनी पोशाक मे लैस खड़े थे। बरामदे पर जॉर्ज स्मिथ स्वयं और उसकी बेटी मिस एलिजाबेथ स्मिथ। जॉर्ज की स्त्री जीवित न थी।

गाडी रुकी और दास-दासियों की कतार ने जमीन तक झुककर सलामी दी। जॉर्ज ने हाथ पकडकर कैरी को उतारा, एलिजाबेथ ने

मिसेस कैरी को। दूसरी गाडी के लोग भी उतर गए तो सब ड्राइंगरूम मे दाखिल हुए।

रामराम वसु को कलकत्ते के गोरे-समाज के तौर-तरीके मालूम थे। उसे पता था कि उस जैसे आदमी की पहुँच घाट से घर तक ही है, घर के अंदर नही। उसने कैरी साहब से कहा, डा० कैरी, तो मै अभी इजाजत लेता हूँ, कल सवेरे आऊँगा।

कैरी ने कहा, ठीक है। कल लेकिन जरूर आइए।

अतिथि के आमंत्रित के प्रति भद्रता दिखाना चाहिए, यह सोचकर जॉर्ज ने कहा, मिस्टर मुंशी, अवश्य आइए। कल सवेरे ये लोग शहर घूमने निकलेंगे। आपका साथ रहना जरूरी है। आप जितनी जानकारी हम लोगो को नही है।

दोनों को सलाम करके राम वसु चला गया।

रात का भोजन खत्म करके सोने के लिए जाते समय जॉन को अकेले में पाकर एलिजाबेथ ने कहा, क्यों जॉन, घाट पर नहीं जाते, तो लगता है, घाटे में रहते।

जॉन ने कहा, मुझे भी ऐसा ही लगता है।

देख लिया न, शिकार सिर्फ जंगल मे ही नही मिलता!

नही, नदी में भी मिलता है।

यह क्या है, गोल्डफिश या मरमेड?

यह उन दोनो में से कोई नहीं। यह है मेड मैरियन।

इसी बीच नामकरण तक हो गया — यू लकी डॉग!

भाई-बहन दोनो हँस पड़े।

जवानी में हँसी की लहरें बिना कारण के ही उठती है, बिना बुलाए ही आती है, बुढ़ापे मे वैसी एकाध लहर के भी दर्शन क्यो नहीं मिलते? जवानी बहिर्मुखी होती है, बुढ़ापा अंतर्मुखी — इसीलिए?

वह क्या सचमुच का बाघ है ?

रात गहरी हो चुकी थी कि धक्का खाकर कैरी साहब जाग गया। देखा, पास खड़ी पत्नी डर से काँप रही है।

पूछा, डोरोथी, बात क्या है ?

डोरोथी चुप। काँप रही थी।

सोचा, अचानक बीमारी का दौरा हो आया हो। उठकर उसे चौकी पर बिठाया। पूछा, क्या हुआ है, बताओ।

क्या हुआ है ! कान नहीं है ? — अब डोरोथी के बात फुटी।

कान है तो क्या !

बाहर कैसी गरज है, सुन नहीं रहे हो ?

अब कैरी ने सुना, बाहर कोई जानवर गरज रहा था।

डोरोथी ने डरते हुए फुसफुसाकर पूछा, क्या गरज रहा है वह ?

कैरी ने कहा, बाघ का गरजना तो कभी कानों सुना नहीं, लेकिन जहाँ तक मेरा ख्याल है, बाघ ही है। जंगली देश है न।

सचमुच का बाघ है क्या ? अधमरी-सी पत्नी ने पूछा।

कैरी ने हँसकर कहा, डियर, वास्तविक बाघ के सिवाय इतनी रात में और कौन गरजेगा ?

अगर हमला कर बैठे ?

सामने पड़ जाए तो हमला करेगा।

हे ईश्वर ! तिस पर सारी खिड़कियाँ खुली है। —डोरोथी ने सीखचा-विहीन बड़ी-बड़ी खिड़कियों की ओर ताका।

बाघ लेकिन बस्तियों में नही आता।

यह कैसे जाना ? तुमने क्या कभी बाघ देखा है ? फिर ? मैंने किताब मे पढ़ा है, बाघ सभी जानवरों से खूंखार होता है। उसके शिकंजे में आ जाने से खैर नही।

लेकिन उसके शिकंजे में क्यों आने लगी ?

२

आने मे रुकावट ही क्या है, जब घर के पास ही जंगल और जंगल मे बाघ है !

जंगल तो घर के पास नही है ।

बेशक पास मे है । केटी कह रही थी, पास ही विशाल जंगल है । कल वहाँ घूमने जाएगी ।

डोरोथी, तुम नाहक ही डर रही हो । बाघ का इतना खतरा रहता, तो यहाँ लोग नही रहते । लो, सो जाओ ।

बगल के कमरे में बच्चे सो रहे है, जरा उन्हे देख आऊँ — डोरोथी बोली ।

जाओ, मगर उन्हे जगाना मत ।

बगल के कमरे में फेलिक्स, पीटर, जैवेज और कैथेरिन के सोने की व्यवस्था की गई थी । डोरोथी उसी कमरे की तरफ गई ।

दूसरे ही क्षण डोरोथी हाँफती हुई लौट आई । — गजब हो गया विल, सर्वनाश !

उद्विग्न कैरी ने पूछा, फिर क्या हुआ ?

कमरे मे एक बहुत बडा वैपायर है ।

वैपायर ! — अविश्वास और परिहास सने स्वर मे कैरी ने कहा । वैपायर नाम का कोई जानवर नही होता । फिर कमरा अँधेरा है, पता नही, तुमने क्या देखते क्या देखा !

दु ख और क्रोध मे जलकर पत्नी ने कहा, क्या देखते क्या देखा । मैने साफ देखा कि बडे-बडे डैनोवाला एक अजीबोगरीब पंछी बच्चो के ठीक ऊपर हिल रहा है ।

अच्छा ! अब की कैरी के स्वर मे भी विश्वास की छुअन थी ।

चलो, अपनी ही आँखो देख लो ।

ठहरो — मेज पर रखी मोमबत्ती को उठाकर कैरी बगल के कमरे की तरफ बढा । पीछे-पीछे डोरोथी । जैसे ही दरवाजे के पास पहुँचा, वह हो-हो करके हँस पडा । कहा, देख लो, रोशनी के जादू से तुम्हारा वह

भयानक वैंपायर लकड़ी का पंखा बन गया।

डोरोथी का भ्रम दूर होते देर न लगी, गोकि इस पंखा नाम की चीज से महज आज शाम को ही उसका परिचय हुआ था। तो भी चीज यह पंखा ही है और उनींदे पंखा-पुलर के खींचने से हिल रहा है, यह सत्य उसे भी स्वीकार करना पड़ा। और तब, उसका अब तक का उमड़ा क्रोध सीधे पति पर जाकर पड़ा।

ब्रह्मास्त्र से स्त्री जाति के क्रोध का फर्क यही पर है। छोड़ा हुआ ब्रह्मास्त्र स्वर्ग, मर्त्य, पाताल सबमें ढूँढ़कर यदि लक्ष्य को नहीं पाता है, तो लौटकर छोड़नेवाले को ही आघात करता है — जब कि स्त्री का लक्ष्य-भ्रष्ट क्रोध लौटकर पड़ता है स्वामी पर। लेकिन भेद क्या सचमुच है? स्वामी-स्त्री तो अभिन्न होते हैं। अभिन्न होते हैं, लेकिन होते हैं भिन्न-मुख। पत्नी चाँद का सदा चमकता मुखड़ा और पति का मुख चिरंतन उदास।

डोरोथी बिस्तर पर आ बैठी और साथ ही साथ क्रोध की भाफ आँसू होकर झरने लगी — मेरा जला नसीब कि तुम जैसे के पाले पड़ी। वरना ऐसे देश में भी कोई आता है कभी, जहाँ घर के पास बाघ हो और कमरे के अंदर वैंपायर उड़ता फिरता हो!

लेकिन डियर, अपनी आँखों तो देख लिया कि वह वैंपायर नहीं, पंखा है!

लेकिन मान लो, कहीं वैंपायर होता?

वैंपायर कुछ होता ही नहीं।

मैं कहती हूँ, होता है। अजाने देश के सारे रहस्यों को जानते हो तुम? और फिर, जिस देश में बाघ के गर्जन से नींद टूट जाती है, वहाँ जान-प्राण की खैरियत ही कब तक? खैर छोड़ो, वैंपायर न सही, बाघ तो है!

इससे कौन इनकार करता है?

बन पड़ता तो करते इनकार। कह देते कि स्यार बोल रहा है।

तो कौन-सा झूठ होता। बाघ और स्यार पास-पास रहते हैं।

फिर ?

इस 'फिर' में मानो डोरोथी की जीत हुई, जैसे यहीं पर तर्क का चरम हो गया। सो उसने प्रसंग बदलकर कहा, अगले ही मेल से मैं केटी और बच्चों को लेकर देश लौट जाऊँगी, इस हिदेन के मुल्क में एक पल नहीं रहने की।

किन्तु यह क्यों भूल जाती हो डियर कि इन हिदेनों को सत्य धर्म की दीक्षा देने के लिए ही तो हम यहाँ आए हैं ?

हम मत कहो, कहो कि मैं आया हूँ। तुम इन्हें सत्य धर्म की दीक्षा देते रहो, हम लौट जाते हैं।

पहले आपत्ति की होती तो शायद न भी आता, लेकिन अब तो —

कैरी की बात पूरी होने से पहले ही डोरोथी चीख उठी — हजार बार आपत्ति की थी। जब तुमने देखा कि मुझे राजी करना मुश्किल है, तो तुमने फेलिक्स, पीटर और केटी को फुसलाकर मुझे मजबूर किया।

कैरी ने मुस्कुराकर कहा, और अगर वे लौटने को राजी न हों तो क्या करोगी ?

जैबेज को लेकर मैं अकेली ही जाऊँगी। ये सब जायें बाघ के पेट में। — और उसने आँखों से सावन-भादों जारी कर दिया। फूल-फूलकर रोने लगी।

कैरी ने देखा, और कुछ देर तक यही स्थिति रही तो डोरोथी की हिस्टीरिया सिर उठाएगी और कहीं हिस्टीरिया का दौरा आया तो घर भर की परेशानी का अंत नहीं रहेगा। नई जगह में पहली रात ऐसा होना बड़ा शर्मनाक होगा। सो उसने जरा मुलायम होकर कहा, डोरोथी, मेरी प्यारी, सो जाओ अभी। लौट जाने की बात सोचूँगा। तुमने जो कुछ कहा, वह सचमुच गौर करने की है।

स्नेह भरे वाक्य से डोरोथी का मन कुछ नर्म हुआ। आँधी रुकी, लेकिन आँधी का हलकोरा नहीं थमा चाह रही थी। वह लेटी-लेटी फफकती रही और जानें कब अजानते ही सो गई।

अपनी पत्नी को कैरी भली तरह पहचानता था। उसे मालूम था कि उसके सोचने और काम में सख्ती नाम की कोई चीज नहीं — सारी बातों में अंततः वह पति पर ही निर्भर करती। लेकिन जिद से और हिस्टीरिया के प्रकोप से कोई न कोई झमेला खड़ा कर देना उसका स्वभाव है। किसी भी उपाय से उस झोंक को टाल दीजिए कि वह फिर अपने स्वामी की मुट्ठी में आ जाती। कैरी ने समझा, लंबी समुद्रयात्रा के अस्वाभाविक जीवन की प्रतिक्रिया से आज रात की यह दुर्घटना हो गई, शुक्र है कि कोई अनर्थ किए बिना ही संकट टल गया। जो पति तर्क में पत्नी से हारता है, मगर काम में जीतता है, वही तो बुद्धिमान पति है!

कलकत्ता-दर्शन

जलपान के बाद सब बैठके में इंतजार कर रहे थे कि रामराम बसु और पार्वती ब्राह्मण पहुँचे। कैरी ने कहा, मि० मुंशी, हम सब आप ही लोगों की राह देख रहे थे। चलो, नहीं तो देर होगी।

रामराम बसु ने कहा, चलिए, हम तो तैयार ही है।

गाड़ी-बरामदे में दो बुग्घ खड़ी थी। एक पर सवार हुए कैरी, उनकी पत्नी, डा० टामस, रामराम बसु और पार्वती ब्राह्मण। दूसरी पर मिस प्लैकेट, मिस स्मिथ, फेलिक्स कैरी और जॉन स्मिथ। पीटर और जैबेज घर ही रहे।

एलिजाबेथ जाना नहीं चाह रही थी, लेकिन कैथेरिन ने माना नहीं। लाचार उसे राजी होना पडा।

केटी ने कहा, आखिर क्यों नहीं जाओगी? तुम चलोगी तो गपशप करने में मजा आएगा।

लिजा बोली, लेकिन जॉन शायद खुश नहीं होगा। क्यों जॉन?

जॉन ने कहा, क्यों? तीन जने के बिना भी बात जमती है?

लिजा ने कहा, बात भी तरह-तरह की होती है।

जैसे?

जैसे, प्रेम-प्यार की बात।

यू नॉटी गर्ल!

केटी ने सुना नहीं। पूछा, मिस्टर स्मिथ क्या कह रहे हैं?

एलिजाबेथ कुछ अजीब-सी न बोल बैठे, इसलिए जॉन जल्दी से कह उठा, नहीं-नहीं, कुछ नहीं। मैं पूछ रहा था, वह जाना क्यों नहीं चाहती।

एलिजाबेथ ने कहा, तुम कह रहे हो तो चलती हूँ जॉन, लेकिन 'फ्लाइ इन दि आएंटमेंट'* न बनी रहूँ।

सो देखा जाएगा, चलो।

दोनों गाड़ियाँ बरियल ग्राउंड रोड से चौरंगी की तरफ चल पड़ीं। जिस शहर में जीवन के इकतालीस साल बीतेंगे, वह कलकत्ता अपने वैचित्र्य और अभिनवता लिए कैरी की आँखों में हेमंत की सुबह की मीठी किरण-सा यहीं पहली बार उद्भासित हुआ।

बरियल ग्राउंड रोड के दोनों ओर अहातेवाले बड़े-बड़े मकान, ज्यादातर मकान इकतल्ला, लेकिन संख्या में ज्यादा नहीं, बहुत होंगे तो दस-बारह।

गाड़ी चौरंगी रोड पर पहुँची कि मिसेस कैरी ने अचरज से पूछा, अरे, वह आदमी रास्ते पर वैसे रेंग क्यों रहा है?

सबने देखा, सच तो, एक आदमी रास्ते पर सीधे पेट के बल सो जाता है फिर खड़ा होता है, क्या तो बुदबुदाता है, उसके बाद फिर पेट के बल लेट जाता है और हाथ बढ़ाकर रास्ते पर निशान लगाता है।

कैरी-पत्नी बोली, लगता है, यह पागल है। शरीर पर कपड़ा भी नहीं।

रामराम बसु ने कहा, नहीं, आदमी वह पागल बिलकुल नहीं है। वह

---

*'मलहम में मक्खी' — मुहावरा।

कालीघाट के मंदिर की ओर जा रहा है। किसी वजह से उसने इसी ढंग से मंदिर में जाने की मन्नत मानी थी, आज अपनी उसी मन्नत को पूरी कर रहा है।

कितनी दूर से आ रहा है वह ?

अपने गाँव से। पचीस-तीस मील हो सकता है, हो सकता है, उससे भी ज्यादा।

यह भी अगर पागलपन नहीं, तो पागलपन फिर है क्या ?

पार्वती ने कहा, हम उसके इस आचरण को धर्म कहते हैं।

मिसेस कैरी बोल उठी, घोर कुसंस्कार।

पादरी टामस ने कहा, अब डा० कैरी आ पहुँचे हैं, ये कुसंस्कार दूर हो जाएँगे।

प्रसंग बदलने के लिए कैरी ने पूछा, वह कौन-सा तालाब है ?

बरियल ग्राउंड रोड और चौरंगी रोड के मोड़ पर एक बड़ा-सा तालाब था। टामस ने कहा, इसका अभी कोई नाम नहीं पड़ा है। दो ही साल हुए इसके बने। अभी सब इसे नया तालाब या न्यू टैंक कहते हैं। है न बसु ?

राम बसु ने कहा, जी हाँ। और वह जो दाहिने ओर को छोटा-सा रास्ता निकल गया है, उसका नाम है झँझरी तालाब रोड।

कैरी ने दो बार उच्चारण किया—तालाबो, तालाबो। कहा, अच्छा, तालाबो के मानी क्या है ?

तालाब माने टैंक— एक ही साथ पार्वती, बसु और टामस ने कहा।

कैरी ने पूछा, रास्ते के पच्छिम जंगल ही जंगल देख रहा हूँ।

राम बसु बोला, उस जंगल के बीच जहाँ-तहाँ दलदल है और दलदल के चारों तरफ सरपत का जंगल।

टामस ने कहा, अब जंगल रह कहाँ गया है, दस बरस पहले जो देखा, पूछिए मत।

इससे भी ज्यादा था ?

ज्यादा ? अजी वारेन हेस्टिंग्स हाथी पर यहाँ बाघ का शिकार करने

आता था ।

'बाघ' शब्द से ही मिसेस कैरी ने कान खड़े कर लिए ।

कैरी ताड़ गया, आफत आई । मिसेस कैरी के लिए बाघ से बाघ शब्द कम खतरनाक नही । बात पलट देने की नीयत से कहा, खास इसी जगह नही ?

टामस ने कहा, नहीं, ठीक इसी जगह नही, यहाँ से दक्खिन — उसे बीजीतालाब कहते है ।

लेकिन राम बसु को तो रात की घटना की जानकारी नहीं थी, इसलिए कही बाघ की आशंका कम होने से देश के गौरव की हानि न हो, बोला, अजी, इतनी पुरानी बात छोडिए । अभी-अभी उस रोज दिन-दहाड़े खिदिरपुर नाले के पास हम बाघ के चपेट में आ गए थे — क्यों पार्वती भैया ?

पूछिए मत, बाघ था कम्बख्त ! सारे बदन पर काली-काली लकीरें । अभी भी याद आने से रोंगटे खड़े हो जाते है । — पार्वती जरा हिल-डुलकर बैठा ।

कैरी सोचने लगा, जहाँ बाघ का डर रहता है, वही साँझ हो आती है !

पति की ओर ताककर मिसेस कैरी ने लानत के सुर मे कहा, अच्छे देश मे ले आए हो !

इतने में एक हाथी दिखाई दिया । कैरी ने सोचा, खैर, आज हाथी ने बाघ के हाथ से बचाया । बोला, वह देखो ।

सबने देखा, गजेन्द्र की चाल एक विशाल हाथी जा रहा है । कंधे पर बैठा है महावत, महावत के पीछे तीन-चार भालेवाले प्यादे ।

लेकिन कैरी को आज सहज छुटकारा नहीं बदा था ।

मिसेस कैरी ने उद्विग्नता से पूछा, बाघ-शिकार में जा रहा है शायद ?

टामस माजरे को कुछ भाँप गया था । बोला, नही-नहीं, यहाँ बाघ कहाँ । कहीं दो-चार हैं भी तो वे आदमी को नहीं खाते ।

वे शायद बाइबिल पढा करते हैं ? — पत्नी की अखीस्टानोचित इस उक्ति से कैरी को चोट पहुँची ।

रामराम वसु मन ही मन बोला, बाघों ने अभी बाइबिल का पाठ नहीं किया है, गनीमत है ।

रास्ते के दोनों तरफ कच्चा नाला । कहीं-कहीं, जहाँ ज्यादा पानी पड़ा था, अभी भी सूखा नहीं था । तब से कूड़ा-कचरा सड़ते रहने से दुर्गंध आ रही थी । जहाँ कूड़े का ढेर ज्यादा था, वहां कुत्ता, कौआ, मैना की खींचा-तानी चल रही थी । इतने में बेहद सड़ाँध की तेज बू से सब चौंक उठे । ज्यादा खोज-बीन नही करनी पड़ी — आदमी की एक अधखाई लाश रास्ते पर आड़ी-आडी पड़ी थी, चार-पाँच घिनौने गिद्ध उसे नोच रहे थे । गाड़ी की घरघराहट से वे उड़कर नाले के उस पार जा बैठे । दो कुत्ते, जो गिद्धों के डर से लाश के पास नहीं जा पा रहे थे, अब मौका पाकर लाश पर टूट पडे । हक पर दूसरे का हक हो रहा देख वे गिद्ध डैने फड़फड़ाकर कर्कश आवाज करने लगे ।

बाघ के खौफ से मिसेस कैरी महज घबराई थी, लेकिन यह दृश्य देख-कर उसे इतनी घिन हो आई कि नाक में रूमाल दबाकर गाड़ी की पीठ-दानी में मुंह छिपाया । बीच-बीच मे सिर्फ यह कहने लगी — माइ गॉड, यह तो नरक है, नरक !

सँकरी और कच्ची सड़क । तिस पर समान नहीं । वर्षा का कीचड़ पहियों के दाग से चौचीर हो गया था — अब सूख तो गया था, किन्तु उसकी असमतलता नहीं गई थी । उसपर से धूल हो आई । धूप के साथ-साथ सवारियों का जाना-आना बढ़ा और गर्द उड़ने लगी । चित्र-विचित्र पाल-कियाँ कहारों की अजीब हुँकारियों की ताल-ताल पर जा रही थी ; फिटन, ब्रुहम, लैडो, बग्घी, ब्राउनबेरी घोड़ों की टापों से धूल उड़ाती हुई चली जा रही थीं; कभी टट्टू पर सवार, कहीं बँहगी कंधे पर लिए गाँव का कोई, गोलपत्ते का छाता ओढे कोई राही । गाड़ी के रुकते ही भिखमंगे, बच्चे-बूढ़े, औरतें घेर लेतीं । कैरी और कैरी-पत्नी के लिए यह सारा कुछ ही नया

था । कैरी सोचने लगा, सत्य धर्म के प्रचार की यही तो सही जगह है । और कैरी-पत्नी सोचने लगी, जिद्दी पति के पाले पडकर सभ्य जगत से बाहर आ पहुँची — पास ही वह डरावना नरक है ।

वह सुंदर-सा मकान किसका है ? — कैरी ने पूछा ।

मिस्टर लिट्से नाम के एक अंगरेज का है । इसने आसाम से हाथी और नारंगियाँ भेज-भेजकर बडी दौलत पैदा की । — राम वसु बोला ।

चौरंगी रोड के पूरब हातावाले बडे मकान, पच्छिम के मैदान में दलदल और सरपत का जंगल ।

वह रास्ता किधर गया है ?

नेटिव टोले से शहर के पूरब दलदल की ओर ।

नाम क्या है इस रास्ते का ?

जानबाजार रोड । लौटते वक्त हम इसी से होकर लौटेंगे ।

कैरी और टामस में बातें होती रहीं ।

गाड़ी और जरा बढी कि टामस अचानक बोल उठा, ऐ गाड़ीवान, रोको, रोको ।

गाड़ी रुक गई ।

टामस ने कहा, इस चौरास्ते का भूगोल बता दूँ, शायद मनोरंजक हो ।

टामस कहने लगा, चौरंगी रोड का यही अंत हो जाता है । अब शुरू हुई कसाईटोला सड़क । इस रास्ते को कलकत्ते का चीपसाइड कह सकते हैं । यूरोपीय, आरमेनियन, चीनी और नेटिवों की सारी बड़ी-बडी दूकानें यहीं है । खाट-चौकी-पलंग से लेकर पोशाक-ओसाक, खाना-पीना सब यहाँ मिलता है । मिसेस कैरी, आप इस रास्ते को न भूलें । कलकत्ते में गिरस्ती करनी है तो 'डैटी-डेवी' की दूकान पर आना ही पडेगा । कोई झमेला नही, फिहरिस्त रख दीजिए, दो घंटे में सारी चीजे कोठी पर पहुँच जाएँगी ।

मिसेस कैरी ने खीजकर कहा, इस चौरंगी का नरक पार करके मैं डैटी-डेवी तो क्या, स्वर्ग भी जाने को राजी नहीं ।

तो अपने सरकार, यानी नेटिव स्टुअर्ड को हुक्म कर दीजिए, फौरन

ला देगा। मगर बताऊँ, सामान खुद से ही लाना ठीक है।

क्यों ?

क्योंकि वे रुपए पर दो आने दस्तूरी जोड़ लेते हैं।

मतलब कि चोर हैं।

मिसेस कैरी, चोर का दावा इतना ज्यादा नहीं, ये डकैत हैं।

और मिस्टर कैरी इन्हीं लोगों का उद्धार करने के लिए आए हैं !
— कहकर नाराज-सी हो गई।

डोरोथी, इन्हीं को तो प्रकाश की ज्यादा जरूरत है।

उसके पहले ये तुम्हारा घर अँधेरा कर देंगे।

सो कैसे डियर ?

तुम्हारा तेल चुराकर।

टामस, कैरी और कैरी-पत्नी में जब इस तरह की बातें चल रही थीं, रामराम बसु और पार्वती मन ही मन बेचैनी का अनुभव कर रहे थे। सोच रहे थे, ये हमें किस कोटि मे सोचते है — चोर या डकैत ?

टामस ने कहा, और यह जो रास्ता पूरब को गया है, यह है धर्मतल्ला। यह देशी लोगों के मुहल्लों को गया है। कुछ गरीब फिरंगी भी उधर हैं जरूर।

कैरी ने कहा, हाँ, मुहल्ला गरीब-सा ही लगता है।

बीच से पतले कच्चे रास्ते — दोनों तरफ आम-कटहल-इमली के जंगल में गोलपत्ते के झोंपड़े, कहीं जंगल और दलदल, कहीं-कहीं दो-चार पक्के घर भी।

मिसेस कैरी बोल उठी, मैं उधर नहीं जाने की।

नहीं-नहीं, उधर नही, पच्छिम की ओर चलेंगे। ऐ गाड़ीवान, एसप्लेनेड रो की ओर चलो।

गाड़ी एसप्लेनेड रो से चलने लगी।

टामस ने कहा, कल रात हम इसी से होकर आए थे।

जरा देर बाद टामस ने फिर शुरू किया, अब हम ओल्ड कोर्ट हाउस

स्ट्रीट मे आ पहुँचे। यह रास्ता दक्खिन मे बराबर खिदिरपुर, गार्डनरिच, अलीपुर तक चला गया है।

उसके बाद खास कर मिसेस कैरी को लक्ष्य करके कहा, आपको लिवा चलूंगा एक दिन। बड़े ही अच्छे और रुचिपूर्ण मकान है। इधर से जो अरुचि हुई है, उसका प्रतिकार है उधर।

इतने में कैरी ने कहा, डोरोथी, वह बड़ा-सा जानवर क्या है, कह सकती हो?

डोरोथी बोली, कैसे कहूँ, पहले तो कभी देखा नहीं।

वह ऊँट है।

ऊँट! — अवाक रह गई डोरोथी। — उसके पीछे वह क्या है? अब टामस बोला — गाड़ी। यहाँ ऊँट की गाड़ी चलती है। बहुत-से स्थानों में तो इसके सिवाय दूसरी सवारी नहीं।

डोरोथी का अचरज और बढ़ा। उसके मन मे ऊँट से सहारा का अविच्छेद्य संबंध बैठ गया था। यहाँ भी वही ऊँट! फिर पीछे मे बड़ी-सी गाड़ी जुती हुई। अचरज से जब वह हतबुद्धि और निर्वाक हो गई — ऐसे मे हठात चौंक पड़ी, वह क्या है? कौन-सी चिड़िया?

मोड़ पर जो बड़ा-सा मकान था, उसकी छत के किनारे कुछ हड़गिल्ले आ बैठे थे।

मिसेस कैरी ने पूछा — बहुत बड़े हैं। ईगल तो नही?

नही — ये है हड़गिल्ले — बोन स्वेलोअर!

कहाँ रहते है ये?

राम बसु ने कहा, मैदानो में जहाँ जंगल पानी है, वही।

उस मकान को दिखाकर कैरी ने पूछा, इतना बड़ा मकान, खाली क्यों पड़ा है?

डा० कैरी, इतने बड़े मकान में रहेगा कौन? भीतर टूट-फूट भी गया है।

इसमें जरूर कोई शौकीन आदमी रहता होगा।

आपका अनुमान गलत नहीं है। कभी यहाँ वारेन हेस्टिंग्स रहता था। उसके सामने ही पास-पास है — गवर्नर की कोठी और कौंसिल हाउस।

ऐसी कोई बड़ी बात नहीं।

यही शिकायत तो यहाँ के अंगरेज-समाज की है। उनका कहना है, इससे कहीं बड़े मकान बहुतेरे सौदागरों के हैं।

टामस कहता गया, मिसेस कैरी, वह रहा चाँदपाल घाट, और वह रही गंगा — हिन्दुओं की सबसे पवित्र नदी।

मिसेस कैरी ने बुदबुदाकर क्या कहा, समझ में नहीं आया। अच्छा ही हुआ, क्योंकि खूब संभव है, उसकी बात वहाँ उपस्थित दो हिन्दुओं के लिए रुचिकर नहीं होती शायद।

टामस बोला, अब हम कौंसिल हाउस स्ट्रीट से उत्तर की तरफ घूम रहे हैं — और चल रहे हैं कलकत्ते के सबसे पुराने, ऐतिहासिक घटनाओं से भरे हिस्से में। डा० कैरी, यहाँ की एक-एक ईंट विचित्र इतिहास की छाप लिए हुए है। वह रहा सुप्रीम कोर्ट, नेटिव कहते हैं — क्या कहते हैं मुंशी जी ?

बड़ी अदालत।

ठीक-ठीक। बरी अदालत। — टामस ने दुहराया।

डा० कैरी, मिसेस कैरी, अब हमें उतरना होगा। यही सामने है सेंट जॉन्स चर्च। कलकत्ते का सबसे बड़ा गिरजा। अभी उस दिन बना है। उसपर साफ लिखा है — १७८७ ऐनो डोमिनी।

पत्थर का गिरजा

मात्र कै साल पहले बना यह गिरजा। झकमका रहा था। चारों तरफ फूलों का बगीचा।

कैरी और टामस गिरजे के सामने घुटने टेककर प्रार्थना करने लगे।

रामराम वसु पास खड़ा रहा। मिसेस कैरी के साथ था पार्वती ब्राह्मण। कैरी-पत्नी इन बातो से ऊब उठी थी। चेहरे पर साफ झलक उठी थी खीज। पार्वती इस कोशिश मे था कि भाषा के बिना कैरी-पत्नी के मनोभाव का कैसे समर्थन किया जाए। वह रुकती तो पार्वती रुक जाता, चलती तो पार्वती चलता। कैरी-पत्नी ने विरक्ति से 'इस्' कहा, तो पार्वती ने भी 'इस्' कहा। उसने आसमान की ओर ताका तो पार्वती ने भी ऊपर नजर उठाई।

इस बीच कैरी और टामस उठ खडे हुए थे। अब उनका ध्यान इस बात की ओर गया कि दूसरी गाडी अभी तक आई नही है। कैरी ने पूछा, वे लोग गए कहाँ?

रामराम वसु ने कहा, जिनकी उम्र बीस के आस-पास है, गिरजा और कब्रिस्तान देखने का आग्रह उनमें संभव नहीं।

टामस को बात बेहद जँची। बोला, मुशी जी, आपकी बात बहुत दुरुस्त है। बीस के आस-पास मैं तो आधा शैतान ही था।

राम वसु ने अपने मन मे कहा, अब तो तुम पूरे शैतान हो गए हो। तुम्हारा गिरजा है जुए का अड्डा और शराब है जरदान का पवित्र पानी! जरा ठहरो बच्चू, एक दिन तुम्हे टुसकी के यहाँ लिवा- चलता हूँ, तब कसौटी होगी तुम्हारे ईसाई धर्म की।

गिरजा के शिखर पर आँखे टिकाए कैरी ने राम वसु से कहा, मिस्टर मुंशी, निकट भविष्य में संसार की सभी जातियों का आश्रय होगा प्रभु ईसा का यह गिरजा। सभी धर्मो के लोग आकर यहाँ हाथ मिलाएँगे।

राम वसु बोला, आपकी बात का अक्षर-अक्षर सत्य है डा० कैरी, लेकिन उसके लिए भविष्य की आशा में नही बैठना है।

सो क्या?

तो आप इस गिरजा के बनने का इतिहास सुन ले। पता चल जाएगा कि कितने धर्म, कितनी जातियों के सहयोग से यह गिरजा बना है।

राम वसु ने सेंट जॉन गिरजे का [illegible]

इसकी जमीन एक हिन्दू राजा ने दान दी और गिरजे का पत्थर राज-महल के नवाब का महल तोड़कर लाया गया। जभी यहाँ के लोग इसे पत्थर का गिरजा कहते है। लिहाजा साफ है, गिरजा के बनने मे ही हिंदू-मुसलमान-ईसाई का मिलन हुआ है।

कैरी और टामस धर्म के अंधे न होकर आम आदमी की तरह होते तो समझते कि राम बसु की बातों को कैसे ग्रहण करना चाहिए, लेकिन यह नही होता। वे समझते थे कि राम बसु बड़े भाव की कह रहा है। उस-पर उनकी भक्ति बढ़ती। भक्ति चीज ही ऐसी होती है। प्रेम अगर अंधा है तो भक्ति है अबोध।

कैरी ने कहा, यही नहीं, ऐसा भी समय आएगा, जब दुनिया में लड़ाई-झगड़े नही रह जाएँगे, अस्त्रागारो पर गिरजे बनेंगे।

राम बसु ने कहा, पादरी साहब, आपकी दिव्य दृष्टि की बलिहारी। यह गिरजा अस्त्रागार ही पर तो बना है। ठीक-ठीक अस्त्रागार नहीं, बारूदखाना। यही पर पहले कंपनी का बारूदखाना था।

कैरी ने उमगकर कहा, व्याख्या करने की आपमें अद्भुत क्षमता है मुशी जी। आप जैसे व्याख्याता मिलने पर इस देश मे प्रभु की करुणा बाँटने मे ज्यादा समय नही लगेगा।

बसुजा ने मन ही मन कहा, प्रभु की करुणा के लिए मेरे या मेरे देश-वासियों को सरदर्द नही है, पहले प्रभु के चेलों की करुणा का हाल देख लूं। मुट्ठी तो सख्त लग रही है, बीस रुपए माहवार से ज्यादा नही वसूला जा सका।

कैरी ने कहा, आप सोच क्या रहे है मुशी जी! आनेवाले समय मे गिरजे दुनिया की शुश्रूषा के स्थान होंगे।

बसुजा ने अचरज दिखाते हुए टामस से कहा, डा० टामस, आज तो डा० कैरी के मुख से भविष्यवाणियों की झड़ी लग गई है।

टामस ने कुछ समझा नही, लेकिन ऐसी बात मे संदेह दिखाना अभद्रता है, यह सोचकर बोला, बेशक!

देखिए न, कुछ ही गज के फासले पर एक समय कंपनी का अस्पताल था — शुश्रूषा की कमी हो रही थी, शायद इसीलिए प्रभु की इच्छा से उसके पास ही गिरजा बन गया।

टामस बोल उठा, वाह !

राम वसु ने कहा, मगर इस चमत्कार का सब कुछ अभी आपने समझा नहीं। प्रभु ईसा से ईसाइयों को दूरदृष्टि कुछ कम नहीं। जरा व्यवस्था देखिए उनकी, किला, अस्पताल और कब्रिस्तान कैसा पास-पास बनाया। एक से दूसरी जगह जाने में ज्यादा समय नहीं लगता था।

कैरी ने पूछा, किला तो सुना पास ही है, कब्रिस्तान कहाँ है ?

राम वसु और टामस साथ-साथ बोल उठे, ईसाइयों का कब्रिस्तान यहीं था।

एँ !

टामस ने कहा, एक आँकड़ा देख रहा था कि नया कब्रिस्तान बनने के पहले यहाँ बारह हजार आदमियों को दफनाया गया।

इतनी-सी जगह में ? इसका मतलब यह कि एक पर दूसरे को दफनाया गया।

सो तो हुआ ही।

राम वसु ने कहा, अंतिम विचार के दिन आपस में टक्करें होंगी। जब तक ऊपरवाला न उठ जाएगा, नीचेवाले को उठने की गुंजाइश न होगी।

वह समाधि-स्तम्भ किसका है ?

जॉब चार्नक का। कलकत्ते का प्रतिष्ठाता उसी को कहा जा सकता है।

चलिए, देख आएँ।

इधर ये समाधि-स्तम्भ देखने चले और उधर मिसेस कैरी गाड़ी पर जा बैठी। लाचार पार्वती को भी बैठ जाना पड़ा।

कैरी-पत्नी ने चादर उतारकर रख दी। ऐसे में क्या करना चाहिए

समझ न पाकर सर्दी महसूस करते हुए भी पार्वती ने कहा, आज खासी गर्मी है ।

कैरी-पत्नी ने न तो इस बात का विरोध किया, न समर्थन। वह चुप बैठी रही ।

जॉब चार्नक की समाधि देखते हुए शुरू से आखीर तक उसका सारा इतिहास सुनकर धिक्कार और विस्मय से कैरी ने पूछा, आप क्या कहना चाहते है, कलकत्ते का प्रतिष्ठाता एक हिदेन महिला के साथ यहां वास करता था ! ईसाई समाज ने इस विवाह को मान लिया था ?

उसके बाल-बच्चे हुए। ईसाई समाज मे उन सबका शादी-ब्याह हुआ, दामाद को बड़ी सरकारी नौकरी मिली, एक दामाद ने यह स्मृति-स्तम्भ बनवाया। मानना और किसे कहते है ?

सर्वनाश ! चलिए, चलिए ।

बहुत पहले मर चुके जॉब चार्नक के अख्रीस्टानोचित कार्य के प्रतिवाद स्वरूप ही मानो कैरी ने जल्दी से वह स्थान छोड़ दिया ।

टामस ने कहा, पास ही और दो दर्शनीय स्थान हैं — पुराना किला और टैंक स्क्वायर ।

कैरी ने कहा, इतना-सा के लिए अब गाडी पर सवार होने की जरूरत नहीं, पैदल चलो चलें । — पत्नी से कहा — डोरोथी, उतर आओ, थोडा पैदल चलें हम लोग ।

पत्नी ने खीज भरे स्वर में कहा, मैं न तो उतरने को तैयार हूँ, न चलने को और न कुछ देखने को ही ।

इसपर टामस ने गाड़ीवान से कहा, तो तुम लालबाजार चलो। वही इंतजार करो । हम अभी आते है ।

गाड़ी रवाना हो गई । कैरी-पत्नी के साथ पार्वती ब्राह्मण रहा । इधर ये तीनों पुराने किले की तरफ बढ़े ।

ओल्ड फोर्ट

दो गोरे साहबों को देखकर दरवान ने फाटक खोल दिया। न भी खोलता तो हर्ज नहीं था। दीवार जहाँ-तहाँ टूट गई थी और चौपाए-दोपाए के लिए स्वाभाविक दरवाजा बन गया था। फिर भी पुराना और टूटा ही क्यों न हो, किला ही ठहरा। उसमें फाटक था। और जब फाटक था तो एक दरवान भी था।

अंदर दाखिल होकर उन लोगों ने देखा, टूटे-फूटे कमरे नाहक ही पड़े है। दरवाजे-खिड़कियाँ ज्यादातर टूटी हुई।

राम बसु और टामस पहले भी एकाध बार यहाँ आ चुके थे। अब की कैरी को दिखाना था, नहीं तो आने का आग्रह नहीं था उन्हें।

जब अपने मुल्क में था, कैरी ने 'ब्लैक होल ट्रैजेडी' के बारे में सुना था। इसलिए उसे देखने की इच्छा जाहिर की।

उधर को चलते हुए कैरी ने कहा, तब तक पुराने किले का इतिहास बताइए मुंशी जी, आपको तो सब मालूम होना चाहिए।

मुंशी जी यानी राम बसु ने कहा, आपने बिलकुल सही कहा, इसी शहर में मैं रहता हूँ, यहीं मेरा जन्म हुआ और जन्म भी हुआ सन् १७५७ में, जब प्लासी की लड़ाई में कंपनी की फौज ने नवाब को शिकस्त दी।

तब तो तुमने लार्ड क्लाइव को देखा होगा?

लार्ड क्लाइव, वारेन हेस्टिंग्स, सर फिलिप फ्रांसिस — किसको नहीं देखा! एक दिन सवेरे चीनाबाजार आया था। देखा, साहब घोड़े पर सवार चला जा रहा है। पीछे-पीछे कुछ फौजी घुड़सवार। पूछा, तो पता चला, ये है जंगी लाट क्लाइव। सच कहूँ? देखने में वीर जैसा नहीं लगा। यह भी सुना कि गोविन्दपुर में जो नया किला बन रहा है, उसी को देखने जा रहे है।

टामस ने कहा, तुम भी जैसे, वीर क्या आठो पहर वीर ही रहता है! नहीं-नहीं। वह लड़ाई में वीर और दूसरे क्षेत्र में हम जैसा आम आदमी

होता है।

और वारेन हेस्टिंग्स को ओल्ड पोस्ट आफिस के मोड़वाले मकान में देखा था, अभी जहाँ मिसेस फे नाम की अंगरेज महिला ने कपड़े की दूकान खोली है। अचानक वह मुझे अंगरेज किरानी-सा लगा। जाना तो भागकर जान बची।

कैरी को कौतूहल हुआ। पूछा, भाग क्यों गए? वह क्या बड़ा रूढ़ व्यवहार करता था?

नहीं-नहीं, यहाँ के लोगों से वारेन हेस्टिंग्स सदा मधुर व्यवहार करता था। लेकिन बता दूँ डाक्टर कैरी, हमारे जाने-माने कूटनीतिज्ञ चाणक्य कह गए हैं, राजपुरुष से सौ हाथ दूर ही रहना चाहिए। कोई राजपुरुष कहीं कह बैठे कि मुंशी, तुम्हारा मुखड़ा बड़ा सुन्दर है, तो उसी वक्त घर जाकर सर घुटवा लूँगा — जहाँ तक बनेगा, शक्ल को बदसूरत बना लूँगा।

उसकी बात पर कैरी और टामस हँस पड़े। हँसने से कैरी के ऊपरवाले दो अधटूटे दाँत दिखाई देते।

और सर फिलिप को? — कैरी ने पूछा।

उसे अदालत मे विचार करते समय देखने का मौका मिला था।

वे क्या थे, जज या कौंसुल?

दोनों में से कुछ नही थे, थे मुजरिम।

मुजरिम! इतने बडे आदमी? — कैरी ने अचरज किया — कसूर क्या था?

आप जैसे धर्मप्राण व्यक्ति को वह सब सुनना नहीं चाहिए।

टामस को सब कुछ मालूम था। वह मुस्कुराया।

आ गए काल कोठरी के पास — राम बसु ने कैरी का ध्यान आकर्षित किया।

इतिहास मे बदनाम वह काल कोठरी उपेक्षित पड़ी थी — बेमरम्मत। किवाड़ को खोलकर अंदर दाखिल होते ही एक अजीब गंध तीनों की नाक में घुस गई — उसके बाद कई चमगादड़ माथे के ऊपर से डैना फड़-

फड़ाते हुए बाहर को उड़ गए। आँखें जब अँधेरे से अभ्यस्त हो गईं, तो नजर आया, एक कोने मे चूना-सुरखी का ढेर पडा है, कुछ लोहा-लक्कड़ रक्खा है।

टामस बोला, अब यह गोदाम बना दिया गया है।

सीखचोवाली वह जो ऊँची खिड़की है, उसी मे से नवाब के सिपाहियों ने कैदियो को पानी दिया था। — यह कहकर खिडकी की तरफ ताकते ही राम बसु ने कहा, इस्, सर्वनाश ! आइए, आइए, बाहर आ जाइए।

उसने हाथ पकड़कर कैरी को बाहर कर लिया, पीछे-पीछे टामस भी आया।

क्यों, क्या हो गया ?

मधुमाछी का छत्ता है बहुत बडा। मधुमाछी उडने लगी थी। कहीं पीछा करे तो दूसरी काल कोठरी ! उससे अच्छा है, चलते-चलते मैं इस पुराने किले का इतिहास, जितना जानता हूँ, आपको बता दूँ।

इस सदी की शुरुआत मे इस किले की नीव पड़ी। सारा किला ईंट का बना है। एक तरफ वह तालाब और दूसरी तरफ गंगा — गोकि अब गंगा को दूर हटाकर वहाँ पर राह-घाट और मकान बनाए गए है। उस समय कंपनी के सारे दफ्तर, गोदाम, फैक्टरी और किरानियो के रहने की जगह इसी के अंदर थी। खुद गवर्नर साहब भी यही रहते थे — नाम को ही लेकिन।

क्यों, नाम को ही क्यों ?

रहने को वे किले के बाहर दक्खिन-पच्छिम कोने पर के बड़े मकान मे रहते थे, आज वहाँ कस्टम विभाग का दफ्तर है।

उसने फिर कहना शुरू किया, डा० कैरी, वह जो बडा-सा हाल देख रहे है, सेंट जॉन गिरजा बनने के पहले वही प्रार्थना-घर के काम आता था।

टामस ने कहा, वहाँ औरतों को पालकी से उतरने मे बड़ी असुविधा होती थी। एक दिन बारिश हो रही थी, गवर्नर की पत्नी पालकी

से आई । उतरने लगीं । जानें कब उनका स्कर्ट काँटे में फँस गया था । पूछिए मत, एक शर्मनाक स्थिति । उसी दिन निश्चय किया गया, ऐसे काम नहीं चलेगा । जैसा भी बन सके, शहर में गिरजा बनाना होगा । प्रार्थना के बाद ही चंदे का आग्रह किया गया ।

बातें करते-करते वे किले से बाहर आ गए और उतना-सा रास्ता पार करके टैंक स्क्वायर में दाखिल हुए ।

टैंक स्क्वायर या लालदीघी

रामराम बसु ने कहा, डा० टामस, छुटपन में एक बार यहाँ नारंगी चुराते वक्त मै बारवेल साहब के चपरासी से बुरी तरह खदेड़ा गया था । बस पकडा था समझिए । मै तो एक ले-दो ले पार । मगर पार्वती भाई की जो दुर्गति हुई कि मत पूछिए । पार्वती शुरू से ही थोड़ा मोटा-सोटा रहा है । जब भागने का कोई उपाय न रहा, तो वह पानी में कूद गया और जाकर उस पार में निकला ।

कैरी ने पूछा, यहाँ नारगी के पेड थे ?

हाँ । सिलहट से पौधे मँगवाकर रोपे गए थे । और भी बहुत तरह के फल-फूल के पेड़ थे ।

कैरी ने पूछा, तो अब ऐसी उजाड़ हालत क्यों है ?

उस समय, यानी कंपनी के राज में यही टैक स्क्वायर ही मेम-साहबों के हवा खाने की जगह थी, इसीलिए इस जगह को सजाकर रक्खा था । प्लासी की लड़ाई के बाद साहब-सूबे शहर मे चारो तरफ फैल गए । चाँद-पाल घाट के पास जहाँ दलदल और जंगल था, जहाँ सुन्दर एसप्लेनेड बना दिया । इसीलिए इस जगह पर अब उतना ध्यान नहीं है ।

टामस ने कहा, यहाँ सिर्फ हवाखोरी की ही जगह न थी, पीने के पानी का एक मात्र तालाब भी यहीं था ।

वह लेकिन अभी भी है।

कैरी ने पूछा, क्या यही पेय जल है ?

हाँ। साहब टोले का सब पानी यहीं से जाता है।

कैरी ने कहा, यह क्या रहे हो ? वह देखो, दो कुत्ते उतर रहे हैं उसमे !

कुत्ते ! अजी मौका मिलता है तो लालबाजार के कोचवान इसमें अपने घोड़ो को नहलाते हैं। उधर देखिए, मशक मे साहबो के लिए पानी ले जाया जा रहा है।

तीनों ने गौर किया, पूरब के घाट पर लोग नहा रहे है, भिश्ती पानी भर रहा है।

सुरखी बिछे लाल रास्ते से वे लालदीघी के उत्तर से पूरब की तरफ चले।

कैरी ने पूछा, उत्तर का वह लंबा-सा मकान क्या है ?

उसका नाम राइटर्स बिल्डिंग है। निचले हिस्से मे कम्पनी का दफ्तर है। दुमंजिले पर नए आए राइटर्सो का वासस्थान है। और वह पूरब में जो दिख रहा है, वह है ओल्ड मिशन चर्च।

वही क्या शहर का सबसे पुराना गिरजा है ?

सबसे पुराना गिरजा तो मुर्गीहाटा मे है। उसे आरमेनियन गिरजा कहते हैं। एक और भी पुराना गिरजा था राइटर्स बिल्डिंग के पश्चिम-उत्तर कोने पर। नाम था उसका सेंट ऐन्स चर्च। इस इलाके मे एक वही गिरजा था — किले के ठीक सामने।

वह क्या हो गया ?

सिराजुद्दौला ने जब कलकत्ते पर चढाई की थी, तो तोप के गोले से वह टूट गया था। दिनों तक उसी हालत मे पड़ा रहा। उसके बाद मलवे को हटाकर स्थान को साफ कर दिया गया।

और वह ?

वह है सेंट ऐंड्रूज चर्च। महज पिछले साल तैयार हुआ है।

उसके पहले वहाँ क्या था ?

वहाँ मेयर का ऑफिस था, अदालत थी। उसी अदालत मे महाराज नंदकुमार का विचार हुआ था।

कैरी ने कहा, देखो टामस, प्रभु ईसा की महिमा देखो, अदालत के ऊपर गिरजा का शिखर खड़ा हुआ !

टामस बोला, राइटर्स बिल्डिंग के उत्तर एक बड़े-से मकान मे लार्ड क्लाइव रहता था। वह अभी भी खाली पड़ा है। उसी के पास पुराना थिएटर और सर फिलिप फ्रांसिस का पहला वासस्थान था। चलिएगा उधर ?

कैरी ने कहा, अब आज नही। चलिए, लौटें। मिसेस कैरी बड़ी देर से अकेली हैं।

तीनों ओल्ड कोर्ट हाउस स्ट्रीट पार करके गाड़ी के पास पहुँचे। गाड़ी पर बैठते ही कैरी-पत्नी बोली, शुक्र है कि आखिर लौटे। इतना क्या दर्शनीय था ?

प्रभु की महिमा देख रहा था। चारों तरफ गिरजे खड़े हो रहे हैं।

प्रभु की महिमा तो गाड़ी पर बैठे-बैठे भी देख सकते थे। आइन्दे जब प्रभु की महिमा देखने निकलोगे, मुझे घर ही छोड़ आना।

गाड़ी चल पड़ी।

टामस ने कहा, दाहिने पुराना जेलखाना था। अब टाली के नाले के पास चला गया है।

कैरी ने पूछा, इस रास्ते का नाम क्या है ?

यह है ऐविन्यु। सबसे पुराना रास्ता। किले के फाटक से सीधे बैठकखाना के बड़े बरगद तक चला गया है, उसी के नीचे है मशहूर मराठा डिच ! उसके बाद ही मार्शलैंड।

बाएँ चितपुर और दाएँ कसाईटोला — गाड़ी एविन्यु होकर जाने लगी।

बियर की बोतल की लड़ाई

जॉन स्मिथ की गाड़ी गंगा के किनारे, नया किला और एस्प्लेनेड होकर जब सेंट जॉन गिरजे के पास पहुँची, तो देखा, कैरी की गाड़ी वहाँ नहीं थी। जॉन का ख्याल था, यहाँ से सब साथ ही लौटेंगे। लोगों से पूछताछ करने पर पता चला, एक कोई गाडी यहाँ थी तो बड़ी देर तक, कुछ ही देर पहले चली गई। यह सुनकर जॉन ने कोचवान से कहा, पुराना किला होकर ऐविन्यु की ओर चलो।

गाड़ी जब लालदीघी के उत्तर की ओर आई, तो गाडी पर से इन लोगों ने देखा, राइटर्स बिल्डिंग के छज्जे पर कुछ गोरे जवान रेलिंग पकड़े खड़े हैं और नीचे के लोगों का जाना-आना देख रहे हैं।

जॉन ने केटी से कहा, ये सब बच्चा नवाब हैं।

केटी ने कहा, मतलब ?

कम्पनी के राइटर हैं, इंगलैंड से ताजा आए हैं। अभी इनकी नवाबी की ट्रेनिंग पूरी नहीं हुई है। ट्रेनिंग पूरी होते ही ये पूरे नवाब बन जाएँगे और देश पर हुकूमत करने लगेंगे।

उसके बाद अपने ही आप मानो आक्षेप करते हुए कहा, इनके आचरण से इस देश में इंगलैंड के सुनाम को आँच आ रही है।

केटी ने पूछा, ये सब यहाँ क्यों हैं ?

ये ऊपर रहते हैं। नीचे में इनका दफ्तर है।

केटी बोली, अभी भी रात ही की पोशाक पहने हैं।

फिर इन्हें नवाब क्यों कहा ! ये सब इसी पोशाक में दफ्तर जाएँगे। पोशाक बदलेंगे डिनर के पहले। उनके लिए दिन का श्रेष्ठ कर्तव्य यही है।

इतने में उन श्वेतांग युवकों ने इन लोगों को देखा। पहले तो इसने उनको इशारे से गाड़ी दिखाई, उसके बाद सबने उल्लास का शोर किया। ऐसा शोर बीस से नीचे और पचीस से ज्यादा उमरवालों से संभव नहीं। उनके उल्लास की काफी वजह थी। गोरी युवतियों के अकाल की स्थिति

में एक साथ दो गोरी सुन्दरियाँ अचानक ऐन दरवाजे पर दिख जाएँ, तो ऐसे खुश न हों, ऐसे युवकों का अस्तित्व इंगलिश चैनेल के पश्चिमवाले टापू में संभव नहीं। इस शोर से कुछ और लोग कमरे से बाहर निकल आए — अब उनकी तादाद पन्द्रह के करीब हो गई। केटी और लिजा को लक्ष्य करके किसी ने आवाज दी — स्वीटी, किसी ने चीखकर कहा, डार्लिंग।

केटी और लिजा ने मन में कौतूहल का अनुभव किया। जॉन को भी बुरा नहीं लग रहा था।

केटी सोचने लगी, युवक सौंदर्य का अर्घ्य उसी को चढा रहे है, गो-कि पास-पास दो युवतियाँ है। लिजा भी चुपचाप ठीक यही बात सोच रही थी। वह सोच रही थी, दरअसल केटी उपलक्ष्य है, लक्ष्य वास्तव मे मैं ही हूँ।

इतने मे हँसी और इशारा छोडकर एक युवक ने कविता की शरण ली। वह गाने लगा —

देअर'ज नो लेडी इन दि लैंड
हाफ सो स्वीट ऐज सैली;
शी इज दि डार्लिंग ऑव माइ हर्ट,
ऐंड शी लीव्स इन आवर ऐली।

मित्रों ने जोरों से हँसकर उसकी ताईद की —

बट व्हेन माइ सेव्न लौंग इयर्स आर आउट
ओ दैन आइ'ल मैरी सैली,
ओ दैन वी इल वेड, ऐंड दैन वी इल बेड,
बट नॉट इन आवर ऐली।

गीत के साथ उनके प्रशिक्षण के जीवन का तात्पर्य मिल गया, इसलिए मित्रगण खूब जोर से हँस पडे।

लेकिन गीत के अर्थ ने जॉन को नाराज कर दिया। वह पावदान पर खड़ा हो गया और धमकी दी। इसका नतीजा ठीक उलटा निकला। उनका गाना तो नहीं ही रुका, बल्कि दूसरे ही कछार मे बहने लगा, जिसके

एक किनारे था व्यंग, दूसरे किनारे छिपी हुई लालसा।

एक युवक ने भंगिमा और मुद्रा बनाकर शुरू कर दिया —

ओ लवली सू
हाऊ स्वीट आर्ट दाऊ,
दैन सुगर दाऊ आर्ट स्वीटर,
दाऊ डस्ट ऐज फार
ऐक्सेल सुगर
ऐज सुगर डज साल्टपिटर...

इस अप्रत्याशित और समयोचित काव्य-स्फुरण ने हँसी का फव्वारा फूट पड़ा। सब एक साथ गा उठे — ऐज सुगर डज साल्टपिटर....

अब तो जॉन ने साक्षात जॉनबुल का रूप धारण किया और मुक्का मारने, घूंसा मारने का इशारा करने लगा। और दूसरी तरफ से चुम्बन फेंकने का इशारा होने लगा। साथ-साथ—

वन फॉर दि मास्टर, वन् फॉर दि डेम
वन् फॉर दि लेम मैन हू लीव्स बाइ दि लेन।

केटी और लिजा शर्मिंदा हो गई थीं। वे निरी अपराधिनी-सी चुप बैठी रहीं। लेकिन उनका मन चुप नहीं था। मन ही मन दोनों इसकी सारी जिम्मेदारी एक दूसरे के और जॉन के कंधे पर डाल रही थीं। उन युवकों को किसी ने एक बार के लिए भी दोषी नहीं सोचा। ऐसा न होता तो रमणी को विश्वासघातिनी हौवा की वंशज क्यों कहते!

चुंबन बरसाने के उस घिनौने इशारे को रोकने के लिए जॉन ने पाँव से जूता खोलकर ऊपर की ओर फेंका। उसके जवाब में गाड़ी के आस-पास बियर की दो-चार बोतलें आकर गिरीं। अब समाधान का भार अपने ऊपर लेकर कोचवान ने घोड़े को चाबुक लगाया। गाड़ी भागी, भागती हुई गाड़ी के सवारियों के कान में युवकों का सम्मिलित स्वर पहुँचा —

रिटर्न एगेन फेयर लेसली,
रिटर्न टु लॉल डिगो!

दैट वी मे ब्रैग वी हे ए लैस,
देअर'ज नन एगेन से वोनी।

. क्रोध और अपमान से जॉन थक गया था, वह बैठा-बैठा गुर्राता रहा। बालक फेलिक्स को यह एक तमाशा-सा लग रहा था। केटी और लिजा भी क्षुब्ध थी, जॉन के प्रति समवेदना हो रही थी उन्हें। किंतु इसके बावजूद अस्तित्व की गहन गहराई के केन्द्र कैसे तो जरा तीखे सुख की अभिज्ञता का अनुभव हो रहा था। उन युवकों का व्यवहार बडा अभद्र था, किंतु उस अभद्रता की जड मे लंबे उपवास की भूख थी। उस भूख की चीख से ऊबने से कैसे चलेगा। उनकी भूख की कीमत चुकाओ। भूख किस चीज की ? नारी की। कौन-सी नारी ?

केटी सोच रही थी, वह नारी और चाहे जो हो, लिजा हर्गिज नही है। लिजा भी ठीक यही सोच रही थी, और चाहे जो हो वह, केटी नही है।

नारी-समाज मे नारी बंधुहीन होती है, क्योकि संसार की सभी नारियाँ उसकी प्रतिद्वंदिनी होती है, चाहे वह कन्या हो, चाहे माता। और पुरुष समाज मे भी वह अकेली होती है, इसलिए कि पुरुष को वह बंधु रूप में यानी समान-समान पाने की कल्पना से कभी तृप्ति नही पाती। आलिंगन मे बँधे पुरुष से वह पूछती है, तुम मेरे हो ? नारी-जीवन की गहरी अभिज्ञता की प्रेरणा से वह कहता, हूँ, मै तुम्हारा हूँ।

अब तक कुछ छोकरे टैंक स्क्वायर मे दूर खड़े इन साहबों की हरकत देख रहे थे। अब जब भागती हुई गाडी कुछ दूर चली गई तो उन्होंने जुमला कसा —

हाथी पर हौदा घोड़े पर जिन
जल्दी जाओ, जल्दी जाओ वारेन हेस्टिन।

गाड़ी कसाईटोला-चितपुर के मोड़ पर पहुँची कि लिजा ने कहा, जॉन, अब लौट चलो।

जॉन ने कोचवान से वैसा ही कहा। गाड़ी चौरंगी की ओर चल पड़ी। डेवीज डेंटी की दूकान के पास पहुँचते ही लिजा ने कहा, गाड़ीवान, रोको।

गाड़ी रुकी। वह बोली, कुछ केक के लिए कह जाना है। मिस प्लैकेट, उतरो न। देख लो। काम आएगा।

केटी और फेलिक्स उतरकर लिजा के पीछे हो लिए। बहुत कहने के बाद भी जॉन नही उतरा। वह जैसे बैठा था, बैठा रहा।

दि ऐविन्यु

कैरी साहबवाली गाडी जैसे ही कमाईटोला के मोड पर पहुँची, कैरी आश्चर्य से बोल उठा, यह क्या !

टामस ने कहा, परसो दो फिरंगियो को फाँसी पडी थी, उन्ही की लाश झूल रही है।

ऐसे कै दिनो तक झूलती रहेगी ?

और भी चार-पाँच दिन। जब लाश सडने लगेगी, बदबू फैलना शुरू होगा, तब हटा दी जाएगी।

कैरी ने जैसे अपने ही तई कहा, यो खुले आम फाँसी देना मनुष्योचित काम नही है।

मिसेस कैरी इस तुनुक मे बोली, जिसकी उम्मीद न थी — आखिर अन्याय क्या हुआ ? ये खुले-आम खून-फसाद करें और इन्हे फाँसी छिपाकर दी जाए ? फिर लोगो को सबक क्या मिलेगा ?

कैरी ने कहा, कहने को दोनों पक्ष के लिए बहुत कुछ है, यह मानता हूँ, किन्तु यह काम ईसाइयो के लायक नही।

अपना धर्मोपदेश अपने पास रखो। डाक्टर टामस, यह रिवाज बड़ा स्वास्थ्यकर है। अब कभी किसी की फाँसी हो, तो बताना मुझे, मैं जरूर देखने आऊँगी।

गाड़ी ऐविन्यु सडक पर चल रही थी। दोनो किनारे बडे-बडे मकान, ज्यादातर दुमंजिले। इकतल्ले भी कम न थे। ज्यादातर मकान श्वेतांगों के।

कैरी ने कहा, मुहल्ला फैशनेबुल लगता है।

टामस ने कहा, जी। चौरंगी के बाद यह मुहल्ला फैशनेबुल है। हाँ, गार्डेनरिच और अलीपुर की बात जुदा है। वे मुहल्ले कांचन-कौलीन्य के स्वर्ग है।

कैरी ने देखा, इतना दिन चढ आने के बाद भी उन मकानो के रहने-वालों ने रात की पोशाक नहीं बदली। बहुतेरे तो बरामदे मे जोर-जोर से चहल-कदमी करते हुए नींद की खुमार तोड़ रहे थे।

रास्ते के दोनों ओर मकानो की अटूट कतार हो, सो नही। बीच-बीच में परती-जंगल भी थे जहाँ-तहाँ। दाई ओर थोडी-सी वैसी जमीन देखकर कैरी ने कहा, यहाँ मजे मे एक गिरजा बन सकता है।

मिसेस कैरी ने कहा, पहले मुझे डेरे पहुँचा दो, फिर जितना चाहो गिरजा बनवाते रहो।

कैरी ने कहा, डेरे ही तो लौट रहा हूँ।

गाड़ी जितना ही पूरब की ओर बढ़ने लगी, उतना ही मकानों की संख्या घटने लगी और परती जमीन का परिमाण बढ़ने लगा।

ऐसे में एक गीदड रास्ते के इस पार से उस पार चला गया। मिसेस कैरी ने कहा, वह देखो, भेड़िया!

कैरी ने कहा, नही डियर, वह गीदड है।

उँहूँ, तुम मुझे दिलासा दे रहे हो, वह गीदड नही, भेड़िया है।

इसपर टामस, राम बसु और पार्वती तीनों ने एक साथ ताईद की, नही-नही, वह गीदड़ ही है।

लेकिन फिर भी सहज ही समस्या का हल नहीं हुआ। मिसेस कैरी बोल उठी, तब तो अब बाघ निकलेगा? मैने किताब में पढ़ा है, गीदड़ बाघ का अग्रदूत है। — कोचवान, गाड़ी तेज हाँको।

कुछ ही देर मे गाड़ी मराठा डिच के पास उस बरगद के नीचे जा पहुँची।

टामस बोला, मि० कैरी, यही है प्रसिद्ध मराठा डिच।

मराठों के डर से खोदी गयी थी, क्यों ?

हाँ।

यह खुदाई क्या कलकत्ते के चारों ओर की गई है ?

चारों ओर खोदने की बात थी, लेकिन बीच ही मे मराठों के हंगामे थम गए। यह जानबाजार रोड तक होकर ही रह गई।

और यह रास्ता ?

टामस ने कहा, यह नहर के पश्चिम मे बराबर चला गया है। खुदाई की जो मिट्टी निकली, उसी से बना। सुबह-शाम टहलनेवालो की यहाँ भीड़ होती है।

बाप रे, कितना बड़ा पेड़! — कैरी ने कहा।

यह भारत का मशहूर बनियान ट्री है। कलकत्ते पर हमला करते वक्त नवाब सिराजुद्दौला यही से बैठकर देखता था। वह देखिए, किले का फाटक दिखाई दे रहा है।

सबने देखा, किले का फाटक सीधा दिख रहा है। बरगद और किले का फाटक आमने-सामने बना है।

टामस ने कहा, लेकिन अब लौटना चाहिए। मिसेस कैरी बहुत थक गई हैं।

कैरी बोला, मै भी यही कहना चाह रहा था। चलिए, लौट चलें।

गाड़ी जरा और दक्खिन जाकर जानबाजार रोड से चौरंगी की तरफ मुड़ी।

मगर जॉनवाली गाड़ी किधर गई ?

मिसेज कैरी ने कहा, वे आखिर ईसाई प्रचारक तो हैं नही, निश्चय अब तक घर पहुँच गए होंगे।

सब कोई समझ गए कि कारण चाहे जो हो, मिसेस कैरी का मिजाज आज ठीक नहीं है। लिहाजा किसी ने और कोई बात नही छेड़ी। गाड़ी जानबाजार रोड से गोपी बसु बाजार के पास से जब चौरंगी रोड पर पहुँची, तो सबने देखा कि —

कैरी का आविष्कार

पहियोंवाला काठ का एक बहुत बड़ा पिंजड़ा है, जिसे देशी और फिरंगी सिपाही खींचकर चौरंगी रोड के सामने से दक्खिन की ओर लिए जा रहे हैं। पीछे है एक ढोलवाला। वह बीच-बीच मे ढोल पीटता जाता है। सभी उम्र के लोगो की एक भीड़-सी लग गई है, जैसी भीड़ कि सड़क पर ऐसे वक्त लग जाया करती है।

यह भी नजर आया कि उस पिंजडे के अंदर दस-बारह साल का एक लड़का बैठा है। फटे कपड़े, मैला चेहरा। लेकिन चेहरे का भाव सप्रतिभ। उसकी शक्ल देखकर यह लग रहा था कि अपने लिए किए गए इस आयोजन से वह मानो खासा गर्व अनुभव कर रहा है। उसके चेहरे पर कौतुक, कौतूहल और गौरव-बोध एक ही साथ फूट पड़ा था।

कैरी ने पूछा, यह क्या माजरा है ?

टामस ने कहा, मुजरिम है। किसी अपराध के लिए दंड दिया जा रहा है उसे।

यह कैसा दंड है ? क्या कसूर किया है उसने ?

राम बसु ने कहा, शायद हो कि कुछ चोरी की हो, या कि किसी साहब का गुलाम रहा होगा, भाग गया था, पकड़ा गया।

कैरी ने पूछा, ठीक-ठीक मालूम नही किया जा सकता ? बड़ी उत्सुकता हो रही है मुझे।

क्यों नहीं ? — यह कहकर राम बसु ने उस ढोलवाले को बुलाया। साहब देखकर वह आया और झट एक लम्बा सलाम ठोका।

राम बसु ने कहा, साहब यह जानना चाहते है कि इस लड़के का कसूर क्या है ?

ढोलवाला बोला, हुजूर यह छोकरा मार्तुनी साहब का 'सिलेव' —

राम बसु ने समझाया — सिलेव यानी स्लेव — गुलाम।

ढोलवाला कहता गया, साहब ने इसे बीस रुपए में खरीदा था। मगर

इस कम्बख्त ने बीस पैसे का भी काम नहीं किया और भाग गया। कल पकड़ लिया गया।

तो ? साहब की ओर से राम बसु ने पूछा।

अब जो देख रहे हैं, वही। इसे सारे शहर में घुमाया जाएगा, उसके बाद पीठ पर पच्चीस कोड़े लगाए जाएँगे, उसके बाद फिर उसे मार्तुनी साहब के खानसामा के जिम्मे किया जाएगा।

उसके बाद ?

उसके बाद क्या, बस।

सब सुनने के बाद कैरी की आँखें छलछला उठीं। कहा, ब्रदर टामस, कैसी भयानक स्थिति है!

टामस इस स्थिति से जमाने से परिचित था। बोला, ऐसा तो जाने कब से होता है।

लेकिन अब इसे एक दिन को भी नहीं चलने देना चाहिए।

टामस ने कहा, ईसाई धर्म के प्रचार से यह नृशंसता आप ही कम हो जाएगी।

लेकिन इस बेचारे की पीठ पर तो पहले ही बीस कोड़े पड़ जाएँगे।

बेशक पड़ेंगे। ये शैतान हैं। — मिसेस कैरी बोली।

कह क्या रही हो डोरोथी, उस सुकुमार चमड़े पर पचीस कोड़े पड़ेंगे तो रह क्या जाएगा ?

शैतानी के सिवाय बाकी सब कुछ रहेगा।

तुम बड़ी बेरहम हो डोरोथी।

इसका कारण है कि संसार में शैतान बेहिसाब है। खैर, रास्ते में धर्मतत्त्व बघारने की इच्छा नहीं। घर चलो।

कैरी ने कहा, नहीं, इस लड़के का कोई एक ठिकाना किए बिना मैं नहीं लौट सकता। अच्छा मि० मुंशी, कोई बीस रुपए चुका दे तो इस लड़के को पा नहीं सकता ?

यहाँ का तरीका सबको मालूम था। बोले — जरूर पा सकता है।

तो फिर कोशिश कर देखो।

ढोलवाले के साथ पुलिस का एक अफ़सर था। उसने कहा, बीस रुपए दे देने पर वह लड़का आपको मिल जाएगा। अभी।

उसके मालिक की अनुमति की जरूरत नही?

अफ़सर बोला, उनकी अनुमति हुई-हवाई है। साहब इस छोकरे को रखना नही चाहते।

ढोलवाला बोला, जी, छोकरा बड़ा भारी बदमाश है। भूलकर भी ऐसा काम न करें हुजूर, यह पित्त पानी कर छोड़ेगा आपका।

इससे विचलित न होकर जब कैरी रुपए निकालने लगा, तो मिसेस कैरी क्रोध, विस्मय और खीज से चीख उठी — तुम क्या सच ही इसे खरीद रहे हो?

डोरोथी, खरीदना कहना उचित नहीं, मनुष्य के बारे में खरीदना-बेचना शब्द का प्रयोग खीस्टानोचित नहीं। मैं उसको मुक्ति दिलाना चाहता हूँ।

ठीक तो है, दिलाओ मुक्ति। मगर दया करके इसे घर मत ले जाना।

तो और कहाँ रहेगा?

मगर किस घर मे ले जाओगे। अपना घर तो है नहीं तुम्हें।

आज नहीं है। कल हो जाएगा।

लेकिन वहाँ यह रहेगा तो मै नहीं रहूँगी, यह भी जान लो।

आखिर क्यों?

यह साक्षात् जानवर है। मेरे जैबेज को खा डालने में इसे क्या लगेगा?

खैर, वह देखा जाएगा। कैरी ने पुलिस अफसर को बीस रुपए दे दिए। उसने एक रसीद लिखकर दी और उस छोकरे को छोड़ देने का हुक्म दिया।

पिंजड़े का दरवाजा खुला कि वह छोकरा, जो अब तक के इतने

झमेलों का मूल था, उछलकर बाहर निकल आया और अजीब ढंग से लटके पढने लगा। उसको भाव-भंगी देखकर सब हँस पड़े।

वह समझ गया था कि अब वह मार्तनी साहब के बदले इस नए साहब का 'मिलेत्र' बन गया है। वह कैरी के सामने आया। लम्बा सलाम बजाकर बोला, हुजूर, बन्दा हाजिर है। जो हुक्म हो।

और किसी हुक्म का इंतजार किए बिना ही गाना शुरू कर दिया —

अरे ओ, कैसा रथ आया ?
अंग-अंग में काठी, चक्का घर घर घरर घुमाया !
खड़ा सामने दो घोड़ा है
और मुंहजला शिखर पड़ा है
बीच बना वनमाली, चामर घंटा की क्या माया !
अंकित चारों ओर देवता
खींचे से चक्का है चलता।
आगे-पीछे छाता-पंखा, रूप अजीब बनाया।

और फिर बोल उठा, उँह, बैठे-बैठे पांव जम गए हैं। जरा झाड़ लूं।

उसने नाचना शुरू कर दिया। मौका देखकर ढोलवाले ने साथ दे दिया। फिर क्या था, गीत, बाजा, नाच, कुछ का भी अभाव नहीं रहा। रथयात्रा के अनसोचे अंजाम से जनता भी खुश हो उठी — वाह भई, जरा घूमके ! ढोलवाले, जरा जमके। वाह छोकरे, क्या कहने ! तरह-तरह से वाहवाही देने लगे सब।

गाना बन्द हुआ तो कैरी ने कहा, छोकरा बड़ा स्मार्ट है।

टामस बोला — पक्का उस्ताद है।

मिसेज कैरी मुँह घुमाए बैठी रही, मानों इसमें साथ न देने की प्रतिज्ञा कर ली हो।

राम बसु ने पूछा, अबे छोकरे, नाम क्या है तेरा ?

दादा, शक्ल से आप बुद्धिमान लगे थे। नाम-धाम सब तो खोलकर बताया। समझ नहीं सके ?

कैसे ?

कहा, खड़ा सामने है दो घोड़ा — मानो यह दोना सिपाही। शिखर पर मुँहजला — मतलब कम्पनी का निशान। और चामर-घंटा के बीच बना वनमाली — यह कहकर उसने अपने को दिखा दिया।

ओ, तो तेरा नाम वनमाली है ?

जब तक रथ पर सवार था, यही था। अब जो जी चाहे, कहो। मैं कम्पनी के पास नालिश नहीं करूँगा।

घर कहाँ है ?

अब तक रथ पर था, उससे पहले मार्तुनी साहब के यहाँ और अब राह पर। और इसके बाद शायद इस साहब के यहाँ होगा।

इसका मतलब कि तुझे अपना घर-द्वार नहीं है ?

आप भी जैसे ! जिसे इतना घर है, उसके भला घर नहीं !

कैरी उनकी बातें समझ नहीं सका। राम वसु से पूछा, क्या कह रहा है ?

कह रहा है, मेरे न तो घर है, न नाम ही।

कैरी ने कहा, इसका नाम रख दिया फ्राइडे। आज फ्राइडे है न ! और घर ? मेरे घर में।

कैरी का कहना सुनकर मिसेस कैरी ने साफ कह दिया, तो इसी को लेकर रहो। मैं इस जानवर के साथ हर्गिज नहीं रहूँगी।

पत्नी और पति का गृह-कलह शुरू हुआ, यह देख राम वसु ने कहा, आप इसकी चिंता न करें, मैं इसे अपने घर ले जाऊँगा।

एक उलझी हुई समस्या का इतना सहज समाधान पाकर कैरी ने आभार मानते हुए कहा, मुंशी जी, धन्यवाद।

राम वसु ने कहा, बेला काफी हो गई। तो मैं इसे लेकर अपने घर जाऊँ। क्यों पार्वती भाई, तुम भी चलो।

पार्वती चरण को कैसा तो लग रहा था। जैसे जान बची — हाँ, चलो।

राम वसु, पार्वती चरण और वह छोकरा — तीनों जने चल दिए। कैरी और उसकी स्त्री को लेकर गाड़ी बरियल ग्राउंड रोड चली।

रामराम वसु की दुनिया

रामराम वसु का निवास था डिंगीभांगा इलाके मे, पार्वती चरण का कलिंगाबाजार के पास। पड़ोसी ही कहिए।

राम वसु का जन्म सम्भवत. १७५७ साल मे हुआ। 'राजा प्रतापादित्य चरित्र, की भूमिका मे उसने लिखा है — "मै उनको (प्रतापादित्य को) निज श्रेणी का हूँ, एक ही जाति का।" इसलिए उसे वंगज कायस्थ माना जा सकता है। इसके सिवा प्रचलित जीवन-कहानी मे उसका जन्म-स्थान चुंचुडा और शिक्षास्थल २४ परगने का निमता गाँव कहा गया है।

अभी निवास कलकत्ता। अंग्रेजों की मुंशीगीरी करके काफी दौलत, नाम और सामाजिक प्रतिष्ठा कमाई। महाराजा नवकृष्ण शायद इसके सबसे अच्छे उदाहरण हैं। वे कम ही उम्र मे वारेन हेस्टिंग्स के मुंशी हुए, उसके बाद क्लाइव के। इन दो धुरंधर साम्राज्य कायम करनेवालो की कृपा और अपनी बुद्धि के बल से मुंशी नवकृष्ण अंततः महाराज होकर कलकत्ते के श्रेष्ठ व्यक्ति गिने गए।

राम वसु ने भी अंगरेजो की मुशीगिरी कम ही उम्र मे हासिल की थी, लेकिन जमीदारी या पदवी उसे नसीब न हुई। उन चीजों की उसे चाह नही थी, ऐसी बात नही, असल मे वह जिस-जिसका मुंशी हुआ, उनमें से कोई राजपुरुष नही था, लिहाजा उसे भी राजगी नहीं मिली। मूल पेड़ की ऊँचाई पर ही शाखा की ऊँचाई निर्भर करती है।

राम वसु को राज-सम्मान जरूर नही मिला, लेकिन और तरह का यश और अमरता उसने पाई — यह कहानी उसका प्रमाण है। फारसी और बंगला भाषा पर उसे अच्छा अधिकार था। सन् १७८३ मे टामस नाम का एक मिशनरी यहाँ आया। देश की हालत देखकर उसे लगा, यहाँ ईसाई धर्म का प्रचार करना चाहिए। वह उस समय तो अपने देश लौट गया और फिर १७८६ साल में धर्म प्रचार के लिए यहाँ आया। लेकिन उसने अनुभव किया, धर्म प्रचार में सबसे बड़ी बाधा भाषा की है। उस समय विलियम

चैंबर्स सुप्रीम कोर्ट का दुभापिया था। चैंबर्स ने टामस को राम वसु से मिला दिया। यह बात सन् १७८७ साल की है। इस साल से अपने मरने के साल — १८१३ — तक वह किसी न किसी मिशनरी के साथ रहा। अब यह बात समझ मे आ जाएगी कि साहबों की इतने दिनो तक मुशीगिरी करने के बाद भी राम वसु को धन, मान, प्रतिष्ठा क्यों नहीं मिली। मिशनरी लोग धन-मान के लिए नहीं आए थे। सो उनके संगी को भी वह चीज नसीब न हुई।

इस समय से राम वसु का इतिहास मिशनरियों का इतिहास है — उसकी राह, उसकी गति-विधि मिशनरियो की राह और गति-विधि है। और उस इतिहास का अंत राम वसु की मृत्यु से नही हुआ, अगली पीढ़ी तक चला।

हितैषियों की सलाह से सन् १७८७ मे टामस मालदा गया। कंपनी की रेशम कोठी के कमर्शियल रेसिडेंट थे जॉर्ज उडनी। उसे भी धर्म प्रचार का आग्रह था। टामस उसी के साथ रहने लगा, राम वसु से बंगला और फारसी सीखने लगा, मौके से धर्म प्रचार के लिए घूम-घूम-कर भाषण देने लगा। राम वसु को उसके साथ-साथ घूमना पड़ता।

राम वसु के साथ रहते-रहते टामस को लगा, यह आदमी सिर्फ विद्वान ही नही है, इसका मन भी मानो धीरे-धीरे सत्य धर्म की ओर झुक रहा है। बातचीत में वसु बाइबिल का जिक्र करता, ईसा का गुण गाता। टामस को लगा, थोड़ा-सा और ऐसा हो तो उसे पहला ईसाई बनाने का गौरव मिलेगा। कहना फिजूल है कि यह गौरव किसी को न मिल सका, वसुजा ने अपने ही धर्म की गोद मे शरीर छोड़ा। वसु बीच-बीच में मसीही गीत रचकर टामस की आशाग्नि को उसका देता था, लेकिन संयम ऐसा था उसे कि आशाग्नि को कभी चिताग्नि में नहीं बदला उसने। मार्ग-भ्रष्ट राम वसु मिशनरियों के बदले कहीं वारेन हेस्टिंग्स या लार्ड क्लाइव के साथ जुट गया होता, तो बंगाल के अभिजात समाज को और एक राजा-महाराजा की पदवी का गौरव मिलता। लेकिन प्रतिभा शक्ति ही कुछ ऐसी होती है कि

मार्ग-भ्रष्ट होने पर भी लकीर खींच लेना नही भूलती। राम वसु की प्रतिभा ने भी अपनी लकीर खीची — बंगला गद्य रचना रीति की लकीर।

सन् १७९२ मे टामस इंगलैंड लौट गया, लेकिन खाली हाथ नही लौटा, साथ ले गया राम वसु रचित खीस्ट महिमा संगीत। और उस संगीत, राम वसु के ईसाई होने-होने के मनोभाव, उसके अगाध पांडित्य, तर्क में ब्राह्मणों को हराने की उसकी असाधारण कुशलता ने आशा-छलना से वहाँ के एक मिशनरी समाज को ऐसा प्रबुद्ध किया कि उसने तुरंत विलियम कैरी नाम के एक पादरी को सपरिवार यहाँ भेजने का संकल्प किया। उसी प्रस्ताव के अनुसार परिवार सहित कैरी १३ जून १७९३ को वहाँ से चला और प्रिंसेस मैरिया नाम के जहाज से ११ नवंबर को चाँदपाल घाट में उतरा।

जानबाजार रोड के समानांतर पूरब की ओर वे तीनों जा रहे थे। वह छोकरा आगे-आगे और पीछे पास-पास राम वसु तथा पार्वती। पार्वती ने फुसफुसाकर कहा, बसुजा, ले तो जा रहे हो इसे, इसके बाद ?

इसके बाद जो रोज होना है, होगा।

लेकिन इस छोकरे के सामने ?

किसके सामने नही होता है ? एक आदमी और जानेगा, यही न ?

और एक भी क्यों जाने ? इसकी जिम्मेदारी लेने क्यों गए ?'

नहीं तो कैरी का गृह-कलह शुरु होना।

तुम्हारी ही खैर कहाँ ? सोच लो, अभी भी समय है।

नही भई, अब समय नही है। अब लौटाया नहीं जा सकता। और कही ज्यादा गड़बड़ी देखी, तो इसे टुशकी के हवाले करूँगा।

इस नन्हे नादान को टुशकी के यहाँ दे आओगे ?

उपाय भी क्या है, कहो ?

टुशकी राजी होगी ?

टुशकी को तुम नहीं जानते। जो लोग रात भर की आकांक्षा लिए उसके पास जाते हैं, उनपर उसे बड़ी घृणा है। इस निरीह छोकरे को पाकर उसकी जान मे जान आ जाएगी।

जान आ जाए तो ठीक ही है। मगर मै सदा तुम्हारी सोचा करता हूँ, किस सुख के लिए घर रहते हो?

घर रहता कहाँ हूँ। पादरियों के साथ ही तो घूमता रहा। फिर जब असह्य हो उठता है, तो टुशकी के यहाँ पड़ा रहता हूँ।

क्या, एक रात की आकांक्षा लिए?

नही भैया, अनेक रात की आकांक्षा लिए। मेरा हाल-वह बहुत कुछ समझती है।

तो मै अभी चलता हूँ। — पार्वती ने कहा।

कल आ रहे हो न साहब के यहां?

नही। तीन दिन के लिए बाहर जा रहा हूँ। लौटकर मिलूंगा। — यह कहकर पार्वती ने विदाई ली।

राम बसु ने छोकरे को करीब बुलाकर पूछा, अबे छोकरे, तुझे पुकारूंगा क्या कहकर?

उसने कहा, नाढ़ा कहना। याद आता है, बचपन मे शायद मेरा यही नाम था।

यानी? बचपन की बात क्या तुझे याद नहीं?

बहुत बातें हैं। फिर कभी बताऊँगा। लेकिन यह तो कहिए, इस कुबेर में ले जा रहे है, घरनी बिगड़ेंगी तो नहीं?

नहीं-नहीं, वह ऐसी है ही नही।

फिर तो गनीमत है। मगर मैने आप लोगों की बात जो सुनी!

सुन ली! तो फिर चल, देखना।

दो-चार मिनट के बाद ही एक तरफ एक गढैया और एक तरफ बँसबिट्टी — बीच की पगडंडी से चलकर दोनों एक होगला की छौनीवाले घर के सामने पहुँच गए। बाहर चार-पाँच साल का एक लड़का खेल रहा

था। वह चिल्ला उठा, माँ, बाबू जी आ गए।

भीतर से तीखी और काँसे-सी तेज आवाज मे उत्तर आया, मैं भी आई — तैयार ही थी।

दूसरे ही क्षण घुटने तक उठे मैले कपड़े मे एक दुबली-सी औरत निकल आई — हाथ मे उसके झाड़ू।

लेकिन एक दूसरे आदमी को देखकर उसके रोज-रोज के अभ्यस्त कार्य मे बाधा पडी। काँसे के कटोरे-सी खनक उठी, अकेले राम से खैर नहीं, साथ आए सुग्रीव! आज साथ मे कारपरदाज लाया गया है। सोचा है, दो होंगे तो मै पार नही पाऊँगी। देखोगे? तो देखो। — यह कहकर वह कमर कसने लगी।

उसे शात करने के ख्याल से राम बसु बोला, पहले सुन तो लो कि यह छोकरा है कौन, फिर नाराज होना।

काँसे का कटोरा और जोर से खनका — अच्छा-अच्छा! मैं नाराज हुई हूँ। पहले गर्द तो झाड़ दूँ, फिर नाराज हूँगी।

उसे खुश करने के लिए नाढ़ा लंबा-लंबा पड़कर बोला, माँ जी, परनाम।

दुर्-दुर्, छूना मत। — यह कहकर वह कई हाथ पीछे हट गई। और पति को लक्ष्य करके बोली, अपने तो किरिस्तान के साथ घूम-घूम-कर जात-जनम गँवाया, अब एक किरिस्तान को साथ लाया गया है!

अरी, तुम गलत समझ रही हो, यह क्रीस्तान नही है।

नहीं है तो ऐसी पोशाक क्यों पहने है?

ऐसी पोशाक पहनने से ही क्या क्रीस्तान होता है? दाढ़ी रहने से ही कोई मुसलमान होता है?

बसु के साले को दाढ़ी थी। स्त्री ने समझा, यह कटाक्ष उसी ओर है। सो बोली, अरे रे मरदुए, जितना बड़ा मुँह नही, उतनी बड़ी बात!

स्वामी पर झाड़ू उठाया।

राम बसु को पता था कि किसके बाद क्या होगा। पति-पत्नी में

बहुत दिनों का परिचय था न ! उसने झट सिर झुका लिया । पत्नी के वार को खाली कर दिया । झाड़ू का वार खाली गया देखकर नाढ़ा ताली पीटकर बोल उठा — वह काटा ! लेकिन राम बसु गीता के निष्काम पुरुष की तरह ऐसे बोला, मानो कुछ हुआ ही नहीं — सुनो, काफी वक्त हो गया, दो बज रहे हैं, खाने को दो ।

खाने को दो ! इतनी देर तक जहाँ रहे, वही जाकर भकोसो, यहाँ क्यों आए ? — वह अंदर गई और धड़ाम से दरवाजे को बन्द कर लिया ।

राम बसु ने कहा, अरे जरा आहिस्ते, आहिस्ते । दरवाजा टूट जाएगा तो चोर-बटमार घुसेंगे ।

अंदर से आवाज आई, चोर-बटमार घुसेंगे ! ओह, जाने कितने राजा का धन-रतन लाकर जमा कर रखा है !

राम बसु पत्नी के चरित्र का अता-पता जानता था । समझ गया, यहाँ दो मुट्ठी दाना मयस्सर नहीं होने का । उसने नाढा का हाथ पकड़ा । आँगन में जाकर खड़ा हुआ । बोला, चल ।

कहाँ ?

चल न । खूब भूख लगी है न ? मुँह सूख गया है तेरा ।

इसी उमर में नाढ़ा ने बहुत कुछ देखा है, मगर यह दृश्य उसके अनुभव के बाहर था । वह बोला, दादा, आप मुझे ले आकर ही इस मुसीबत में पड़े । छोड़ ही दीजिए मुझे ।

धत् बेवकूफ, वह नहीं होगा । साहब के पास से तुझे ले आया रखने के लिए ।

लेकिन यह आपसे न बनेगा । मुझे रख आज तक कोई नहीं सका । न माँ-बाप, न साहब-सूबा । आप भी न रख सकोगे । नाहक बीच में यह लानत-मलामत ।

बसु को चुप देखकर नाढा ने पूछा, तो ऐसे वक्त चले किसके यहाँ ?

टुशकी के यहाँ ।

वह कौन होती है आपकी ?

कोई नहीं।

तो लगता है, वहाँ आश्रय मिलेगा। वैसे तो कहावत है न, अपने से पराया भला, पराए से जंगल भला। अगर वहाँ भी गुंजाइश नहीं हुई तो बगल में तो सुन्दरवन है ही।

चल।

कितनी दूर चलना है?

मदनमोहनतल्ला।

ओह, यह तो बड़ी दूर है।

चल नहीं सकेगा?

अप्रतिभ होकर नाढा बोला, नहीं-नहीं, यों ही कहा। खूब चल सकूँगा।

और दोनों मदनमोहनतल्ला की ओर चल पड़े।

वसु की स्त्री अन्नदा साक्षात् संकट थी। जिस गिरस्ती में पति-पत्नी के मन का मेल रहता है, वह गिरस्ती होती है छंदमयी। उसका हर पंक्ति तुक मिलता है और संसार शांत स्तब्ध-सा रहता है, अग्रसर होने की उत्तेजना नहीं रहती। और जिस गिरस्ती में दोनों के मन का मेल नहीं, वह गिरस्ती होती है मुक्त छंद—पंक्ति से दूसरी पंक्ति को, एक से दूसरी यति को बढ़ती ही जाती है। चूंकि शांति नहीं रहती, इसलिए अंत का निषेध नहीं मानना पड़ता। राम वसु को यह जो लिखने-पढ़ने का आग्रह था, साहब-पादरियों के प्रति उत्सुकता थी, ईसाई धर्म में विश्वास था, इसकी जड़ थी उसकी घरेलू अशांति। सांसारिक शांति के न होने से ही लोगों में आध्यात्मिक उन्नति की प्रेरणा होती है।

टुशकी

शाम को टुशकी ने टसर की साड़ी पहनी, हाथ में मजीरा लिया और

आवाज दी, नाढा ! चल ।

राम वसु ने पूछा, कहाँ चली ?

क्यों, जानते नहीं हो क्या ? मदनमोहन की आरती देखने ।

तो नाढा को किसलिए ले जा रही हो ?

यहाँ वह अकेले क्या करेगा ? जरा देख आए । फिर कुछ सोचकर वह बोली, शाम को देवी-देवता के दर्शन से मन ठीक रहता है । क्यों नाढ़ा ?

रहता है दीदी । दिन भर असुरों के बीच जो बीतता है । यह फिर भी ठीक है । दिन का बोझा दिन को ही उतर जाता है । साहबों के साथ रहकर मैंने देखा न, उनके सात दिनों का बोझा एक दिन उतरता है — रविवार को ।

टुशकी ने हँसकर कहा, सात दिन ढो लेता है ?

नाढा ने कहा, हम-तुम होते तो भला ढोया जाता । गरदन टूट जाती । वे आखिर असुर हैं न ! उनका शरीर ही सात दिन का बोझा ढोने लायक बनाया गया है ।

नाढा की बात से टुशकी हँस पड़ी । रेंड़ी के तेल की मंद रोशनी में भी राम वसु ने देखा, टुशकी के गाल पर दो गड्ढे हो आए ।

राम वसु की नजर टुशकी की नजर बचा नहीं सकी । बोली, तुम यहाँ अकेले बैठे क्या करोगे ?

राम वसु ने कहा, बैठा कहाँ हूँ । अथाह समंदर में गोते खा रहा हूँ ।

देखना, डूब न जाना कहीं ।

डूबने की ही तो कोशिश कर रहा हूँ ।

क्यों, डूबने का इतना शौक क्यों ?

जरा गहराई में जाकर देखूं, पातालपुरी की राजकन्या मिलती है या नहीं ।

तो फिर वही देखो । मैं अभी जाती हूँ ।

नाढ़ा को साथ लेकर टुशकी चली गई ।

घंटे भर बाद टुशकी लौट आई। देखा, दीए के पास बैठकर वसुजा लिखने में मशगूल है। इनके आने का उसे पता नहीं हुआ। टुशकी ने ही टोका, क्यों कायथ दादा, क्या लिखा जा रहा है?

ओ, लौट आए तुम लोग? कुछ नहीं, एक गीत लिखा।

गीत! कौन-सा गीत? पातालपुरी के रूप का वर्णन?

नहीं, उसका ठीक उलटा। अथाह समंदर पार करने के लिए प्रभु से प्रार्थना।

क्यों, पार होने की कैसे पड़ गई? डूब मरने का शौक जो हुआ था!

वह शौक अभी भी है। लेकिन साहब की इच्छा और है।

इस बीच साहब कहाँ से आ टपका?

खास विलायत से। कैरी साहब; जिसके बारे में उस बेला कहा था।

साहब की इच्छा क्या है?

यही कि मैं ईसा पर एक गीत लिखूं।

और तुमने लिख दिया! कौन, कहाँ का म्लेच्छ, और तुमने उसके देवता पर गीत लिख दिया! कायथ दादा, तुम्हारे लिए कुछ भी असाध्य नहीं।

साध्य है या असाध्य, सुनो न जरा।

रुको। कपड़े बदल आऊँ। उधर से नाड़ा को खाना भी देती आऊँ। नींद आने लगी है उसे।

कुछ देर में वह लौट आई। दीए की लौ को तीली से उसकाकर राम बसु पढ़ने लगा —

और कौन तर सकता
 जीसस क्राइस्ट बिना रे
पातक सागर घोर
 जीसस क्राइस्ट बिना रे।

वही महाशय, ईश्वर तनय
पापीजन त्राण हेतु
उन्हें जो भी जन करता भजन
पार होता भवसेतु।
खुद ईश्वर आए धरा पर
तारने पापी प्राण
जो जहाँ पापी, नाम धन जापी
पाएगा परित्राण।
आकार निकार, धर्म अवतार
वही जगत के नाथ
उन प्रभु बिन, स्वर्ग भुवन
गमन दुर्गम पथ।
अतएव मन कर रे भजन
जान उन्हीं को सार
पाप निवारण पातकी तारण
एक वही आधार।

पूरा सुनाकर वसुजा ने पूछा, कैसा लगा ?

दुशकी ध्यान से सुन रही थी। बोली, बहुत सुंदर है। सुनने से ज्ञान होता है, केवल एक, वही जीसस या क्या कहा, उसे छोड़कर।

अरे, असल तो वही हैं, उसके सिवा और कुछ न भी होता तो काम चलता। अपने वैष्णव भक्त जैसे कृष्ण का 'क' सुनते ही मूर्च्छित हो जाते हैं, इन पादरियों का भी लगभग वही हाल !

तुम्हारा हाल देखती हूँ, और भी बुरा है। उस नाम पर एक लंबा गीत लिख दिया, इससे तो मूर्च्छित होना अच्छा था !

कभी-कभी मैं भी यही सोचता हूँ। मगर मूर्च्छित होने का उपाय क्या है ? भेंट होते ही कैरी साहब गीत का तकाजा करता है।

ओ, तो यह कहो, उसी तकाजे से लिखा ! गनीमत है। मैंने सोचा,

क्या पता, शायद अब जोसस को ही जपोगे।

पगली कहीं की! मेरे लिए कृष्टो और ख्रीस्टो दोनों समान हैं। दर-असल मैं जिसका भक्त हूँ, उसका नाम सुनोगी?

रहने भी दो, उस पतित नाम को जबान पर मत लाओ। और फिर हजार बार तो सुन चुकी हूँ।

टुशकी हँसी। गाल में वही गड्ढा दिखाई दिया।

वसुधा ने कहा, उस कालिमादह में जिसने डुबकी लगाई है, उसे खींच निकालने की मजाल न तो गोकुल के कन्हैया की है, न फिलस्तीन के ईसा की।

मगर, उस हँसी से ही पेट भर जाएगा? खाओगे नहीं?

उसके बाद जरा रुककर बोली, इन पादरियों का साथ करके एक लाभ तो हुआ है कि तुम मेरे हाथ की रसोई खा लेते हो, नहीं तो मेरा छुआ खिलाने का साध्य कन्हैया में नहीं था।

तो समझ लो, ईसा की कैसी महिमा है!

हुँः! मेरी सुनो। हिन्दू देवी-देवताओं पर गीत लिखो।

अरी पगली, हिन्दू देवी-देवता क्या बीस रुपए माहवार देंगे?

बीस रुपए वेतन मिलने से तुम मगर-घड़ियाल पर गीत लिखोगे?

तुमने तो अवाक् कर दिया। भई, मगर के मुँह में हाथ डाले पड़ा हूँ — उनपर गीत लिखना तो इसके मुकाबले कहीं सहज है।

मगर अगर पाला हुआ हो, तो हर कोई कर सकता है।

मगर-घड़ियाल भी कभी पोस मानते हैं? बात दरअसल क्या हुई कि कभी अचानक मुँह से निकल गया था, जोसस पर मैंने गीत लिखा है। बस, जब भेंट हो, कैरी तकाजा करता, मुंशी, वह गीत?'

साहब खूब धार्मिक है, न?

धार्मिक हुए बिना चारा क्या है, जो खूँखार है पत्नी उसकी! इसके बाद टुशकी का गाल हलके-से दबाकर बोला, आखिर सबको टुशकी तो नसीब नहीं कि शरण मिले। लिहाजा ईसा की ही शरण लेनी पड़ती है।

जरूर खूब अच्छा आदमी है, नही तो सात समंदर पार कोई धर्म प्रचार के लिए भी आता ! देखने को जी चाहता है ।

देखोगी ? अच्छा, एक दिन टामस साहब को लिवा आऊँगा । टामस — जिसके यहाँ मै पहले काम करता था । कैरी को लाना मुश्किल है ।

साहब ऐसी जगह आएगा ?

अजी, उनके देश में तो जुए का अड्डा, वेश्यालय और गिरजा पास-पास ही हैं । एक से दूसरे का फासला सिर्फ एक डग ।

तो किसी दिन ले आना — बहुत पास से कभी साहब नही देखा है ।

बहुत पास जाने की तबीयत हो रही है !

लो, मजाक रखो । वह सुनो, शोभाबाजार की ड्योढी की घडी मे दस बजे । चलो, खा लो ।

आज रात सोना भी यही है ।

ठीक है । वह भी होगा । चलो तो सही ।

राम वसु ने कागज को मोड़कर रख दिया । रसोई की तरफ जाते-जाते पूछा, नाढ़ा कहाँ है ?

खाकर उस कमरे मे सो गया । — फिर बोली — अच्छा है छोकरा ।

अच्छा है तो तुम्हारे ही पास रहने दो ।

तो तुम उसे ले कहाँ जाने की सोच रहे हो ? यही रहेगा । इसे पाकर तो मै जी गई जानो ।

टुशकी, जिसे कोई नहीं, उसके तुम आश्रय हो । लक्ष्मी हो तुम !

टुशकी ने लंबी उसाँस ली — जिसने अपने तीन कुल के मुँह कालिख पोती, वह लक्ष्मी, वह सरस्वती ! लो, बैठो ।

वसुजा खाने बैठा । टुशकी परोसने लगी ।

पादरी और मुंशी

इस घटना के बाद पाँच-सात दिन गुजर गए । इन कई दिनों तक राम

वसु कैरी साहब के पास नहीं जा सका। बसीरहाट में उसकी कुछ मौरूसी जमीन-जायदाद थी। अचानक खबर पाकर उसे वहाँ जाना पड़ा था। वरना कैरी को छोड़कर रहने की उसे आदत न थी। पार्वती से वह कहा करता, भई, इतना याद रखो, दूध का मटका और पादरी साहब, इन दो चीजों को छोड़ना नहीं चाहिए। जिसको मौका मिलेगा, वही मुँह लगाएगा। इतनी सतर्कता के बावजूद बीच में कई दिन पादरी साहब को दूर रखने को वह मजबूर हुआ। लौटा तो देखा, दूध का मटका सही-सलामत है, किसी ने उसमें मुँह नहीं लगाया।

दोपहर को स्मिथ के बगीचे में एक आम के पेड़ के नीचे कैरी, टामस और राम वसु में बातें हो रही थीं। उस समय दोपहर को कलकत्ते में आधी रात का सन्नाटा उतर आता था। देशी समाज के आदर्श पर नए-नए आए विदेशियों को भी नींद भरी दोपहरी के आगे हार माननी पड़ी थी। लिहाजा स्मिथ के यहाँ भी सन्नाटा पड़ा था। लेकिन कैरी टटका नवागंतुक था, उसे दिन में सोने की आदत न थी और उसके उत्साह के वेग से टामस तथा राम वसु को सोने का उपाय नहीं था।

सर्दियों की दोपहर। पास के सुन्दरवन में उतरंगी हवा से मर्मर स्वर उठ रहा था — एक पेंडुकी नाहक ही करुण सुर में बोलती ही चली जा रही थी।

कैरी ने कहा, मुंशी जी, मैं इस दिन की छुटपन से ही प्रतीक्षा किए था।

राम वसु ने कहा, जी हाँ, ये लक्षण बचपन में ही झलक आते हैं। हमारे ग्रंथों में लिखा है, प्रह्लाद ने बाल्यकाल में ही भक्ति के लक्षण दिखाए थे।

इस बात पर टामस ने सर हिलाया। मतलब यह कि ये बातें उसकी अजानी नहीं।

अपने एक समानधर्मा के उल्लेख से कैरी खुश हुआ। प्रह्लाद शब्द के उच्चारण की उसने चेष्टा की। लेकिन दो-एक बार पल्ला-परल्ला करके

ही रह गया, यह विजातीय शब्द उसकी जीभ के लिए असंभव बोझा हुआ। टामस उसे सहायता करने को तत्पर हुआ, पर तब तक असहाय कैरी दूसरा प्रसंग ले बैठा। बोला, बचपन मे पोलर्सप्युरी गाँव मे एक हिदेन बालक को देखकर मेरे मन मे उसके समाज में धर्म प्रचार की चाह जगी।

राम वसु ने आग्रह दिखाते हुए कहा, मै हैरान हूँ डाक्टर कैरी, आपके जीवन की प्रत्येक घटना से हमारे शास्त्र का कितना अधिक मेल है! गौतम बुद्ध के मन में भी पहले एक संन्यासी को देखकर संसार को त्यागने की इच्छा जगी थी।

बुद्ध का नाम उच्चारण करने में कैरी गर्व के साथ सफल हो गया। बोला, येस, बुड्ढा, उसके बारे में मैंने पढ़ा है।

टामस ने सर हिलाया, मतलब कि हम यकीन करते है।

उसके बाद कप्तान कुक के भ्रमण-वृत्तात से मालूम हुआ कि संसार में हिदेनों की संख्या अनगिनती है। मेरे जी में हुआ, हाय, ये अगर कहीं सत्य धर्म की दीक्षा लिए बिना ही मरे, तो बेचारों को अनंत नरक भोगना पड़ेगा। मैने उसी दम मन में ठान लिया, उन्ही के मुल्क में जाऊँगा, उन्हें सत्य नाम का सहारा देकर उनकी नरक-यातना दूर करूँगा। ऐसे समय, जरा भगवान की कृपा देखो मुंशी, ऐसे समय बैपटिस्ट मंडल की एक सभा में टामस से भेट हो गई।

राम वसु ने चैन की साँस लेकर कहा, चलो अच्छा हुआ!

टामस से कैरी का परिचय, कैरी के वाक्य की समाप्ति या अनंत नरक-यातना की आशंका से मुक्ति की संभावना — राम वसु की इस उक्ति से कौन-सा अर्थ बैठा, यह ठीक-ठीक नहीं समझा जा सकने पर भी टामस और कैरी ने अंतिम अर्थ मे ही उस उक्ति को लिया। आदर्शवादिता और निर्बुद्धिता बहुत पास के पड़ोसी हैं।

राम वसु ने कहा, इस देश में सत्य धर्म का प्रचार करना ही पड़ेगा नहीं तो हम सब अनंत नरक में झुलसेंगे — लेकिन प्रश्न असल मे यह है कि प्रचार कार्य का केन्द्र कहाँ होगा, कलकत्ते मे या मुफस्सिल में?

५

कहना फिजूल होगा कि राम वसु का अभिप्राय यह था कि यह काम कलकत्ते में ही चले, तो सब प्रकार से अच्छा हो। लेकिन यह बात इतने सहज ढंग से तो कही नहीं जा सकती, घुमा-फिराकर ही कहने का रिवाज है। जिस मछली ने कँटिया निगल ली हो, उसे भी खेलाकर ही बाहर निकाला जाता है।

टामस बंगाल के बहुत से स्थानों में घूम चुका था। उसका ख्याल था, इस बात का वह विशेषज्ञ है। सो उसने कहा, ब्रदर कैरी, कलकत्ते में धर्म प्रचार करना बेकार है। यहाँ तो फिर भी बहुत से सच्चे ईसाई हैं। हिंदेन लोग हर घड़ी ईसाइयों का मुँह देखते हैं। इसलिए इनकी हालत उतनी शोचनीय नहीं है। लेकिन यहाँ बैठे रहना बेकार है — हमें बंगाल के उन अँधेरे इलाकों में जाना होगा, जहाँ प्रतिध्वनि भी प्रभु का नाम ढोकर नहीं ले गई है। वैसे स्थानों को मैं अपनी आँखों देख आया हूँ। पूछिए मत, जो भयंकर हालत है वहाँ की! वहाँ के लोग रात-दिन नरक की आग में जल रहे हैं। वहीं चलिए।

राम वसु ने देखा, टामस की वाग्मिता सरपट दौड़ी है — क्या होगा, कहा नहीं जा सकता। हो सकता है, अभी कैरी को अपने साथ घसीटकर उन अँधेरे इलाकों में ले जाए। सो उसके तेज वाक्-तुरंग की गति को किसी हद तक मंद करने के लिए उसने कहा, बात तो ठीक है, लेकिन वे जगहें बड़ी बीहड़ हैं, खाने की चीजों की कमी है और जंगली जानवरों का बड़ा उत्पात होता है।

टामस ने कहा, मुंशी ने ठीक ही कहा। लेकिन जो वास्तव में खीस्टान हैं, उनका डरने से नहीं चलता, उनकी शक्ति तो अजेय है।

इतना कहकर वह तन्मय-सा खड़ा हो गया और अधमुंदी आँखों हाथ जोड़कर आवेग से काँपते हुए कंठ से कहने लगा —

प्रभु हमारे पत्थर हैं, किला है, हमारा परित्राण करनेवाले है ; प्रभु हमारी ताकत हैं, जिनमें हमारा विश्वास है, हमारा बख्तर हैं, हमारी मुक्ति का शिखर, हमारी ऊँची मीनार है।

कैरी और टामस, दोनों एक साथ बोल उठे — आमेन।

राम वसु ने मन में सोचा, यह तो खूब रही ! मेरे रहते टामस रंगमंच दखल कर लेगा। अच्छा, देखा जाए, कौन कितना बड़ा अभिनेता है।

उसने कहा, अच्छी बात है। मिस्टर टामस का स्तोत्र सुनकर याद आया, मैंने भी प्रभु के बारे में एक गीत लिखा है।

कहाँ है, ले आए हो ? — टामस उछल पड़ा।

कैरी ने धीर भाव से लेकिन साग्रह पूछा, साथ लाए हो ?

इन्हीं कई दिनों में राम वसु ने कैरी और टामस के चरित्र की विशिष्टता और भेद को गौर कर लिया था। उसकी राय में भक्त वे दोनों ही हैं, किन्तु दोनों की भक्ति की प्रकृति में अंतर है। कैरी भक्ति का मावा है, अचल-अटल। और टामस है रबड़ी, उड़ेल दो, तो नीचे को बह जाती है। कितना नीचे जा सकता है, इसका गवाह है राम वसु, उसने उसे जुए के अड्डे तक जाते देखा है। अब यह देखना है कि रंडी के घर भी भक्ति की लहर सर मारती है या नहीं।

वसुजा ने कहा, वह गीत क्या कागज पर लिखा हुआ है, वह तो यहाँ लिखा है — यह कहकर अपना हृदय दिखा दिया।

उत्साह की प्रबलता से टामस उछलकर राम वसु के और पास आया। मानो उसके हृदय में झाँककर देखेगा कि आखिर वह गीत किन अक्षरों में लिखा है, सोने के अक्षरों में या लहू के अक्षरों में।

एकाएक राम वसु उठ खड़ा हुआ। आँखें बन्द करके हाथ जोड़कर आवेग कंपित कंठ से उस गीत को उसने उस ढंग से पढ़ना शुरू कर दिया जैसे रामायण पढ़ी जाती है।

धीरे-धीरे उसके शरीर में स्वेद अश्रु कंप पुलक आदि सात्विक लक्षणों का प्रकट होना शुरू हो गया और आँधी में नाविक जैसे आशा भरी दृष्टि से बैरोमीटर की ओर एकटक देखता रहता है, वैसे ही टामस और कैरी वसु के मुँह की ओर देखते रहे। टामस ने सोचा, आह, ऐसी तन्मय दशा मेरी कब होगी ! कैरी सोचने लगा, यह आदमी अगर सत्य धर्म कबूल कर

ले, तो बड़ा काम बने।

कविता पाठ करके राम बसु बैठ गया — भक्ति का वह आवेश उसका तब भी कटा नहीं था, इसलिए वह निर्वाक हो रहा। आँखों के कोने से पानी भरने लगा।

कैरी ने पूछा, मुंशी जी, आप सत्य धर्म ग्रहण करने में देर क्यों कर रहे हैं ?

माथे पर हाथ रखकर मुंशी ने कहा, नसीब पादरी साहब, नसीब ! जाने कितनी बार रात को सपने मे देखा कि प्रभु ईसा आकर आदेश दे रहे हैं, ऐ मेरे मेष-शिशु, मेरे झुंड मे आ जा !

तो फिर ?

उसी के साथ उन्होंने दूसरा आदेश भी तो किया है — तू कालीघाट के मंदिर के पास मेरा गिरजा बनवा, वहीं तेरी दीक्षा होगी।

कैरी और टामस ऐसे किसी कठिन आदेश के लिए तैयार नहीं थे, लेकिन विश्वास किए बिना उपाय क्या था ! एक तो स्वप्न मे स्वयं प्रभु का आदेश, फिर जिसे आदेश मिला था, उसकी आँखों मे अभी तक आँसू की रेखा बनी थी !

फिर हमारे धर्मांध मूर्तिपूजक रिश्तेदारों का जुल्म — मुंशी ने कहा।

वे तुम्हें मारते-पीटते हैं क्या ?

मारते नहीं हैं भला ! यह देखिए — पीठ पर उसने एक दाग दिखा दिया।

कैरी बोला, तुम नालिश क्यों नहीं करते ?

आप कहते क्या हैं पादरी साहब ! हमारे प्रभु ने अपने हत्याकारियों पर नालिश की थी ? मैं उसी दिव्य मेष-पालक का अनुसरण करके सिर्फ यही कहता हूँ — पिता, उन्हें क्षमा करो। वे नहीं जानते कि वे क्या कर रहे हैं।

अपने हठ पर दोनों को पछतावा हुआ। बोले, पिता हमें क्षमा करो।

कैरी ने पूछा, अब करना क्या चाहिए ?

टामस बोला, कर्तव्य तो प्रभु ने निश्चित कर दिया है, दूसरा कुछ करने की मजाल क्या हमारी !

तो यही ठीक है, कलकत्ते में ही हम धर्म प्रचार का केन्द्र कायम करेंगे और जब जरा स्थिर हो लेगे तो मुंशी से बँगला और फारसी पढ़ना शुरू करेंगे।

वसु ने कहा, रहने के लिए जगह के बारे में भी मैंने सोच लिया है। यहीं मानिकतल्ला नामक एक मुहल्ला है। वहाँ मेरा एक व्यापारी मित्र है — नीलू दत्त। वह मूर्ति-पूजा का घोर विरोधी है, और मेरी ही तरह बराबर सपने में प्रभु का आदेश पाया करता है। आपके लिए मकान की खोज में उस दिन उसके पास पहुँचा तो सुना, उसने रात मे सपना देखा है कि प्रभु मानो कह रहे है, ऐ मेरे बच्चे, अपना एक अबोध मेष-शिशु कही खो गया है, उसे ढूँढ़कर शीघ्र अपने घर मे ले आ। इस सपने का अर्थ वह समझ नहीं पा रहा था। इतने में मैंने आपके लिए मकान की चर्चा की तो वह बोल उठा, मिल गया, सपने का अर्थ मिल गया ! पादरी कैरी ही वह खोया हुआ मेष-शिशु है। उन्हें जरूर अपने घर में ले आना होगा।

तब नीलू ने कहा — राम वसु कहता गया — मानिकतल्ला मे मेरा एक मकान है। डाक्टर कैरी को वही लाकर रक्खो।

किराया ?

नाम न लो। जिन्हें आदेश देकर प्रभु ने भेजा है, उनसे किराया लूँगा ! यह कहकर ही उसने कट्स हिज टंग — यानी जीभ काट ली।

कैरी चौक उठा, कट्स हिज टंग ! क्यों ? ऐंड ऑल फॉर नथिंग !

टामस ने बँगला मुहावरे का अर्थ समझा दिया। कहा, इसमें कटने या खून बहने की कोई बात नही।

कैरी आश्वस्त हुआ। बोला, तो ठीक है, एक दिन भक्त नीलू दत्त को ले आओ, मकान की बात जल्द तै कर ली जाए, जब तुम सबों की इच्छा है —

टामस ने याद दिलाई — और जब प्रभु की भी आज्ञा है —

कैरी ने वाक्य को पूरा किया — कलकत्ते मे ही धर्म प्रचार का केन्द्र कायम किया जाए।

राम बसु कह उठा, प्रभु, तुम्हारी कृपा मे यहाँ नया यरूसलम बसेगा।

मन मे बोला, माँ काली, तुम्हारे आशीर्वाद से इनके ईसा और ईसाइयत की दुर्गत करके रहूँगा। तुम थोडा सब्र करके देखो तो सही माँ कि क्या गत बनाता हूँ मै इनको!

वह यह समझाने ही जा रहा था कि कलकत्ते मे प्रचार-केन्द्र कायम करने से और कितनी सुविधाएँ है कि दौडते हुए फेलिक्स ने आकर खबर दी, पिता जी, जल्दी चलिए, माँ बेहोश हो गई है।

बेहोश हो गई है! चौंककर तीनो जने खडे हो गए। कैरी और टामस घबडाए हुए अंदर चले गए।

राम बसु अंदर नही गया। बगीचे मे ही टहलते हुए मन ही मन कहने लगा, माँ काली, इस औरत की बेहोशी न टूटे। यही औरत सारी बुराई की जड है। इसी के मारे कैरी का मन कलकत्ता छोडने के लिए बेचैन हो रहा है। दुहाई मैया, जब बेहोशी तक खीच ले गई हो, तो थोडा और खीच ले जाओ — सारी बला ही चुक जाए।

जानें कितना क्या कहता हुआ वह टहलता रहा।

केटी का क्या हुआ?

कैरी और टामस ने घर मे जाकर देखा, डोरोथी कोच पर बेहोश पडी है। लिजा ने उसकी नाक के पास स्मेलिंग सॉल्ट की शीशी पकड रखी है और आया एक बडे पंखे से हवा कर रही है। पास ही जॉन एक कुर्सी पर सिर थामे उदास बैठा है। बूढा जॉर्ज स्मिथ किंकर्तव्यविमूढ-सा खडा था,

कैरी पर नजर पड़ते ही दौड़कर आया। बोला, डाक्टर कैरी, इस दुर्घटना के लिए मैं दुःखी हूँ।

कैरी ने कहा, आप दुःखी न हों। डोरोथी को बीच-बीच में ऐसा होता है। अभी सब ठीक हो जाएगा। मगर केटी को नहीं देख रहा हूँ? उसे आकर सेवा करनी चाहिए थी। उसे मालूम है कि ऐसे समय क्या करना होता है।

केटी का नाम सुनते ही जॉन उठा और चुपचाप कमरे से बाहर चला गया। जॉर्ज स्मिथ ने कहा, उसी की वजह से यह मुसीबत आई है। आप बगल के कमरे में चलिए, सब बताता हूँ।

हैरान हुए-से कैरी और टामस उसके पीछे-पीछे पास के कमरे में गए। कैरी बोला, मैं बहुत उद्विग्न हूँ, हैरानी हो रही है। कहिए कि क्या हुआ है।

चाँदपाल घाट से ही केटी और जॉन, दोनों ने एक दूसरे को अपना मान लिया था और तब से रात-दिन बहुत समय दोनों साथ-साथ बिताया करते थे। जॉन ने वादा कर रखा था कि उसे सुन्दरवन घुमाने ले जाएगा। 'सुन्दरी पेडों के वन' का अनुवाद कर जॉन ने उसे कहा था कि यह 'फॉरेस्ट ऑव ब्युटीफुल वीमेन' है। जॉन अपना वादा भूला नहीं था। रोज सुबह नाश्ता करके दोनों घोडे पर सवार होकर जंगल में जाया करते और शाम के पहले लौटते। भोजन के लिए कुछ खाद्य और आत्मरक्षा के लिए बंदूक साथ रखते।

लिजा पूछती, क्यों जॉन, जंगल कैसा लगता है? जॉन कहता, इडेन गार्डेन जैसा! बनावटी विस्मय से लिजा कहती, सर्वनाश!

सर्वनाश कैसा!

वही इडेन गार्डेन, वही आदम और हौवा। अब जो बाकी रहा, वह भी न मिल जाए कहीं।

बाकी रहा ही क्या?

साँप के रूप में शैतान।

वाह, वह न रहे तो फिर मजा क्या ?

अरे ! मजा ? आदम और हौवा को तो बगीचा छोड़कर धरती प आना पड़ा था !

तभी तो धरती पर तुम जैसी खूबसूरत बहन मिल सकी !

'खूबसूरत बहन' बात सही है, लेकिन वह सिर्फ मिसेस कैरी की बहन के बारे में लागू हो सकती है, कम से कम इस मामले मे — एलिजाबेथ ने कहा।

बनावटी क्रोध से गरजकर जॉन ने कहा, लिजा, तुम बड़ी मुखरा हो। मगर मैं भी मूक नहीं हूं, लेकिन अभी समय नही है, केटी बाहर इन्तजार कर रही है।

केटी के अप्रत्याशित सौभाग्य से लिजा के कलेजे मे दीर्घ निश्वास फूल-फूल उठता, लेकिन चूंकि सहोदर के सौभाग्य की बात थी, इसलिए वह जमकर बाहर नहीं फूटता, मन में ही खो जाता। कहती, जाओ, लेकिन सावधानी से।

क्यों, डर किस बात का ? शैतान रूपी सांप का ?

ऐसे सांप भी क्या कम खतरनाक है ?

ऐसे हंसी-मजाक के समय कोई भी नहीं जानता था कि लिजा की दिल्लगी मर्मभेदी वास्तविक रूप लेगी। सुन्दरवन चाहे इडेन गार्डेन न हो, लेकिन वहां शैतान रूपी सांप नहीं होगा, ऐसी कोई बात नहीं।

जॉन और केटी जंगल मे दूर-दूर चले जाते। बड़े-बड़े पेड, घनी छाया, पतली पगडंडी — दोनो के घोड़े मनमाना चलते ; वे राह नही देखा करते, बातों मे मशगूल रहते। चलते रहना जहाँ उपलक्ष्य हो वहाँ लक्ष्य ठीक रखने की जरूरत भी क्या ! दिन चढ़े जब भूख लगती तो घोड़ों को बांधकर दोनों घास पर बैठते, एक ही बर्तन में बांटकर भोजन करते, थोड़ा आराम करते और दिन भर जंगल में घूमकर शाम को लौट आते।

लिजा पूछती, जॉन, तुम्हें थकावट नहीं महसूस होती ?

कोश में थकावट नाम का एक शब्द तो है, लेकिन प्रेमियो के अनुभव

में नहीं। इसलिए उस शब्द को सुनकर जॉन चौंका, मानो उसने यह शब्द पहली बार सुना हो। जवाब कुछ देना ही चाहिए, इसलिए बोला, नहीं तो!

एक दिन जॉन और केटी दुर्गापुर नाम के एक छोटे-से गाँव में पहुँचे। वहाँ मोशिए दुबोया नाम के एक फ्रांसीसी सज्जन से परिचय हुआ। उस आदमी ने सभ्यता से दूर इस जंगल में बहुत पहले से बसेरा बाँध रक्खा था। सुन्दरवन में वह शहद, मोम, हिरन की खाल खरीदकर शहर भेजा करता। यही उसका व्यवसाय था।

दुबोया ने उन दोनों की बड़ी खातिरदारी की। दोपहर में अच्छा से अच्छा भरपूर भोजन कराया और फिर आने का वचन लिया। दुबोया अविवाहित था।

जॉन को यदि दुनियादारी की सूझ-बूझ होती तो केटी के साथ वह ऐसे आदमी के यहाँ दुबारा न जाता। लेकिन अनुभव के मामले में वह किशोर था, उमर के हिसाब से तरुण; प्रेम के लिहाज से युवक। लिहाजा अंधा था। उसे समझना चाहिए था कि दुबोया भी उसी जैसा नारियों के अकालवाले देश का जीव है। उसे दिव्य दृष्टि होती तो यह समझने में विलम्ब नहीं होता कि एक अंगरेज के लिए अधेड़ फ्रांसीसी का ऐसा आकर्षण बेशक किसी तीसरी चीज के लिए है और वह है उस अकाल के अन्नपिंड के लिए! और, बुभुक्षित: किं न करोति पापम्।

लगातार तीन दिनों तक वे दुबोया के यहाँ जाते रहे। प्रसंगवश जॉन ने लिजा से दुबोया की बात कही जरूर थी, लेकिन कुछ ऐसे अवांतर भाव से कही कि लिजा के मन में उसकी गुरुता का खयाल ही न हुआ। इसके सिवाय केटी से पूछने के बावजूद खास कुछ मालूम न हो सका। जॉन ने तो कुछ कहा भी, केटी उस मामले में बिलकुल चुप बनी रही। सो लिजा ने दुबोयावाली बात को कोई महत्त्व ही नहीं दिया।

चौथे दिन दोपहर में दुबोया के यहाँ फिर डिनर हुआ। केटी बगल के कमरे में विश्राम करने गई, जॉन और दुबोया बैठके में बैठे-बैठे पीते और

वात करते रहे। बेला जब झुक आई, तो जॉन बोला, मोशिए, केटी से कह दीजिए, अब लौटना चाहिए। और देर होगी, तो लौटने मे रात हो जाएगी। आज चाँद भी देर से निकलेगा।

दुबोया ने कहा, अच्छा, मै कहे देता हूँ —

दुबोया अन्दर गया और जॉन वहाँ गया, जहाँ घोडे खडे थे।

जरा देर मे दुबोया अकेला वाहर आया।

जॉन ने पूछा, केटी कहाँ है?

दुबोया ने कहा, मिस ब्लैकेट ने कहला भेजा है, वह तुम्हारे साथ नहीं जाएगी। यही रहेगी।

हैरत मे आकर जॉन बोला, मोशिए दुबोया, यह मजाक बिलकुल समयोचित नही।

दुबोया ने कहा, बिलकुल समयोचित है और यह मजाक कतई नही।

मतलब?

साँप-से चिकने और शैतान-से हँसमुख दुबोया ने कहा, मतलब कि मिस ब्लैकेट ने तै कर लिया है कि वह मेरी घरनी होकर मुझको कृतार्थ करेगी।

जॉन चीख उठा, यह झूठ है! तुमने उसे छिपा रक्खा है, मैं अंदर जाऊँगा।

जॉन अंदर जाने लगा तो दुबोया राह रोककर खडा हो गया। बोला, मुझे अफसोस है कि अतिथि को बाधा देनी पडी।

उपाय नही देख जॉन बोल उठा, मोशिए दुबोया, आइ डिमांड सैटिस-फैक्शन! इसका अभिप्राय है कि जॉन दुबोया से डुएल लडना चाहता है।

दुबोया ने होंठों में मुस्कुराकर कहा, मुझे फिर अफसोस है मिस्टर जॉन, मैं तुम्हें कृतज्ञ नही बना सका।

क्यों? कारण जान सकता हूँ क्या?

बेशक! मोशिए वोल्तेयर कह गए है, डुएल लडना बच्चों का खिल-वाड़ है।

तुम्हारा मोशिए वोल्तेयर जाय भाड़ में !

किसी-किसी को यह संदेह है कि मोशिए वोल्तेयर उससे भी कहीं अधिक जलानेवाली जगह मे पहुँच चुका है ।

इतनी उत्तेजना में भी दुवोया की मीठी हँसी वैसी ही बनी रही, गायब नहीं हुई । उस हँसी से जॉन की सारी देह मे आग लहक उठी । वह बोल उठा, तुम कायर हो ।

मुझे फिर मोशिए वोल्तेयर के शब्दों मे जवाब देना पड़ा — सोलह रुपए माहवार के सिपाहियों को अगर सिकन्दर समझते हो तो मै मान लेता हूँ कि मैं वास्तव मे उस दल का नही हूँ ।

तुम उसी दल के हो, जो मरने से डरते हैं ।

यह बात गलत नहीं है । मिस प्लैकेट के रूप और प्रेम का स्वाद लिए बिना मै मरने को क्या, स्वर्ग जाने को भी तैयार नही ।

व्यंग करते हुए जॉन ने पूछा, यह भी क्या तुम्हारे मोशिए वोल्तेयर का कहना है ।

जिसे भी थोड़ी-बहुत अकल है, वही उनकी इस उक्ति की सत्यता को मानता है, सिर्फ वही नही मानता जो प्रेममुग्ध है, बच्चा है, जॉनबुल है ।

तुम्हारे वोल्तेयर को मै शैतान के पास भेज दूँगा ।

इसकी जरूरत नहीं पड़ेगी मिस्टर स्मिथ, मोशिए ने खुद शैतान को तुम्हारे पास भेज दिया है ।

कहाँ ?

तुम्हारे सामने यह खाकसार दुवोया सशरीर खड़ा है । — उसने फ्रांसीसी तरीके से 'बाउ' किया ।

खैर, मै जाता हूँ । अब सेना सहित आऊँगा और मिस प्लैकेट को ले जाऊँगा ।

इतनी तकलीफ नहीं उठानी पड़ेगी, हम खुद तुम लोगों से जाकर मिलेंगे — मोशिए दुवोया और मादाम दुवोया ।

जहन्नुम मे जाओ तुम !

मिस्टर स्मिथ, एक तो तुम मेरे अतिथि हो, और फिर तुम्हारी ही कृपा से मैंने मिस प्लैंकेट को पाया है। इसलिए मैं अभिशाप देना नहीं चाहता, शुभकामनाएँ प्रकट करता हूँ कि मिस प्लैंकेट विहीन स्वर्ग में तुम कुशल से पहुँच सको।

जॉन समझ गया, तकरार करना बेकार है। वह घोड़े पर सवार हो चल दिया।

दुबोया ने जोर से आवाज दी — एक घोड़ा छूट गया जो?

वह मिस प्लैंकेट का दहेज है, दिए जा रहा हूँ — घोड़े की पीठ पर चाबुक लगाते हुए पलटकर जॉन ने कहा।

फ्रांसीसियों की आदत के अनुसार दोनों कंधों को हिलाकर दुबोया बोल उठा, त्रे ब्याँ!

घर लौटकर जॉन ने सब कुछ कहा। जॉर्ज ने कहा, यह तो शर्मिंदगी की हद है।

लिजा ने कहा, केटी, नन्ही-मुन्नी नहीं है। अंदर से उसकी इच्छा न होती तो ऐसा हो ही नहीं सकता।

मिसेस कैरी कुछ नहीं बोली। उसने एक मुलायम-सा कोच चुना और उसपर मूर्च्छित हो गई।

इसके बाद कैरी और टामस की सुलाहट हुई।

शुरू से अंत तक सब सुनकर कैरी ने कहा, लगातार एक अनजाने व्यक्ति के यहाँ केटी का यों जाना उचित नहीं हुआ।

जॉर्ज ने कहा, केटी से ज्यादा कसूर जॉन का है। वह केटी को लेकर ऐसी आत्मीयता करने गया क्यों?

उस कसूर की सजा भी जॉन भुगत रहा है।

उस कसूर के मुकाबले सजा कुछ भी नहीं है।

इतने में लिजा आई। बोली, मिसेस कैरी होश मे आई हैं। वे आप लोगों को बुला रही हैं।

कैरी और जॉर्ज मिसेस कैरी के पास गए।

पति को देखकर वह बड़े क्षोभ के साथ बोली, ओह, कैसे देश मे ला पटका। केटी का हरण हुआ, अब मेरी बारी है।

लेकिन पति के चेहरे पर समर्थन की या आशंका की कोई झलक न देखकर बोल उठी, पत्थर के पाले पड़ी हूँ।

फिर बोल उठी, दिमाग फिर कैसा तो कर रहा है। लिजा, डार्लिङ्ग, जरा स्मेलिंग सॉल्ट की शीशी मेरी नाक के पास थामो तो।

इतना कहकर मिसेस कैरी ने एक तकिया खीच लिया और फिर मूर्च्छित हो गई।

इतने दुःख मे भी मिसेस कैरी के हरण होने की संभावना से टामस को हँसी आई। वह जल्दी से बाहर निकलकर राम वसु के पास पहुँचा। उससे सब कुछ कहा और पूछा, मुशी जी, अभी थोडी ही देर पहले हमारी उक्तियो से आप अपनी पौराणिक घटनाओं की समानता दिखा रहे थे, क्या केटी हरण जैसा आपके पुराणों मे कुछ है?

क्यों नही है? रुक्मिणी हरण।

वह क्या है?

फिर किसी दिन समझा दूँगा।

और मिसेस कैरी की आशंका?

अरे वह तो यमराज को भी नही रुचती, यानी डेथ्स डिसलाइक है, उसका हरण करे, ऐसा कलेजे का जोर किसका है?

उसकी बात पर टामस हँस उठा। राम वसु ने कहा, तो आज चलूं।

टामस ने दबी आवाज से कहा, कही मुझे ले चलने की बात कही थी न, भूल मत जाना।

राम वसु ने कहा, डाक्टर टामस, आपको तो जहाँ-तहाँ ले नहीं जा सकता। लखनऊ से निकी बाईजी नाम की एक डांसिंग गर्ल के आने की बात है। आ जाए तो आपको जरूर ले चलूँगा।

मगर इसकी खबर कैरी को न हो!

राम कहिए, मै क्या नही जानता कि ये बाते गुप्त रक्खी जानी

चाहिए।

राम वसु चला गया तो टामस फिर अंदर पहुँचा।

उस रात जॉन ने कुछ नहीं खाया और न केटी की खबर देने के सिवाय कोई बात बोला। भूखा ही सो रहा।

लिजा लेटी-लेटी मन मे विश्लेषण करती रही। केटी की इस खबर से वह दु:खी हुई थी, क्योंकि इन कई दिनो में केटी से उसका सौहार्द्य हो गया था। लेकिन अब जब वह मन का विश्लेषण करने लगी तो पाया कि मन मे अमिश्रित दु.ख नही है। पानी के तल मे कमल-कली का मुँह जैसे जरा-सा दिखाई पड़ता है, वैसे ही उसके मन मे भी कैसी तो खुशी मौजूद थी। उसने सोचा, माजरा क्या है ? केटी से जॉन की शादी होती, तो उसे खुशी होती, इसमें कोई संदेह नहीं। लेकिन अब लगा, इतना ही तो सब कुछ नही। तो क्या इस अनुभूति मे छिपी तौर पर ईर्ष्या थी ? क्यों ? आखिर नहीं भी क्यों ! कहाँ की कौन-सी केटी आकर यह घर-द्वार, पिता का स्नेह, भाई का प्रेम दखल कर बैठेगी — और वह निष्फल उल्का-सी असार्थकता के घूरे पर गिरकर कचरा का परिमाण बढ़ाएगी। नही, यह हर्गिज नहीं हो सकता। सोचने लगी, अच्छा ही हुआ, यही होना उचित था। वह इस निष्कर्ष पर आई कि केटी बड़ी सीधी लड़की नही, शायद अच्छी भी नहीं, नहीं तो महज दो ही दिन की जान-पहचान में एक वाहियात फ्रांसीसी के साथ नहीं जुट पड़ती। उसे लगा, जॉन का एक बहुत बड़ा कुग्रह कट गया। उस लड़की से शादी करने पर जॉन के दु:ख और अंत तक दुर्गति का अंत नहीं रहता। लिजा जब इस तरह जॉन की संभावित मुक्ति के आनन्द से खुद को, जॉन को और आत्मीय-स्वजन को अभिनंदित कर रही थी, उस समय निद्राहीन जॉन अपने को दुनिया का सबसे बड़ा अभागा समझकर तकिए में मुँह छिपाए पड़ा था।

इतने में बूढ़ा जॉर्ज हाथ में जलती मोमबत्ती लिए कमरे मे आया और स्निग्ध स्वर में बोला, जॉन, मैं खुद ही कल पुलिस लेकर केटी को छुड़ा लाने के लिए जाऊँगा। तुम फिक्र न करो।

अपने को भरसक दृढ़ करके जॉन ने कहा, नहीं पिता जी, आप वैसा कुछ करने मत जाएँ। इससे मेरा दुःख बढने के बजाय घटेगा नहीं।.... और फिर मैं जरा भी दु.खी नहीं हुआ हूँ।

पिता को सांत्वना देने के लिए उसने होंठों पर हँसी लाने की चेष्टा की, लेकिन इस चेष्टा में अब तक का रुका आँसू सहसा बाँध तोड़कर उसके गालों पर बेरोक बहने लगा।

बूढे जॉर्ज ने फूंककर मोमबत्ती बुता दी और कमरे से बाहर हो गया। बेटे की आँखों मे आँसू देखकर अनुभवी पिता का मन हल्का हो गया।

पुरुष विधाता की सृष्टि है, नारी शैतान की। पुरुष और नारी के चलते ही आज भी दुनिया मे देव-दानव का युद्ध चलता रहता है।

मानिकतल्ला का नीलू दत्त

टोले-मुहल्ले के लोग कहने लगे, क्यों भई नीलू, इधर तलहथी से एक बूंद पानी नहीं टपक पाता और उधर इतना बड़ा मकान बिना किराए के ही साहब को रहने के लिए दे दिया, बात क्या है?

नीलू दत्त आदमी कम बोलनेवाला था और अधिकतर कम बोलने-वालों जैसा अपने को छिपाने की कोशिश करनेवाला भी। जब बहुतों ने बहुत तरह से पूछा-ताछा, तो एक दिन बोला, अरे भई, एक तो विदेशी आदमी, तिस पर गरीब पादरी। दो दिन रहने को दे ही दिया तो क्या! पड़ा ही तो था।

लोग बोले, अरे भई, तुम्हारे संदूक में मुहरें भी तो बहुत-सी पड़ी है, भला दो तो दो दिन के लिए देखूं जरा?

उनकी बात सुनकर नीलू चुपचाप हँसता।

नीलू दत्त अचानक धनी बन बैठा था। कंपनी के राज की शुरुआत में व्यापार से हठात् कुछ रुपए कमा लिए थे। उतने के लिए ही उसे मिहनत

और अकल लगानी पड़ी थी। उसके बाद वह बैठा रहा और उसके रुपए कमाते रहे। नदी और धन के स्रोत का एक ही नियम है। शुरू में उसकी गति जरा बढ़ा भर दी जा सके, तो नित्य नई धारा जुटाकर वह बढ़ती और फैलती ही जाती है। नीलू दत्त ने एक बार एकाएक देखा, उसकी नाव प्रवाह के प्रबल धक्के मे न जाने कब सार्थकता के सागर-संगम पर जा पहुँची है। पड़ोस के सब कहने लगे, अब एक डुबकी भर लगा लेने की कसर है, नीलू जीवन्मुक्त हो जाएगा। ऐसे मे दिमाग का घूम जाना ही स्वाभाविक है, किन्तु इस विषय मे ऐसी कोई घटना नही घटी, नीलू ज्ञान मे भी नन्हा हो दुबका रहा। अब उसे एक ही बात का खेद है कि उसके पास धन है, लेकिन कुलीनता नहीं है। वह, उस घोष की कुलीनता उससे ज्यादा है, जिसके घर की ईंटें खिसकती जा रही है। इसके बाद मे वह कुलीनता पाने की धुन मे जुट गया। उस समय साहबों का कृपा-भाजन होना कुलीनता कमाने का सहज उपाय था। लोग कहते, साहब जैसा भी हो, लाट साहब है। इसीलिए राम बसु के प्रस्ताव करते ही वह कैरी को शरण देने के लिए उछलकर तैयार हो गया।

अंधकार मे पड़े एक हिंदू जाति को प्रकाश देने की आशा से कैरी परिवार सहित कलकत्ते आया; आदर्श की धुनी ने आदि-धन को अच्छी तरह से सोचने का सुयोग नहीं मिला; इसमें सनकी-से टामस का उकसाना भी था। टामस ने उसे निश्चिन्त कर दिया था कि भोजन और निवास की चिन्ता ही न करो, जहाज घाट में पहुँचते ही देख लेना, हजारों हिंदू नर-नारी प्यार जैसे प्रेरित पुण्य को सिर पर उठा ले जाने को तैयार मिलेंगे। कहना बेकार है कि इन कई दिनों में कैरी को जो अनुभव हुआ, उसमें टामस की बात का समर्थन नहीं हुआ। कैरी ने देखा कि इस बड़े शहर में आराम पाने की इच्छा रखनेवाला कोई हिंदू यदि हो भी, तो वह यहाँ बिना पैसा नहीं है। और, आश्रय? वह तो खर्च किये से मिलता है। लेकिन यहाँ अनिश्चित काल तक रहना भी संभव नहीं है। फिर बेटों का बीमार हो जाना और डोरोथी की पागल जैसी दशा ने कैरी

को और भी परेशान कर दिया। उसने निश्चय किया, तुरन्त कहीं दूसरी जगह जाना जरूरी है। इसीलिए नीलू दत्त के मकान मे जाकर रहने का प्रस्ताव राम वसु के करते ही वह राजी हो गया। मन ही मन अपनी आमदनी का उसने लेखा लगाया कि कैटरिंग के मिशन द्वारा स्वीकृत हर महीने साठ रुपए का संबल है और है — दी होली बाइबिल तथा मन का अदम्य उत्साह। खर्च का भी हिसाब लगाया, रोज-रोज असंख्य प्रकार के खर्च। डोरोथी की हिस्टीरिया और टामस का डावाडोल मन ऊपर से। ऐसे बजट से दूसरे का दिमाग तो चकरा जाता। लेकिन हजार बार यह मानना होगा कि कैरी साधारण आदमी न था। थोड़े संकोच से मकान के किराए की बात करते ही राम वसु बोल उठा, यह बात आप जबान पर भी न लाएँ — डोंट ब्रिग टु माउथ।

उसने बताया कि नीलू दत्त भक्त आदमी है।

लेकिन है तो हिदेन।

राम वसु ने कहा, हिदेन है तो क्या, मन से सच्चा ईसाई है। कृष्ण जपते-जपते यीशु-यीशु कह उठता है। डाक्टर कैरी, आपके शुभागमन की बात सुनते ही कहने लगा, भाई, पादरी बाबा से कहो, कृपा करके मेरे मकान में चरणों की धूल यानी डस्ट ऑव दी फीट डालकर रहे।

इसके बाद वह फिर बोला, अब उसके मकान में न रहने से बड़ी बदनामी होगी यानी बैड नेम होगा। जो हिदेन अभी कृष्ण के बदले खीष्ट कह बैठते हैं, वे सारे के सारे फिर से कृष्ण के हो रहेंगे। वहाँ तो आपको जाना ही पड़ेगा।

कैरी ने इतनी विनती के बाद राजी न होने का कारण नही पाया। दूसरे दिन कैरी और टामस को ले जाकर राम वसु नीलू दत्त का मानिकतल्लावाला वह मकान दिखा लाया। मराठा डिच के पास ही था, काफी बड़ा मकान, अंदर काफी जगह थी। कैरी को पसन्द आ गया।

राम वसु ने सोचा, अब कैरी को मजबूती से बाँध लिया। इतने बड़े

और ऐसे सुंदर मकान को छोड़कर अब वह अनिश्चय के वहाव में नहीं वहेगा और डोगी की तरह उसे भी उसके पीछे-पीछे नहीं वहना पड़ेगा। यही ठीक हुआ, रहना भी कलकत्ते में ही होगा, वीस रुपया माहवार भी मिलेगा — पेड़ का और पेड़ के नीचे का, दोनों ही फल उसके हाथ आएँगे। डर उसे कैरी से था। इन कई दिनों में उसने समझ लिया था कि कैरी और टामस एक उपादान के नहीं बने हैं। टामस सख्त चाहे जितना भी हो, है धातु का, चोट से टेढ़ा होता है, आँच से गलता है। लेकिन कैरी सख्त पत्थर का वना है, आघात से टूट सकता है, किन्तु आँच से गल नही सकता। वही कैरी इतनी आसानी से स्थायी हुआ, इससे वह निश्चिंत हुआ। टामस की उसे चिंता नही थी, क्योंकि उसे उसने पहले ही वाँध लिया था।

उस रोज इतवार था। सेंट जोन्स गिरजे से उपासना करके लौटने में टामस को लगभग दोपहर हो गई थी। घर आया, तो देखा, राम वसु इंतजार कर रहा है। मामला क्या है?

मिलने आ गया।

अच्छा ही किया। चलो न, आज शाम को जरा शहर घूम आएँ।

शहर कहने से टामस का दरअसल मतलव क्या है, यह थाहने के लिए राम वसु ने कहा, डा० कैरी को साथ न ले लें?

टामस सिहर उठा, अरे, नहीं-नहीं, उसे क्यों परेशान करोगे, हम-तुम ही काफी हैं।

वसुजा खिलाड़ी ठहरा, मरी चिड़िया को भी खेलाकर कब्जे में करता है। वोला, ठीक तो है। चलिए, शहर के गिरजे देख आएँ। मन भी पवित्र होगा।

वसु, देख रहा हूँ, तुम्हें भी धर्म का रोग लग गया। देखो, धर्म वेशक उत्तम है, लेकिन जीवन के और-और अंग भी निंदनीय नहीं।

नितांत जिज्ञासु-सा वसु ने पूछा, इस विषय में प्रभु ईसा क्या कहते हैं ?

गिव अनटु सीजर व्हाट इज सीज़र्स । तो यह समझो कि सीजर की संपत्ति को प्रभु अस्वीकार नहीं करते ।

राम वसु छोड़नेवाला न था । बोला, प्रभु चाहे करें, लेकिन डा० कैरी शायद नहीं करेंगे ।

छोड़ो, उसपर एक ही साथ धर्म के स्यार और ज्ञान के बाघ ने हमला किया है । स्यार के हाथ से बचाया भी जाय तो बाघ के हाथ से कौन बचाता है ? दिन भर व्याकरण, शब्दकोश आदि लिए पड़ा है । तुम्हीं कहो, दिन भर यही सब अच्छा लगता है ? आखिर आदमी जरा आनंद भी तो करना चाहता है ।

बेशक चाहता है डा० टामस ।

तो चलो, आज शाम को घूम आएँ ।

शाम को राम वसु टामस को एक जूए के अड्डे पर ले गया । दोनों जब निकले, टामस हाथी के खाए कैथा-सा खोखला रह गया था ।

माथे पर हाथ मारकर टामस बोला, वसु, मैं तबाह हो गया ।

वसु बोला, तो हर्ज क्या है ! स्वयं प्रभु का निर्देश है गिव अनटु सीजर व्हाट इज सीजर्स ! वह बला गई तो गई ।

टामस को लेकिन प्रभु के निर्देश से सांत्वना न मिली । बोला, प्रभु के लिए यह कहना सहज था । वे संन्यासी थे, मैं गृहस्थ हूँ ।

गृह नहीं, गृहिणी नहीं, गृहस्थ कैसे ?

भई, घर और घरनी दोनों मन में, चूल्हा-चक्की न भी हो, जोरू-जाँता न भी हो, तो भी अधिकांश आदमी गृहस्थ है ।

उसके बाद जरा देर रुककर पूछा — अच्छा, तुम्हारी जान-पहचान का कोई मनी-लैंडर है ?

राम वसु के बीच में पड़ने से गंगाराम सरकार ने सिर्फ पच्चीस रुपए

सैंकड़े सूद पर टामस को रुपए उधार दिए। जमीन तक झुककर सलाम करके उसने कहा, सरकारी कर्मचारी होने से सूद कुछ कम होता, लेकिन —

लेकिन — टामस ने कहा — हम तो और भी बड़ी सरकार के कर्मचारी हैं — पादरी, प्रभु के भेजे हुए।

अब की गंगाराम ने आसमान की तरफ ताककर नमस्कार किया, शायद प्रभु को लक्ष्य करके, उसके बाद बोला, पादरी साहब का कहना ठीक है, लेकिन बात यों है कि इन वैषयिक मामलों में प्रभु के कर्मचारी से कंपनी के कर्मचारी का पलड़ा भारी होता है।

उसके बाद टामस को खुश करने के लिए कहा, बिना किसी जामिन के ही आपको रुपए दिए, इसका एक ही कारण है आपका सफेद चमड़ा।

राम बसु बोला, इससे बड़ा जामिन और हो क्या सकता है, यह तो चाँदी की खान है, यानी सिलवर माइन।

टामस ने समझा, यह एक अच्छी दिल्लगी हुई, इसलिए एक बार हँसने की कोशिश की। लेकिन पच्चीस रुपए सैंकड़े की बात मन को कोंचती रही इसलिए हँसी वैसी खिली नहीं।

शर्त एक ही रही कि रुपया जब तक वसूल नहीं हो जाता, टामस कलकत्ता छोड़कर जा नहीं सकता।

उन दिनों अंगरेज, खास कर कंपनी के अंगरेज नौकर देशी महाजनों के ऐसे फेरे में पड़ते थे कि हिलने-डुलने की शक्ति नहीं रहती। नए आए तरुण राइटरगण (बाद के सिविलियन) पिता के शासन के कुएँ से निकलकर यहाँ स्वेच्छाचारिता के महासमुद्र में आ गिरते। इस देश की माटी पर पाँव रखते ही स्वेच्छाचार की सरपट चलने लगते। लेकिन रुपए? कंपनी से जो तनख्वाह मिलती, उससे भोजन-छाजन ही मुश्किल से चलता, फिजूल-खर्ची कहाँ से चले? वह यहाँ के महाजन चलाया करते थे। लेकिन उनके रुपए चुकाता कौन? वही राइटर ही चुकाते। कलकत्ते के प्रशिक्षण पर्व को समाप्त करके जिले का भार लेकर मुफस्सिल में जाते ही उनके कई और हाथ निकल आते। घूस, प्रजा को सताना और अन्याय की जड़ यहीं जमती।

थोड़े ही दिनों मे सारा कर्ज चुकाकर काफी दौलत जमा करके वे अपने मुल्क को लौट जाया करते। भारत की जादू की लकडी की महिमा से जोड़ी-गाड़ी, घर-द्वार, लाट घराने की बीवी और पार्लियामेंट का आसन आदि मिलने में देर नहीं लगती। यही लोग तत्कालीन अंगरेज समाज में 'नबोब' नाम से परिचित थे। मुसलमानी नवाबी शासन के सुयोग्य उत्तराधिकारी बने फिरंगी नवाब।

टामस बेशक इस क्रम का व्यतिक्रम था। टामस जैसा व्यक्ति सभी युग, सभी समाज, सभी देश में व्यतिक्रम होता है।

नीलू दत्त ने कहा, भाई मेरे, बजरे को किनारे लगाया है, अब कोई डर नहीं!

राम वसु बोला, मगर इस डोंगी की एकवार भी उपेक्षा मत करना। दुनिया में बजरा और डोंगी, दोनों की जरूरत होती है।

भला यह मै नहीं जानता! तुमने तो इसी बीच उसे गंगारामी रस्से से बाँध लिया है।

मगर एक गिरह और लगाने में क्या दोष है?

क्या कहना चाहते हो, सो तो कहो?

इसपर राम वसु ने कहना शुरू किया, बहुत दिनों से टामस के साथ हूँ, मेरा अंदाज है, उसे प्रभु ईसा का जितना ख्याल है, मेरी मैगडेलेन का ख्याल उससे कहीं ज्यादा है।

नीलू दत्त ने पूछा, यह फिर कौन होती है?

पहले तो वेश्या थी, बाद में प्रभु की कृपा से तपस्विनी हो गई।

सभी वेश्याओं का एक ही हाल देख रहा हूँ। मगर तुमने इतना सब जाना कहाँ से?

बाइबिल पढ़कर। पढ लो भैया, जरा उस किताब को पढ़कर देखो। उससे जात नहीं जाएगी, किस्से बहुत मालूम होंगे।

ये सब किस्से है क्या उसमें? फिर तो उसके धर्मग्रंथ होने में कोई संदेह नहीं।

उसके पुराने हिस्से में बहुत लच्छेदार किस्से हैं, मगर बताऊँ, अपने रामायण और महाभारत के सामने कुछ नहीं है।

इसपर नीलू दत्त के बनियाइन-ढँके रोएँदार सीने में एकाएक आर्य-गौरव उद्वेलित हो उठा। दोनों हाथ सर से छुआकर बोला, अरे भई, वह आर्य ऋषियों की सृष्टि है, क्यों न हो!

उसके बाद जरा थमकर बोला, तो ऐसी एक अच्छी किताब का बंगला अनुवाद हो जाता, तो पढता।

यह मनोकामना जल्द ही पूरी होगी — यही काम करने के लिए तो कैरी यहाँ आया है।

बहुत अच्छा, जितनी जल्दी हो, कर डाले अनुवाद, दोपहर को पढ़ी जाएगी। अच्छा हाँ, क्या तो कह रहे थे टामस के बारे में?

उसे नारी के बंधन में बाँधा जा सकता, तो निश्चित होता।

यह बात! तो यह कौन-सा कठिन काम है? परसों मेरे बगीचे में निकी बाईजी का नाच होगा। बहुतेरे साहब-सूबे आएँगे। टामस को भी ले आओ न?

मैंने इस बात का इशारा तो उसे कर दिया है, मगर किसी तरह कैरी गड़बड़ घोटाला न कर दे!

उस कम्बख्त को भी क्यों नहीं लिवा आते हो?

वह बड़ी सख्त गोटी है!

तो फिर सहज को ही ले आओ। लेकिन निकी जैसी खानदानी बाईजी क्या उस बूढ़े पादरी पर नेक-नजर डालेगी?

राम वसु ने कहा, फिक्र मत करो, यह काम मैं किसी और से करा लूंगा — टुशकी को ले आऊँगा।

अपनी सूझ के गर्व से फूलकर नीलू ने कहा, अब देखा जाएगा कि वे हमें ईसाई करते हैं या हम उन्हें जंटू करते हैं।

राम वसु बोला, दत्त बाबू, अब ज्यादा देर नहीं करूँगा, जल्दी-जल्दी टामस को यह खुशखबरी सुना आऊँ।

नीलू ने कहा, परसों शनिवार शाम को।

दूर से हाथ हिलाकर वसु ने जताया, सब याद है।

निकी बाईजी (?)

दुतल्ले के हॉल मे नाच हो रहा था। बरामदे के कोने में अँधेरे में खडे होकर नीलू दत्त और राम वसु बातें कर रहे थे।

राम वसु ने कहा, भई, टुशकी को निकी बनाकर चला दिया, अगर बात खुल जाए?

पागल हुए हो! शराब का ऐसा दौर चलाया है कि टुशकी और निकी का भेद तो दूर रहा, मुहर और चवन्नी का फर्क जानने का भी उनमें दम नहीं। वह सुनो —

एक नाच के अंत मे विदेशी कंठ का उल्लास-हुँकार उठा — ब्रेवो, कैटलिनी ऑव दी ईस्ट!

नीलू दत्त बोला, देख लिया न! होश थोडे ही है? दिमाग में वही जो निकी बाईजी घुसा दी गई है, बस। अब अगर मुहल्ले की खूसट बुढिया भी आकर नाचे तो वह निकी ही है।

ब्रेवो निकी, माइ डार्लिंग।

खैर, तुम्हे भी कम सुविधा नहीं हुई। निकी के न आने से बहुत-से रुपए तो बच गए।

गुड़ में बालू बराबर।

सो कैसे?

निकी नहीं आ सकेगी, यह सुनते ही शराब की मात्रा बढ़ा देनी पड़ी। निकी के रूप की कमी को शराब से ही भरनी होगी, वरना ये कम्बख्त महाभारत करके छोड़ेंगे।

वह क्या?

पहले मैकवानस बियर लाने की मोची थी, क्वार्ट बोतल साढ़े तीन रुपए दर्जन। निकी के न आने से स्टोनम बस बियर मँगानी पड़ी, क्वार्ट बोतल साढे पाँच रुपए दर्जन। फिर नैशनल मार्का ब्रांडी चौदह रुपए की बोतल आती है, उसके बदले बाईस रुपए बोतल बी-हाइव, चौबीस रुपए बोतल डेनिस मुनि, सत्ताईस रुपए बोतल हेनेसी मँगानी पड़ी। निकी पर जो लागत लगती, कुल मिलाकर उससे ज्यादा पड़ गई।

राम बसु ने पूछा, दो-एक बूंद परसादी नहीं मिल सकती?

तुम भी जैसे, तलछट तक की खैर न रहने देंगे ये कम्बख्त।

जो भी हो, बोतलें बेचकर कुछ पैसे निकल आएँगे। विलायती शराब की बोतलों का दाम ज्यादा है, चार रुपए दर्जन।

बसु, तुमने इतने दिन साहबों की संगति की, मगर उनके स्वभाव से वाकिफ न हुए।

क्यों?

अजी, जाने से पहले ये साले बोतलों मे गदायुद्ध करेंगे और झाड़-फानूस तोड़कर, कोच-कुर्सी को चकनाचूर करके तब कहीं रुखसत होंगे।

तो फिर हर साल यह तमाशा कराते क्यों हो?

करमफल! मुहल्ले में रुतबा बढेगा, खानदानी धनी घोषों से होड़ लेनी होगी।

इसके बाद उसने एक लंबी साँस छोड़कर कहा, जानाम्यधर्मं न च मे निवृत्तिः।

गीता की इस महान् उक्ति की पृष्ठभूमि में हॉल से आवाज आई —

विगिन डार्लिंग विगिन

कैटलिनी ऑव माइ हर्ट।

एक मतवाला गला सुरा और सुर विजड़ित स्वर में गा उठा —

यू'र क्वाइट ऑल राइट इनसाइड दी बार

बट खबरदार, दी कैवियार!

राम बसु ने कहा, नः, महापाषंड हैं, गीता का महातम नहीं समझते।

सब मट्टी कर दिया।

नीलू दत्त ने कहा, गीता का महातम न भी समझे, महाभारत की अमर्यादा नहीं करेगा।

ठीक ऐसे समय हॉल से खिलखिलाहट की लहर उठी।

यह लो, शायद सभापर्व का अभिनय शुरू हो गया। अब कही दुर्योधन-दुःशासन सौ भाई मिलकर एक द्रौपदी के लिए खींचा-तानी शुरू कर दें तो यहीं द्रौपदी पतन न हो जाए।

इसी आशंका से तो रहीमा बीबी, हाफ काली और प्रमदा को साथ ले आया हूँ।

उमगी हँसी, घुंघरू की आवाज, ग्लास की टुन-टुन, लड़खड़ाता प्रेम-हुंकार, हिंदी-अँगरेजी गीतों की एकाध कड़ी — यह सब हॉल से बाहर आती ही रही।

वे बोल उठे, शर्मिदगी की हद हो गई।

नीलू ने कहा, औरतों को खून-जखम न कर जाएँ कहीं।

राम बसु ने सलाह दी, तुमने शराब में इतना खर्च किया, एक डाक्टर भी बुलवा लिया होता।

उससे नशेबाजों की संख्या एक और बढ ही जाती न! अभी इन औरतों का देना-पावना है, उसके बाद कसाईटोला के यूनियन टैवर्न का बिल। तबाह हो गया, मै तो तबाह हो गया।

निकी आती तो शायद इतना हंगामा न होता।

नीलू ने कहा, कौन जाने! मगर वह आने क्यों लगी। महाराजा नवकृष्ण की बुलाहट छोड़कर वह मानिकतल्ला के नीलू दत्त के यहाँ क्यों आएगी? उन बातों की याद दिलाकर दिल न दुखाओ। रहने दो।

उसने प्रसंग बदलकर कहना शुरू किया, तुम्हें आने में देर जो हुई, तो मैने समझा, तुम टामस को नहीं ला सके।

हाल लगभग यही हुआ था। अचानक कैरी बोल उठा, उहूँ, टामस के जाने से कैसे चलेगा। आज शाम दोनों मिलकर बाइबिल का अनुवाद

करेंगे। लो, सुनो ! कैरी की बात सुनकर टामस का तो मुंह सूख गया। वह मेरी तरफ टुकुर-टुकुर ताकता रहा। मैंने एक लंबा सलाम बजाकर कैरी से कहा, मानिकतल्ले का एक मोदी ईसाई बनना चाहता है। उससे मैंने कहा है कि एक सच्चे पादरी को लाकर तुम्हे प्रभु ईसा की महिमा सुनाऊँगा। अब अगर डाक्टर टामस न जाएँ तो वह क्या सोचेगा भला ! मेरा यह कहना था कि कैरी और टामस का चेहरा दमक उठा। कहीं कम्बख्त कैरी भी साथ आना चाहे, यह सोचकर मै टामस को लेकर भागा।

अब टामस से टुशकी की भेंट करा देनी चाहिए।

वह महाप्रस्थानिक पर्व के पहले होगा — स्त्री पर्व मे।

टुशकी को सब कुछ सिखा-पढ़ाकर लाए हो न ?

उसे सिखाना-पढ़ाना नही होता, वह हम तुम सबको सिखा सकती है।

तो चलो, जरा खाने का इंतजाम देख आएँ। सब ठीक तो है।

जरूर-जरूर। देवता के भोग मे त्रुटि हो तो कोई बात नहीं।

अरे भई, देवता को न भी डरो तो चल सकता है। ये तो ब्रह्मदैत्य है, भूलचूक हुई तो गर्दन मरोड़ देंगे।

तो फिर इनको क्यों बुलाते हो ?

लोग वैतालसिद्ध क्यों होना चाहते हैं ?

दोनों भोजन की व्यवस्था देखने गए।

वह ऐसा जमाना था, जब खान-पान की भरपूर धूम करने पर भी नीलू दत्त जैसे अभाजन के यहाँ अंगरेज नहीं जाते थे। तो ये कौन थे आखिर ? कलकत्ते के अंगरेज-समाज के प्रत्यंततम प्रांत में कोट-पैंट-हैट पहने अंगरेजी बोलनेवाला जो एक खिचड़ी फिरंगी समाज बन गया था, ये सब उसी समाज के सुयोग्य प्रतिनिधि थे। इंगलैंड से इनमे से अधिकांश का सम्बन्ध जनश्रुति पर ही था। दो-चार खाँटी अंगरेज भी थे। दीवालिया होकर या वैसे ही किसी कारण से अपने समाज मे बहिष्कृत होकर इनसे आ मिले थे। खास अंगरेज एक टामस को ही कहा जा सकता था। मतलब कि नीलू दत्त भारतीय समाज के जिस स्तर का था, उसके अतिथि भी अंगरेज

समाज के उसी स्तर के थे। इसी को कहते हैं ईश्वर की समदर्शिता। वे भक्त और भक्ति के पात्र को एक ही साँचे में ढाला करते हैं, जिसमे भक्ति के पात्र को यह कहने का मौका न मिले कि भक्त न मिला और भक्त यह न कह सके कि भक्ति का पात्र न जुटा। भगवान जब निहायत बदसूरत एक काली औरत गढ़ते हैं तो साथ-साथ वैसी ही रुचि के एक मर्द को भी गढ़ना नहीं भूलते। किसी काली-कलूटी लड़की की शादी नहीं हुई, ऐसा तो नहीं सुना। बाजार में ताजा और सड़ी, दोनों तरह की मछलियाँ आती हैं। जब बाजार उठता है, तो पता चलता है, दोनों ही बिक गई। इन उदाहरणों से भगवान को कभी पक्षपाती नहीं कहना चाहिए।

काफी रात हो चुकी तो आमंत्रितों का दल विदा हुआ। यह बताना फिजूल है कि हरेक को घर-पकड़कर गाड़ी-पालकी आदि सवारी पर चढाना पड़ा। नीलू दत्त ने शराब की ऐसी इफरात व्यवस्था कर रक्खी थी कि उनमें झाड़-फानूस तोड़ने-फोड़ने की शक्ति नहीं रह गई थी — तोड़-फोड़ की नौबत ग्लास-बोतल तक ही रही। नीलू ने कहा, शराब का खर्च बढ़ाकर झाड़-फानूस का खर्च बचाया।

रह गया केवल टामस। उसे राम बसु ले जाएगा। इस इंतजाम की वजह और थी और वह जल्द ही सामने आई।

टामस हॉल के एक कोच पर उठंग कर बैठा था। हठात टुशकी उससे जा लिपटी और करुण स्वर में बोली, साहब, आप मेरी जिंदगी हैं, मुझे छोड़कर जा रहे हैं आप ?

टामस इसके लिए बिलकुल तैयार न था। नाचते वक्त सबकी तरह उसने भी टुशकी को मशहूर निकी बाईजी समझकर वाहवाही दी थी, घाघरा-ओढनी में लिपटे सौंदर्य पर मुग्ध हुआ था, नशे से लड़खड़ाते उसके पैरों की ताल-ताल पर अपने को नचाया था — लेकिन उसी निकी (?) ने हठात् उसे इतना अपना समझ लिया, यह बात उसकी कल्पना में भी न आई थी। उसकी बात का क्या जवाब दे, सहसा कुछ न सूझा।

टुशकी ने उसके गले से लिपटकर कहा, तुम चले जाओगे तो मेरी

जान निकल जाएगी। तुम्हें स्त्री-हत्या का पाप लगेगा।

अब तो बिना बोले उपाय न था। टामस बोला, नहीं-नहीं, मैं भला कहाँ जाऊँगा।

टुशकी ने अब आँखों से सावन-भादों जारी कर दिया। बोली, मेरे माणिक, तुम मानिकतल्ला में क्यों रहोगे, मदनमोहनतल्ला में क्या मेरा मकान नहीं है? आओ, मेरे और नजदीक आओ।

यह कहकर उसने हलके से जो खींचा, टामस पके फल-सा फर्श पर धप्प से गिर पड़ा। टामस ने देखा, टुशकी की आँखों में आँसू हैं। उसने ओढ़नी से उसका आँसू पोंछकर कहा, निकी, डियर, रहने की इच्छा तो तुम्हारे ही यहाँ है, मगर उस कैरी के मारे यह मुमकिन नहीं।

कैरी कौन होता है तुम्हारा। वह मुँहजला यानी बर्न्ट फेस कौन है?'

राम बसु की कृपा से टुशकी ने अंगरेजी के दो-चार शब्द सीख लिए थे।'

टुशकी के गाढ़े प्रेम से टामस जैसे विचलित हो गया, रुँधे आवेग से बोल उठा, कोई नहीं होता वह, कोई नहीं। निकी, तुम्हीं मेरी सब हो।

तो तीन सत्य यानी थ्री ट्रथ करके कहो कि मुझे छोड़कर नहीं जाओगे?

टामस ने कहा, नहीं। कभी नहीं जाऊँगा।

तो मेरे उस घर में चलो।

क्या करना चाहिए, कुछ समझ न पाकर जब टामस आगा-पीछा कर रहा था कि उधर से रहीमा बीबी दौड़ी आई — अरी छोरी, यह क्या हरकत है? मेरे खसम को हथियाना चाह रही है?

टुशकी ने कहा, रक्खो अपनी चालाकी। मैंने जब से टामू को देखा है, पागल हो गई हूँ।

और तेरा टामू जो मुझे देखते ही पागल हो गया है, इसका भी पता है? नाच के समय मेरी तरफ ताककर कनखी मार रहा था — उसने कनखी का अभिनय कर दिखाया।

अरे, जितना बड़ा मुँह नहीं, उतनी बड़ी बात! — टुशकी ने रहीमा

को एक धक्का दिया। रहीमा ने छिटककर टामस को जकड़ लिया। रहीमा और टुशकी में टामस के लिए होड़ लग गई।

उस संकट की घड़ी में टामस को अगति की गति, अनाथों के नाथ भगवान की याद आ गई। घुटने टेककर उसने प्रार्थना शुरू की — प्रभु, मेरी विनती सुनो, शत्रुओं से मेरी रक्षा करो। दुष्टों की सलाह से मुझे बचाओ — अन्यायियों के आक्रमण से मुझे बचा लो।

टामस प्रार्थना के बोल बंगला में ही बोल रहा था। शायद इसी आशा से कि शत्रु और अन्यायी के मन में विवेक का उदय होगा।

घुटने टेके हाथ जोड़कर टामस इधर प्रार्थना करने लगा और उधर उसी की ताल-ताल पर टुशकी और रहीमा बीबी उसे चूमने लगीं — पाप के आक्रमण और उसके निरोध की चेष्टा का ऐसा उज्ज्वल दृष्टांत संसार के धर्म साहित्य में असंभव न भी हो तो विरल जरूर है।

टामस गद्-गद् कंठ से कहता गया —

तुम्हारी भर्त्सना से वे भाग गए, तुम्हारे वज्रादेश से वे चले गए। वे पहाड़ की चोटी पर चढ़े, गहरी घाटी में उतरकर विधाता द्वारा निर्दिष्ट जगह को चले गए।

प्रार्थना की अंतिम कड़ी सुनकर टुशकी ने कहा, दुःख किस बात का प्यारे, मेरे साथ चलो, पहाड़ की ऐसी चोटी दिखाऊँगी, जिससे ऊँची दूसरी नहीं, ऐसी गहरी घाटी दिखाऊँगी, जिससे नीची और नहीं, — और तुम्हें ले उसी स्थान में जाऊँगी, जो तुम्हारे लिए विधाता द्वारा निर्दिष्ट है। क्यों री छोरी, तू कर सकेगी यह ?

छोरी से इशारा रहीमा की ओर था।

टामस और टुशकी, दोनों ने देखा कि प्रचंड हँसी के आवेग से रहीमा फर्श भर में लोट रही है।

टुशकी बोली, टामस साहब, देख लिया न, इससे वह नहीं हो सकता, इसलिए खिसकी जा रही है।

अच्छा ! मैं खिसक रही हूँ ?

रहीमा ने ओढ़नी से कमर कस ली और 'रणं देहि' मूर्ति धारण कर उठ खड़ी हुई। टुशकी भी पीछे हटनेवाली न थी। उसने भी ओढ़नी कमर मे लपेटी और कहा — आ जा !

उन दोनो की भीममूर्ति देखकर टामस के तो प्राण उड़ गए ! वह झट उठा और 'मुशी, मुशी' कहता हुआ जोर से भागा।

टुशकी और रहीमा भी 'जाते कहाँ हो मेरी जान' कहकर उसके पीछे-पीछे लड़खड़ाते कदमों दौड़ी।

न:, वसुजा के साथ भाग गया — कहती हुई दोनों लौट आई।

अब रहीमा ने पूछा, भला बता तो टुशकी, मामला क्या है ?

रहीमा को इस साजिश का कुछ पता न था। टुशकी ने जब बताया तो वह फिर से एक बार हँसी। पूछा, सच हो रहेगा या नशा टूटते ही साहब भी जंजीर तोड़ेगा ?

लगता है, नही तोड़ेगा। देखें, कहाँ तक क्या होता है।

इतने में रहीमा चिल्ला उठी, प्रमदा, यह क्या शक्ल बनाई ?

हाम प्रमडा नेइ है, हाम कर्नल जबरजंग प्रिंगली साहब है।

प्रमदा ने जानें कहां से एक पुरानी जंगी पोशाक जुटा ली थी, माथे में परवाली जंगी टोपी, चुस्त पतलून और लाल-सफेद रंग से मुँह रंग लिया था।

दोनों ने पूछा, यह कैसा रूप बनाया ?

यह सब मत बोलो। आओ बीबी लोग, कर्नल साहब के साथ बॉल डान्स करना पड़ेगा।

अब उन लोगों ने समझा कि आज का तमाशा यहो खत्म नही हुआ, अब साहबी नाच की नकल मे नाच चलेगा। उन्हे इसपर जरा भी हैरानी नही हुई। क्योंकि उन दिनों बाइयों के नाच के बाद जब साहब-मेम सब चले जाते — नाचवालियाँ आपस मे साहबी नाच की नकल करके मौज-मजे किया करती थीं।

प्रमदा ने रहीमा से कहा, आओ बीबी, हाम, तुमारा साथ नाचेगा।

रहीमा ने कहा, तो जरा रुक जाओ कर्नल साहब, मैं पहले बीवी तो बन लूँ।

और वह भरसक मेम बनकर प्रमदा के पास जा खड़ी हुई। प्रमदा ने उसकी कमर पकड़ी और चक्कर खाकर बॉल डान्स की नकल मे नाचने लगी।

साजिंदे सब कब के जा चुके थे। टुशकी ने कहा, भई बिना बाजे के नाच भी जमता है!

यह कमी दूसरे ही क्षण दूर हो गई। अंदर क्या हो रहा है, यह देखने के लिए नौकर-चाकर अंदर आए और मारे खुशी के चीख उठे — वाह बीवी साहब! क्या खूब! छूरी न मार मेरी जान! काट डाल कि खराब खून बह जाए!

टुशकी बोली, छूछी वाहवाही से क्या होना, बाजा जुटाओ।

कहना था कि वे हाथ के पास ग्लास, बोतल, प्लेट, कुर्सी, मेज — जो मिला, वही बजाने लगे।

नाच धीरे-धीरे जम गया। तब एक ने कहा, कोई गीत भी होता, तो बड़ा अच्छा होता।

टुशकी ने कहा, अच्छा होता, तो गाते क्यों नहीं। साँड़ जैसा चिल्ला रहे हो!

खूब कही मेरी जान! उसने शुरू किया —

देखो मेरी जान
कंपनी निशान
बीबी गई दमदम
उड़ा है निशान!
बड़ा साब छोटा साब
बाँका कप्तान;
देखो मेरी जान
लिया है निशान।

अब किसी बात की कमी नही रह गई। आधी रात के समय उस हॉल मे, जहाँ शराब और जले मोम की गंध घुमड़ रही थी नाच-गाना-बाजा — उत्साह के साथ सब चलने लगा। यही इसका अंत होता तो काफी कहा जाता, लेकिन नही, कौतुकमय जादूगर की झोली मे अभी और कुछ बाकी था।

नाच के क्षणिक विश्राम के समय रहीमा और प्रमदा साहबी आवाज की नकल करने लगी —

आ ''डा पेग लाओ
नेहि नेहि छोटा पेग नेहि
बड़ा पेग
एकडम वारेन हस्तीन के हस्तीनी का माफिक पेग।

उनकी देखा-देखी सबने साहबो की कुछ न कुछ नकल शुरू कर दी — और हर बात को समाप्ति पर हँसी का ऐसा फव्वारा छूटने लगा कि छत की शहतीरें हिल-हिल उठने लगीं।

अचानक गरज हुई, कौन है रे बदमाश!

सब चौंक उठे। यह तो नकली साहब की आवाज न थी, बिलकुल खाँटी विलायती चीज!

शीघ्र ही उन सबके संदेह को जड़ से मिटाते हुए कोच के अंदर से मिस्टर जॉनसन ने सर निकाला। हेनेसी ब्रांडी की कृपा से कोच की ओट में पड़े जॉनसन पर अब तक किसी की नजर नही पड़ी थी।

उसके रसभंग करनेवाले आविर्भाव से सब डरकर जहाँ तक संभव था, विनीत भाव से खड़े हो गए।

लेकिन उससे जॉनबुली तेज के घटने का कोई लक्षण नही देखा गया। तीन-चार बार की कोशिश से अपने पैरों पर खड़े होने के बाद सच्ची जॉनबुली आवाज और भाषा की करामात दिखानी शुरू कर दी — यू बस्टर्ड, यू ब्लैकीज, यू रासकेल्स! यू इनसल्ट ब्रिटन्स! वट''''वट''''

एक खाली बोतल उठाकर फेंकडे को सारी साँस खींचकर गरज उठा,

रूल ब्रिटानिया, ब्रिटानिया रूल्स दी वेव्स !

और गदा की तरह हाथ की बोतल को घुमाते हुए ब्रिटन-संतानों का अपमान करनेवालों की ओर लपका — वट, वट, ब्रिटन्स नेवर शैल····

लेकिन ब्रिटनों का संकल्प दिखाने की नौबत नही आई, उसके पहले ही जॉनसन धड़ाम से फर्श पर गिर पडा। बोतल चकनाचूर होकर लोगों पर छिटकी। महान संकल्प का ऐसा आकस्मिक पतन शायद ही देखने को मिलता है।

खून, खून — कहकर सब चिल्ला उठे।

शोरगुल सुनकर नीलू दत्त कमरे मे आया। बोला, ओ, जॉनसन साहब यही है। जाओ, सब मिलकर इसे गाड़ी पर चढ़ा दो। उसका कोचवान बेचारा बड़ी फिक्र में पड़ गया है।

आखिर नीलू दत्त के अनुचर समुद्र पर शासन करने मे माहिर 'ब्रिटन-संतान' को उठाकर गाडी की ओर ले चले।

डिनर और डुएल

जॉर्ज स्मिथ ने जब सुना कि कैरी मानिकतल्ला के मकान में जाएगा, तो उसने विदाई के पहले एक खासा भोज करने की सोची। जॉन और एलिजाबेथ ने पिता का समर्थन किया। कहा, इस मौके पर परिवार के बंधु-बांधवों को न्योता भेजा जाएगा। कैरी परिवार से सबका परिचय कराने के इस सुयोग को छोड़ना नही चाहिए। इसलिए पिता, पुत्र और कन्या, तीनों जने भोज की तैयारी में लग गए। कैरी को उन्होंने सूचित कर दिया। कैरी ने कहा, आप लोगो की अयाचित मित्रता से ही हमारे प्रयास का पहला पर्व सहज हुआ, इसलिए हम आपके किसी संकल्प में बाधा नहीं देना चाहते।

लेकिन मुसीबत कर दी मिसेस कैरी ने। वह जिद कर बैठी कि भोज

मे केटी और उसके पति को न्योता करना होगा।

कैरी ने हैरान होकर कहा, यह कैसे हो सकता है?

क्यों नहीं हो सकता? उन दोनों की तो नियम से शादी हुई है। और यही नहीं, मिस्टर दुबोया भला आदमी है। कहीं हमें संदेह न रह जाए, इसलिए उसने व्याह की रजिस्ट्री की नकल भेज दी है। अब उन्हें अलग बनाए रखने की क्या वजह हो सकती है?

डोरोथी, यह क्यों भूलती हो कि भोज कर रहा है स्मिथ-परिवार। किसे-किसे न्योता देना है, यह ठीक करना उनका काम है। हम परामर्श देनेवाले कौन होते हैं?

तुम कोई नहीं होते, जानती हूँ, मगर मैं परामर्श दूँगी, क्योंकि केटी मेरी बहन है और मि० दुबोया मेरा डियर ब्रदर-इन-लॉ है।

कैरी बड़ी मुश्किल में पड़ा। केटी ने जॉन को ठुकरा दिया है, डोरोथी यह नहीं जानती थी और जानती भी तो समझती या नहीं, संदेह है। फिर भी अंतिम कोशिश के नाते इस बात का जिक्र करते ही डोरोथी ने कैरी के माता-पिता के बारे मे जो सब शब्द कहे, वह डोरोथी की जबान के लिए भी सर्वथा नए थे। इसपर भी जब कैरी मौन हो रहा तो डोरोथी ने आखिरी हथियार की शरण ली। दो-एक मुलायम तकिया खींचकर बोली, मेरा जी कैसा तो कर रहा है।

कैरी ने कहा, तुम शांत हो जाओ, मै जाता हूँ।

डोरोथी की यह इच्छा कानों-कान स्मिथ परिवार में पहुँची, तो लिजा ने दबे रोष से कहा, नहीं, यह हर्गिज नहीं हो सकता।

पिता ने एक बार बेटी की ओर ताका, एक बार बेटे की ओर और चुप रह गया।

जॉन ने कहा, हो क्यों नहीं सकता लिजा? वे पिता जी के मेहमान हैं, उनके अपमान मे पिता जी का अपमान होगा। हमें मिस्टर और मिसेस दुबोया को न्योता करना होगा।

कृतज्ञ पिता ने जॉन की हथेली दबाकर कहा, थैंक्स जॉन, यू आर ए

ब्रेव फेलो !

आखिर उन्हें न्योता भेजने का निश्चय हुआ ।

लिजा ने दबे स्वर में कहा, डाईन बुढ़िया कहीं की ! मरती भी नहीं ।

उस समय कलकत्ते के गोरे समाज मे मोटा-मोटी तीन जातें थीं । उत्सव के अवसर पर जिन्हे गवर्नर के यहाँ का न्योता मिलता, वे इस विचित्र वर्णाश्रम समाज के सबसे ऊँचे स्तर पर थे । जिनका उत्सव-आयोजन होता टाउन हॉल मे, अर्थात् जो मेयर की अदालत के नाम से मशहूर था, उस इमारत में, वे थे बिचले स्तर के । और सबसे नीचे के स्तरवालो के उत्सव की कोई निश्चित जगह न थी । वे थोड़े किराए के किसी टैवर्न मे मिला करते । सामाजिक मामलों में सबसे नीचेवालों को सबसे ऊँचे और बिचले स्तरवालों मे प्रवेश की गुजाइश न थी । जरूरत होने पर यानी न्योते की जगह ये सामाजिक मर्यादा से रहित धनी नेटिवों के यहाँ भी जाते ।

नीलू दत्त के बगीचे में हमने इन्ही लोगों को देखा था । ऊँचे स्तर के गोरे ऊँचे स्तर के नेटिवों के यहाँ जाते । क्लाइव, वारेन हेस्टिंग्स आदि सबने महाराजा नवकृष्ण के यहाँ चरणों की धूल दी थी ।

स्मिथ-परिवार बिचले स्तर का था । उनके अपने-सगे, बंधु-बांधव भी बिचले स्तर के थे — सभी स्मिथ जैसे व्यवसायी । स्मिथ के आमंत्रित लोग वही थे ।

मोशिए और मादाम दुबोया को न्योता भेजा गया । स्मिथ-परिवार को उम्मीद थी कि वे लोग नहीं आएँगे ।

जॉर्ज ने कहा, लिजा, घबराओ मत, वे हर्गिज नहीं आएँगे ।

लिजा ने हँसकर कहा, आप निरे उस युग के आदमी है पिता जी, आपको पता नहीं, वे जरूर आएँगे ।

जॉन ने कहा, तो हर्ज ही क्या है । आने की उम्मीद से ही तो लोग न्योता करते है ।

लिजा ने खीजकर कहा, तुम चुप रहो जॉन । एक अनजान आगंतुक से यों घुल-मिलकर ही तुमने यह मुसीबत मोल ली है ।

बेटी की इस शिकायत से दुःखी बेटे के चेहरे को देखकर पिता को तकलीफ हुई। कहा, यह तुम्हारा अन्याय है लिजा, केटी तो बुरी नहीं लगती।

लिजा ने चिढ़कर कहा, हाँ, बुरी नहीं लगती! वह तो एक छिपी शैतान है। यह मैंने खूब गौर किया है कि ब्रुनेट लड़कियाँ कभी अच्छी नहीं होतीं।

लिजा खुद ब्लोंड थी।

इस अप्रिय प्रसंग को दबाने के लिए पिता ने कहा, वे अच्छा मानेंगे तो आएँगे और आएँगे तो हम उनसे भला व्यवहार करना नहीं भूलेंगे।

बात तो यहीं खत्म हुई, लेकिन लिजा समझ गई कि जॉन के मन में केटी का आसन अभी भी खाली नहीं हुआ है। सोचा, अभी यह भोज का मामला किसी तरह निभ जाए।

पुरुषों की आँखें विधाता ने बड़ी चीजें देखने के लिए बनाई हैं और औरतों की सूक्ष्म दर्शन के लिए। आदम की आँखों ने सेब के विशाल पेड़ को देखा था और हौवा की नजर कहाँ गई कि उसके छोटे से फल पर!

दो बजे डिनर था। उस दिन किसी बात की छुट्टी थी, इसलिए दो घंटे पहले से ही आमंत्रितों का आना शुरू हो गया। धीरे-धीरे ब्रुक्स, ब्राउन-बेरी, फिटन आदि [illegible] ने मिथ के मकान का विशाल अहाता भर गया। [illegible] की संख्या भी कुछ कम न थी। [illegible] लोग पत्नी सहित आए, [illegible] अविवाहितों [illegible] अकेला, लेकिन सबके साथ [illegible] चीज आई। [illegible] सरदार, [illegible] और [illegible] सबको [illegible] में [illegible], [illegible] और [illegible] कराया गया। [illegible] के लिए [illegible] लगे। [illegible] परिचित था।

[illegible] था, [illegible] और [illegible] में [illegible] थे, पर दोनों के [illegible] और [illegible]

मन में एक चिंता सदा उमक रही थी । क्या सच ही मोशिए और मादाम दुबोया आएँगे ? लिजा ने सोचा, शिष्टाचार के नाते दुबोया शायद आ भी जाए, लेकिन केटी तो इतनी बेशर्म हर्गिज नहीं होगी । जॉन के मन में भी यही चिंता थी, लेकिन कुछ और तरह की । अगर वे न आएँ ? तो बड़ा अच्छा हो, राहत मिले । लेकिन तुरंत ही जाने कैसी निराशा का अनुभव करता जॉन । सच ही नही आएँगे ? आखिर क्यों नही आएँगे ? और कहीं आ गए तो उनसे यानी केटी से कैसा व्यवहार वह करेगा ? लिजा ने कहा था, केटी ने उसके साथ बड़ा बुरा बर्ताव किया है । लेकिन उसके लिए केटी को दोषी मानने का मन नही हो रहा था जॉन का । उसका क्या दोष है ? लिजा कहती, केटी ने सोना फेंककर काँच उठा लिया है । लेकिन दुनिया के हजारों भ्रम के बीच हर समय सोने और काँच मे से सोने को चुन लेना क्या संभव है ? केटी के पक्ष में जॉन को वकालत करते देख लिजा नाराज हो जाती । कहती, तुम कापुरुष हो ! जॉन मुँह से न बोलते हुए भी मन ही मन कहता है, उसी कापुरुष में ही तो पुरुष है । पुरुष प्यार कर सकता है, नाराज हो सकता है. लेकिन बिलकुल निर्लिप्त कैसे हो जाए ? कभी-कभी मन में उसने केटी को दोष जरूर दिया है, लेकिन तुरंत ही उसकी ठीक उलटी प्रतिक्रिया हुई है — उसके प्रति और अधिक खिंचाव का अनुभव किया है । लिजा कहती, वास्तव मे दोष केटी का है ; जॉन कहता, नहीं, दुबोया का । लिजा कहती, दुबोया का क्या दोष ? जंगल में रहता है, सात जनम मे कभी गोरी लड़की नही देख पाता, जैसे ही केटी पर नजर पड़ी, गप्प से निगल गया — इसमे उसका दोष क्या है ? मगर बलिहारी है केटी की कि अंत मे एक फ्रांसीसी शैतान को अपना लिया !

फ्रांसीसी शैतान । जॉन सोचने लगा, अभिधा बिलकुल गलत नही । जो आदमी हजार लानत-मलामत पर भी नाराज नहीं होता, हर हालत में हँसी होठों से लगी होती है, वह शैतान के सिवा क्या है ? फ्रांसीसी शैतान और उसका गुरु मोशिए वोल्तेयर । वोल्तेयर की एक तसवीर जॉन ने देखी

थी। सारा चेहरा ही मानो व्यंग की अचल हँसी हो। तभी से जॉन के मन मे शैतान और हँसी का एक अटूट संबंध बैठ गया था। उसकी वह धारणा दुबोया को देखकर और पक्की हो गई! फ्रासीसी शैतान! और अंत मे यह सोने का सेव उसी के हिस्से पड़ा!

सोने का सेव सुनकर लिजा खीजकर बोली, तुम्हारा दिमाग खराव हो गया है — वह माकाल* है, माकाल!

तुम अन्याय कर रही हो लिजा।

इस तर्क का अंत नही होता। इतने मे वाहर पहिए की आवाज सुनाई पड़ी। लिजा ने वाहर झाँककर देखा और वोल उठी — लो, तुम्हारा फ्रांसीसी शैतान आ गया —

जॉन के चेहरे पर आशा टूटने की भागती हुई छाया देखकर लिजा ने वाक्य को पूरा किया — साथ में तुम्हारी वह 'सोने का सेव' भी आई है, फिक्र न करो।

आशा टूटने की छाया के गायव होते ही एक अजाने भय की छाया से जॉन का चेहरा एक लमहे के लिए पीला हो उठा, लेकिन दूसरे ही क्षण वलपूर्वक होठों पर हँसी लाकर उसने कहा, चलो लिजा, उनका स्वागत करें।

लिजा ने कहा, चलो।

जॉन ने गौर किया, लिजा के मुँह पर शिष्ट हँसी का मुखौटा है। जॉन के चेहरे पर भी लिजा ने वही बनावटी शिष्ट हँसी देखी, लेकिन आँखों के कोने में दो-एक सच्चे मोती भी मानो झलक रहे थे।

भाई-बहन लपककर गए। दुबोया दंपति का स्वागत करके उन्हें उतारा। कहा, हमारे बड़े भाग्य कि आप लोग पधारे!

केटी को कुछ कहने का मौका न देकर चेहरे पर सलज्ज, विनम्र हँसी, जैसी दामाद के लिए चाहिए, लाकर दुबोया ने कहा, सो क्या! हमें पहले ही आना चाहिए था। लेकिन बात यह हुई कि मादाम को सुन्दर-

* कुँदरू जैसा फल

वन के दर्शनीय स्थान दिखाने में व्यस्त था। मादाम जंगल देखकर बहुत खुश हुईं — उसका नया नाम रक्खा, फॉरेस्ट ऑव ब्युटीफुल वीमेन।

जॉन और लिजा ने एक क्षण के लिए एक दूसरे को देखा, फिर दोनों ने एक साथ केटी पर नजर डाली। केटी ने झट अपनी आँखें दूसरी ओर फेर लीं।

लिजा की तारीफ करने के लिए दुबोया ने कहा, अब देखता हूँ, यह शहर भी खूबसूरत हो उठा है — टाउन ऑव ब्युटीफुल वीमेन।

लिजा के कान की कोर लाल हो उठी — क्रोध से। उसने मन में कहा मैं इतनी लालची नही।

मुँह से बोली, आप लोगो को मिसेस कैरी के कमरे मे ले चलूँ। वे बड़ी बेसब्री से इंतजार कर रही है।

मिसेस कैरी अपने कमरे मे डिनर से पहले भूख जगाने के लिए चॉप खा रही थी। इन्हे कमरे में दाखिल होते देख 'ओ माइ डार्लिग', 'ओ माइ ब्रदर-इन लॉ' कहती हुई चीखकर मूच्छित हो गई।

अब उसकी बार-बार की मूर्च्छा से कोई घबराता नहीं। केटी तो पहले से ही आदी थी इसकी। मूर्च्छा टूटने की प्रतीक्षा करने लगे सब।

दुबोया ने कहा, मिसेस कैरी यदि मेरी डियर सिस्टर-इन-लॉ नही होतीं, तो मैं सोचता, अपने चॉप का हिस्सा देने के डर से ही बेहोश हो गई।

केटी ने कहा, तुम्हारा इस तरह से कहना अन्याय है।

उसने हँसकर धीमे से कहा, कौतुक की ऐसी सच्ची बात कह सकूँ, मेरी क्या मजाल! यह मोशिए वोल्तेयर की उक्ति है। तुम उनका नाम जरूर जानती होगी। — यह कहकर उसने अर्थ भरी निगाह से जॉन की तरफ ताका।

दुबोया की आवाज अजीब-सी थी। कीमती लेकिन काम में लाए गए रेशमी कपड़े में हवा लगने से जैसी एक मीठी और चिकनी आवाज होती है, बहुत कुछ वैसी ही।

मिसेस कैरी का मूच्छित होना और मूर्च्छा का टूटना — दोनों ही

आकस्मिक होता है। वह जैसे अचानक मूर्च्छित हो पड़ी थी, वैसे ही अचानक ठीक भी हो गई — वह उठ बैठी और दोनो बाहुओ मे केटी और दुबोया को जकडकर माइ डियर सिस्टर, माइ डियर ब्रदर-इन-लॉ कहती हुई जोरो से आँसू बहाने लगी। केटी अप्रतिभ हो सामने सर झुकाए बैठी रही। दुबोया लेकिन अप्रतिभ होने के लिए दुनिया मे पैदा नहीं हुआ था, उसने भी मँ शेयर, मँ शेयर कहते हुए रोना शुरू कर दिया।

इस पारिवारिक रोने-धोने में रहना ठीक नही, यह सोचकर जॉन और लिजा खिसक गए। कहा, हम तब तक खान-पान की व्यवस्था देखें।

वहाँ से बाहर निकलकर लिजा ने कहा, जॉन इन लोगो ने रोने का जुलाब लिया है क्या?

जॉन बोला, चलो-चलो, देखें कि उधर की व्यवस्था क्या हुई?

एक विशाल डाइनिग टेबिल के चारों तरफ मेहमानों को लेकर जॉर्ज स्मिथ खाने बैठे थे। मिसेस कैरी ने अपने एक ओर केटी और दूसरी ओर दुबोया को बैठाया था। मूर्च्छा टूटने के बाद से ही जो उसने उन्हें बाहुओं मे लपेटा, सो छोडा नहीं। क्षण में ही उन्हे अभिन्न साथी बना लिया। जॉर्ज ने अपने दोनों ओर कैरी और टामस को बिठाला था। दुबोया ऐसा बेशर्म था कि हजार मना करने पर भी उसने जॉन को जबर्दस्ती बगल में बैठाया। कहा, मिस्टर स्मिथ, आप मंगल सूचना के दूत है। जॉन के जी में आया कि उसकी नाक पर जोर का एक घूसा जमा दे — लेकिन अतिथि ठहरा, लाचार मंगल सूचना के दूत को शैतान के दूत के पास बैठना पड़ा। केटी ने लिजा को अपने पास बैठाना चाहा था, लेकिन किसी काम के बहाने, छिटककर वह मेरिडिथ और रिगलर नाम के दो मित्रों के बीच जा बैठी। उसके यों आसन-ग्रहण का मतलब ताड़कर केटी हँसी। लिजा ने मन ही मन कहा, मादाम टाइगर, तुम जहन्नुम मे जाओ। इस बीच उसने दुबोया दंपत्ति का नामकरण कर लिया था — मोशिए और मादाम टाइगर।

विलायत मे रहते समय कैरी ने सुन रक्खा था कि भारत चूँकि गरम देश है, इसलिए वहाँ गोरे लोगों की भूख-प्यास बिलकुल मर जाती है। वे केवल हवा-पानी पीकर और काली चमड़ीवालों के कल्याण करने के संकल्प पर ही जीते हैं। लेकिन पिछले कुछ दिनो मे उसने जो देखा, जो सुना, वह उसकी इस धारणा के अनुकूल नही था। अभी इस भरी दोपहरी मे, जब गर्मी का सूरज माथे पर था, इतने गोरे नर-नारियों ने टेबिल पर पड़ी इतनी भोजन-सामग्रियों के लिए छिपा और जाहिर जो आग्रह दिखाना शुरू किया, उससे कैरी को यह समझने मे तकलीफ नही हुई कि द्वैपायन भाई-बहनों के अंदर की और जिस शक्ति का भी चाहे लोप हुआ हो, उनके जठर का माहात्म्य वैसा ही बना है। एक ही नजर मे कैरी ने आदि से अंत तक टेबिल का लेखा ले लिया — भोजन की विविधता और परिमाण सचमुच ही विस्मयकर था। सूप, रोस्ट, फाउल करी, राइस, मटन पाइ, फोरक्वार्टर ऑव लैंब, राइस पुडिंग, टार्ट, चीज, ताजा मक्खन, ताजा रोटी....

सूची यहीं खत्म नहीं थी, अजानी-अचीन्ही अजीब-अजीब मछलियाँ, और एक बड़े से रजत-पात्र मे गोरों का बहुत ही प्यारा खाद्य बर्दवान स्टू भी था।

और अंत मे, अंत मे क्यो, यह चीज तो शुरू, बीच, अंत — हर समय हर जगह है — छोटी-बड़ी ऊँची-नीची, मोटी-पतली विचित्र बोतलों में मेडिरा, क्लारेट, बियर, वी-हाइव और हेनेसी ब्रांडी !

पास ही दरवाजे के पास एक छोटी-सी मेज पर कतार से सजाई हुई थी सोडावाटर की बोतलें। चार-पाँच आबकार बड़ी तेजी और सफाई के साथ लाल शराब तैयार कर रहे थे। कैरी ने सुन रक्खा था कि प्रवास की पीड़ा भुलाने का एक बहुत बड़ा उपाय है यह 'लॉल श्रॉब'।

कैरी के लिए आनुष्ठानिक प्रीति भोज का यही पहला अनुभव था। इतना इतना सामान, गोकि खानेवाले महज चौदह-पंद्रह आदमी। लेकिन कुछ ही देर मे दुबली केटी को जब उसने ढाई पौंड चॉप गटक जाते देखा, तो

सामान के अधिक होने की दुश्चिंता दूर हो गई। यह भी समझा कि सुन्दरवन की आवहवा सेहत के लिए बड़ी माफिक है। उसे सबसे ज्यादा आश्चर्य हुआ नौकर-चाकरों के व्यवहार से। मेजबान और मेहमानों के नौकरों की तादाद सौ से ज्यादा थी। लेकिन इन सबने कब जो डाइनिंग रूम और उसके बाहर अपनी-अपनी जगह ले ली थी, इसकी उसे भनक भी न मिल सकी। ऐसी शिक्षा, ऐसा अभ्यास, ऐसी कर्तव्य-तत्परता तो फौज में भी नहीं देखने को मिलती। कैरी ने गौर किया, हर खानेवाले के पीछे दो-तीन नौकर खड़े है, उनमें से एक चँवर हिला रहा है मक्खी भगाने के लिए। मक्खी न भी हो, तो भी इस प्रथा का पालन करना अनिवार्य है, वरना उसकी नौकरी न रहेगी।

इसके बाद बूढ़े जॉर्ज के इशारे से तेजी से हाथ चलाने और दबे पाँव चलनेवाले बावर्चियों की जमात चंचल हो उठी। आबकारों द्वारा दी गई शराब पर वाहवाही हुई और सब सोडे से झागदार हुई शराब के दर्शन, स्पर्श, गंध और स्वाद से पाँचो इंद्रियों को तृप्त करने लगे। उसी से शुरू हो गई काँटे-चम्मच की टुन-टांग।

दुबोया और केटी का किस्सा कलकत्ते के गोरे-समाज को मालूम था, आए हुए मेहमान भी जानते थे, लिहाजा सभी एक घुटन-सी महसूस कर रहे थे। सोच रहे थे, आखिर बातचीत शुरू कहाँ से की जाए। इतने में खुद मोशिए दुबोया ने सबकी सब परेशानी मिटा दी। बड़ा ही काइयाँ था वह, थोड़ी ही देर मे उसने मेहमानों की इस दुविधा को ताड़ लिया था, इसलिए सारे आबहवा में जान डालने के लिए उसने आरंभ कर दिया — मोशिए वोल्तेयर कह गए हैं, आबहवा के सृजन के दो उद्देश्य हैं। एक जीवों की जीवन-रक्षा, दूसरा सामाजिक सौजन्य का बचाव।

मेरिडिथ ने कहा, यह कैसे ?

आबहवा-तत्व से बातचीत की शुरुआत की जा सकती है।

कोई-कोई हँसा।

मेरिडिथ ने फिर कहा, सुना है आपके मोशिए वोल्तेयर भगवान को

नहीं मानते थे, फिर इस आबहवा की सृष्टि किसने की ?

दुबोया ने अपने कंधों को झटका देकर हँसते हुए बेझिझक कहा —

दी अदर फेलो !

मेज के सबने गुस्सा और शर्म से एक साथ विराग जतानेवाली अव्यक्त ध्वनि की। कैरी और टामस ने छाती पर क्रॉस बनाया। सिर्फ मिसेस कैरी नहीं समझ सकी कि बात क्या हुई। उसने मूढ की नाईं नाहक ही एक बार दुबोया और एक बार केटी के चेहरे पर अकारण मतलब टटोलती हुई यह समझा कि इस उलझन से बर्दवान स्टू कहीं ज्यादा तरल और पीने मे बेहतर है। उसने अपने प्लेट मे बहुत-सा स्टू ढाल लिया।

इस अनचाहे प्रसंग को पलटने की गरज से जॉर्ज स्मिथ ने दुबोया से कहा, मोशिए दुबोया, अभी तक डाक्टर कैरी से आपका परिचय नहीं कराया गया है। डा० कैरी यहाँ ईसाई-धर्म का प्रचार करने के लिए आए हैं।

बैठे-बैठे जैसे 'बाउ' किया जा सकता है, 'बाउ' की वैसी ही एक भंगिमा करके दुबोया ने कहा, खूब! इनसे मेरा व्यक्तिगत परिचय तो अभी नही हुआ है, मगर इनके बारे मे मैं काफी सुन चुका हूँ और यह समझ गया हूँ कि धर्म प्रचार मे ये सफल होंगे।

कैरी ने कृतज्ञता मे दुबोया की ओर देखा। अपने कथन की टीका-सी करते हुए दुबोया ने कहा, उनकी लाई हुई शांति-कपोती ने आते ही मेरे घर बसेरा बनाया है। — यह कहकर उसने केटी की तरफ इशारा किया।

पति की वाचालता से केटी लज्जित हुई थी, अब की वह अवस्था और गहरी हो गई। उसने सिर झुका लिया।

देखिए डाक्टर कैरी, आपकी शांति की दूती कैसी मौन और नम्र है। फिर जरा रुककर कहा, लेकिन रात को बड़ा चोंच मारती है!

उसके इस अशिष्ट संकेत से सब ठक हो गए।

बचाव की अंतिम आशा से जॉर्ज ने कहा, डाक्टर कैरी ने तै किया है

कि कलकत्ते में ही रहकर हिदेनो के बीच प्रेम-धर्म का प्रचार करेंगे।

दुबोया ने कहा, ये मेरे सच्चे ब्रदर-इन-लॉ हैं, क्योंकि मैं भी बहुत वर्षो से सुन्दरवन में प्रेम-धर्म का प्रचार कर रहा हूँ, खास कर हिदेन रमणियों में।

इस असभ्य आदमी के दुस्साहस से सभी खीज उठे थे। सभी सोच रहे थे, कोई इसे मुँहतोड़ जवाब दे तो बड़ा अच्छा हो।

मेरिडिथ ने कहा, फिर तो तुम्हारे लिए शांति-कपोती फिजूल है।

अपनी स्वाभाविक हँसी के साथ दुबोया बोला, बिलकुल नही। जानते नहीं, पालतू चिड़िया के सहारे जगली चिड़िया पकड़ी जाती है ?

मेरिडिथ ने कहा, आपका कथन बड़ा अशिष्ट है।

विस्मय-सा दिखाते हुए दुबोया ने कहा, अजीब बात है, आखिर डिनर टेबिल गिरजे की वेदी नहीं है कि सदुपदेशो की वर्षा हो।

फिर भी यह नहीं भूलना चाहिए कि यहाँ भद्र महिलाएँ है।

न हों तो अशिष्ट बात बोलने का मजा क्या ! और फिर अशिष्ट बात भी वैसी क्या कही है ! मोशिए वोल्तेयर की किताब कैंडिड पढे होते तो जानते कि अशिष्ट किसे कहते है !

कैरी ने कहा, उससे होली बाइबिल क्या अच्छी नही है ?

उत्साह से दुबोया बोल उठा, बेशक, बेशक ! साग्स ऑव सोलोमन बड़ी अच्छी रचना है, खुद मोशिए वोल्तेयर उसकी सीमा को नहीं लाँघ सके हैं।

सबने समझ लिया कि यह कम्बख्त किसी भी तरह दबने का नहीं। इसलिए बातें छोड़कर सबने भोजन की ओर ध्यान दिया। मेज काँटे-चम्मच की खनक, सोडा की बोतलो के खोलने के सरव उच्छ्वास से मुखर हो उठी।

किसी ने आबकार से कहा, थोड़ी-सी बर्फ।

जॉर्ज स्मिथ ने कहा, बर्फ के बारे में एक मजेदार घटना याद आई, सुनकर आप सभी खुश होंगे। उस दिन अपने बड़े खानसामा को मैने बर्फ

लाने को कहा था। जितनी लाने को कहा था, उसे उसकी आधी बर्फ लाते देख मुझे हैरानी हुई। पूछा, क्यों; इतनी कम क्यों है? वह मेरे पास बहुत दिनों से है। थोड़ी-बहुत अँगरेजी सीख गया है। उसकी बातें मैं उसी की अजीब अँगरेजी मे कह रहा हूँ, सुनकर आप कभी भूल न सकेंगे।

मैंने पूछा, हाउ इज दिस?

उसने कहा, मास्टर, आॅल मेक मेल्ट।

डिड यू रैप इट वेल इन द क्लॉथ?

नो, साहेब, दैट मेक आइस टू 'मचो' वार्म।

डिड यू क्लोज दी वास्केट?

नो मास्टर, 'बिकॉउज' दैट मेक आइस मोर वार्म।

दैन द आइस हैड द फुल बेनिफिट ऑव सन ऐंड एयर। ईडियट!

किस्सा सुनकर सब ठठाकर हँस पड़े। हँसा नही एक दुबोया।

मेरिडिथ ने कहा, लगता है, दुबोया को यह घटना अजीब नहीं लगी।

दुबोया ने कहा, जी हाँ। यह कौन-सी अजीब बात हुई? औरतें भी बर्फ जैसी ही होती हैं। खोलकर रक्खो, तो गायब होती हैं, बन्द रक्खो तो गायब होती है। धूप और हवा अपना-अपना हिस्सा अदा कर लेती हैं और जब घर आता है अभागा पति तो आधी से ज्यादा नही पाता।

केटी ने ऊबकर कहा, आज तुम सीमा पार कर रहे हो।

लेकिन इसका नतीजा उलटा हुआ। मिसेस कैरी ने उसे डाँटकर कहा, तुम इत्ती-सी लड़की, उसपर शासन करनेवाली कौन होती हो? भले समाज मे जैसी चाहिए, वैसी बात करनी होगी न? यह कोई पादरी का जेल-खाना जैसा घर तो नही है।

सभी शर्म से चुप।

केवल दुबोया ने मिसेस कैरी को लक्ष्य करके कहा, मैं शेयर, मैं शेयर।

खाना खत्म हो चुका था। मेज की सफाई कर दी गई। देखते ही

देखते हर हुक्काबरदार चिलम फूंकता हुआ हाथ में हुक्के की नल लिए हुए अपने-अपने मालिक के पीछे चुपचाप खड़ा हो गया। नीचे कार्पेट के एक टुकड़े पर हुक्के को रखकर नल का चाँदी से बँधा मुँह मालिक के हाथ मे दिया। सारा कमरा तम्बाकू को खुशबू और खुशी को गूंज से भर गया। *औरतों के लिए यह व्यवस्था न थी। शायद उनको वातावरण से मजा* लेना था।

उन दिनों औरते हुक्का नही पीती थीं जरूर, लेकिन कभी किसी पुरुष को संतुष्ट करने के लिए उसके हाथ से नल लेकर एकाध कश खींचती थी। केटी, लिजा और दूसरी स्त्रियो ने ऐसी इच्छा जाहिर न की। लेकिन मिसस कैरी की बात जुदा थी। डियर ब्रदर-इन-लॉ को खुश करने के लिए उसके हाथ से नल ले एक कश खींचकर ही उसने एक टटा खडा कर दिया। खाँसते-खाँसते मूर्च्छित-सी हो वह दुवोया के कंधे पर लुढ़क गई। हड़बड़ाकर जॉन स्मेलिंग सॉल्ट की शीशी के लिए दौड़ा। जब तक शीशी लिए लौटा तब तक डोरोथी सम्हल गई थी। जल्दी में अपनी कुर्सी पर जाते हुए जॉन ने दुवोया के हुक्के की नल लाँघ दी। नजर इसपर बहुतों की पड़ी। जॉन के चेहरे पर लज्जा और दुःख का भाव दीखा, दुवोया के चेहरे पर क्रोध और हैरानी झलकी। लोगों ने समझा जाने क्या हो, लेकिन यह भावांतर पल भर का था। दूसरे ही क्षण दुवोया के होंठों पर वही रेशमी हँसी फूट उठी, आँखों में खेल गया वही स्वाभाविक कौतुक। उसने जॉन को खींचकर अपने पास बैठाया। लोगों ने चैन की साँस ली कि संकट टला।

उन दिनों गोरे समाज में हुक्के की नल लांघना बहुत बड़ा सामाजिक अशिष्टाचार माना जाता था और उसका एकमात्र प्रतिकार था हुक्के के अधिकारी तथा लाँघनेवाले मे डुएल। ऐसा डुएल उस समय बहुत होता था। अभी उसी की आशंका हो आई थी।

डिनर खत्म होने पर अधिकांश लोग चले गए। रह गए मेरिडिथ और रिगलर। ये दोनों इस परिवार के घनिष्ठ मित्र थे और बहुत संभव है, उन्होंने लिजा में मधुचक्र का आभास पाया था। और रह गए केटी और

दुबोया। मिसेस कैरी के विशेष आग्रह से इन्हे दो-चार दिन रहने का अनुरोध करने पर मजबूर होना पड़ा था जॉर्ज स्मिथ को।

उस समय के कलकत्ते मे डिनर के बाद गोरे लोग दो-एक घंटा सो लिया करते थे और तब उनके मुहल्ले मे दोपहर को ही आधी रात का सन्नाटा छा जाता था।

सब जब सो गए तो दुबोया जॉन के साथ बगीचे के बादाम गाछ के नीचे आ खड़ा हुआ। उसके बाद अपनी स्वाभाविक हँसी हँसकर बोला, जॉन, आज की उस घटना के लिए तुम निश्चय दु:खी होगे। लेकिन दु:खी होने से क्या होता है, सामाजिक प्रथा भी तो कोई चीज है! हममे कोई निबटारा हो जाना चाहिए।

जॉन समझ गया कि यह डुएल की ललकार है।

उसे चुप देखकर दुबोया बोला, क्या राय है जॉन?

जॉन ने कहा, कृपा करके मुझे मिस्टर स्मिथ कहिए।

खैर, वही सही। क्या राय है?

इसमें राय की क्या बात! सामाजिक प्रथा रखनी ही होगी।

लेकिन यहाँ सेकेंड याने साथी कैसे मिले?

जॉन ने कहा, एतराज न हो तो मेरिडिथ और रिंगलर को बुलाऊँ।

एतराज क्या, दोनों ही मेरे मित्र हैं।

जॉन ने सोचा, ये फ्रासीसी भी अजीब होते है — सभी इनके मित्र है, सभी देश इनके देश है और सभी नारियाँ इनकी मँ शेयर चेरे!

जॉन मेरिडिथ और रिंगलर को बुला लाया। सब कुछ सुनकर वे दोनों राजी हुए। तै हुआ कि मेरिडिथ जॉन का और रिंगलर दुबोया का सेकेंड होगा। यह भी तै हो गया कि कल खूब सवेरे बिर्जीतल्ला के तालाब के पास एकांत मे द्वन्द्वयुद्ध होगा। बारह गज के फासले से दोनो अपनी पिस्तौल से एक-एक गोली छोड़ेंगे। जॉन छोड़ेगा पहले, दुबोया बाद में। और डुएल होने के पहले तक इस बात को गुप्त रखने का वचन दिया सबने।

दुवोया ने हँसकर कहा, बिर्जीतल्ला की एक खास बात है कि पास ही प्रेसिडेंसी अस्पताल है।

मेरिडिथ ने कहा, आशा है, किसी के अस्पताल जाने की नौबत नहीं आएगी।

बेशक नहीं आएगी, बेशक। — कहते हुए दुवोया ने चार सिगरेटें निकालीं। इनकार करते हुए जॉन ने कहा, धन्यवाद।

आखिर दुवोया के इस आचरण का कारण क्या है? सामाजिक प्रथा की रक्षा ही केवल या जॉन और केटी के पुराने संबंध का जो काँटा उसके कलेजे में जब तब चुभा करता था, उसे उखाड़ फेंकने की इच्छा थी। मगर यही कैसे कहा जाए? आखिर उसे यह थोड़े ही मालूम था कि जॉन हुक्के की नल को लाँघकर ऐसा मौका देगा। दुवोया उस श्रेणी का बुलंद किस्मत आदमी था, मौका खुद जिसकी मुट्ठी में आता है। मनुष्य मौके की ताक में रहता है और मौका रहता है शैतान की ताक में।

उन सबने इस बात को छिपाकर तो रखने की सोची, पर छिपी रही नहीं। अपनी नारी सुलभ संदेहालु स्वभाव के लक्षणों से ही लिजा ताड़ गई। उसने किसी से संदेह की बात कही जरूर नहीं, अकेले ही इस संकट को टालने की तदबीर में लग गई।

गहरी रात में किसी के छूने से जॉन की नींद टूट गई। आश्चर्य से उसने देखा, धुँधली रोशनी में केटी खड़ी है।

फिर भी उसने पूछा — कौन?

केटी बोली, मुझे पहचान नहीं रहे हो जॉन, मैं केटी हूँ।

ओ, मादाम दुवोया!

नहीं जॉन, मैं केटी हूँ।

इतनी रात को क्यों?

तुमसे बात करने को मौका नहीं मिला, इसीलिए।

क्या कहोगी ?

चलो, हम कहीं भाग चलें।

जॉन ऐसी बात के लिए तैयार नही था, वह चुप रहा।

केटी ने फिर कहा, नही समझा ? चलो, हम अभी ही भाग चलें।

जॉन ने कहा, यह कैसे हो सकता है ? और फिर कल सवेरे मुझे जरा काम है।

ऐसा क्या काम है ?

जो भी काम हो, लेकिन यह मुझसे न होगा। माफ करो।

रात का जो अँधेरा आकाश के हजारों अश्रुबिंदुओं को जाहिर करता है, उसी अँधेरे ने केटी के तुरंत टपकी आँसू की दो बूंदों को छिपा रक्खा।

कुछ देर दोनों चुप रहे। उसके बाद केटी ने अचानक जॉन को जकड़-कर चूम लिया — जॉन, मै तुम्हे प्यार करती हूँ।

अपने को बंधन से छुड़ाकर जॉन ने कहा, केटी, मुझे दुर्बल न बनाओ, जाओ। और, उसने बलपूर्वक ही उसे वहाँ से विदा कर दिया।

उसके बाद उसके जी में क्या आया, पता नहीं। मेज की दराज से पिस्तौल को निकालकर उसने गोली बाहर कर ली और खाली पिस्तौल रखकर लेट रहा। थोड़ी ही देर में उसे नीद आ गई। सोए-सोए उसने सपना देखा, दुबोया से द्वन्द्वयुद्ध हो रहा है। दुबोया ने उसे निशाना बनाकर गोली छोड़ी कि कहाँ से केटी बीच मे छाती अड़ाकर आ खड़ी हुई। गोली उसी को लगी। उसने ज्योंही केटी को उठाया, देखा, वह केटी नहीं, लिजा है।

कुछ देर के बाद लिजा दबे पाँवों कमरे मे आई। बड़ी सावधानी से उसने पिस्तौल निकाली। देखा, चेंबर खाली है। उसने उसमें गोली भर दी और पिस्तौल को उसी जगह रखकर जैसे चुपचाप आई थी, वैसे ही चली गई। जॉन को कुछ भी मालूम न हुआ।

दूसरे दिन खूब तड़के, जब कोई भी नहीं जगा था जॉन, दुबोया,

मेरिडिथ और रिगलर पैदल चलकर बिर्जितल्ला के तालाब के किनारे पहुँचे। चारों तरफ सूना, सन्नाटा। तालाब के किनारे एक साफ-सी जगह चुनकर वे खड़े हो गए। बारह कदम की दूरी पर निशान लगाकर मेरिडिथ और रिगलर ने दुबोया और जॉन को खड़ा कर दिया।

दुबोया ने हाथ मिलाने के लिए हाथ बढ़ाया। जॉन ने इनकार कर दिया।

दुबोया ने हँसकर कहा, उम्मीद करता हूँ, नाराज नहीं हुए हो। यह केवल सामाजिक प्रथा की रक्षा है।

जॉन ने उत्तर नहीं दिया।

दोनों को सतर्क करके मेरिडिथ ने हाथ का रूमाल फेंककर संकेत किया।

जॉन ने पिस्तौल छोड़ी। गोली दुबोया के कान के पास से निकल गई।

पिस्तौल में गोली कहाँ से आई, जॉन के मन के इस रहस्यमय प्रश्न के हल होने के पहले ही रिगलर के रूमाल के संकेत से दुबोया ने गोली चलाई। गोली जॉन की दाहिनी बाहु में धँस गई। वह चुपचाप जमीन पर लुढ़क गया। बिजली की तरह उसके मन में रात का स्वप्न कौंध गया और साथ ही साथ उसे याद आया, जॉन, मैं तुम्हें प्यार करती हूँ।

तीनों दौड़े गए। पूछा, ज्यादा चोट आई?

कोई जवाब न मिला, तो झुककर देखा। जॉन मूच्छित हो गया था।

तीनों ने जॉन को उठाया और बगल के प्रेसिडेंसी अस्पताल की ओर ले चले।

दुबोया बार-बार कहने लगा, मुझे दुःख है, अफसोस है मुझे। यह बात दुबोया के मन की नहीं है, इस संदेह से मेरिडिथ ने कहा, कृपा करके अब चुप भी रहोगे?

लापरवाह से अपने दोनों कंधों को झटका देकर दुबोया ने कहा, जैसी आपकी मर्जी!

शैतान का शहर

दुवोया और स्मिथ के इस डुएल की खबर फैलते ही कलकत्ते के श्वेतांग समाज में एक अजीब हलचल मच गई। जिसे देखो, उसी की जबान पर यही बात — यह बड़ा अन्याय है, यह हद हो गई, गया कहाँ वह फ्रांसीसी शैतान। उन दिनों श्वेतांग समाज में ऐसा डुएल होता ही रहता था। किसी के मन में कुछ नहीं होता। ऐसा कि वारेन हेस्टिंग्स और सर फ़िलिप फ्रांसिस में डुएल होने के बाद तो इसे फैशन की बहार-सी मिल गई थी। ऐसी स्थिति में इस डुएल पर अप्रत्याशित प्रतिक्रिया होने का असली कारण यह था कि इंगलैंड और फ्रांस में लड़ाई छिड़ गई थी और वह लड़ाई भी थी फ्रांसीसी राज्य-क्रांति के आदर्श पर। सो कलकत्ते के गोरे समाज में जो फ्रांसीसी-विद्वेष जमा था, वह फ्रांसीसियों के उस अकेले प्रतिनिधि पर जाकर भड़का। अंगरेज-अंगरेज में डुएल होता, एक बात थी। यह अंगरेज और फ्रांसीसी में और जीता भी वही शैतान। सब उसकी खोज में लग गए कि वह फ्रांसीसी शैतान गया कहाँ ?

दुवोया शैतान न भी हो, लेकिन प्रेसीडेंसी अस्पताल जाते ही समझ गया कि आबहवा खिलाफ है। अंगरेज डाक्टर, रोगी सबका पारा चढ़ा हुआ था। वह समझ गया, इस समय चुपचाप खिसक पड़ने में ही भलाई है। मन ही मन विचार कर देखा, इसपर मोशिए वोल्तेयर का निर्देश बहुत साफ है। इसलिए केटी को एक पत्र भेजकर वह वहीं से सुन्दरवन चला गया।

जॉन घायल हो गया है, घर पर यह खबर पहुँचते ही लिजा पिता को साथ लेकर अस्पताल चल पड़ी। उसे पहले से पता था कि ऐसा भी हो सकता है।

निर्दोष केटी समवेदना जाहिर करने आई तो लिजा ने संक्षेप में कहा, नादान बच्ची हो ! कुछ नहीं जानती। जाओ।

इस मुख्तसर बात के साथ घृणा और धिक्कार भरा कटाक्ष था।

हक्की-बक्की और दुखी केटी ने जाकर अन्दर से कमरे का दरवाजा बन्द कर लिया।

गाड़ी पर जाते-जाते लिजा ने कहा, इन सारे दुर्भाग्यों की जड़ में उस शैतान बुढ़िया का नखरा है !

जॉर्ज ने कहा, जो भी हो, ऐसी विपत्ति के समय नाहक ही क्रोध और चिढ़ से मन को ज्यादा विचलित न कर लो।

नहीं करूँ ? क्यों न करूँ ? उसी घाघ की जिद से तो उसके डियर ब्रदर-इन-लॉ को न्योता भेजना पड़ा। और आप कह रहे हैं, गुस्सा न करो ?

जॉर्ज ने कहा, असल बात यह है कि मिसेस केरी का दिमाग ठीक नहीं है न !

और मेरा ही दिमाग बहुत दुरुस्त है न ? लिजा रुलाई से फूट पड़ी।

जॉर्ज चुपचाप उसके माथे पर हाथ फेरने लगा।

जॉन को चोट गहरी न थी। सात ही दिनों में वह धीरे-धीरे चंगा होकर अस्पताल से घर आ गया।

किन्तु खून की प्यासी पिस्तौल अपनी बलि लिए बिना न लौटी और उस बलि को भी आखिर बड़े मर्मांतक ढंग से जुटाया।

केटी और दुबोया का क्या हुआ, इसकी खोज किसी ने न ली। खोज लेने लायक स्थिति भी न थी किसी के मन की। और खोज का भार भी तो था अकेले लिजा पर। घर की घरनी वही थी। वह जॉन को लेकर दिन-रात व्यस्त थी। अस्पताल में ही रहती। एकाध घंटे के लिए घर आती। केटी और दुबोया को घर के लोग देख जो नहीं पा रहे थे, इससे सबने समझ लिया था कि वे किसी मौके से चुपचाप भाग गए।

डुएल के तीन दिन बाद एक दिन जब घर लौटकर लिजा मेरिडिथ और रिगलर के साथ बैठी चाय पी रही थी, तो नौकर ने आकर खबर दी, नई तालाब में एक लाश तैर रही है। उन्हें उत्सुकता हुई। वे बरियल रोड से चौरंगी रोड के मोड़ पर के उस नई तालाब की ओर रवाना हुए।

तालाब के किनारे पहुँचकर देखा, सचमुच ही एक लाश तैर रही है और लाश किसी औरत की है। तीनों के मन में एक ही संदेह की बिजली कौंध गई। करीब गए तो संदेह का फीका रंग निश्चय से गाढ़ा हो आया। इतने में पच्छिम की सरपत की झाड़ियों में से एक हैंडबैग लेकर नौकर आया।

केटी !

हैंडबैग से एक चिट्ठी निकली। दुबोया की लिखी हुई थी — केटी के नाम। मेरिडिथ ने उसे पढा और पढ़कर रिंगलर को दिया। कहा, जरा पढ़ देखो, आदमी कितना नृशंस हो सकता है !

पढकर रिंगलर ने संक्षेप मे कहा, हृदयहीन ! जानवर !

चिट्ठी पढते-पढ़ते लिजा की आँखें छलछला उठीं। समझा, मैंने केटी के साथ अन्याय किया है। उसे डुएल का पता न था। यह भी पता चला कि दुबोया किसी प्रकार से केटी को छोड़ जाने और जॉन का खून करने के लिए न्योता रखने के बहाने आया था। उसने लिखा था।

मँ शेयर, प्रियतमे,

तुम्हारे भूतपूर्व प्रेमी के छटाँक भर लहू बहाने के कारण यहाँ का अरसिक अंगरेज समाज पागल हो उठा है। और उधर देखो, ठीक इसी समय मेरे सुन्दर देश फ्रांस मे समता, बंधुता और स्वाधीनता के नाम पर हजारों टन लहू बहाया जा रहा है। और तो और साधारण लोगों के लाल लहू से वहाँ के लोगों का जी न भरा तो उन्होंने राजा-रानी का नीला लहू बहाया। मगर यहाँ कितना फर्क। अंगरेज बडे रक्षणशील हैं, वे अपना लहू बचाना चाहते है, गोकि मोका मिले तो इसकी जाँच जरूर करेंगे कि हमारे शरीर में कितना लहू है। ऐसी स्थिति में क्या करना चाहिए, इस-पर मोशिए वोल्तेयर का निर्देश साफ है। उन्होंने कहा है, वीरता से विचार का मूल्य ज्यादा है। इसलिए मैं यहीं से सुन्दरवन जा रहा हूँ। तो तुम्हें किसके पास छोड़ चला ? क्यों, तुम्हारा पुराना प्रेमी और बहुत सम्भव भावी पति तो है। दो ही चार दिन में चंगा होकर वह घर लौटेगा। फिर

क्या है, तुम दोनों सुन्दरवन में फॉरेस्ट ऑव ब्युटीफुल वीमेन में मुक्त कपोत-कपोती-से खुशी से चहकते हुए उडते फिरना। जब वह अपनी भुजा में तुम्हे लपेटकर प्यार से पुकारेगा — किट, केट, केटी, तो उसकी बाँह में मेरा दिया हुआ दाग देखकर तुम्हें मेरी याद आएगी, आशा है। तुम उसे चूमोगी और उस चुम्बन का स्पर्श मेरी नाक की नोक पर पहुँचेगा, जो तुम्हे बडी प्यारी थी। तुम शायद यह पूछो कि मै तुम्हे छोड़ क्यों गया। ऐसी गम्भीर बातों का जवाब महापुरुषो के शब्दो मे देना ही ठीक है, सो अपने साहित्य के महापुरुष रॉशफुको के शब्दों मे कहूँगा — बुद्धिमान आदमी एक खान मे ज्यादा दिन नहीं उतरता। इतना जरूर जानता हूँ कि मणि-रत्नों से भरी ऐसी खान ज्यादा दिन खाली नही पडी रहेगी। तुम्हारा पहला प्रेमी, तुम्हारा भावी पति आग्रह के साथ उसमे उतरकर अपने को निहाल समझेगा। लिहाजा तुम्हे मै बेसहारा छोडे जा रहा हूँ, यह दोष जरूर नही दोगी, जरूर यह नहीं सोचोगी कि मै संगदिल हूँ। सो, विदा मेरी प्रियतमे, विदा! आँसू से चारों तरफ धुँधला हो आया है, कलम नही चल रही है, नहीं तो कहने की बातों का अंत थोड़े ही है — अहा!

इति

तुम्हारा सदा का ह्यूबो

चिट्ठी पढ़कर तीनों जने देर तक अवाक बैठे रहे। बात सबसे पहले लिजा बोली। कहा, इस चिट्ठी के बाद केटी ने जो किया, उसके सिवाय और क्या करने को था? अहा, उस बेचारी को मैने गलत समझा था।

मेडिरिथ ने कहा, अभी उठो, बाद की व्यवस्था करें।

सही है। संसार का रथ एक पल को भी नही रुकता। चरम दुःख और परम आनन्द, दोनों की एक-सी उपेक्षा करके उसका चक्का अनवरत चलता रहता है। शायद हो कि इसीलिए जीवन धारण करना मनुष्य के लिए सम्भव है। नहीं तो, हो सकता है, पल का सुख-दुःख ही चिरंतन हो जाता और जीवन निश्चल हो पडता। जीवन के सारे सुख-दुखों की समष्टि मे भी जीवन बड़ा है, उससे कहीं वजनी है, शायद इसी सत्य की उपलब्धि

में जीवन की चरितार्थता है।

लगातार कई दिनों के आकस्मिक आघात से स्वभावतया अस्थिर-चित्त मिसेस कैरी पागल सी हो गई। वह घंटों अकेली चुप बैठी रहती और अचानक चीख उठती — टाइगर! टाइगर! और फिर चौकी, पलंग, मेज आदि के नीचे झाँक-झाँककर देखती कि बाघ छिपा है या नहीं। स्मिथ परिवार के लिए वह एक बहुत बड़ी समस्या हो उठी थी।

डुएल की खबर से डा० कैरी गंभीर हो उठे थे। फिर दुबोया के भागने और केटी की मृत्यु से उस गंभीरता ने उसे आत्मजिज्ञासा में लीन कर दिया। इधर कई दिनों से महज जरूरत की दो-चार बातों के सिवाय उसने किसी से खास बात ही न की। यहाँ तक कि टामस भी पास फटकने की हिम्मत नहीं कर पाता। केटी की मौत के तीन दिन बाद उसने टामस से कहा, ब्रदर टामस, अब हमारा कलकत्ते में रहना नहीं हो सकता।

टामस के मन में ऐसी आशंका कभी नहीं उठी थी, सो जैसे आसमान से गिर पड़ा हो, पूछा, मतलब! देश लौट जाएँगे अपने?

देश लौट जाने के लिए इतना खर्च करके इतनी दूर नहीं आया हूँ।

टामस ने फिर पूछा, तो?

बंगाल में ही कहीं और जाकर रहना होगा।

और यहाँ क्यों नहीं?

क्यों नहीं, यह मुझसे ज्यादा तुम्हारे समझने की है। यह शहर सोडोम और गोमरा से भी ज्यादा पाप भरा है। इसकी हालत लाइलाज है।

टामस कलकत्ता नहीं छोड़ना चाहता था। इसलिए उसने जिरह की, जभी तो यहाँ धर्म-प्रचार की जरूरत ज्यादा है।

हो सकती है, मगर वह मेरे जैसों के बस की नहीं। कोई प्रेरित पुरुष अगर आएँ तो यह चेष्टा वहीं करेंगे।

उसके बाद दो बार चहलकदमी करके — ऐसी गहरी चिंता के समय चहलकदमी करना कैरी की आदत है — बोला, मैं अब समझ रहा हूँ कि क्लाइव जैसे आदमी को भी यह क्यों कबूल करना पड़ा था कि कल-

कत्ता शैतान का शहर है।

टामस ने पूछा, लेकिन आखिर जाएँगे कहाँ ? कुछ भी तो ठीक नहीं।

साल भर पहले भी क्या यह ठीक था कि मुझे कलकत्ता आना पड़ेगा ?

उसके बाद कैरी दोनों पाँवों पर जमकर खड़ा हो गया। बोला, ब्रदर टामस, अब तर्क नहीं, मैं निश्चित निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि हमें निरुद्देश्य यात्रा करनी पड़ेगी। जाओ, तैयार हो लो। और मुंशी से कह दो, वह एक बार मुझसे जरा मिल ले।

लेकिन चाहे भगवान की कृपा से कहिए, चाहे घटनाक्रम के आवर्तन से, कैरी को निरुद्देश्य यात्रा करने की नौबत आखिर तक नहीं आई।

जॉर्ज उडनी नाम का एक धार्मिक आदमी था। बंगाल के अनेक स्थानों में उसकी नील और रेशम की कोठियाँ थी। उसे इन कोठियों की देख-भाल के लिए घूमते रहना पडता था। कलकत्ते में लौटकर उसे पता चला कि डा० कैरी धर्म-प्रचार के लिए आया है और कलकत्ते में ही है। उडनी ने कैरी से जाकर परिचय किया, उसके उद्देश्य का हार्दिक समर्थन किया। फिर जब उसने यह सुना कि कैरी ने कलकत्ता छोड़कर बंगाल के किसी गाँव में जाने का संकल्प किया है, तो उसका उत्साह और भी बढ़ा। मालदा जिले के मदनावाटी और दिनाजपुर जिले के महीपाल-दीघी में उसकी कोठियाँ थीं नील की। उसने प्रस्ताव किया और कैरी मदनावाटी तथा टामस महीपालदीघी की मैनेजरी करने को राजी हो गए।

उडनी ने कहा, यह बड़ा अच्छा रहेगा, मेरा भी काम चलेगा, आप लोगों का भी। मैनेजर का काम बहुत कम है, धर्म-प्रचार के कार्य में बाधा नहीं पड़ेगी। फिर इन दोनों जगहों का फासला सिर्फ दस-बारह मील का है, इसलिए आपकी आपस में भेंट भी होती रहेगी।

टामस ने उडनी से वेतन में से कुछ रुपए पेशगी लिए और अपना कर्जा चुकाकर जाने की तैयारी में लग गया।

कलकत्ता से मदनावाटी जाना है, वह भी जल्द, यह सुनकर राम

वसु चिंतित हुआ। लेकिन वसुजा उस कोटि का जीव था, जो पतवार टूट जाने पर भी उसे नहीं छोड़ता और प्रतिकूल पवन को अपने अनुकूल करने के लिए कैसे पाल तानना पड़ता है उसका कौशल भी जानता था।

पति को पादरियों के साथ परदेश जाना है, यह सुनकर अन्नदा झल्लाकर बोल उठी, बस, अब किरिस्तानों के साथ जाकर धींगामस्ती करो। कहने-सुननेवाला कोई न रहा!

वसुजा ने कहा, नोरू की माँ, धींगामस्ती क्या होती है, नहीं जानता। जानता हूँ एक कैरी साहब को, जो पढना शुरू करता है तो दो पहर से पहले उठने का नाम नहीं लेता — धींगामस्ती का वक्त कहाँ!

वहाँ जाकर क्या करोगे देखने तो नहीं जाऊँगी मैं। आँखों को भेज पाती साथ कहीं!

तुम नहीं जा रही, लेकिन नाढा की आँखें तो साथ ही जा रही हैं। वे आँखें तो अब तुम्हारी ही हैं।

बहुत सोच-विचार कर अन्नदा ने नाढ़ा को अपने घर बुलवा लिया था। अन्नदा की नजर मे नाढा में गुण बहुत था। वह खाता कम, खटता ज्यादा और मन भाने की बात बोलने मे बेजोड़ था।

नाढा को अपने यहाँ रखने से पहले दोनों मे इस प्रकार की बातें हुई थीं।

अच्छा नाढा, तू तो कायस्थ है, है न?

आपने ही तो कहा दीदी जी, मैं दूसरी बात कह सकता हूँ भला।

अब की अन्नदा ने आवाज धीमी करके पूछा, अच्छा, कुखाद्य तो नहीं खाया है न?

आप भी क्या कहती हैं दीदी! कुखाद्य का दाम बहुत होता है, वह अपने को नसीब कहाँ?

फिर! क्या खाया है?

दाल-भात और गंगा जल।

गंगाजल!

अन्नदा हैरान हुई — क्या कहता है तू?

गंगा के किनारे गंगाजल के सिवा और क्या जुटेगा ?

फिर तो उसी से सब शुद्ध हो गया, क्यों !

अशुद्ध ही कहाँ हुआ कि शुद्ध होगा ?

खुश होकर अन्नदा ने कहा, जरा बैठ तो जा वहाँ।

फिर एक घड़ा गंगाजल लाकर उसने नाड़ा के सिर पर उड़ेल दिया। कहा, ले, बदन पोछकर इन कपड़ों को पहन।

इस तरह संक्षेप में लेकिन पूर्ण रूप से ईसाई के घर में रहने के पापों की शुद्धि करके समझदार अन्नदा ने नाड़ा को अपने यहाँ रखा।

जात चूंकि सहज ही जाती है, इसलिए उसे बचाने का उपाय भी सुगम है।

नाड़ा अपनी कार्यकुशलता और मीठे बोल के गुण से अन्नदा का प्रिय और विश्वासपात्र बन गया। अन्नदा का लड़का नारो तो उसे नाड़ा दा कहने के लिए बेचैन रहता था!

परदेश में पति की निगरानी के बारे में अन्नदा नाड़ा को बदस्तूर तालीम देने लगी।

नाड़ा बोला, कायथ दा के लिए आप सोचिए मत दीदी जी। कायथ दा कहना उसने टुशकी से सीखा था।

उडनी ने कैरी-परिवार के सफर का सारा इंतजाम कर दिया और खुद टामस को लेकर रवाना हो गया।

पाँच-सात दिन के बाद ही कैरी अपने परिवार, राम बसु, पार्वती ब्राह्मण और नाड़ा के साथ नाव से मदनावाटी को चल पड़ा।

एक अनावश्यक अध्याय

लेकिन न छोड़ना ही अच्छा।

प्लासी की लड़ाई के बाद से नवाब का आतंक जाता रहा। सो कल-

कत्ते का गोरा-मुहल्ला पूरब और दक्खिन की तरफ डैना फैलाने लगा। अब तक वह समाज सदा के अभावग्रस्त नवाब और उसके नाजिर वजीर के डर से पंख सिकुड़कर रहता था। अब उसे वैसा कोई डर नहीं रह गया, क्योंकि जो भुजाएँ जब कभी उनके पंखों को नोच सकती थीं, वे वीर्यहीन हो गईं। अब तो कम्पनी के दिए दानों पर उसका पेट चलता। लिहाजा अब संकोच की क्या वजह रही?

अभी तक तो लालदीघी को ही केन्द्र बनाकर श्वेतांग इलाका नाना दुर्भाग्यों में किसी तरह मिट्टी थामे पड़ा था। गंगा के किनारे किला, किले के नीचे घाट, घाट में जहाज। जब जरूरत पड़े, भाग जाओ। सिराजुद्दौला ने जब कलकत्ते पर हमला किया, तो कम्पनी के कर्मचारी इसी तरह इसी रास्ते से फलता भाग गए थे। और जो भागे नहीं, लड़े — वे हार गए थे। अब ऐसी घटना की पुनरावृत्ति असम्भव थी। अब तक कलकत्ता मुर्शिदाबाद की शरण में था, अब मुर्शिदाबाद कलकत्ते की शरण में हो गया। दिल्ली में मुगल बादशाह थे जरूर, लेकिन कलकत्ते से दिल्ली की दूरी एक ग्रह से दूसरे ग्रह की दूरी थी। सो, निडर होकर पाँव पसारो। चारों दिशाओं में हाथ बढ़ाओ, कोई कीमती चीज हाथ लगे तो उठा लो। कोई रुकावट महसूस हो तो पाँवों से मसल दो। हाथ-पाँव फैलाने की बड़ी सुविधा हो गई।

गोरे समाज में जो बड़े-बूढ़े थे, उनकी याददाश्त बड़ी दूर तक दौड़ती। या तो उन्होंने अपनी आँखों देखा था, या लोगों की जबानी जाना था कि महज सत्तर साल पहले झमाझम पानी बरसते हुए सावन की एक ढलती दोपहरी में मात्र दो जहाज सूतानूटी के घाट पर आकर खड़े हुए थे। जॉब चार्नक ने उतरकर देखा, पिछली बार जो घर-द्वार वे बनवाकर गए थे, उनका नामो निशान नहीं है। फिर भी यहीं रहे बिना कोई चारा नहीं। हुगली के फौजदार की नाराजगी जो राह रोके खड़ी थी। जॉब चार्नक यहीं रह गया। इसके बाद का इतिहास बड़ा ही सर्पिल, कुटिल तथा संशय और साहस से भरा हुआ है।

पचीस एक साल बाद मूतानूटी के दक्षिण कलकत्ता ग्राम मे कंपनी का किला खडा हुआ। बेशक इसके लिए बादशाह की इजाजत लेनी पड़ी थी। इस इजाजत के इतिहास से रोग का इलाज और चंगा होना आदि अनेक बातें जुड़ी हुई है। किस सावधानी से कदम उठाना, कितनी नम्रता और प्रशंसा से बातचीत, कितने जुल्मों को चुपचाप सहना! उस दिन के प्रसादप्रार्थी आज प्रसाद बाँट रहे थे। सामने हाथ फैलाये खुद नवाब — शीघ्र ही बादशाह को भी नवाब की पंक्ति मे आना था। बड़े-बूढे गोरे इन दोनों जमानों की तसवीरो की तुलना करके देखते। लेकिन ज्यादा लोगों को यह देखने का मौका नसीब नही होता। जलवायु और भयानक रोगों की कृपा से पचास पार करने के पहले ही अधिकाश को साधनोचित लोक को प्रस्थान करना पड़ता।

कलकत्ता ग्राम के दक्खिन गंगा के किनारे दूसरा ग्राम था गोविंदपुर। वहाँ नया किला बनना शुरू हुआ। विलायत से कारीगर आए। नए किले के उत्तर चाँदपाल घाट और काँचागुड़ी घाट तक फूलों और छाया-दार पेड़ों से सजाकर एसप्लेनेड की नीव डाली गई। अब तक जो लोग लालदीघी की हवा से अपनी भूख बढाया करते थे, अब वे बाग-बगीचों से भरे साफ-सुथरे इलाके में आए। एसप्लेनेड के उत्तर पास ही पास बने कौंसिल हाउस और गवर्नर की कोठी। पुराना किला बेकार पड़ा रहा! उसके कुछ कमरे गोदाम बने, कुछ खाली पड़े रहे और एक बड़ा-सा कमरा कुछ दिनों तक रविवार की प्रार्थना के लिए काम आता रहा। ऐसा विचित्र प्रबंध भक्ति की कमी से नहीं, धन की कमी से हुआ था। लालदीघी के उत्तर-पच्छिम कोने में सेंट एन का गिरजा था, लेकिन वह सिराजुद्दौला के हमले से टूट चुका था। नया गिरजा बनवाने के लिए पैसे नही थे, तो क्या होता आखिर। लेकिन इतने तो घर-द्वार, रास्ता-घाट बनते रहे तो गिरजा बनाने के पैसे क्यों नहीं होते? असल में गिरजे की जरूरत कभी-कभी पड़ती, इसलिए पहले बनने की जरूरत उन्हीं चीजों की थी।

किले के पच्छिम में गंगा की गोद से थोड़ी-सी जगह को भरकर

नया रास्ता बनाया गया। किले के दक्खिन अस्पताल, अस्पताल के पास कलकत्ते के ईसाइयों का सबसे पुराना कब्रिस्तान, जिसे कंपनी का शहर कायम करनेवाले जॉब चार्नक की कब्र ने प्राचीनता का गौरव दिया। अब अस्पताल उठकर डिहि-भवानीपुर चला गया — कलकत्ते से तीन-चार मील दक्खिन। और, नए कब्रिस्तान की नीव शहर के पूरब-दक्खिन छोर पर सुंदरवन में पड़ी। इसी से चौरंगी रोड से कब्रिस्तान जाने की सड़क का नाम पड़ा बरियल ग्राउंड रोड। आगे चलकर मनुष्य के सुनिश्चित परिणाम को जतानेवाले उस कर्ण कटु नाम को बदलकर पार्क स्ट्रीट रक्खा गया। कभी सर एलिजा इंपे का डीयर पार्क यानी मृगदाव इसी के आस-पास था। उन दिनों यह जगह शहर से बहुत दूर मानी जाती थी और मिट्टी दफनाने के लिए जानेवाले पादरी को अलग से राह-खर्च मिला करता था। पुराने कब्रिस्तान के पच्छिम का थोड़ा हिस्सा नए रास्ते में आ गया। बाकी पड़ा रहा, जहाँ बाद में सेन्ट जॉन्स चर्च बननेवाला था।

सन् १७८० तक लालदीघी के उत्तर दूर तक फैला एक तिमंजिला मकान बना। इसके बनने और बनने के बाद का इतिहास बड़ा विचित्र है। लायन नाम के एक अंगरेज को सन् १७७६ में जमीन का पट्टा दिया गया था। बाद में वारेन हेस्टिंग्स की कौंसिल के एक सदस्य बारवेल ने उस मकान को खरीदकर सरकार को किराए पर दे दिया। लेकिन सर फिलिप फ्रांसिस के मुताबिक वह मकान शुरू से ही बारवेल का था। आज जो लायन्स रेंज है, इसका लायन साहब बारवेल का बेनामदार था। उस मकान में कोई उन्नीस परिवारों के रहने के लायक कमरे आदि थे और किराया था ऐसे हर खंड का दो सौ रुपए।

इसके पहले कंपनी के राइटर्स (बाद की परिभाषा से सिविल सर्विस-वाले) शहर मे जहाँ कहीं किराए के मकान ले-लेकर रहते थे। मकान का किराया सरकार से मिलता था। सन् १७८५ से यह तय हुआ कि तीन सौ रुपए से कम वेतन पानेवाले राइटर्स को इस मकान के दो कमरे रहने के लिए और सौ रुपए भत्ते के मिला करेंगे।

बहुत दिनो तक यह मकान इस तरह इस्तेमाल मे लाया गया। इसके बाद एक समय इसके नीचे के हिस्से मे फोर्ट विलियम कॉलेज चालू हुआ। उस समय भी ऊपर के हिस्से मे पढनेवाले राइटर्स रहते रहे। उसके बाद फिर रवैया बदला। राइटरो को मनचाहा मकान ढूंढकर रहने की आजादी मिली, और यह मकान कुछ दिनो तक खाली पड़ा रहा। फिर कुछ दिनो के लिए किसी व्यवसायी संस्था को दफ्तर खोलने के लिए यह मकान किराए पर दे दिया गया। उसके बाद यह फिर सरकार के हाथ में आया। अंत मे परिवर्द्धित, परिमार्जित और गुवददार होकर वह बंगाल सेक्रेटेरियट बना। आज भी उसी रूप मे है।

लालदीघी के दक्खिन एक टुकडी जमीन थी, जहाँ गवर्नर के अंगरक्षक और जरूरत पडने पर गोरे स्वयं-सेवक सैनिक भी, परेड करते थे। ओर, पूरब को ओर की पहली पाँत में बंगाल क्लब की विशाल इमारत, दूसरी पाँत मे ओल्ड मिशन चर्च का गिरजा था। लालदीघी या टैंक स्क्वायर के अंदर उत्तर-पूरब कोने पर नीम का एक विशाल पेड़ था। दुनिया भर की पक्षियों के घोंसले उसपर थे। सन् १७३७ के तूफान में वह पेड़ उखड़ गया, जिससे उत्तर तरफ का रास्ता बन्द हो गया। पार्क के बाहर उत्तर-पूरब कोने में अदालत थी, जहाँ नन्दकुमार का विचार हुआ था। वही मकान टाउन हॉल के तौर पर इस्तेमाल होता था। वहीं था गोरो के नाच-गान और खाने-पीने का अड्डा। लालबाजार स्ट्रीट पर विदेशी नाविक-मल्लाहों के फ्लैग स्ट्रीट के दक्खिन शहर का सबसे पुराना जेलखाना था। नन्दकुमार को यहीं रहना पडा था। आगे यह जेलखाना उठकर मैदान के बिलकुल दक्खिन चला गया। यही है हरिणबाड़ी की जेल। इसी के पश्चिम टाला के नाले के पास नन्दकुमार को फाँसी हुई। कसाईटोला स्ट्रीट पार करके लालबाजार स्ट्रीट से पूरब की ओर बढनेवाली सड़क है दी एविन्यू। इसके दोनो ओर अभिजात समाज के मकान बने। कसाईटोला, राधाबाजार और चीनाबाजार की बड़ी-बड़ी दुकानें देशी-विदेशी सामानों से भरी रहती थीं।

इस समय को कलकत्ते का टैवर्न अथवा सराय का युग कहा जा सकता है। शहर का सबसे मशहूर हारमॉनिक टैवर्न था लालबाजार में। यही था श्वेतांग-समाज के बड़े-बड़ों के मिलने-जुलने का अड्डा। खुद वारेन हेस्टिंग्स इसके पृष्ठपोषक थे। प्रसाद-प्रार्थी लोग यहीं मिसेस वारेन हेस्टिंग्स से मुलाकात किया करते थे। वारेन हेस्टिंग्स के भारत छोड़कर चले जाने के बाद वह हारमॉनिक टैवर्न बन्द हो गया। बैनशिटार्ट रो में था लन्दन टैवर्न, सेंट जॉन गिरजा के पास न्यू टैवर्न, ४५ नं० कसाईटोला में यूनियन टैवर्न, बैठकखाना में ग्रेट ऐंड चीज बंगलो, १ नं० डेकर्स लेन में पार्स टैवर्न — जहाँ बढ़िया भुनी हुई तपसी मछली खानेवालों की भीड़ लगा करती थी। इसके अलावा था क्राउन ऐंकर टैवर्न। यह था नए किले के पास। यहाँ चौबीस घंटे के लिए चार गिन्नियाँ दक्षिणा थी।

अठारहवीं सदी के आखीर में गोरे लोगों के लिए कलकत्ता नगरी बड़ी ही मँहगी जगह थी। फिलिप फ्रांसिस एक मकान का किराया देते थे साल में बारह सौ पौंड। मध्यम वर्ग की गृहिणी मिसेस फे किराया देती थी दो सौ पौंड और हीकी नाम के एक वकील को घर के साज-सामान के लिए हजार पौंड खर्च करने पड़े थे।

सन् १७९३ में एक पौंड चाय की कीमत थी साढ़े चार रुपए। एक दर्जन सूती मोजे के लिए लगभग नौ पौंड लगते। दिन भर के लिए गाड़ी का किराया था दो गिन्नी, एक रात के लिए पियानो का किराया तीस रुपए। सेब रुपए के आठ मिलते थे, अंगूर था चार रुपए सेर। एक दर्जन सोडावाटर की कीमत थी दस रुपए; धोबी मर्दों के कपड़ों के लिए सैकड़े तीन रुपए और औरतों के कपड़ों के सैकड़े साढ़े चार रुपए लेता; बाल कटाने और केश-विन्यास के लिए बारह रुपए लगते। थिएटर के टिकटों का दाम भी इसी हिसाब से मँहगा था — चौरंगी थिएटर में बॉक्स सीट के लिए बारह सिक्के, पिट के लिए छः सक्के और १६ नं० सर्कुलर रोड के थिएटर में एक सीट के लिए एक मुहर लगती थी।

अन्त यहीं न था। इतना खर्च करने पर भी साहब-सूबे रुपए की तंगी

महसूस नही करते थे। फिलिप फासिग ने जुए में सिर्फ एक रात में वीस हजार पौंड जीते थे और वारवेल ने एक रात मे चालीस हजार पौंड हारे थे। ऐसी हार-जीत रोज ही चलती थी।

हैरत होती है, जब सोचना पड़ता है कि ऐसे गरीव मुल्क में एकाएक अलादीन का चिराग कैसे निकल आया! खैर, जैसे भी आया हो, उन चिराग की माया से बरसनेवाले सोने को लेकर गोरे जब अपने देश लौटते, तो खुल्लम-खुल्ला घृणा और छिपी ईर्ष्या से सब उन्हे 'नबोब' यानी नवाव कहा करते। ये गोरे नवाव इतिहास के एक विचित्र जीव है। उन गोरे नवावो में पहला और सब से बड़ा लार्ड क्लाइव था, जिनको कलकत्ते के बारे में मजबूर होकर कहना पड़ा था, यह संसार का निकृष्टतम स्थान है! दुराचार, लम्पटता और विवेकहीनता की जड श्वेताग समाज की गहराई में पहुँच चुकी है और इन्हीं के जरिए लोग थोड़े ही दिनो मे कल्पनातीत अर्थलोलुप, अमितव्ययी और ऐश्वर्यशाली हो उठते है।

संक्षेप मे, अठारहवी सदी का कलकत्ता कामिनी-कंचन का श्रीक्षेत्र हो गया था। आबहवा जैसे छोटे-बड़े सबको समान रूप से प्रभावित करती है, इस विषय मे भी ठीक वैसा ही होता है। तो सबसे पहले सबसे बड़े का ही जिक्र कर लें। क्लाइव जब यहाँ का गवर्नर था, तब विलायत से कौंसिल का नया सदस्य आते ही उसे मिलाने के लिए वह सीधे पूछता, कहिए, कितने रुपए चाहिए?

वारेन हेस्टिंग्स का तौर-तरीका भी लगभग ऐसा ही था। लेकिन वह रुपए का परिमाण सदस्य की मर्जी पर नही छोड़ता, बल्कि सदस्य पीछे एक लाख पौंड तक खर्च करने को तैयार रहता था गवर्नर जनरल।

क्लाइव और हेस्टिंग्स के रवैये एक-से होते हुए भी ऐसे दो अलग किस्म के आदमी कम नजर आते है। क्लाइव सोलहवी सदी के अंगरेज जल-दस्युओ का सुयोग्य उत्तराधिकारी था — खूंखार, दुस्साहसिक, न्याय-नीति से वास्ता नही, असाधारण कार्यकुशल और देशभक्त। और, यूरोप के इतिहास मे जो चिंताधाराएँ अठारहवी सदी की विशेपता कही गयी है,

हेस्टिंग्स के चरित्र पर उसका अजीब धूपछाँहीं असर पड़ा था। वह सोलहो आने अठारहवीं सदी के थे। ज्ञान और कर्म के अनोखे मेल से अठारहवीं सदी के श्रेष्ठ प्रतिनिधि वोल्तेयर का चरित्र बना था, हेस्टिंग्स उसी का मानो एक छोटा-सा प्रतिरूप था। एक मामूली कोठीवाल से नए जीते हुए एक साम्राज्य का प्रमुख हो जाना उस युग मे एक कुल-कुलीनताहीन व्यक्ति के लिए कोई मामूली कृतित्व नही था। इसी एक वाक्य मे उसकी कर्म-कुशलता का परिचय है। और, ज्ञान के प्रति उसका प्रबल आकर्षण उस युग की ज्ञान-लिप्सा का परिचायक है। जिन लोगों ने सर्वप्रथम प्राचीन संस्कृत साहित्य और फारसी साहित्य की श्रेष्ठता स्वीकार की थी, हेस्टिंग्स का नाम उन सबमे पहले आता है। उसने अपनी लागत से गीता का पहला अंगरेजी अनुवाद छपवाया था, वह और चाहे कुछ भी हो, क्लाइव की तरह गँवार नही था। लैटिन और फारसी साहित्य पर उसका असाधारण अधिकार था। लैटिन मे ऐपिग्राम और फारसी मे रुबाई लिखने मे उस समय उसकी जोड़ का दूसरा नही था।

एडमंड बर्क की तीखी वाग्मिता की चोट पर चोट करने की क्षमता उसमे नहीं थी, लेकिन शक्तिहीन रोष से ऐपिग्राम की खोंच मारने मे क्या हर्ज था ?

> अेस्ट हैव आइ वंडर्ड दैट ऑन आइरिश ग्राउंड
> नो पॉयजनस रैप्टाइल्स एवर येट वेयर फाउंड,
> रीवील्ड दी सीक्रेट स्टैड्स, ऑव नेचर्स वर्क !
> शी सेव्ड दी वेनम टु क्रीएट ए बर्क !

मिताहारी और मिताचारी हेस्टिंग्स पालकी से काशी चले। कौरव-पांडवों की वीरता की कहानी के आकर्षण से मन उड़ रहा था। काशी में उतरा — चेतसिंह को एक धमकी दी और बात की बात में कई लाख रुपए अपनी जेब के हवाले किए। पालकी लौटी। अब की शायद शाह-नामा की बारी ! रास्ते मे पड़ा एक देशी रजवाड़ा। फिर एक धमकी। और उसकी दूसरी जेब में झट कुछ जवाहरात आ गए। पालकी फिर

चली। अब की फारसी रुबाई रचना की बारी। दोनों तरफ हिंदुस्तान का धूपतपा धूसर दिगंत और बीच से हैया-हो की ताल पर चली जा रही थी पालकी, जिसमे बैठा था प्रशस्त ललाट, दुबला चेहरा और पतली देह का वह व्यक्ति जो अठारहवी सदी का व्यक्तित्व था। यही बातें खास कुछ अदले-बदले बिना वोल्तेयर के बारे मे भी मजे में लिखी जा सकती है। क्लाइव और हेस्टिंग्स दोनों एक दूसरे से सटकर खडे होते हुए भी दोनों से मुंह दो ओर को थे — क्लाइव अतीत था और हेस्टिंग्स भविष्य।

अठारहवी सदी ने विशुद्ध ज्ञान और विशुद्ध लुटेरेपन मे एक प्रकार से समन्वय किया था (वोल्तेयर के अपरिमित धन का अधिकांश चोर-बाजार से और घूस से और वैसे ही उपायों से जमा हुआ था)। ठीक इसी प्रकार उस युग मे विशुद्ध काम और विशुद्ध प्रेम का भी अजीव गठबन्धन हुआ था। हेस्टिंग्स की दूसरी पत्नी थी भूतपूर्व बैरोनेस इमहॉफ। पहले स्वामी को छोडना और हेस्टिंग्स से विवाह करना पूर्णतया विधि-सम्मत नहीं हुआ, ऐसी कानाफूसी उस समय (क्या समय था वह!) भी हुई थी। हेस्टिंग्स तो भी गनीमत था, कानून के महीन परदे में सारी बीती अपकीर्तियों के न ढँक सकने पर भी अतीत पर परदा पड़ा, ऐसा ही लोगों ने मान लिया था। बहुतों ने तो इतना भी परिश्रम नहीं कबूल किया!

सर फिलिप फ्रांसिस — गवर्नर की कौंसिल का अन्यतम प्रधान सदस्य, हेस्टिंग्स के प्रबल विरोधी, कलकत्ते के गोरे-समाज का भूषण कहिए, ऐसा सर फिलिप फ्रांसिस अँधेरे में छिप जाने के ख्याल से काली पोशाक पहने पूरी एक सीढी बगल में दबाए आम रास्ते से पैदल चला जा रहा है! क्या, तो दीवार फाँदकर मोशिए ग्रांड की स्त्री मादाम ग्रांड से प्रेमालाप करेगा! लेकिन अचानक रात्रिकालीन प्रेमालाप में बाधा पड़ी। ग्रांड के दरबान-चपरासियों ने पकड़ लिया। जान लेकर फ्रांसिस दीवार फाँदकर भागा; मुकदमा चला; मोशिए ग्रांड को उसमे हर्जाना मिला। इन घटनाओं ने उस जमाने में भी (क्या जमाना था वह!) हलचल मचा दी थी। इन बातों से और जिसका चाहे जो भी नुकसान हुआ हो मगर मादाम ग्रांड का

कोई नुकसान नहीं हुआ। विवाह-विच्छेद के बाद कुछ दिन तक फ्रांसिस की रखैल के रूप में रही, फिर अदृष्ट के शतरंज के खिलाड़ी की चाल उसे फ्रांस ले गई! नेपोलियन के सबसे प्रभावशाली परराष्ट्र मन्त्री मोशिए तैलेरॉं की नजर उसपर पड़ी और फिर मादाम तैलेरॉं और प्रिन्सेस तैलेरॉं के रूप में उस स्वैरिनी नारी के जीवन का अंत हुआ।

जहाँ ऊपर के स्तर का यह हाल हो, वहाँ निचले स्तर की बात सहज ही सोची जा सकती है। उस समय हर सिविलियन की देशी रखैल रहती थी। फोर्ट विलियम का एक मेजर था, जिसका छोटा-मोटा एक हरम ही था। उसमें बीवियाँ थीं सोलह! उसके किसी मित्र ने कौतुक से पूछा था, अरे यार, इतनों को सम्हालते कैसे हो? तो उस भाग्यवान मेजर ने जवाब दिया, बड़ी आसानी से! भर पेट खाने को देता हूँ और जरा घूमने-फिरने का मौका। हाँ, निगाह रखता हूँ कि कहीं ज्यादा दूर न चली जाएँ।

मेजर का यह जवाब उस समय के सभी सिविलियनों का जवाब था। एक ओर फिजूलखर्ची के चलते कर्ज और दूसरी ओर ऐश-मौज की अधिकता से बच्चों का बोझ — ये दोनों बातें उन्हें लगातार नीचे की तरफ खींचती। दूसरा रास्ता ही बन्द हो जाता।

लेकिन इतने पर भी उन्हें अहसान फरामोश नहीं कहा जा सकता। कुछ दिनों के बाद जब सिविलियनों के परिवार के लिए भत्ते का प्रश्न उठा, तो पुराने सिविलियनों ने अपनी जारज संतानों के लिए भी भत्ते का दावा किया। नए जमाने के छोकरों ने इसपर जोरदार एतराज किया। पुराने लोगों ने मजाक करके लिखा, जितेंद्रिय साधुओं की जमात!

जवाब में छोकरों ने व्यंग-चित्र बनाया — बूढ़े सिविलियन के पीछे जाती हुई एक देशी औरत और देशी औरत के पीछे एक देशी लड़का!

बूढ़ों ने शायद तब यह सोचा हो, काश, अगर एक ही होता!

दूसरे जो ऊँची उम्मीद रखनेवाले युवक विवाह की आशा करते, उनके लिए रुपयों की बौछार करने के सिवा कोई उपाय नहीं था। प्रजा-

पति के प्रधान दूत का काम जोड़ी गाड़ी करती थी।

एक बार की बात है, एक युवक ने एक जोड़ी गाड़ी खरीदी। अपनी चहेती का मन उससे जीता जा सका है या नहीं, यह जानने के लिए पूछा, पूछता हूँ, जानवर लग कैसा रहा है?

तरुणी ने निरीह की नाईं पूछा, कौन-सा, जो सोच रहा है, या जो हँका रहा है?

अनाथ गोरी लड़कियों के लिए खिदिरपुर में एक अनाथालय था। बहुत बार विवाह की इच्छा रखनेवाले युवक वहाँ अपना भाग्य आजमाते थे। भाग्य आजमाने की एक और जगह थी, जहाज घाट। नए जहाज आने की शुभ घड़ी में लावारिस युवती पर नजर पड़ते ही युवक टूट पड़ते थे।

उस समय दाल-चावल, आटा-घी मांस-मछली का जो भाव था, वह गोरे लोगों के लिए बहुत सस्ता था, लेकिन अधिकांश परिवार में ये चीजें बहुत मँहगी होकर पहुँचती थी। सन् १७८६ के लगभग मिसेस फे ने लिखा था मेरा खानसामा कह रहा है कि दो डिश पुडिंग बनाने में पाँच सेर दूध और तेरह अंडे लगे हैं। वह कम्बख्त आदमी पीछे बारह आउंस मक्खन का खर्च दिखाता है!

अब यह समझिए, अगर एक खानसामा ऐसा चोर हो तो जिस घर में छोटे-बड़े सब मिलाकर तिरसठ नौकर-चाकर हों, उस घर में तो सदा अकाल लगा ही रहेगा। और मिसेस फे तो मध्यवित्त गृहिणी ठहरीं, धनी परिवार में तो नौकरों की संख्या सौ से कहीं ज्यादा होती।

रुपयों की कमी? दूकानदारों में आपस में होड़ होती। कोई कह जाता हुजूर, मैं तीन हजार रुपए का माल उधार दूँगा, तो दूसरा कहता, मैं पाँच हजार का दूँगा मेम साहब!

और जब उधार चुकाने की मुश्किल घड़ी आती, तो विपत्ति के मधुसूदन सा घर का सरकार सामने आता। कहता, हुजूर दत्तराम चक्रवर्ती मेरा दोस्त है, सगा-सा ही कहिए। वैसा भला आदमी कम ही मिलता है। आप जरा इशारा कर दें, वह थैली लेकर हाजिर हो जाएगा।

आशा और उद्वेग से हुजूर पूछता, सूद क्या लेगा ?

हुजूर से ज्यादा क्या लेगा ! सैकड़े चालीस ।

लेकिन कानून से तो सिर्फ बारह लेना चाहिए ।

यह सुनकर सरकार एक ऐसी हँसी हँसता कि उसका भाष्य करना हो, तो एक महाभारत ही लिखना पड़ेगा । उस हँसी में एक ही साथ कानून के प्रति अनुगतता और अविश्वास, कंपनी पर अश्रद्धा तथा हुजूर पर भरोसा और हुजूर का कल्याण तथा महाजन के तकाजे की स्मृति जाहिर होती ।

तो चक्रवर्ती को बुलवा भेजूं हुजूर ?

अपनी सुदूर मातृ-भूमि की स्मृति को एक बार चखकर हुजूर दीर्घ-निश्वास छोडकर कहता, बुलवा लो !

अद्धा ब्रांडी !

गरमी की दोपहर में बिना पानी की ब्रांडी से लीवर पके तो पके, तमस्सुक न पके, बहरहाल हुजूर इसी में खुश !

हुजूर !

बड़ा साहब मन ही मन सोचता, कैदी ! थोड़े में, ऋण, रखैल, जारज संतान, असाध्य रोग और अकाल मृत्यु से हारे हुए कलकत्ते ने जीतनेवाले मिस्टर जॉन को बुरी तरह घेर लिया था ।

क्लाइव के कहे 'शैतान का शहर' कलकत्ते का यही असली रूप था । अगर अच्छी तरह देखा जाए, तो शैतान भी कृपा के बिलकुल नाकाबिल नहीं ।

दूसरा खंड

आग की चिनगी

बजरा बहता चला। सुबह, दोपहर, शाम दोनों ओर के तटों पर नए-नए नजारे ग्राम-जीवन की शोभा दिखाते चले। आसमान में तारे और धरती पर दीप जलाए रात आती; मैदानों में स्यार भूंक उठते, कभी-कभी बाघ की गरज।

भागीरथी से चले जा रहे थे दो बजरे — पीछे लगी एक छोटी-सी डोंगी। बजरों में एक बड़ा था, एक छोटा। बड़े में था कैरी और उसका परिवार। छोटे में थे राम बसु, पार्वती ब्राह्मण, दो खानसामा, बबर्ची। डोंगी में बना करती रसोई। भोजन-सामग्री और पानी रहता। राम बसु और पार्वती की रसोई अलग होती। बजरे के एक कमरे में पार्वती पकाया करता, दोनों जने खाया करते। राम बसु का बनाया पार्वती नहीं खाता। जॉर्ज उडनी ने खर्च में कोताही नहीं की थी। कैरी और उसके परिवार की सुविधा के लिए उसने शक्ति भर किया था। कैरी कहता, शक्ति से बाहर किया, इतना करने की न तो जरूरत थी, न मैं खुद कर सकता था।

सवेरे जलपान के बाद राम बसु कैरी के कमरे में जाता। सजे-सजाए

कमरे में दोनों बाइबिल के अनुवाद की तैयारी मे जुट जाते । बाइबिल के गहरे रहस्य पर कैरी प्रकाश डालता, राम वसु मन देकर सुनता । बगल के कमरे में अधपगली कैरी-पत्नी आप ही आप बक-बक करती रहती, उसके बादवाले कमरे मे लोरी सुनाकर आया जैबेज को सुलाने की कोशिश करती — फेलिक्स और पीटर छत पर बैठे रहते, न तो उनके कौतूहल का अंत होता, न ही होती तृप्ति ।

कैरी कहता, मुंशी, काम करने का ऐसा प्रशस्त क्षेत्र हमारे देश मे नही है ! वहाँ गद्य और पद्य दोनो ही उन्नत हैं — नया कुछ कर सकना कठिन है । तुम्हारे यहाँ बड़ा मौका है ।

राम वसु मन में सोचता, यह अगर मौका है, तो बेमौका न जाने क्या होगा । कहता, मिस्टर कैरी, बंगला में गद्य जरूर नही है, पर पद्य कुछ कम उन्नत नहीं ।

कैरी बोला, फिलहाल जरूरत हमें गद्य की है ।

लेकिन बंगला में न तो शब्दकोष है, न व्याकरण ; गद्य का विकास होगा तो कैसे ?

क्यों, असुविधा ही क्या है ? व्याकरण लिखेंगे, शब्दकोष तैयार करेंगे और उन दोनों की मदद से बोल-चाल की भाषा की नींव पर खड़ा कर लेंगे गद्य का महल । यह कौन-सा कठिन काम है ? हर देश का गद्य आखिर इसी तरह तो बना है ।

काम की सुगमता को सोचकर राम वसु सिहर उठा ।

कैरी कहता गया, पहले अंगरेजी और फारसी से अनुवाद करके गद्य को माँजना होगा, उसके बाद होगी मौलिक रचना ।

राम वसु ने कहा, जी ! बड़ा अच्छा रहेगा ।

जरूर अच्छा रहेगा — उत्साहित कैरी बोल उठा । उसके बाद हिन्दी, उड़िया तथा और-और भारतीय भाषाओं मे गद्य सृष्टि करने का भार लेंगे । और यह भी तय जानो, प्रभु की कृपा से कामयाबी हासिल करेंगे । क्योंकि यह इतना जो परिश्रम, इतना अध्यवसाय करेंगे, वह उन्ही की

वाणी के प्रचार के लिए न ?

राम बसु ने स्वीकार किया, कामयाबी जरूर मिलेगी, नहीं तो प्रभु ऐसा संयोग नहीं जुटाते।

बेशक ! यह कहकर कैरी बाइबिल खोलकर बोला, तो आज तुम्हें 'सेंट मैथ्यु'वाला परिच्छेद समझा दूँ।

वह समझाने लगा। उसके उत्साह का अंत नहीं। बहुत संभव है कि राम बसु भी समझता गया, क्योंकि उसकी नीरवता अटूट थी।

अंत में थककर कैरी ने पूछा, मुंशी, समझा ?

राम बसु ने कहा, कैरी साहब, पाडित्य और प्रभु की कृपा असंभव को भी संभव कर सकती है, भला बिना समझे उपाय क्या है।

ग्यारह बजे। बजरे की खिड़की से किनारे के गाँव का घाट दिखाई दिया। नंगे बदन नहानेवालों की भीड़; बच्चे तैर रहे थे। एक तरफ नावों की भीड़ थी।

कैरी के मन की गतिविधि की आहट उसकी बातों में मुखर हुई, अहा, ये सब क्या प्रभु के चरागाह में आएँगे ?

राम बसु मन ही मन बोला, इसके लिए तुम्हें कयामत के दिन तक इंतजार करना होगा, उसके पहले नहीं। कर सकोगे इंतजार ?

विलियम कैरी और रामराम बसु जैसे दो विपरीत स्वभाव के आदमी शायद ही कभी आमने-सामने आकर खड़े होते हैं। दोनों दो संसार, दो युगों के आदमी थे। घटना-चक्र के विचित्र आवर्तन ने दोनों एक ही भूमि-खंड पर ला खड़े हुए हैं, मेल महज इतना ही है लेकिन दोनों की अन्तश्चेतना में अनन्त व्यवधान है।

कैरी मध्ययुग का रहनेवाला था, कालभ्रष्ट होकर अठारहवीं शताब्दी में अवतीर्ण हुआ और राम बसु था नई दुनिया का आदमी, स्थानभ्रष्ट होकर बंगाल में पैदा हुआ। कैरी का विश्वास था, धर्म सारी समस्याओं को सुलझा सकता है। वह जिस जहाज का मुसाफिर था, उसका नाम है धर्म, उसका पोत-संचालन है नीति, कम्पास है गॉस्पेल नक्शा और दिग

सुदूर उपकूल की ओर उसका जहाज बढ़ रहा था, वह था ईसाई भक्ति-जगत् ।

राम बसु का विश्वास था कि ज्ञान — विशुद्ध ज्ञान ही सारी समस्याओं को सुलझाने में समर्थ है । उसके जहाज का नाम है — प्रत्यक्ष ज्ञान । उसका नीति, धर्म और विवेक का पुराना काँटा-कंपास अथाह में डूब चुका था । उसे ध्रुवतारा पर भरोसा नहीं था, क्योंकि उससे मुसाफिर बंदरगाह के आकर्षण का अनुभव नहीं करता — भला ज्ञान का भी अंत है ? समुद्र की तरंगें अनगिनती हैं, ज्ञान की तरंगो की संख्या उससे कम क्यो होने लगी ? समुद्र का प्रचंड थपेड़ा, तूफान का कठोर आलिंगन, लाखों लहरों की उन्माद तालियाँ, जहाज के उठने-पड़ने का छंद उसके सोए-खोए व्यक्तित्व को झोंटा पकड़कर नींद से जगा देता है — लवणावत जल से भीगे आकाश के नीचे जाग पड़ता है उसका विस्मय । कौतुक, कौतूहल और जिज्ञासा का अंत नहीं रहता ।

कैरी की जबान से बीता मध्ययुग प्रश्न करता, जीवन का उद्देश्य क्या है ? और बसु के मुँह से नया जागता युग पूछता, यह सब बना कैसे ? मध्ययुग कहता, स्रष्टा से जीवन के अभिप्राय को एक कर दूँगा ; नया युग कहता, सृष्टि के रहस्य को चीरकर स्रष्टा के आसन को दखल करूँगा ।

अगर कोई यह पूछे कि इस घरघुस, प्राचीन प्रथाओं और कुसंस्कारों से जर्जर बंगाल में ऐसा आदमी पैदा कैसे हुआ ? कहाँ किस दूर के गाँव में लगी आग की चिनगी हवा के किस झोंके से इस गाँव में आ गिरी यह कौन कहेगा ? प्राचीन ग्रीस का दबा पड़ा ज्ञान-विज्ञान अचानक एक दिन नए यूरोप मे जाग उठा था — उसकी जलती लौ से एक-एक कर इटली, फ्रांस, इंगलैंड की चेतना सुलग उठी । दावानल पश्चिमी देशो में फैल गया । उसके बाद कहा नहीं जा सकता, हवा के किस झोंके के संग उसकी एकाध चिनगी बंगाल के इस आम-कटहल-नारियल के झुरमुटों के शांत परिवेश में उड़कर आ गिरी । मानो एक ही जहाज पर सवार होकर विगतप्राय मध्ययुग और नवयुग भारतवर्ष के बन्दरगाह पर पहुँचे । उस

दिव्य अनल के स्पर्श से जल उठी राम वसु की कल्पना, चिंताधारा और व्यक्तित्व। नए युग के नए मानव का आविर्भाव हो गया।

सोचने की बात है कि दो ऐसी भिन्न प्रकृति के आदमी इस तरह पास-पास किस विधान मे आ गए? सिर्फ भाग्य के विधान से? नही। एक ही सरहद पर तो नए-पुराने का मिलन होता है — अलग होते-होते भी दोनों एक दूसरे से हाथ मिला लेते हैं। दोनों की प्रकृति बिलकुल जुदा होती है, शायद इसीलिए उन्हे एक दूसरे के प्रति इतना आकर्षण होता है। उस समय के पादरियों मे इस आदमी के लिए कौतूहल का अन्त नही था। बार-बार वे राम वसु को निकट खीचा करते, भगाकर भी बार-बार अनुरोध-आग्रह करके फिर बुला लाते। और राम वसु भी उन विदेशी, विधर्मी, भिन्न भाषा-भाषियों में मन के आदमी को पाता था। कही चुके है, उनके मन एक ही सरहद से सटे थे।

कैरी जब ईसाई शास्त्रकारो की रचना पढ़ता, तो राम वसु सामने दी होली बाइबिल खोलकर आड़ मे फिल्डिंग का टॉम जोन्स पढ़ा करता। कैरी की आहट पाते ही वह टॉम जोन्स को बाइबिल के नीचे छिपा देता। कितनी ही बार पकड़े जाते-जाते बच गया था इस तरकीब से और बाइबिल पर भक्ति बढ़ गई थी।

कैरी जब गले तक कुसंस्कार मे डुबे नहाते हुए लोगों को जर्डन नदी के पवित्र पानी से दीक्षा देने का सपना देखता, तब राम वसु नदी के जल में गले तक डूबकर नहानेवालियों के रहस्य को उद्घाटित करने मे लग जाता।

सहसा कैरी कह उठा, मुंशी, मेरी इच्छा है कि मैं इन लोगों मे प्रभु के नाम का प्रचार करूँ।

राम वसु की मानो सुख की नीद टूटी, चौंककर बोला, अच्छा तो है, यह बड़ा अच्छा होगा।

तो इसका इन्तजाम करो।

राम वसु ने कहा, कल इतवार है। सवेरे किसी गाँव में नाव लगाकर भाषण दीजिए।

कैरी उत्साहित हुआ और क्या कहना है, मन मे ठीक करने लगा। वगल के कमरे से अधपगली डोरोथी चीख उठी — टाइगर ! टाइगर ! टाइगर-टाइगर चीखने का उसे रोग-सा हो गया है।

वजरा बढ़ता जाता। पाल मे हवा लगती, दोनो किनारे के विचित्र दृश्य अनन्त सौंदर्य के स्पर्श से अछोर और अनन्त होते जाते। पास-पास सटे-सटे बैठे मध्य और नवीन युग, भक्ति और ज्ञान, अलग-अलग वुनते अपने चिंतन का ताना-वाना। और वगल के कमरे से चीख-चीख उठती भयभीत-चकित कैरी पत्नी — टाइगर ! टाइगर !

प्रवाह का फूल

वजरा प्रवाह में वढ़ता जाता। रात-दिन तीर-तीर पर विचित्र दृश्य। कैरी की आँखों के लिए सब कुछ नवीन, कानो के लिए सब कुछ अभिनव।

खूब तड़के नदी के स्रोत से कुहरे की मलमल-सी तन जाती, नदी के किनारे धुँधले-से लगते, ऐसे कि नजर तो आता, पहचान नही हो पाती।

कैरी ने पूछा, मुंशी, किनारे पर वहुतेरे मरदुए थिर वैठे दिखाई दे रहे है, क्या कर रहे हैं वे ?

फिलहाल कैरी ने नाढा से लोकभापा के शब्द सीखना शुरू किया था। आदमी के वदले मरदुआ शब्द उसे वहुत जँचा, सो उसके व्यवहार की धुन हो गई।

राम वसु ने पल भर मे अपने को सम्हाल लिया — जी, वे लोग ? वे लोग रिलीजस पीपुल है। प्रेयिंग टू गॉड।

वेरी गुड, वेरी गुड। प्रेयर इज हेल्दी। कैरी ने कहा। तो ये दिन में कै वार प्रेयर करते हैं मुंशी ?

जो जैसी जरूरत समझता है। आमतौर से दिन मे दो-तीन वार करते हैं, लेकिन अन्तर्द्वन्द्व हो तो —

कैरी ने बाधा दी, अन्तर्द्वन्द्व, यानी मानसिक संग्राम, स्पिरिचुअल स्ट्रगल — ओ, हाँ, तो ?

राम वसु ने कहा, वैसे में आठ-दस बार प्रेयर करते हैं ।

पार्वती को वहाँ पर बैठे रहना संभव न हुआ । वह उठकर चला गया ।

वेरी गुड, वेरी गुड ! मैंने देखा है, प्रेयर से तन-मन मे शान्ति मिलती है । लेकिन लगता है, उन सबके पास लोटा है । व्हाट फॉर ?

राम वसु ने बेखटके कहा, वह और कुछ नही है, ऑफरिंग वाटर टु ऑलमाइटी ।

अब की दु:खी होकर कैरी ने कहा, वेरी बैड, वेरी बैड ! यह कुसंस्कार है । हमारे देश मे प्रेयर के समय लोटे की जरूरत नहीं होती ।

नहीं होती होगी । जहाँ का जैसा रिवाज ।

कैरी ने फिर कहा, वेरी बैड, वेरी बैड ! और उसाँस भरकर सोचा, ये लोग बडे कुसंस्कारों से घिरे हैं ।

पार्वती फिर आया । फुसफुसाकर बोला, अरे भई, यह सब क्या कह दिया ?

राम वसु ने उधर मुँह करके कहा, तो और क्या कहूँ ? सही बात बताने से यह हमारे देश के लोगों को असभ्य कहेगा । वह क्या गौरव की बात होगी ?

कैरी बोला, मुंशी, आज बजरा किनारे लगाना । मैं उन मरदुओं मे प्रभु का नाम-प्रचार करूँगा । कल नाम-प्रचार करने से बड़ी तृप्ति मिली । रात बड़ी अच्छी नीद आई ।

ठीक तो है । वह सामने गाँव है ।

मल्लाहों ने पाल बटोरने की तैयारी की, बजरा बढ़ता रहा । कैरी पादरी की पोशाक पहनकर तैयार हुआ । किनारा करीब आने लगा । इतने में एक अकल्पित घटना घटी ।

किनारे जोरों का शोर हुआ — भागा-भागा, पकडो-पकड़ो !

नावों से लोगों ने देखा, किनारे छोटी-मोटी भीड़-सी लगी है । लेकिन

भागा कौन, किसे पकड़ना है, यह रहस्य जानने के पहले ही उनकी नजर पड़ी, एक लड़की पानी मे कूदी और वह नाव की तरफ तेजी से तैरती आ रही है। समझ गए, इसी को पकड़ने का शोर है। वह लड़की नाव के पास आ पहुँची और उधर एक-दो डोंगी पर कुछ लोग उसे पकड़ने के लिए लपके। वह लड़की कैरी के बजरे के पास बहुत आर्त-सी चीख उठी, बचाओ-बचाओ मुझे। ये लोग पकड़ पाएँगे तो जला डालेंगे मुझे।— इतने में उसकी नजर कैरो पर पड़ी। वह गिड़गिड़ाई — दुहाई साहब, दुहाई, बचाओ।

कैरी के कहने से राम बसु ने उस लड़की को सहारा देकर नाव पर उठा लिया।

सबने देखा, अजीब शक्ल, अजीब साज, अजीब सुन्दरता। डर से, घबराहट से रूप हजार गुना दमक रहा था। सच्चा सौंदर्य दुःख मे सुन्दरतर होता है — आँधी के आकाश मे चंद्रकला ज्यादा मोटी होती है।

उसकी साज-पोशाक देखकर राम बसु ने पूछा, अरे, यह साज तो विवाह का है! तुम क्या मडवे पर से उठकर भाग आई हो?

लाल ओठों की भंगिमा से गुलाब खिलाकर वह बोली — विवाह कल ही रात हुआ था, आज ये लोग मुझे चिता पर जला डालने को ले आए थे।

हक्का-बक्का-सा हो राम बसु ने पूछा, हठात् मर गया दूल्हा!

हठात् नही मरा, एक मरे हुए से ही शादी ठीक की थी, अब कहता क्या है कि मुझे उसी लाश के साथ जल मरना होगा।

युगों का संस्कार राम बसु के मुँह से बोल उठा, तो चिता से उठकर भाग क्यों आई?

उस लडकी के मुँह से जीवन का चिरंतन आग्रह बोला, मरने में बड़ा डर लगता है मुझे। पलटकर वह कैरी के पास घुटने टेककर बोल उठी, बचा लो, मुझे बचा लो साहब, वे कहीं पकड़ लेंगे तो मेरी खैर नहीं, जिन्दा जला डालेंगे।

डोंगी पर जो लोग आ रहे थे, उनमें से एक दुबले-दुबले-से लंबे आदमी

को दिखाकर बोली, वही है चंडी चाचा, सारे अनर्थों की जड़। दुहाई साहब, उस जालिम के हाथ मुझे मत पड़ने दो, दुहाई है!

यह सब देख-सुनकर कैरी की बोलती बन्द-सी हो गई थी। उस लड़की की आकुलता देखकर अब बात फुटी। बोला, डरो मत, हम उस मरदुए के हाथ तुमको नहीं छोड़ देंगे।

दुनिया में उस बेचारी को अब मुँह की बात का भरोसा नहीं था। उसने मजबूती से कैरी का पाँव पकड़ लिया।

वह लो! मलेच्छ को छूने का दोष लग गया। अब उसे चिता पर चढ़ाने से पहले अंग-प्रायश्चित्त कर लेना होगा। एक खर्च और बढ़ गया।

यह बात उसी चंडी चाचा ने कही।

काँपती हुई वह लड़की बोली, सुनो साहब उसकी बात!

चंडी चाचा ने हाँक लगाई — अरी, उस काले मुँह को और न जला, मलेच्छ की नाव से उतर आ।

लड़की ने कैरी के पाँवों को और कसकर पकड़ा।

राम बसु ने पूछा, बात क्या है भले आदमी?

बात क्या है, समझ नहीं रहे हो, क्या? नादान हो? देखता हूँ, मलेच्छ का साथ करके तुम लोग भी जहन्नुम में जा चुके हो! उसके बाद जरा तमककर बोला, अगर सीधे से उस लड़की को हमारे हवाले न करोगे तो जबर्दस्ती छीन लूंगा। देख रहे हो न, साथ में काफी लोग हैं?

राम बसु ने कहा, जरा देखो तो सही वैसी कोशिश करके। इसका नाम है कैरी साहब, खास विलायत से आया है, यह कोई कलकत्ते की चूना-गली का फिरंगी नहीं है।

तुम मुझे भी नहीं जानते हो शायद, मैं हूँ जोड़ामऊ गाँव का चंडी बख्शी; अपनी जिंदगी में ऐसे दो-चार सौ खून कर चुका हूँ, न होगा, एक और बढ़ेगा।

अच्छा! तो इस सफेद चमड़े में जरा खरोंच लगाकर देख ही लो न, क्या होता है! कंपनी की तेलंगी फौज आकर सारे जोड़ामऊ गाँव को

पीसकर पस्त करके चली जाएगी !

तो देखा ही जाए। अरे ओ, बजा बाजा।

दूसरी डोंगी पर ढोल-ढाकवाले थे, चंडी चाचा के हुक्म से वे बजाने लगे। और इधर चंडी चाचा और दो-एक जने और उस लड़की को छीन लेने के लिए कैरी की नाव पर चढ़ने को तैयार हुए। कैरी ने वही एक बार जो बात की थी, बस। उसके बाद से वह चुपचाप सब देख रहा था। अब उसने समझा, रोकने का ठीक समय आ गया है, अब देर करना ठीक नहीं।

उसने हाथ बढ़ाकर अंदर से बंदूक खींच ली और गरज उठा, मरदुए, अब भी सम्हल जाओ। मैं पादरी कैरी हूँ, लेकिन जरूरत पड़ने पर बंदूक भी सम्हाल सकता हूँ। तुम लोग अगर मेरी नाव का पीछा नहीं छोड़ते, तो लाचार मुझे गोली चलानी पड़ेगी।

कैरी की इस धमकी का तुरंत नतीजा निकला। जो बजरे पर चढ़ आए थे, वे झटपट डोंगी पर उतर गए।

कैरी ने बंदूक उठाकर कहा, अपनी डोंगियाँ फौरन लौटा लो, वरना मैं मजबूर होकर गोलियाँ चलाना शुरू कर दूँगा।

इस बार भी नतीजा अच्छा निकला। डोंगियों पर एक बार आपस में कानाफूसी की लोगों ने और देखते ही देखते डोंगियाँ किनारे की तरफ मुड़ीं।

लेकिन चंडी चाचा आदमी कुछ ऐसा था, जो टूटता है, लेकिन मुरकता नहीं। उसने एक बार अंतिम चेष्टा की। कहा, साहब, दुहाई कंपनी की, दुहाई मुंशी नवकृष्ण की, हमारी लड़की हमें वापस दे दो।

मौन उत्तर के रूप में कैरी ने बंदूक सम्हाल ली।

राम बसु ने धीरे-धीरे पार्वती से कहा, भई, काम चाहे प्रभु के नाम-प्रचार का करो या और कुछ, जंगी खून का असर कहाँ जाएगा ? जरा-सी खरोंच दो कि जंगी।

पार्वती बोला, साहब का यह जो रूप आज देखा, उससे बड़ा भरोसा

हुआ।

क्यो ?

अरे भई, आफत की घडी मे यह प्रभु का नाम किसी काम नहीं आता है। हाथों हाथ मिला न सबूत ? बंदूक उठाई कि किला फतह। जभी कहा, यह नही पता था कि मौके पर साहब बंदूक भी सम्हाल सकता है। मन मे जोर हुआ इससे।

धीरे-धीरे दूर हटती हुई डोंगी मे चंडी चाचा जोर से बोल उठे, अच्छा री छोरी, तू यह मत समझ ले कि जान बच गई। मै अगर जोड़ामऊ का चंडी बख्शी होऊँ, तो ससार के जिस कोने मे भी क्यों न भागे तू, झोंटा पकडकर तुझे जलती चिता मे चढाकर ही चैन लूंगा! धर्म अभी भी है, आज भी चाँद-सूरज उगते है, इस मर्त्यभूमि मे गंगा मैया बह रही है — किसी म्लेच्छ की मजाल नहीं कि तुझे बचाए। आज तू हाथ से निकल गई, इससे यह मत समझ ले रेशमी कि सदा के लिए छुटकारा मिल गया, सदा के लिए!

बजरे के लोगों ने जान लिया कि लड़की का नाम रेशमी है।

पंचायत

जोड़ामऊ में जिस जगह पंचायत बैठा करती, आज वहाँ बड़ी भीड़ थी। गाँव के मुखिए और बड़े-बूढ़े मौजूद थे। देर तक तर्क-वितर्क चलने के बाद बैठक में सन्नाटा छा गया। सभा टूटने का कोई लक्षण नहीं। पंचायतियों की सभा भी नहीं टूटती, उसके लिए गाज गिरने या आग लगने जैसी आधिदैविक अथवा आधिभौतिक घटना जरूरी होती है।

उस मौन को तोड़ते हुए एकाएक चंडी बख्शी उछल उठा, चिल्ला-कर बोला, जो कहे-सुने, [illegible]। इधर तो रहने-खाने का ठिकाना नहीं, और उधर बात ऐसी लम्बी कि लगता है साक्षात् वेद-

व्यास ही उतर आए।

तिनू चक्रवर्ती उछल पड़ा, चाचा, रहने-खाने का ठिकाना नही है, तभी तो साहस कम से कम है। और फिर वेदव्यास का ही कौन ठिकाना था ?

बेशक यह बात तुम्हारे जानने की है, वेदव्यास के बाप ठहरे न !

यह तीखा व्यंग था जिसपर सब हँस पड़े। असल मे मछुआइन को लेकर चक्रवर्ती की बदनामी थी।

जबान सम्हालकर बोलो बख्शी, ताँतिन कहाँ की कुलीन होती है ?

साले ! बख्शी उछला।

आप सबने सुना, बख्शी ने साला कहा।

किसी-किसी ने कहा, खूब हुआ अब रुको भी।

क्यों रुकूँ। कम्बख्त ने मुझे साला किस नाते कहा, पूछो उससे।

किसी ने कुछ नहीं पूछा, यह देख तिनू बोला, इसका बाप मछुआ था न, इसीलिए।

मछुआइनवाले अपवाद का करारा जबाब हो गया, यह सोचकर वह निश्चितता का अनुभव ही कर रहा था कि लमहे में बख्शी बाघ-सा उछलकर उसकी गरदन पर आ रहा, जैसे एक सरपत दूसरे पर आ गिरा। दोनों ही एक-से दुबले, एक-से लम्बे और एक-से ही दमे के रोगी थे। यही गनीमत थी। जरा ही देर मे दोनों हलुआ हैरान होकर अपनी-अपनी जगह पकड़कर हाँफने लगे। भगवान को विचार है, लिहाजा उन्होंने बाघ, सिंह, भालू आदि जानवरों को वीरता दी है, लेकिन ज्यादा देर श्रम करने की शक्ति नही दी। उन्होंने चंडी बख्शी और तिनू चक्रवर्ती जैसे वीर पुरुषों को भी दमे का रोग देकर वीरता की सीमा सीमित कर दी है।

अब की जगतदास खड़ा हुआ। बाजार का बड़ा गोलादार। अच्छा और झमेला न चाहनेवाला आदमी माना जाता। उसका पेट भी गोल था, मुँह और आँखें भी गोल। सब कुछ गोल होने का प्रतिकार था उसके

वाक्य मे — वाक्य बडा सरल। सीधी तलवार और सरल वाक्य से लोग बहुत डरते है।

जगतदास ने कहा, सुनिए बख्शी महाशय और चक्रवर्ती महाशय, सवेरे-सवेरे हम सब यहाँ तमाशा देखने नही आए है। अगर काम की बात है,तो कहिए, नही तो हम सब चलते है।

बख्शी की साँस अब थिर हुई थी। वह बोला, मै तो इतनी देर से यही समझाने की कोशिश कर रहा हूँ — बीच मे यह साला ....

मेरी मछुआइन के भाई है। तिनू बोला।

फिर दोनो उलझ गए, तो हम लोग चले। जगतदास उठ खड़ा हुआ। उसे उठते देख दूसरे बहुतेरे लोग उठ खड़े हुए।

सवेरे ठीक जमने से पहले एक ऐसा मजेदार मजमा टूट रहा है, यह देखकर गरदन-टेढ़ा पंचानन बोल उठा, काम की बात हो। बैठिए दास महाशय।

किसी अज्ञात या अप्रकाश्य कारण से पंचानन की गरदन टेढ़ी हो गई थी। इसीलिए उसे सब गरदन-टेढा पंचानन कहते थे। पंचानन जानता था कि काम की बात आप ही बेकाम की बात मे बदल जाती है — एक ही नदी मे ज्वार और भाटा दोनों आते है।

तो काम की ही बात हो — यह कहकर बख्शी ने फिर शुरू किया — अभी-अभी यह लड़की शास्त्र के माथे पर लात मारकर म्लेच्छ के साथ चली गई, इसका क्या होना चाहिए ?

यह किस शास्त्र मे लिखा है कि एक अनाथ लड़की को जलाकर मार डालो ? तिनू चक्रवर्ती ने पूछा।

तुमने शास्त्र कौन-सा पढ़ा है चक्रवर्ती ? बख्शी ने पूछा।

मैने न सही, तुमने तो पढा है ! तुम्हीं बताओ ? तिनू बोला।

बख्शी जिन्दगी मे कभी ऐसी कसौटी पर नही पड़ा था, मगर वह दबनेवाला तो था नहीं। बोला, तुम बाँभन के साँड़ हो, तुम्हे बताने से लाभ क्या है ? समझोगे ?

वाह, मैं न समझूँगा, न सही इतने लोगों में कोई तो समझेगा ? यह कहकर उसने सभा के लोगों की ओर हाथ से इशारा किया ।

मगर वख्शी उस रास्ते नहीं जाता, वोला, जरूर है, मैंने शिरोमणि जी से विधान लिया है ।

अगर किसी शास्त्र मे अनाथ लड़की को जलाने का विधान है तो मैं उस शास्त्र पर यह करता हूँ — कहकर तिनू ने उछलकर एक खास भंगी वतानी चाही ।

गरदन-टेढ़ा पंचानन चिल्ला उठा, शास्त्रों की गलती पर यहाँ यह न कर वैठिए कहीं — यह पूजा की जगह है, जाग्रत देवी का स्थान ।

शर्मिन्दा चक्रवर्ती अपनी जगह पर वैठ गया ।

जगतदास वोला, चक्रवर्ती ठाकुर, आप वूढ़े हैं, फिर जातों मे श्रेष्ठ ब्राह्मण । आपको सोच-विचार कर वोलना चाहिए ।

ऐसी वँभनई की ऐसी की तैसी ! वैठा-वैठा ही चक्रवर्ती वोला — किशन कविराज भी तो वाँभन ही है ।

जगतदास ने पूछा, इसमें किशन कविराज की वात कहाँ से आ गई ?

ओ, लगता है, आप लोग कुछ भी नहीं जानते । तो सुन लीजिए । चंडी, तुम भी सुनो, गलत कहूँ, तो वताना ।

फिर गला साफ करके चक्रवर्ती ने शुरू किया, ये आपके चंडी चाचा जी हैं, ये छः महीने से किशन कविराज के यहाँ की खाक छाना करते थे । क्यों, मालूम है ? भई कविराज, तुम्हारे पास रोगी तो वहुत आते-जाते हैं । मुझे किसी ऐसे के वारे में वताओ जो एक ही दो महीने मे टें वोलने-वाला हो ।

कविराज ने पूछा, आखिर ऐसे रोगी की क्या जरूरत पड़ गई ?

आखिर वहुत पूछ-ताछ, मोल-तोल के वाद अंत में वख्शी ने असली वात वताई । रेशमी से उसकी शादी करनी होगी ।

ऐसे रोगी से शादी ? क्यों ?

जिससे वह ज्यादा दिन जिन्दा न रहे ।

ऐसी क्या बात हुई ?

सहानुभूति दिखाकर बख्शी बोला, बेचारी लड़की का जो ब्याह ही नहीं हो रहा है।

तो कोई अच्छा लड़का क्यों नहीं ढूंढते ?

अच्छा लडका मिलेगा कहाँ ? और फिर खोजे भी कौन ?

अंत में कुछ ले-देकर कविराज ने उस अंबिका राय का पता बताया। बुढा आदमी, तिस पर डेढ साल से तपेदिक का मरीज।

तपेदिक हर्गिज नहीं, दमा था। चंडी बख्शी चिल्लाया। अब तक वह हक्का-बक्का-सा सोच रहा था, चक्रवर्ती को इतनी बातों का पता कैसे हुआ ?

वैसा दमा तुम्हें हो ! चक्रवर्ती ने कहा।

लेकिन ऐसा करने से बख्शी महाशय को लाभ क्या है ? जगतदास ने पूछा।

ओ हो, तुम तो कुछ भी नहीं जानते, देख रहा हूं। और जानोगे भी कैसे, रहते हो तराजू-बटखरा में मशगूल ! नहीं मालूम है, तो सुन लो। अगर वह लड़की विधवा हो जाए, तो उसे चिता में जलाकर मार डाला जाएगा और उसकी जायदाद उत्तराधिकार में हाथ लग जाएगी। क्यों बख्शी, ठीक कह रहा हूं न ?

तुम किरिस्तान जैसी बात कर रहे हो।

अरे बाबा, किरिस्तान किसे कहते हैं, अब की देख लिया न ! गए तो थे एक बार, तुम दबाकर भाग क्यों आए ? फिर जाओ न।

जरूर जाऊंगा। मैं आसानी से छोड़ देनेवाला थोड़े ही हूं। एक बार में न हुआ तो सौ बार जाऊंगा।

निन्यानबे बार बाकी रह जाएगी, एक ही बार में काम तमाम हो जाएगा।

कुतूहल से किसी-किसी ने पूछा, सो कैसे ?

गोली से इस पार उस पार छलनी कर देगा ! अपनी रसिकता पर

चक्रवर्ती जोर से हँस पडा। सेर पर सवा सेर इसी को कहते हैं। राजकुमारी और राज — एक ही साथ दोनों साहब के हाथ लग गए। अब देखता हूँ, कितनी ताकत है बख्शी में।

बख्शी मन में बेहद परेशानी महसूस कर रहा था, इसलिए कि इनमें से कोई बात गलत नहीं थी। फिर भी चुप रहने से बुराई की जिम्मेदारी दूनी भारी होगी, यह सोचकर बोला, तुम जैसे गँजेड़ी की बकवास का जवाब देकर मै वक्त नही बरबाद करना चाहता।

ओ, शायद इसीलिए समय बचाने की नीयत से इस-उस मुहल्ले में जमात जुटा रहे हो कि उसकी नानी बेचारी को जात से निकाला जाए!

यह किसने कहा?

जिसने कहा, वह देखो, वह आ रही है।

सबने उधर देखा, मोक्षदा बुढ़िया धीरे-धीरे आ रही है। मोक्षदा बुढी है। विधवा। रेशमी की नानी।

आकर वह रोने लगी, मेरे बाप, मुझे जात से मत निकालो।

तिनू चक्रवर्ती अब तक उसी की तरफ से लड़ रहा था। अब उसे बड़ा गुस्सा आया। सोचा, यह बुढिया तो बडी स्वार्थी है। इसके लिए रेशमी के सर्वनाश से जात से निकाला जाना ही बड़ी बात है।

उसने कहा, अरी ओ बुढ़िया, जात से निकाली गई तो क्या हुआ! यही तो कि कोई तेरे घर खाएगा नहीं। नही खाएगा, बला से। तुम्हारा अन्न बच जाएगा।

बुढिया और जोर से रो पड़ी — मरने पर कोई मुरदे को कंधा नहीं देगा।

यह लो! सब तो गया, मरने के बाद क्या होगा, उसकी फिकर से बुढिया को नींद नहीं आ रही है।

तुम तो नास्तिक हो बाबा, तुम्हारा न तो धरम है, न परलोक। लेकिन हम तो भगवान मानते है भैया!

तो फिर यहाँ किसलिए आई? भगवान के पास जाकर रोओ।

वही तो कर रही थी। कह रही थी, भगवान, उस मुँहजली के नसीब मे जो था, सो हुआ। अब मेरी दुर्गति न हो।

ठीक ही तो कर रही थी। फिर इधर कैसे आ गई ?

इसलिए कि जात-निकाला तो आदमी ही करता है, भगवान नही।

चक्रवर्ती ने टोका, आदमी नहीं, जो आदमी नही है, वही करता है।

उसके बाद चक्रवर्ती खड़ा हो गया बोला, न.। यह सब मेरे बर्दाश्त के बाहर है। तुम लोग जहन्नुम मे जाओ, मैं चलता हूँ। वह जल्दी-जल्दी चला गया।

यह तिनू चक्रवर्ती गाँव की एक समस्या है। उसे जमीन-जायदाद, घर-द्वार, सेहत, विद्या, कुछ भी नही है। शायद इसीलिए उसमे अदम्य साहस और अप्रिय सत्य बोलने का तेज सबसे ज्यादा है। जिसे धन्-दौलत है, उसे कब्जे में रखना सहज है, लेकिन अकिंचन की शक्ति को रोकने का कौन सा उपाय है ? यही वजह है कि यह सर्वहारा गाँव भर का स्थायी सिरदर्द बना हुआ है। लेकिन यहाँ पर चक्रवर्ती भ्रम मे था। जिस समाज मे विचार से आचार, धर्म से अनुष्ठान और इहलोक से परलोक का महत्व ज्यादा है, वहाँ जात से निकाले जाने की चिन्ता भयानक है और मरने के बाद लाश की दुर्गति की आशंका ,भी असह्य है। जिस समाज मे सारी बुराइयों को नसीब पर लादकर जिम्मेदारी से बरी हो जाने का रास्ता साफ है, वहाँ रेशमी के सर्वनाश से उसकी नानी की काल्पनिक मामाजिक बाधा ज्यादा कठिन होगी, यह तो बहुत ही सहज-बोध्य है। लिहाजा उस बुढ़िया की निगाह मे तिनू चक्रवर्ती नास्तिक और अधार्मिक है। उसने चंडी बख्शी के आगे निरुपाय होकर कहा, भैया, तुम लोग जो कहोगे, वही होगा।

चंडी ने सबकी तरफ ताककर गर्व के साथ कहा, देख लिया न, धरम की कल हवा से चलती है या नही !

जो देश धरम की कल के चलाने का भार हवा पर छोड़कर निश्चिंत रहता है, उस देश के दुःख का अंत,नही रहता।

अंत में पंचायती काली के भोग के लिए मोक्षदा से इक्कीस सिक्का

रुपए और सवा मन चावल लेकर उसपर से सारी सामाजिक सजा हटा लेने की बात तय हुई और बहुत-बहुत सलाह-परामर्श के बाद यह भी निश्चित हुआ कि इसके लिए कलकत्ते जाकर जात-कचहरी के मुखिया महाराज नवकृष्ण बहादुर के पास फरियाद करनी चाहिए। कंपनी पर उनका बड़ा प्रभाव है। यदि वे चाहें, तो साहब के कब्जे से रेशमी के उद्धार का उपाय कर सकते हैं।

चंडी बख्शी ने तुरंत कलकत्ते जाने की तैयारी शुरू कर दी।

रेशमी सूत्र

रेशमी की चेतना लौटने में पूरे तीन दिन लग गए। चौथे दिन उसने थोड़ा-सा गरम दूध पिया और फिर सो रही। छिरू की माँ ने कहा, यों बिना खाए-पिए रहने से तो मर जाओगी — लो, यह दोनों संदेश खा लो। लेकिन रेशमी कुछ न बोली। छिरू की माँ जैवेज की आया थी।

तंद्रा, नींद और सपने में ये कई दिन कटे रेशमी के। जब तक बख्शी की जमात डर दिखाती रही, वह जी-जान से कैरी का पाँव पकड़े पड़ी रही, अपनी शक्ति की आखिरी बूंद तक को वह चोट देकर जगाए रही थी। लेकिन बख्शी की जमात खिसकी कि उसकी भी शक्ति जाती रही, वह कटी लता-सी कैरी के दोनों पाँवों के बीच नाव के पटरे पर लुढ़क गई। राम बसु छिरू की माँ को बुला लाया। दोनों मिलकर उसे छिरू की माँ के कमरे में ले गए। वहीं जो वह सोई, तो तंद्रा, नींद और सपने में तीन दिन बीते, तीन रातें गुजरीं, न तो मुँह में पड़ा एक बूंद पानी, न पेट में गया एक दाना अन्न।

उसे जब छिरू की माँ के कमरे में ले जाया जा रहा था, मिसेस कैरी

ने एकबार झाँककर पूछा, उसे क्या हुआ है ? बाघ ने हमला किया ?

फेलिक्स ने कहा, नहीं। बेहोश हो गई है।

मिसेस कैरी ने अपना वाक्य पूरा किया, बाघ ही के हमले से। देख नहीं रहे हो, उसका बदन लाल हो गया है।

भीगा लाल कपड़ा उसके शरीर से चिपक गया था।

दूध पीकर रेशमी सो रही, लेकिन नींद नहीं आई। नींद की भी एक सीमा है। उसने नए सिरे से अपने में बल के संचार का अनुभव किया। शक्ति शायद घटते-घटते आखिरी हद पर पहुँचकर फिर अपने आप ही लौटना शुरू करती है, जैसे अमावस्या का चाँद शुक्ल पक्ष में। वरना नए सिरे से बल अनुभव करने का कारण रेशमी में क्या हो सकता है ? बल के साथ आई आशा, आशा के साथ आई फिर से जीने की इच्छा। उस समय उसने सोचा था, मरूँ तो जी जाऊँ। अब सोचना शुरू किया, क्यों न फिर से जिऊँ ? सोचा, अगर मरना ही था तो चिता से उठकर भागी क्यों ? चिता की याद से उसके रोंगटे खड़े हो गए। उधर से मन को हटा लेने की कोशिश की। लेकिन हटाना संभव नहीं हुआ। उसके मन की आँखों में वे मर्मान्तिक दृश्य एक-एक कर तिरने लगे। एक-एक करके — लेकिन ठीक क्रम से नहीं। पिछले आठ पहर से अनगिनती दृश्य 'हरि लूट' के बताशे की तरह छिटककर छितराने लगे — आगे-पीछे का क्रम नहीं रहा।

उधर कई दिनों से वह ऐसी कानाफूसी सुन रही थी कि उसका विवाह होनेवाला है। लेकिन वह इतनी जल्दी होगा, यह थोड़े ही जानती थी। उसी दिन शाम को जाना, विवाह आज ही रात में है। अभी भी उसके कानों मानो ढोल-शहनाई की आवाज सुनाई दे रही थी। लाल वस्त्र और चंदन से सजी हाथ में दो कंगन पहने वह विवाह-मंडप की ओर रवाना हुई। उस चंडी चाचा को ही ज्यादा पड़ी थी। और वह भला दुलहा था। सूखी लकड़ी-सा शरीर। सारा सिर गंजा, आँखें गढ़ों में धँसी। मुँह में एक भी दाँत नहीं। किसी ने दबी आवाज में कहा भी, हाय, बेचारी लड़की को

पानी में वहा दिया। चंडी चाचा ने ललकारा, वजा रे, वाजा वजा। लगन का वक्त हो गया। वंदूक की आवाज क्यों? आतिशबाजी का इन्तजाम था क्या? कोहवर में ही दुलहे की साँस फूलने लगी। वैद को वुला, वुला वैद को जल्दी! कोई वोल उठा, अजी जनाव, यह दुलहा तो वैद की कृपा से ही जुटाया गया है, अव उसकी वुलाहट क्यों? चंडी चाचा ने कहा, भई, आप लोग जाइए तो अभी, शोर न कीजिए।.... न:, किस्सा खत्म हो गया! लड़की का नसीव फूट गया। कोई शक नहीं कि किशन कविराज धन्वन्तरि है। व्याह खत्म होने के पहले ही दुलहा खत्म! उसके वाद क्या हुआ, रेशमी को ठीक-ठीक याद नही आता। कैसा तो उलझ जाता है सव। वाजे-गाजे के साथ कहाँ तो ले गए लोग उसे। भूख-प्यास और उस अनोखे अनुभव ने उसे ऐसा पंगु-सा कर रखा था कि उसके मन में जरा भी उत्सुकता न थी। सवने कहा 'चल' और वह चल पड़ी। जव होश आया, तो देखा, सामने चिता है, चिता पर एक लाश है। कौन है वह? उससे मेरा क्या संवंध? ठीक-ठीक, याद आया, उसी आदमी से तो मेरी शादी हुई थी। कव? कल रात या पिछले जन्म में, याद नही आता। सव लोग मुझे नहलाने को क्यों ले जा रहे है? तो क्या? — हाँ-हाँ, वही! टोले की विन्दु ब्राह्मणी को उसने चिता पर चढ़ते अपनी आँखों देखा था! उफ्, कैसी तकलीफ थी उस वेचारी को! जितनी वार वह उछलकर भागना चाहती, लोग 'हरि वोल' कहकर वाँस से उसे दवोच देते। नही-नहीं, मैं नहीं मरूँगी। यदि ऐसी मौत ही मेरे नसीव में लिखी थी तो अव तक मैं जिन्दा ही क्यों रही? अपने माँ-वाप तथा दूसरे दो भाई-वहनों की तरह नाव-दुर्घटना में ही क्यों न चल वसी। नहीं-नही, हरगिज नही, मरना मुश्किल है। उसने देखा, अवाध सुयोग जैसी सामने नदी वह रही है, और आगे-पीछे कुछ भी न सोचकर वह कूद पड़ी। पहले तो किसी की नजर नहीं पड़ी, फिर शोर मचा, गई-गई डूव गई! अरे नहीं, डूवी नहीं, भाग गई! नाव ले आ, डोंगी। पीछे डाँड़ खेने की छप-छप आवाज! सामने वह वजरा किसका जा रहा है? अरे, वचाओ। ये लोग मुझे जिन्दा जला रहे हैं,

बचाओ।

किसी ने हाथ बढाकर उसे खीच लिया। रेशमी ने न जाने किसका पाँव पकड़ लिया कसकर! अब तक इतने कुछ करने की अनोखी शक्ति किसने दी उसे। जब तक विपत्ति की आशंका थी, वह सख्त रही। शंका टली कि बेहोश हो गई।

रेशमी! उठो, कुछ खा लो।

दूध तो अभी पिया।

अरे, दूध तो कल पिया है!

तो क्या, इस बीच एक पूरा दिन निकल गया?

निकलेगा नही? दिन क्या किसी के इन्तजार मे बैठा रहता है?

क्या खाऊँ?

भात।

साहब के बजरे मे नही खाऊँगी।

हाय राम, साहब के बजरे मे खाने को कौन कह रहा है। साथ में हिन्दू का बजरा जो है।

तुम वहीं खाती हो?

और नही तो क्या किरिस्तान के बजरे में खाकर जात गँवाऊँ!

तो मुझे वही ले चलो। हाँ, तुम्हें पुकारूँ क्या कहकर?

जो सब कहते हैं। छिरू की माँ।

राम बसु के बजरे में जाकर रेशमी ने चार दिन के बाद अन्न-ग्रहण किया।

नाढ़ा दी ग्रेट

मिस्टर कैरी रोज तीसरे पहर नाढ़ा से लोक-भाषा के शब्दों का पाठ

लिया करता था, जैसे सवेरे राम वसु से संस्कृत और फारसी का।

उसने राम वसु से कहा, मुंशी, बंगला गद्य को उन सब शब्दों के आधार पर खड़ा करना होगा, जिनका व्यवहार लोग हर समय करते रहते हैं।

राम वसु ने कहा, जी, वही कीजिए। हम तो साहित्य की भाषा में नहीं बोला करते।

तुम्हारी भाषा में फारसी के शब्द बहुत होते हैं, संस्कृत के शब्द भी कम नहीं होते। लोगों की जबान ठीक-ठीक नाढ़ा की जबान पर है। वह मुझे काफी मदद कर रहा है। मैंने उसका नाम रखा है, नाढ़ा दी ग्रेट।

लेकिन वह तो निरा अनपढ़ है।

बाइबिल का मेरा अनुवाद भी तो अनपढ़ लोगों के लिए होगा। उस दिन नाढ़ा ने मुझे 'मरदुआ' शब्द सिखाया था। कितना जोर है उसमें।

वह नितांत ग्रामीण शब्द है।

ज्यादातर लोग ग्रामीण ही हैं। सोचकर देखो, मनुष्य कहो, आदमी कहो, पुरुष या मर्द कहो, लोग कहो, जो भी कह लो, इस मरदुए से ज्यादा अर्थ-बोधक एक भी नहीं। मरदुआ बोलते ही जीता-जागता आदमी सामने खड़ा हो जाता है।

राम वसु समझ जाता है, जिस कारण से भी हो, इस समय साहब के सिर पर ग्राम्य भाषा की भूतनी सवार है। अभी बाधा देना बेकार है, कहने से भी भूतनी आसानी से उतरने की नहीं। लिहाजा अभी हाँ करते जाना ही ठीक है। उसने कहा, जी, क्या कहना। ग्रामीण शब्द का जोर ही जुदा है।

बेशक—कैरी ने एक कागज निकाला—यह देखो, नाढ़ा ने और भी कुछ गजब के शब्द मुझे बताए हैं।

कैरी पढ़ता गया, काहिल, ननद, छिनाल, औरत, फलाँ....

फिर बोल उठा, फलाँ—ऐसा अच्छा शब्द न तो अंगरेजी में है, न तुम्हारी संस्कृत में। 'अमुक व्यक्ति' या 'दैट मैन' तो इस फलाँ के आगे

शराब के सामने पानी जैसा स्वादहीन है।

और भी उत्साहित होकर कैरी ने कहा, इसके बाद जब मैं प्रभु का नाम-प्रचार करूँगा, तो उपस्थित जनता का यह कहकर संबोधन करूँगा —औरतो, मरदुओ और दूसरे फलाँ लोग। क्यों, कैसा रहेगा?

बहुत अच्छा।

राम बसु ने मुंह से कह तो दिया कि बहुत अच्छा। लेकिन मन में सोचने लगा, मेरी बीस रुपए की नौकरी जाएगी। उपस्थित जनता तुम्हें ठिकाने लगा देगी, नाम-प्रचार का दूसरी बार मौका न मिलेगा।

देखो मुंशी, मैंने सोच लिया है कि नाढा से मैं ग्राम्य शब्दों का संग्रह करूँगा और तुमसे बंगला गद्य रचना का कौशल सीखूंगा। जब कुछ आगे बढ़ जाऊँगा, तब लोक-भाषा में गद्य लिखूंगा। एकाध पुस्तक लिखने के बाद कलम जब कुछ मँज जाएगी, तब बाइबिल का अनुवाद शुरू करूँगा।

प्रस्ताव तो बहुत अच्छा है। किस विषय पर लिखेंगे, कुछ सोचा है?

विषय तो खुद आ जुटा है।

तैरती नाव पर विषय कहाँ से आ जुटा, राम बसु सोच नहीं पाता।

लेकिन ज्यादा देर सोचने की जरूरत नहीं पड़ी। कैरी ने कहना शुरू किया, नाढ़ा अपने जीवन की कहानी सुनाता जाता है, मैं नोट करता जाता हूँ। अजीब है उसका जीवन। जैसे कोई रोमांस हो। तुमने कभी कुछ सुना है?

मुझे पूछने का अभी तक मौका ही नहीं मिला।

कभी विस्तार से सुन लेना — मैं थोड़ा-सा आभास देता हूँ उसका।

इतना कहकर कैरी नाढा के जीवन-वृत्त की रूप-रेखा बताने लगा।

नाढा कहता है, जब वह बहुत छोटा था, तब माँ-बाप और अपनी एक बहन के साथ तीरथ करने गंगासागर गया था। लौटते वक्त खेजरी के पास लुटेरों ने उसकी नाव लूट ली। उसका ख्याल है, उसके माँ-बाप उसमें मारे गए। बहन का उसके बाद से कोई पता नहीं चला। बहुत संभव है, वह भी मारी गई। फिर वह कैसे बैंडेल के गिरजे के कैथोलिक

पादरियों के पास आया, कह नहीं सकता।

कैथोलिक पादरी ! राम वसु सिहर उठा।

आतंकित क्यों हो उठे मुंशी ?

आतंकित न होऊँ ? कैथोलिक संप्रदाय प्रभु के सत्य धर्म का दुश्मन है न !

ठीक है, ठीक है, कैरी ने राम वसु से हाथ मिलाया।

राम वसु मन ही मन हँसा।

तुम अपने प्रभु को जितना जानते हो, मैं अपने बीस रुपए के प्रभु को उससे कहीं ज्यादा जानता हूँ। किस बात से उसका मन कितना खुश होगा और रुपए की थैली कितनी खुलेगी, यह मुझसे ज्यादा कोई नहीं जानता।

कैरी ने कहा, तुम जैसे गुणी आदमी के लिए बीस रुपए वेतन शर्म की बात है। अब की मदनावाटी में पहुँचकर पाँच रुपए और बढ़ा दूँगा।

राम वसु ने मानो यह सुना ही नहीं, कुछ इस भाव से कहा, हाँ, नाढ़ा की जीवन-कहानी कहिए।

उन दुश्मनों के पास वह पाँच-सात साल रहा। वहीं उसने अंगरेजी की दो-चार बातें सीखीं। एक दिन जब वह नदी किनारे खेल रहा था, लड़का-चोरों के दल ने उसे भुलावा देकर उठा लिया और कलकत्ते ले आया। वहाँ उन्होंने उसे मशहूर हारमोनिक टैवर्न के मालिक के हाथ दस रुपए में बेच दिया। वहाँ वह बर्तन साफ करता, इधर-उधर की फरमाइश सुनता और छुट्टी मिलती तो लालदीघी के किनारे जो बड़ा-सा नीम का पेड़ है, उसके नीचे छिपकर सिगरेट पिया करता। जब हारमोनिक टैवर्न उठ गया, तो बरतन-भाँड़े और असबाब के साथ वह भी बिक गया। मार्तुनी साहब ने उसे बीस रुपए में खरीद लिया।

अब रुककर कैरी ने पूछा, क्यों, है न अजीब ?

है तो अजीब, मगर अनहोनी नहीं। अक्सर ऐसा होता है।

दुःख की बात आपको क्या बताऊँ डाक्टर कैरी, इन्हीं चुराए गए लड़कों से कलकत्ते के [illegible] के नौकरों की फौज और चुराई गई

लड़कियों से कलकत्ते की वेश्याटोली भर गई है।

राम वसु चुप हो रहा। शायद उसे सामान्य रूप से कलकत्ते की वेश्याटोली की याद आ गई, अथवा विशेष रूप से टुशकी की याद आई।

उसके बाद वह फिर बोला, यह जो लडकी आई है, अंत तक इसका ठिकाना कहाँ होगा, कौन कह सकता है?

किसकी? रेशमी की? कैरी ने कहा, उसे मै इधर-उधर नही जाने दूँगा। कल उससे मेरी बात हो चुकी है। वह अपने समाज मे हरगिज वापस नही जाना चाहती।

यह मैं जानता हूँ। वापस जाने पर उसका मरना निश्चित है।

कैरी ने कहा, उसके नाम कुछ जायदाद है। जब तक वह नहीं मरती तब तक उसके उत्तराधिकारी निश्चित नही हो पा रहे है।

कैरी कहता गया, रेशमी कह रही थी, मेरे पास रहेगी तो उसे छीन-कर ले जाने की कोई हिम्मत नहीं करेगा। मैंने सोच लिया है मुशी, उसे मै अंगरेजी सिखाऊँगा और कभी अगर उसने अपने से चाहा, तो उसे ईसाई बना लूँगा।

यह प्रस्ताव वसु को जँचा नही। लेकिन बोला, बेजा क्या है!

मिसेस कैरी को यह लडकी खूब पसन्द आ गई है। वह इससे गपशप करती और इससे बहुत हद तक ठीक रहती है। लेकिन इसकी सबसे गहरी जमी है नाड़ा से, एक दूसरे को छोड़ना नहीं चाहते। हमउम्र है न।

राम वसु ने कहा, यह मैंने गौर किया है। दिन भर दोनों बजरे की छत पर बैठे बात करते है। बड़ा अच्छा लगता है, जैसे दोनों भाई-बहन हों।

इतने मे अचानक मल्लाहों मे हलचल-सी उठी। राम वसु ने पूछा, क्यों भई, क्या मामला है?

मल्लाहों मे से एक ने कहा, वह जो एक डोंगी दिखाई दे रही है न उसका ढंग कुछ ठीक नहीं लग रहा है।

राम बसु ने ताककर देखा, दूर पर एक पतली लंबी डोंगी है।

कैसा लगता है ?

लगता है, समुद्री लुटेरों की है।

समुद्री लुटेरों की !

सभी एक साथ चौंक उठे।

आफ़त है !

पाल खोलो, पाल खोलो।

उठो, उठो; सभी हाथ बँटाओ।

राम बसु बोला, रात आ रही है और पीछे लगे है लुटेरे। आज बड़ी मुसीबत है।

तिनू चक्रवर्ती का दौत्य

एक साथ अनेक पालों मे हवा का झोंका लगने से दोनों बजरे जोरों से भागने लगे। किंतु बजरे भारी पड़ते थे, डोंगी थी हलकी। सो दोनों की दूरी धीरे-धीरे कम होने लगी।

बजरे की छत पर हाथ में बंदूक लिए कैरी, बगल में नाढा और राम बसु खड़े हो गए।

नाढा ने कहा, होश में आने से पहले एक बार समुद्री लुटेरे देखे थे। इस बार होश मे देखूँगा। उसे बड़ा कुतूहल था, बड़ी उत्सुकता थी।

राम बसु ने पूछा, तुझे डर लग रहा है, क्यों ?

डर क्यों लगने लगा ? और फिर मै भी तो लुटेरा हूँ।

सो कैसे ?

मार्तुनी साहब मेरा स्वभाव देखकर मुझे लुटेरा कहते थे।

अबे, वह लुटेरा नहीं। ये असली लुटेरे हैं।

डोंगी और बजरे का फासला अब बहुत कम हो आया। बात करने से सुनाई पड़ती। डोंगीवालों को डराने की गरज से कैरी ने बंदूक की आवाज की।

डोंगी से एक आदमी ने चिल्लाकर कहा, साहब, ज्यादा गोली-वोली न छोड़िए। हम आपके मित्र है।

कैरी ने जवाब दिया, हम लुटेरों के मित्र नही होना चाहते।

आप न सही, समझिए हम चाहते है। हम लुटेरे-वुटेरे नही है।

इतने मे रेशमी ने सिर निकाला, तिनू भैया है?

हाँ री छोरी, हाँ। अपने साहब बाबा से कह, बंदूक न छोड़े। छुटपन मे एक बार बिजली की कड़क से बेहोश हो गया था तब से बंदूक की आवाज से बड़ा डर लगता है। फिर गोली ऐसी बुरी चीज होती है कि शरीर के इस पार से उस पार हो जाती है।

राम बसु हँस उठा। पक्की कही भैया ने। बंदूक की गोली और बीबी की बात दोनों ही मर्मभेदी होती है।

कैरी ने समझा और जो चाहे हो यह आदमी दुश्मन नहीं है। जहाँ तक लगता है, लुटेरा भी नहीं है।

अरी ओ रेशमी, इन सबको मेरा परिचय बता दे।

रेशमी ने राम बसु को तिनू के बारे मे बताया और राम बसु ने कैरी को सब समझा दिया।

परिचय और दुआ-नमस्कार हो चुकने के बाद तिनू ने अपने यों आने का कारण बताया।

तिनू ने कहा, बसुजा, यह छोरी इस तरह आग के पेट से तो बच गई लेकिन अब बाघ के जबड़े में है। आग तो एक ही जगह खड़े जला डालती है, बाघ पीछा करके शिकार पकड़ता है।

फिर उसने इस सूत्र की व्याख्या की — उस चंडी बख्शी के बारे मे कह रहा हूँ, जिसका थोड़ा-सा परिचय उस रोज मिला है। पूरा परिचय देने में तो सारी रात लग जाएगी। अभी रहने दीजिए, फिर कभी रेशमी से

सुन लीजिएगा।

उसके बाद अपने आप बोला, इत्ती-सी लड़की, यह क्या जाने।

फिर कहा, चंडी बख्शी ने प्रतिज्ञा की है, चाहे जैसे भी हो, वह इसे ढूंढ़कर ही रहेगा।

वसुजा ने पूछा, अच्छा, ढूंढ़ निकाला, मान लिया। फिर?

उसके बाद सामाजिक रीति की रक्षा नाम के नाम पर उसे जलाकर मारेगा।

डर से रेशमी के रोंगटे खड़े हो गए।

लेकिन सामाजिक रीति की रक्षा के लिए उसके सिर में दर्द क्यों है?

क्या यह आपको नहीं मालूम? रेशमी के नाम थोड़ी-सी जायदाद है। स्त्री-धन है उसका। सो उसके जीते जी चंडी उसे कैसे भोग सकेगा?

वसुजा ने कहा, ओ, तो यह बात है!

फिर भी पूछा, लेकिन चंडी ही क्या उसका उत्तराधिकारी है?

तिनू चक्रवर्ती ने कहा, इस इलाके की सभी लावारिस जायदादों का हकदार चंडी है।

सब हँस पड़े।

राम वसु ने कहा, ऐसे एक-दो आदमी बंगाल के प्रायः सभी गाँवों मे है।

तिनू ने कहना शुरू किया, बाघ का पंजा पड़े तो बीसों खरोंच। चंडी आसानी से छोड़नेवाला आदमी नहीं है। मैंने सोचा, किसी तरह दीदी को यह बता दूं। इसीलिए मछुओं से डोंगी लेकर भागा आ रहा हूँ।

रेशमी ने पूछा, मैं अब क्या करूँ तिनू दादा?

पहले यह सुन ले कि क्या नहीं करेगी। गाँव कभी मत लौटना।

तो रहूँगी कहाँ?

अभी जहाँ है। साहब के पास। साहब आदमी तो भला जान पड़ता है।

रुआँसी-सी होकर रेशमी बोली, क्रीस्तान के पास रहने से क्रीस्तान

नहीं हो जाऊँगी ?

क्रीस्तान क्यों हो जाएगी री पगली ! वसु महाशय भी तो हैं। ये क्या क्रीस्तान हो गए हैं ?

मर्दों की वात जुदा है। रेशमी ने कहा।

तिनू उस प्रसंग से हटकर बोला, चंडी वख्शी जैसे हिंदू होने से क्रीस्तान होना कौन वुरा है ?

राम वसु ने देखा, इस आदमी का मन तो वडा संस्कार-मुक्त है। बोला, तुम्हारे मुँह से ऐसी वात !

तिनू ने कहा, यह तो आप मेरे ही मुँह से सुन सकते हैं। लोग मुझे नास्तिक कहते हैं न।

जरा रुककर फिर बोला, मगर मैं नास्तिक नहीं हूँ। देवता मैं मानता हूँ, मानता नहीं गाँव की पंचायत को।

राम वसु ने प्रसंग वदला, चंडी चाचा अव क्या करेगा ? क्या ख्याल है तुम्हारा ?

उन लोगों ने जात-कचहरी के मुखिया नवकृष्ण वहादुर के पास जाने की सोची है। साहव-सूवे उनकी मुट्ठी में हैं। और तव शायद नवकृष्ण वहादुर का फरमान लेकर चारों तरफ तलाश में निकलेंगे।

इस वात ने राम वसु को गंभीर वना दिया। उसकी स्थिति देखकर तिनू ने कहा, वसु महाशय, रेशमी को अगर कभी कलकत्ते ले जाओ तो वड़ी होशियारी से रखना। चंडी वख्शी की हजार आँखें हैं।

रेशमी ने कहा, तिनू भैया, तुम्हारा तो कहीं कोई नहीं है। चलो न हमारे साथ।

तिनू ने हँसकर कहा, अरे, नहीं पगली, मुझे गाँव लौटना होगा।

क्यों ?

मैं रहता हूँ तो चंडी चाचा की जमात कुछ ठंडी रहती है। इतना कहकर तिनू ने रेशमी के भाग आने के बाद की सारी घटना बताई।

फिर अपना कथन समाप्त कर कहा, अब आज रात तो वसु महाशय

के आश्रय में रहूँगा, फिर कल सुबह तड़के ही जोड़ामऊ लौट जाऊँगा।

तिनू चक्रवर्ती के लौट जाने की बात सुनकर रेशमी रोने लगी, बोली, तिनू दादा, अगर जाना ही था, तो आए किसलिए ?

तिनू ने हँसकर कहा, यानी मैं न आता तो खुश होती तू ?

रेशमी ने कोई जवाब नहीं दिया। रोती रही।

रात थोड़ी और बढ़ी, तो रेशमी उठकर चली गई। तिनू चक्रवर्ती को लेकर राम बसु भोजन करने गया।

रेशमी को नींद नहीं आई। लहरों की कल-कल छल-छल माँ की स्निग्ध हथेली की तरह उसकी निद्राहीन चिंता को छू जाती। लहरों के हलकोरें में उसे माँ की गोद में हिलने का अनुभव होने लगा। न जाने कब वह सो गई। सोकर सपना देखा। देखा कि नदी में नाव डूब रही है। डूब रहा है बेबस दंपती! हाय, सब डूब गया। कमल के पत्ते पर ओस की दो बूँदों ऐसे झलमला उठे शिशुओं के दो छोटे-से मुखड़े। ऐसे में किसने उसे नदी में फेंक दिया। वह कमल के पत्ते पर जा गिरी। पत्ता काँप उठा। अचानक सुनाई पड़ा, क्यों रेशमी दीदी, पहचान रही हो ?

कौन ? नाढ़ा ? मैं तो डर गई थी।

इतने में ही में डर गई ?

वह कौन है रे ?

पहचानोगी। समय आने पर पहचानोगी।

डूबे कौन ?

अपने माँ-बाप को नहीं पहचान सकती ?

रेशमी ने रोना शुरू किया। नींद टूटी तो देखा, तकिया गीला हो गया है। आँखों के कोने अभी भी भीगे हैं।

अजीब सपना! तो क्या सचमुच उसने बचपन की उस नाव-दुर्घटना को सपने में देखा ? लोग कहते हैं, भाई-बहन बच गए थे। शिशुओं के ये मुखड़े क्या उन्हीं के थे ? एक मुखड़ा नाढ़ा जैसा क्यों था ? और दूसरा फिर किसका था ? धत्! सपना भी कभी सच होता है ? हाय, सच क्यों

नहीं होता ? सोचते-सोचते वह फिर सो गई।

जात कचहरी के मुखिया

शोभाबाजार में महाराज नवकृष्ण बहादुर का दरबार। दरबार टूट रहा था, ज्यादातर लोग जा चुके थे, लेकिन महाराज अभी तक बैठे थे। नितांत अंतरंग दो-चार लोगों से महाराज बातें कर रहे थे। ऊँचे आसन पर महाराज अकेले बैठे थे। बगल में मखमल का एक तकिया था, लेकिन तकिया ऐसा चमाचम और नया था कि लगता नहीं उसे कभी राज अंग का स्पर्श नसीब हुआ है। इस बुढ़ापे में भी महाराज सीधे बैठे थे, ओठंग कर बैठने की उन्हें आदत नहीं। उनके पहनावे में थी मलमल की धोती, कंधे पर मलमल की चादर, घुटे हुए सिर के बीच मोटी चुटिया, कपाल पर तिलक, गले में तुलसी की माला। पैरों के पास फर्श पर हाथी दाँत का काम किया हुआ खड़ाऊँ। एक ओर दो अलग आसनों पर दो प्रौढ़ व्यक्ति बैठे थे। उनकी भी वेश-भूषा वैसी ही थी लेकिन कीमती नहीं। एक थे प्रसिद्ध महामहोपाध्याय पंडित जगन्नाथ तर्कपंचानन — महाराज के सभापंडित और दूसरे, प्रसिद्ध कवि-गान लिखनेवाले हरेकृष्ण दीर्घांगी या हरु ठाकुर, महाराज के आश्रित और अनुगृहीत गुणी व्यक्ति! तीनों में धीमे-धीमे आलोचना चल रही थी। अब तक दरबार में जो प्रसंग छिड़ा था, उसी का रहा-सहा।

इतने में दो-तीन साथियों के साथ चंडी बख्शी वहाँ दाखिल हुआ। एक रूमाल में दो अकबरी मुहरें महाराज के पैरों के पास नजराने के रूप में रखीं और उसके बाद सबने साष्टांग दंडवत किया।

चंडी जब खड़ा हुआ, तो उसे अच्छी तरह गौर कर नवकृष्ण बहादुर

ने पूछा, कौन ? चंडी वख्शी ? आजकल ठीक से देख नहीं पाता हूँ !

चंडी वख्शी महाराज का परिचित था।

महाराज जैसे व्यक्ति ने उसे पहचाना, इस अप्रत्याशित सौभाग्य से गलकर विचलित और पुलकित चंडी ने सारे दाँत निपोड़ते हुए कहा, जी, मैं महाराज की कृपा से दासानुदास चंडी ही हूँ।

जैसे महाराज की कृपा घटते ही चंडी का भी देहांतर होगा।

उसके वाद अपने साथियों की ओर ताककर कहा, देखा ? कहा था न कि जो सच्चे वड़े लोग होते है, वे छोटों को कभी नहीं भूलते।

चंडी ने ये वातें चाहे जिस मतलव से कही हों, लेकिन क्लाइव-हेस्टिंग्स जैसे धुरंधरों के सिर पर हाथ फेरकर जो वैषयिक सौभाग्य की चोटी पर चढ़े थे, उनके लिए ये वातें दूसरे अर्थ मे सत्य थी। छोटों को पहचानकर उनकी शक्ति का सदुपयोग नहीं कर पाते तो हेस्टिंग्स के मुशी क्या महाराज नवकृष्ण हो सकते थे ?

महाराज ने पूछा, तो, हो कैसे ?

गोपीनाथ जी और गोविन्द जी की कृपा से अच्छा ही हूँ।

गोपीनाथ जी और गोविन्द जी महाराज के कुलदेवता थे।

उसके वाद उसने भ्रम का संशोधन करके कहा, और यही कैसे कहूँ कि अच्छा हूँ ?

क्यों, क्या हुआ ?

हुआ सो वहुत कहना पड़ेगा। कहने के लिए ही महाराज के चरणों में आया हूँ।

पहले वैठो तो सही। फिर सव सुनूँगा।

महाराज के आदेश से साथियों सहित चंडी बैठ गया।

कहो तो, क्या हुआ है ? तुम परेशान-से लग रहे हो।

चंडी खूव जानता था कि हिन्दू धर्मप्राण होता है, यानी धर्म को भली-भाँति खेला पाओ, तो इस निर्वोध जाति से हर कुछ कराया जा सकता है।

इसलिए उसने शुरू किया, महाराज के आश्रय और उदाहरण से हम लोग केवल धर्म के सहारे किसी तरह जी रहे हैं। इसके सिवा है ही क्या और रहेगा भी क्या ?

इतना कहकर एक बार उसने कनखियों से सुननेवालों की शकल देख ली। समझ गया असर बुरा नहीं पड़ा। आशाप्रद है। उसके बाद एक लंबी साँस छोड़ी। आँधी के पीछे-पीछे पानी की तरह लंबी साँस के साथ आँसू की बूँदें झनकीं। उसने अपना हाथ एक बार माथे से लगाकर कहा, लगता है, अब वह आश्रय भी जाने को है। अब एक ही आश्रय रह गया है महाराज के चरण, इसीलिए यहीं आया हूँ।

चंडी के साथी उसकी वाक्-चातुरी और अभिनय-कुशलता पर मुग्ध हो गए। लेकिन नए सिरे से उसकी जरूरत नहीं थी, क्योंकि चंडी शौकिया यात्रा पार्टी में शकुनि की भूमिका अदा करता था।

महाराजा ने संक्षेप में कहा, सो तो है।

यानी यह एक ऐसा विषय है, जिसके लिए यही दो शब्द काफी हैं। ज्यादा कहने की जरूरत नहीं होती।

अब जगन्नाथ तर्कपंचानन ने जबान खोली। कहा, भैया, अपने शास्त्र में कहा गया है, धर्मस्य तत्वं निहितं गुहायाम् — धर्म का तत्व गुफा में निहित है। लेकिन तुम्हारा मन तो देख रहा हूँ, उस गुफा से भी गहन है। असल में बात क्या है कहो तो ? सिर्फ धर्म के लिए कोई बीस कोस पैदल चलकर आया हो, यह मैं पहली बार देख रहा हूँ।

चंडी बख्शी पक्का खिलाड़ी था, डोल जाता, मगर गिरता नहीं। बोला, पंडित जी से कुछ छिपाना मुश्किल है। तो खोलकर कहूँ।

फिर जरूरत के मुताबिक घटा-बढ़ाकर उसने रेशमीवाली घटना सुनाई। रद्दो-बदल से बात ऐसी हुई — चंडी ने कहा, सती-स्त्री जब आर्य नारी के आदर्श पर अपनी इच्छा से पति की चिता पर चढ़ने को तैयार हुई, तो ऐन मौके पर एक कम्बख्त म्लेच्छ साहब (यहाँ उसके चेहरे पर धर्मोचित घृणा का भाव प्रकट हुआ) कुछ लठैतों को लेकर आया और

जबर्दस्ती उसे छीन ले गया।

महाराज ने पूछा, क्यों, तुम्हारे गाँव में लाठी पकड़नेवाला कोई न था?

लाठी से क्या होना था महाराज, साहब के हाथ मे बंदूक जो थी।

थी तो क्या हुआ। तर्कपंचानन बोले, धर्म के लिए कितने आर्य जनों ने जान दी है। तुम लोग भी दस-पाँच आदमी मरते।

चंडी ने कहा, जरूर! लेकिन वह कम्बख्त जान लेने के लिए रुका कहाँ? लड़की को नाव पर उठाकर ही चलता बना।

तर्कपंचानन ने कहा, और कहीं लड़की अपनी इच्छा से गई हो —

उनकी बात खत्म होने के पहले ही चंडी बोल उठा, वैसी लड़की जोड़ामऊ गाँव में नहीं है। पूछिए मत, जो जार-बेजार रोई वह? छोड़ दो साहब, छोड़ दो मुझे, मैं अपने पति की पुकार सुन पा रही हूँ। दुहाई तुम्हारी, मेरा इहलोक परलोक मत बिगाड़ो।

हरू ठाकुर अब तक चुपचाप सुन रहा था। अब उसने कहा, तुम्हारे गाँव के स्त्री-पुरुष सभी क्या यात्रा-दल में काम करते हैं?

क्यों?

इसलिए कि जल मरने का ऐसा आग्रह तो मैं यात्रा के सिवाय और कहीं नहीं सुना।

अब महाराज ने कहा, तो मैं क्या करूँ?

महाराज जात-कचहरी के सब कुछ है, धर्म के रखवाले हैं, धर्म की पताका है। ऐसे में आप न बचाएँ तो धर्म रसातल चला जाएगा।

यहाँ पर जात-कचहरी की थोड़ी-सी व्याख्या जरूरी है। ईस्ट इंडिया कंपनी के आरंभ काल में कलकत्ते में जात-कचहरी नाम की एक अजीब चीज खड़ी की गई थी। कंपनी के धुरंधर राजपुरुषों ने समझ लिया था कि जाति का अभिमान ही हिन्दुओं का मर्मस्थल है। जाति-भ्रष्ट होने से हिन्दू जीते जी मरते हैं। इनके लिए जाति से अलग होने का भय, रोटी छिन जाने के भय से बड़ा है। हिन्दू समाज के इस संस्कार पर दबाव डालकर हाँ को न कराया जा सकता है। इसलिए जाति-रक्षा के बहाने

सारी जाति को मुट्ठी मे करने के लिए जात-कचहरी खडी को गई और उस जमाने में धन-मान-प्रतिष्ठा मे कलकत्ते के हिन्दू समाज के जो शिरोमणि थे, उन महाराज नवकृष्ण को उस जात-कचहरी का जज या मुखिया बना दिया गया। इस विचित्र चाल से कंपनी ने परोक्ष रूप से हिन्दू समाज को वश मे कर लिया। हाथ की ताकत से सँड़सी की पकड़ हर हालत मे सख्त होती है। लेकिन हम जिस समय की बात कर रहे है, उस समय जात-कचहरी का शासन ढीला पड़ चुका था।

चंडी की बात सुनकर महाराज ने कहा, देखो भाई, जात-कचहरी का इलाका कलकत्ता है, उसके बाहर मेरी नही चलती। फिर इस मामले में एक साहब हैं।

चंडी इतनी आसानी से छोड़ देने के लिए इतनी दूर नहीं आया था। वह बोला, मैं पूछता हूँ महाराज, भला कौन-सा साहब आपसे नहीं डरता? आपके नाम से बाघ-बैल एक घाट पर पानी पीते है!

महाराज नवकृष्ण फीकी हँसी हँसकर बोले, वह दिन अब नहीं रहा बख्शी। आज के नए लाट-बेलाट अब पहले की तरह मानियों का मान रखना नहीं जानते। होता क्लाइव या वारेन हेस्टिंग्स का जमाना तो तुम्हारा मामला तुरंत तय करा देता। फिर अब मैं बूढा हो गया हूँ, वह दम भी नहीं रहा।

चंडी ने कहा, जी, काम तो करता है नाम। उमर से क्या आता जाता है?

अगर असामी पकड़ा गया होता तो बड़े लाट से एक बार कह भी सकता था।

तर्कपंचानन ने कहा, कौन साहब था, कहाँ गया कोई ठिकाना नही, ऐसे में महाराज क्या कर सकते है?

जी, भागीरथी से उत्तर की तरफ गया है।

अरे भैया, भागीरथी कुछ इत्ती-सी नदी तो नहीं, और उत्तर दिशा भी बहुत बड़ी है। असामी पकड़ा कैसे जाएगा?

बस, हुक्म मिले, पकड़ लाता हूँ उसे। सिर्फ महाराज की एक बात चाहिए।

अच्छा, जब हुक्म मिलने से ही असामी को पकड़ सकते हो, तो दिया हुक्म। लेकिन खबरदार, साहब पर हाथ न लगे।

चंडी सिहर उठा, साहब के बदन पर हाथ लगाऊँगा। क्या मैं बाल-बच्चों को लेकर गिरस्ती नहीं करता! मैं तो बस महाराज का हुक्म दिखाकर उस छोरी का झोंटा पकड़कर महाराज के पास ले आऊँगा।

नहीं-नहीं! मेरे पास मत लाना। तुम्हीं जैसा हो करना यानी शास्त्र जैसा कहे।

चंडी उठ खड़ा हुआ। छाती पर हाथ रखकर बोला, महाराज के हुक्म से दस हाथियों का बल मिला। देखता हूँ, वह म्लेच्छ अब कैसे उस सती नारी को छिपाकर रखता है।

इसके बाद अपने साथियों की ओर मुँह करके बोला, देखा, मुँह की एक बात का क्या असर है।

अच्छा पंडित जी, सती को चिता पर चढ़ाने के पहले म्लेच्छ-दोष दूर करने के लिए अंग-प्रायश्चित्त तो कर लेना पड़ेगा?

तर्कपंचानन से पहले ही हरू ठाकुर ने जवाब दिया, जी हाँ, जैसे बैंगन को आग में भूनने से पहले उसपर तेल लगा लिया जाता है।

इस व्यंग पर ध्यान न देकर चंडी ने फिर एक बार महाराज के गुणों का बखान किया और साष्टांग प्रणाम करके साथियों सहित विदा हुआ।

तर्कपंचानन और हरू ठाकुर को विदा करके महाराज महल में चले गए।

अनोखा नीलकर

दो महीने हुए, अपने दल-बल के साथ कैरी मदनाबाटी पहुँचा । मदनाबाटी मालदा जिले के उत्तर टंगना नदी के किनारे छोटा-सा गाँव था । गाँव की मौजूदा हालत अच्छी न थी, लेकिन जहाँ-तहाँ पड़े खंडहर, पत्थर के टुकड़े, मिट्टी से भर गए पोखरे इस बात का सबूत दे रहे थे कि यह हमेशा ऐसा नहीं था। किसी पुराने जमाने में समृद्धि थी, प्रताप भी रहा होगा इसका । उसी खोए हुए अतीत की प्रेत-छाया में वहाँ पचीस-तीस घर लोग मसक्कत से गुजर-बसर कर रहे थे । ज्यादातर निम्न वर्ग के लोग थे और कुछ संथाल ।

गाँव के पच्छिम नदी के किनारे जॉर्ज उडनी की नीलकोठी थी । आम, कटहल, बरगद, पीपल की छाया से घिरी कोठी उडनी की बनवाई हुई न थी, पुरानी इमारत थी । बहुत संभव, गाँव की पुरानी समृद्धि की अंतिम जीती-जागती यादगार । नील का कारोबार करने के लिए उडनी ने कई साल पहले यह कोठी खरीद ली थी । कारोबार चल रहा था, लेकिन मंदी थी । अपने से देखे बिना कौन-सा कारोबार चलता है ? कैरी ने जिम्मा लिया । उडनी को विश्वास था, अब व्यापार तेजी के साथ चलेगा । दो नावों पर पाँव रखकर चलना मुश्किल है । फिर भी चला जा सकता है, अगर दोनों नावें एक तरह की हों । धर्म-प्रचार और नील का व्यापार जैसी दो अलग तरह की नावें कम ही हैं ।

दस-बारह मील पर था दिनाजपुर जिले का गाँव महीपालदीघी । वहाँ उडनी की दूसरी नीलकोठी का भार लेकर टामस गया था । दो-चार दिन बाद-बाद वह टट्टू पर सवार होकर मदनाबाटी आता और दो-चार दिन रह भी जाता ।

कोठी के नायब, गुमाश्ता, प्यादा-नौकर, सबको नया काम मिला ।

अब उन्हें दादनी देना, नील की खबरगीरी करना, प्रजा का शासन आदि नहीं करना पड़ता। इन सबके बदले वे कैरी के बँगला स्कूल के लिए छात्र जुटाते फिरते थे। कैरी का हुक्म था, जिसके लड़के पढने आएँगे, उसकी छः महीने की मालगुजारी माफ कर दी जाएगी। एक घर से दो लड़के आएँगे तो निश्चित नील के बदले रुपया दे देने से ही काम चल जाएगा। फिर भी लड़के नही जुट रहे थे। लोग सोचते, इससे नायब का जुर्माना और प्यादे की लाठी बेहतर था। यह कैसा नया उपद्रव है!

छात्र नही जुट रहे थे, लेकिन जलपान के लिए दो रुपए देने का लोभ देकर कैरी ने आठ-दस छात्रों का जुगाड बैठाया। वे लडके सवेरे तीन-चार घंटे पढ जाया करते थे। शिक्षक थे राम बसु और पार्वती ब्राह्मण। एक शिक्षक और मिल गया — गोलोक चरण शर्मा। यह इसी इलाके का था।

कैरी के स्कूल की सबसे अच्छी छात्री थी रेशमी। जितना ही था उसे पढने का ध्यान, उतनी ही तेज थी बुद्धि, वैसा ही था उत्साह। लेकिन लाख कोशिश के बावजूद नाढा को स्कूल मे दाखिल नही किया जा सका।

नाढा कहता, रेशमी दीदी, मुझे क्या सीखना है? कौन-सी विद्या मेरी अजानी है, बताओ तो? जूते की सिलाई से लेकर चंडीपाठ तक सब जानता हूँ।

रेशमी कहती, पढ़ तो भला चंडी?

चंडी भला यों ही पढी जाती है? पूजा का बंदोबस्त करो, दक्षिणा दो।

वाह, दक्षिणा पहले ही?

खैर, दक्षिणा बाद में सही। पूजा का प्रबंध तो पहले करना होगा।

रेशमी ने हँसकर कहा, नहीं रे, लिखना-पढ़ना सीख। कायथ दादा जैसे पंडित होने से लोग कितनी खातिर करेंगे? काफी तनख्वाह मिलेगी।

रेशमी दीदी, जो विद्या सीखी है, उसी की तनख्वाह कौन दे ?

तूने कहाँ पढ़ना-लिखना सीखा ? फिजूल की बकवास !

बकवास ! मार्तुनी साहब के यहाँ नही सीखा ? कहा नही तुमसे ?

वह तो गाली-गलौज सीखी है अंगरेजी की !

और बंगला ? तुमसे कहूँ क्या दीदी, हम बंगाली भी वह गाली-गलौज नही जानते ।

रहने दे, शरारत मत कर। हम दोनो साथ पढेगे तो बड़ा मजा आएगा । चल ।

उससे तो चलो ताड़ के पेड़ोवाले मैदान में घूम आएँ । तालाब में नया पानी पडा है — कितनी मछलियाँ आई है । चलो, पकड़ें । देखना, उसमें पढ़ने से कितना ज्यादा मजा है ।

जीत नाढा की ही होती । दोनों नदी पार करके मैदान में चले जाते ।

जानने के आग्रह से प्राण का आग्रह अधिक होने पर स्कूल से भागे बिना चारा नहीं । स्कूल में जो पिछली पंक्ति के छात्र होते है, जीवन में वे ही पहली पंक्ति मे आ बैठते है ; क्योंकि विद्यालय तो जीवन की ओर पीठ करके प्रतिष्ठित होता है ।

टामस बीच-बीच में दो-चार दिन यहाँ आकर रह जाता । कह नहीं सकता क्यों, नाढ़ा को वह अच्छी निगाह से नहीं देख सका । वह कहता, इस कम्बख्त नाढा ने ही रेशमी को चौपट किया है ।

राम बसु ने मन ही मन कहा, अब तुम्हारी निगाह रेशमी पर न पड़े तो राहत मिले । तुम्हारा चरित्र मुझसे तो छिपा नही है ।

कैरी कहता, नहीं-नहीं, वे दोनों मजे में है । आखिर रेशमी को एक साथी तो चाहिए । फिर रेशमी बीबी की मेधा बडी तीक्ष्ण है । उसने मुझसे अंगरेजी में सबक लेना शुरू किया है ।

कभी-कभी उडनी की चिट्ठी लेकर आदमी आता । उस चिट्ठी में नील की खेती के बारे में समयानुसार उपदेश होते, प्रजा-शासन की सलाह होती, उसी के साथ-साथ ईसाई धर्म-प्रचार और शिक्षा-प्रसार की भी

चर्चा हुआ करती। नील की खेती के बारे में अपने अनुभव और आग्रह की कमी के कारण कैरी चिट्ठी का मतलब उलटा लगाता। उसका ख्याल था, वह धर्म-प्रचार और शिक्षा-प्रसार के लिए ही यहाँ भेजा गया है, नील की खेती नितान्त गौण है। फिर भी कर्तव्य के नाते एकाध बार नायब-गुमाश्ता को ताकीद करता। लेकिन न तो वह खेती का काम जानता था, न ही जानता था हिसाब-किताब, इसलिए मौका पाकर नायब-गुमाश्ता दोनों हाथों चोरी करने लगे। कैरी अगर कभी वही-खाता लाने को कहता, तो वे झट दो नए विद्यार्थी पकड़ लाते। बस, वही-खाता की बात भूलकर कैरी कह उठता — प्रभु की असीम कृपा! वही-खाता कृपा के समुद्र में खो जाते और छात्र भी दो दिन दर्शन देकर चंपत हो जाते। लड़कों के माँ-बाप से गुमाश्ता ऐसा ही तय कर आता।

एक दिन कैरी ने नायब से कहा, आज हरीशपुर की खेती देखने जाऊँगा।

सुनते ही गुमाश्ता ने कहा, हुजूर, तालपोखर के एक गृहस्थ ने ईसाई बनने की इच्छा जाहिर की है।

ईसाई बनने की! कैरी का चेहरा आशा से दमक उठा। उसी वक्त एक वह घोड़े को मोड़कर तालपोखर के लिए रवाना हो जाता। तालपोखर हरीशपुर से ठीक उलटी दिशा में था और दूर भी प्रायः चौदह-पंद्रह कोस। जाने-आने में ही दो दिन लग जाते।

नायब की कृपा से हरीशपुर के किसानों ने नील के बदले धान की खेती की। इस प्रकार वास्तव में नायब की कृपा से प्रभु की कृपा की होड़ चल रही थी। प्रभु की कृपा पार नहीं पा रही थी।

न वन की न बगीचे की

किसी-किसी दिन रात को नींद खुल जाती और रेशमी बिछावन पर उठ बैठती। असह्य दुःख से सारा हृदय बुझने लगता। चढ़ते-चढ़ते वीणा का तार ऐसी एक दशा में पहुँच गया है कि एक हलके से हलके निश्वास से, ऐसा कि जो निश्वास सिर्फ छाती के अंदर ही डोलता रहता है, बाहर नहीं निकलता, उस गुप्त निश्वास से भी वह झनझना उठता है। रेशमी सोचने लगती, दुःख की यह कैसी सर्वग्रासी मूर्ति है? दुःख की बाढ़ प्रबल हो उठने पर कूल की रोक नहीं मानती। ऐसी हालत में तीर और नीर एकाकार हो: जाते हैं! किसे पता था कि मन का दुःख शरीर को बेकल बना देता है? दुःख से रेशमी का परिचय नया है। शैशव में उसके जीवन में अवश्य एक मर्मांतक घटना घटी थी। एक दिन अचानक ही उसे सुनने को मिला कि उसके माँ-बाप, भाई-बहन अब लौटकर नहीं आएँगे। उस समय उस घटना को सही रूप में ग्रहण करने की उम्र नहीं थी उसकी। बाद में सारा कुछ समझा। लेकिन वह सब हो-हुवा गया, बचपन के दूर दिगंत में महज एक सजलता ही उनकी निशानी बनकर रह गई। इस एक बात को छोड़ दें, तो कहना होगा, उसका जीवन सुख में ही बीता है। नानी के स्निग्ध हृदय के सारे स्नेह ने ढँक लिया था उसे। लेकिन उस समय यह किसे मालूम था कि उसके लिए एक कठोर वज्र तैयार हो रहा है। उफ़, कैसा कठिन वज्र! कैसा आकस्मिक, वैसा ही निर्मम। अंतिम कई दिनों की बात वह होश में सोच नहीं पाती, सोचना नहीं चाहती, लेकिन दुःख का भी ऐसा विचित्र स्वभाव होता है कि घूम-फिरकर बार-बार दिखाई दे जाता है। दिखाई देना भी क्यों कहें। इस एक को छोड़कर उसके जीवन में दूसरा दुःख ही कौन-सा था?

नहीं समझ पा रही थी कि वह [illegible] में है? [illegible] संभव है,

कुछ ही क्षणों से ! लेकिन नहीं, जब वह उठकर बैठी थी, रोशनदान से झाँककर देखा था, आकाश अँधेरा था। अभी उजाला था। आसमान के छोर पर चाँद की छोटी-सी फाँक दिखाई दी। कुतूहल से चंद्रकला उसके मन में झाँक रही थी।

उसे लगा, कमरे के बाहर किसी के पैरों की आहट हुई। चौंकी। रेड़ी के तेल की रोशनी में देख लिया, कमरा अंदर से बंद था।

शुरू-शुरू में जब आई थी यहाँ, बहुत दिनों तक रात को उसे नींद नहीं आती थी! दिन में वह कोठी के अहाते से बाहर नहीं जाती थी। रात-दिन उसे चंडी बख्शी के खुफियों का खौफ लगा रहता। तिनू चक्रवर्ती के शब्द कानों में गूँज-गूँज उठते — चंडी सहज ही छोड़नेवाला नहीं, होशियार रहना। लेकिन छः महीने के अंदर चंडी के किसी आदमी से सामना नहीं हुआ। इससे वह बहुत कुछ निश्चिंत हो गई थी। सोच लिया था कि चंडी को उसका पता नहीं चल सका। लेकिन जीवन में सिर्फ चंडी ही तो भयावह नहीं, दूसरा भी भय है, दूसरी तरह का भय। रेशमी ने समझ लिया था कि उम्र का भय भी एक विपत्ति है। उसे टामस की याद आती। उसकी चाल-ढाल, उसकी नजर वह बिलकुल पसंद नहीं करती।

टामस ने एक दिन उससे कहा, रेशमी बीबी, मैं तुम्हें बाइबिल की कहानियाँ सुनाऊँगा।

कैरी मजाक से उसे रेशमी बीबी कहता था। रेशमी को बुरा नहीं लगता — दादा और पोती के बीच ऐसा परिहास चल सकता है। लेकिन टामस का 'बीबी' कहना उसे न जाने क्यों चिंतित कर देता। लगता, उसमें वासना की आँच है।

टामस चुन-चुनकर बाइबिल के प्राचीन खंड से ऐसी कहानियाँ उसे सुनाता, जिनमें कामना का पुट हो। कान की लौ लाल हो उठती उसकी। इन किस्सों में से कोई-कोई उसने कैरी से भी सुना है। लेकिन ताज्जुब है, जबान के फर्क से रस में भी ऐसा फर्क पड़ता है ?

रेशमी कहती, तो मैं चलूँ अब।

नहीं-नहीं वीवी, जरा और बैठो। एक दिन महीपालदीघी चलोगी? वहाँ बहुत बड़ा तालाब है, खूब तैरना।

रेशमी जानती थी, टामस कैरी से बड़ा डरता है।

सो उसने कहा, कैरी साहब से पूछ लूँ।

अरे बाप, कैरी से यह सब न कहना। अच्छा अभी जाओ।

रेशमी को छुटकारा मिल जाता। वह समझ जाती कि जीवन के हर अध्याय में वदकिस्मती नया रूप धारण कर आती है।

सच तो यह है कि कमरे मे अकेली सोने में उसे डर लगता। कभी ऐसी आदत नहीं थी। लेकिन यहाँ उसके कमरे मे सोए तो कौन? छिरू की माँ जैवेज को लेकर कोठी के एक कमरे मे सोया करती। कोठी के उत्तर से दक्खिन तक लंबी कतार में छोटे-छोटे कई कमरे थे। उत्तर के एक कमरे मे रेशमी सोती थी! कुछ हटकर दूसरे एक कमरे मे नाढ़ा सोता था। नाढ़ा कहता, रेशमी दीदी, कभी डर लगे तो मुझे पुकारना, मैं कम्बख्त चंडी की गर्दन पर चमुडा बनकर चढ जाऊँगा। दक्खिन के कमरों में राम वसु, पार्वती ब्राह्मण आदि सोते। इसलिए रेशमी अकेली ही सोती। मन ही मन कहती, हर्ज क्या है? तमाम जिंदगी तो अकेली ही रहना है, आदत हो ले।

एक दिन रात में अचानक वाजों की आवाज से रेशमी की नींद टूट गई। वह चौंककर उठ बैठी। इतना शोर-गुल कैसा? डकैत तो नहीं आए? वह खिड़की के पास गई। झाँककर हँस पड़ी। वारात थी और उसने डकैत सोच लिया था! दूसरे ही क्षण जी में आया, यह भी एक प्रकार की डकैती ही है! कहाँ की लड़की को छीनकर कहाँ ले चला। अपनी वात याद आई। चिन्ता को लेकिन वाधा पड़ी — रोशनी, कोलाहल, शहनाई की करुणा-भरी आवाज ने अँधेरे को विक्षिप्त कर दिया था। पालकी के खुले दरवाजे से उसे दुलहे का तरुण रूप दिखाई दे गया। कितना सुंदर है! उसका मन एक ही क्षण में आनंद की चोटी पर चढ़कर विषाद की गहरी खाई में फिसल गया। सुख-दुःख दोनों निकटतम पड़ोसी

हैं, यह कैसा आश्चर्य है। उस बंद पालकी में जरूर दुलहिन होगी। वह भी क्या इतनी ही सुंदर होगी? नहीं-नहीं, सुंदर लड़की इतनी सुलभ नहीं। और हो भी तो क्या, रूप से क्या बदकिस्मती को रोका जा सकता है? ऐसा ही होता तो उसकी यह हालत क्यों होती? रेशमी को मालूम है कि वह अनोखी सुंदरी है। कैसे जाना उसने? जैसे सभी स्त्रियाँ जानती है, वैसे ही, पुरुषों की आँखों के आईने मे अपनी परछाई देखकर जाना है।

उसे इसी तरह से एकाएक नींद टूट जानेवाली एक और भी रात की बात याद है। रात ही खास कर उसकी अपनी होती है। उस रात उसने मरघट जानेवालों का 'हरि बोल' सुना था। अकेली जगी बैठी वह सोचने लगी थी। हरि बोल की वह ध्वनि मानो जीवन के छोर पर खरोंचकर सीमा-रेखा खींच रही थी। लेकिन इस दीर्घ अनन्त मानव जीवन में उसका स्थान कहाँ है? वह न तो दुनिया की है, न परलोक की! परलोक के जबड़े से वह निकल भागी, संसार के बंधन को तोड़ आई — उसका संबंध न तो होमानल से हो सका न चितानल से — दो में से किसी से नही। उसे लगा, अजीब हूँ मैं। और भी कोई है ऐसी? क्या कहीं भी नहीं है? हाँ, है एक। केवल एक। वह है एक पेड़ कुसुम का। मैदान में अकेला, उदास, और निरर्थक खड़ा है। उन दोनों की दशा एक-सी है, दोनो न वन के हैं, न बगीचे के।

दो सखियाँ

लोगों से मिलने-जुलने की शक्ति एक बहुत बड़ा सामाजिक गुण है। यह गुण रेशमी में खूब था। जब तक अपने गाँव रही, वह कमर में आँचल लपेटकर इस गाँव से उस गाँव घूमती फिरती। कोई भी खबर हो, सबसे पहले उसके कानों पहुँचती। उसकी नानी मोखदा बुढ़िया कहती, उसे

हवा से खबर मिलती है। किसके लड़के का ब्याह है, किसकी पोती की शादी, यह खबर घरवाले से पहले वह जान जाती। लोग मजाक मे कहा करते, घटकिन है। कमर मे आँचल लपेटा हुआ, होंठों पर हँसी, जहाँ देखो, वही है। रेशमी अपने गाँव मे आनंद की लहर-सी थी। फिर एकाएक दुःख की काली रात आई। सारे संसार की विपत्तियाँ उस वेचारी के सिर टूट पड़ीं और रेशमी के साथ गाँव की हँसी भी एक फूंक में बुझ गई। सुखी आदमी शिशु होता है, सदा सुखी आदमी सदा शिशु बना रहता है। दुःख अंदर ही अंदर मनुष्य की उमर बढ़ा देता है। दुःख के थपेड़े खाकर एकबारगी रेशमी की आयु बढ़ गई है। लेकिन पुरानी आदत नहीं गई।

मदनावाटी आने के दो ही चार दिन बाद वह नाढ़ा को साथ लेकर गाँव में गई थी। बाँस की झाड़ियों के बीच सौदामिनी बुढ़िया का घर था। वह उसके यहाँ गई।

बूढ़ी ने पूछा, अरी, तुम लोग किस घर के हो ?

रेशमी ने कहा, कायस्थ घर के।

लगता है, भाई-बहन हो।

आपने ठीक ही अंदाज किया है नानी।

यहाँ कहाँ से आई हो ?

कोठी से।

बैठो, बैठो।

उसके बाद पूछा, मगर इतनी उमर हो गई, शादी क्यों नहीं हुई ?

हम कुलीनों के यहाँ ऐसा होता है।

हाँ, सो तो होता ही है। दुलहा जुटते-जुटते मेरी उमर दो बीस बीत गई थी ! हम भी कुलीन हैं न।

सौदामिनी विधवा थी।

रेशमी बोली, कहती क्या हो नानी, तुम्हारी उमर तो अभी भी दो बीस नहीं लगती है।

सौदामिनी ने इसका विरोध नही किया, बल्कि पोपले मुँह पर हँसी

बिखेरकर बोली, आई हो, थोड़ा भूना चावल खा लो। थोड़ा भूना चावल खा लो।

भूना चावल खाते-खाते नाढ़ा ने पूछा, भूना चावल तुम खाती कैसे हो नानी, दाँत तो नहीं देख रहा हूँ मुँह मे ?

मसूड़े से चवाती हूँ, मसूड़े से। (हर बात को दो बार कहने की आदत थी उसकी।) जो जोर मंसूड़े में है, वह दाँत में कहाँ ? दाँत गिर जाने पर ही तो भूना चावल खाने में मजा है।

नाढ़ा की हरकत मे उस दूर भविष्य के इंतजार का लक्षण नही देखा गया। वह तन-मन से भूना चावल चवाने मे लग गया।

और एक दिन वह उस गाँव में गई जहाँ बढ़ई लोग रहते थे। आज नाढ़ा साथ नहीं था। उसे मछली मारने लायक एक पोखरे का पता चल गया था। बढ़ई के घर की स्त्रियाँ चूड़ा कूट रही थीं। जो लड़की ढेंकी चला रही थी, वह जरा देर के लिए कहीं चली गई कि रेशमी बिना किसी से पूछे ढेंकी चलाने लगी।

पहले तो किसी ने ध्यान नही दिया, फिर जब देखा तो सभी ने पूछा, तुम कहाँ रहती हो ?

रेशमी ने गंभीरता से कहा, बाँस की झाड़ियों में।

उन लोगों ने पूछा, डोम टोली में ?

डोम टोली मे नहीं, बाँस की झाड़ियों मे। मैं चुड़ैल हूँ।

जिसकी उम्मीद नहीं थी, ऐसा उत्तर पाकर सब ठक रह गई। कइयों को यह विश्वास हो गया कि वह चुडैल है। सब एक दूसरे को देखने और कानाफूसी करने लगीं।

एक बड़ी-बूढ़ी-सी औरत ने पूछा, तो यहाँ किसलिए बिटिया ?

वह बोली, पिछले जनम में मेरे माँ-बाप की हालत अच्छी नहीं थी। चूड़ा कूटकर मुरमुरे भूनकर गुजारा चलता था। उसके बाद मेरी शादी बड़े घर में हुई। चूड़ा कूटना बंद हो गया। इससे मेरा तो जैसे दम घुटने लगा। एक दिन छिप-छिपाकर बढ़ई टोले में चूड़ा कूट आई।

बात खुल गई। सास ने मेरे मैके की निंदा की। उसी दुःख से मैं फाँसी लगाकर मर गई।

उसके पिछले जनम की कहानी सुनकर इहलोकवासिनियों को काठ मार गया।

बोलती सबकी बंद हो गई।

उस प्रौढ़ा स्त्री ने फिर पूछा, तो यहाँ क्यों बिटिया ?

बताया तो, चूड़ा कूटने का शौक और खास कर बढ़ई के घर।

चुड़ैल भूनी मछली माँगकर उपद्रव मचाती है, यह तो सभी को मालूम था। चूड़ा कूटनेवाली चुड़ैल के बारे में उन्होंने नहीं सुना था। फिर यह चुड़ैल बड़ी ढीठ और किसी तरह पीछा न छोड़नेवाली लगी।

लाचार उस प्रौढ़ महिला ने गले में अँचरा डालकर उसे प्रणाम किया, विनती की, बिटिया, तुम देवी हो, चाहे मानवी, जो भी हो कृपा करके जहाँ रहती हो, वहीं लौट जाओ।

रेशमी ने देखा, मजाक में आशातीत रंग आ गया है। तब वह जिद करके बोली और हर शब्द को नकियाकर बोलने (अब तक ऐसा करने की बात ध्यान में नहीं आई थी) लगी, नही, हैंरगिज नहीं जाँती। तुम्हाँराँ ढाँई मन चूँड़ा कूँटकर तँब जाऊँगी। साँस को गाँली-गलौज ने तँन-बँदन अँभी भी जल रहा हैं।

प्रणाम करती वह औरत बोली, मैया, हम बहुत गरीब हैं।

अँरे, उँसी लिँए तों आँई। राँजा लोंग क्या चूँड़ा कूँटतें हैं ? वें तों चूँड़ा खाँतें हैं —,दूँध के साँथ, दँही कें साँथ, कँला मिँलाँ कर।

चुड़ैल किसी तरह नहीं छोड़ती।

दम की-अनुआ सुनकर उसी औरत ने कहा, दया करके तुम चली जाओ बिटिया। हम सब दूध, चूड़ा और केले का भोग चढ़ाएँगी।

कब, कहाँ ?

कहना फिजूल है, नकियाकर बोलना जारी रहा, पर आदत न रहने से

बीच-बीच में भूल होने लगी; लेकिन रेशमी उसे फिर सुधार लेती। चुड़ैल न होकर चुड़ैल का अभिनय करना कोई आसान नहीं है।

जहाँ कहो। अगले शनिवार को अमावस्या है — उसी दिन।

चुड़ैल बोली, नहीं, मैं आदमी के कहने पर विश्वास नहीं करती। लोग मन्नत मानते हैं, पूरा नहीं करते।

रेशमी के इस विश्वास का विशेष कारण था। मुसीबत में पड़कर उसने अनेक बार मन्नत मानी थी, पर मुसीबत टल जाने पर पूरी नही की।

आज ही देना होगा — अभी, यहीं पर।

फिर सभी अचंभित और अवाक हुए।

एक ने कहा, ओ बड़ी बहू, ला ही दो न।

बड़ी बहू यानी जो अगुआ बनी थी, उसने कहा, मेरे घर सब कुछ तो है, लेकिन केला नहीं है।

चुड़ैल चिढ़कर (नकियाकर) बोली, उँहू, यह न होगा। केला मुझे बड़ा अच्छा लगता है। जब तक पका केला नहीं मिलता, नहीं जाऊँगी।

एक ने कहा, छिदाम के पेड़ मे शायद होगा।

चुड़ैल (नकियाकर) बोली, तो जाती क्यों नहीं ? जाकर ले आओ, देख क्या रही हो ? क्या चुड़ैल कभी नहीं देखी है ?

सच तो यह था कि उन्होंने इससे पहले चुडैल देखी न थी और चुड़ैल जो इतनी खूबसूरत होती है, यह भी किसी ने नहीं सुना था।

दो-तीन स्त्रियाँ चुड़ैल के भोग का सामान लाने गई। साक्षात एक चुडैल को खोया, मिठाई और केले के संग चूड़ा खाते देखने का दारुण लोभ ने चुड़ैल के लिए उनके भय को भगा दिया था।

एक भूखी और नाराज चुडैल के संग इस बीच कैसा व्यवहार करें, यह किसी को मालूम न था, इसलिए सभी चुप खड़ी रहीं।

इतने में गदराती देहवाली, साँवली, छोटे-छोटे बालोंवाली एक लड़की दौड़ती हुई आई। उसने पूछा, अरे, तुम लोग ऐसे मुँह फाड़े

क्यों बैठी हो ? क्या हुआ ?

एक ने कहा, तू चुप रह फुलकी । देखती नहीं, चुड़ैल परकट हुई है ?

फुलकी ने रेशमी को देखा नहीं था। अब उसे देखकर वह चिल्लाती कि रेशमी ने आँख के इशारे से उसे मना किया ।

दूसरी ने कहा, अरी, इधर खिसक आ । उन्हे चूडा-दूध का भोग चाहिए, नहीं तो आफत ढाएँगी ।

इन्हें मालूम न था कि फुलकी से रेशमी की जान-पहचान है । फुलकी को रेशमी की आदत मालूम थी । वह ताड गई कि कोई बात जरूर है । इसलिए वह बोली, भोग चाहती है, तो दो ।

लाने गई है ।

इतने में चूड़ा, दूध, मिठाई और केला लेकर एक स्त्री आई । अब यह समस्या हुई कि आगे बढाकर दे कौन ?

फुलकी ने कहा, फिक्र किस बात की ? मैं देती हूँ ।

भला तेरे हाथ से लेंगी ?

क्यों नहीं ! चुड़ैल जात-पाँत नहीं देखती ।

ले, तब तू ही दे और मर ।

फिर भी फुलकी की हरकत मे डर का आभास नही दिखा । वह भोग का सामान चुड़ैल के पास ले गई और चुड़ैल भले मानुष-सी बैठ गई। सबने अचरज से साँस रोककर देखा कि न केवल चुड़ैल बल्कि चुड़ैल के संग फुलकी भी बैठकर सब कुछ सान-मूनकर खाने लगी ।

धीरे-धीरे रहस्य खुला । सुनकर कोई-कोई तो हँस पडीं और अधिकांश स्त्रियाँ नाराज होकर चली गईं । हाँ, उस प्रौढा स्त्री ने कहा, भूत-प्रेत को लेकर मजाक करना ठीक नही है । यह लड़की जरूर मरेगी ।

रेशमी जिस दिन इस गाँव में आई, उसके दूसरे ही दिन फुलकी से उसकी भेंट हुई । जरा देर के परिचय में ही दोनों घनिष्ठ हो गईं ।

रशमी ने पूछा, कहाँ रहती हो तुम ?

फुलकी ने कहा, जहाँ-तहाँ !

मतलब ?

आज यहाँ, तो कल वहाँ ।

रेशमी समझ गई, यह लड़की जरा और किस्म की है। पूछा, तो यही बताओ, कल रात कहाँ थी ?

कल रात टुटहे काली मंदिर में थी ।

डर नहीं लगा ?

मुझे क्यों डर लगने लगा। डर लगा उन्हें ।

उन्हें किन्हे ?

काली माता की डाकिनियों और योगिनियों को ।

सो कैसे ?

उन्होंने मुझे शकल-सूरत से काली समझा, इसलिए पास नहीं फटकीं।

रेशमी ने मजाक किया, और शिव जी ?

पता होता तो वे जरूर मन्दिर मे ही मिलते ।

देवता तो अंतर्यामी होते हैं ।

भला यह मैं नहीं जानती ! फुलकी ने कहा ।

अच्छा, कल तो काली मंदिर मे बिताया, आज ?

सोचती हूँ, भोला बागदी के यहाँ रहूँगी ।

रशमी ने अचंभे मे पड़कर पूछा, यह कौन है ?

इसी गाँव मे रहता है। कुछ दिन पहले उसकी बीवी मर गई है। कई दिनों से वह मेरे पीछे घूम रहा है। यह साड़ी देख रही हो न, उसी की दी हुई है।

इस साफ इशारे से रेशमी बहुत परेशान हुई। अपने अजानते में ही वह उससे जरा हट गई, यों अब तक सटकर बैठी हुई थी।

फुलकी ने इसे गौर किया। बोली, इतने मे ही हटकर बैठ गई ?

सकपकाकर रेशमी ने कहा, नही-नहीं।

तुम्हारा कसूर भी क्या है बहन ? हटकर बैठना ही चाहिए। लेकिन यदि सारा किस्सा सुन लो, तो दस हाथ दूर से ही मुझे दंडवत करने लगोगी।

उसकी बातों से रेशमी का कौतूहल बढ रहा था। दबे स्वर में बोली, सुनूं तो सही।

फुलकी ने कहना शुरू किया, मर्द बडे लोभी होते है, ठीक जैसे घर का लालची लड़का। मिठाई की थाली देख ली कि लार टपकाते हुए आस-पास डोलता फिरेगा। अब तुम्ही कहो, दिन भर थाली की रखवाली करना क्या संभव है ? इसी से एकाध टुकड़ा तोड़कर उन्हें दे देना पड़ता है। वे खुश होकर चले जाते है और साँस लेने का मौका मिल जाता है। मिठाई कितनी ही कीमती क्यो न हो, इतनी कीमती नही कि रात-दिन उसपर पहरा बैठाए रहें।

रेशमी ने पूछा, अच्छा, कितनों को तोड़कर दी मिठाई ?

अब उसकी बात मे जरा रुखाई आई।

फुलकी हँसी। कहा, देखती हूँ, तुम नाराज हो गई।

इसके बाद उसने गुनगुनाकर गाना शुरू किया, 'सुनो, तो उनके गुण का अंत नही है।'

उसकी बेहयाई से रेशमी नाराज हो गई। कहा, यह तो कायस्थ घर की लड़की के योग्य काम नही है।

बेशक नही है। लेकिन जिसे घर नही, द्वार नही, वह क्या करे ?

क्या तुम्हारे माँ-बाप नही है ?

थे जरूर, नहीं तो मै पैदा कैसे हुई ?

फिर ?

फिर क्या ? और उसने फिर गाना शुरू किया,

> हम तो माँ की ही बिटिया है
> बाप से परिचय नही कभी का।

उसने व्याख्या की, असल मे हम लोग तराई इलाके के है। माँ

मेरी संथाल थी जात की। और बाप, सुना है, कोई जमीदार या उसका नायब या ऐसा ही कोई था। उसे मैंने कभी नहीं देखा। हैजे में माँ के गुजर जाने के बाद घूमती-घामती यहाँ निकल आई हूँ। यहाँ भी अच्छा न लगा तो और कहीं चली जाऊँगी। उधर देखो — इतना कहकर उसने आसमान में एक काले बादल का टुकड़ा दिखाया — वह काला बादल पानी बरसाता हुआ कैसे एक देश से दूसरे देश को चला जा रहा है !

इस लड़की के बारे में मन को स्थिर करने में रेशमी को कुछ दिन लग गए। एक ओर उसका सामाजिक मन कहता, यह अन्याय है, घृणित है और दूसरी ओर उसका आदिम मन कहता, इसमे ऐसा क्या हुआ ! एक ओर आकर्षण, दूसरी ओर विकर्षण। सोने के सेब को देख-कर आदि नारी हौवा के मन का द्वन्द्व कहिए इसे ! जो हाल हौवा का हुआ था, वही रेशमी का हुआ। अंत तक सोने के सेब की ही जीत हुई। दोनों का संबंध अटूट हो गया। दोनों सखियाँ हो गईं।

यही नही, रेशमी ने गाँव की दूसरी स्त्रियो से भी नाता जोड़ लिया। कोई मौसी तो कोई बूआ, कोई मामी तो कोई नानी बनी।

इस तरह दिन मजे में बीत रहे थे। इतने मे जाने कैसे रेशमी के जीवन की सही घटना प्रकट हो गई कि रेशमी विधवा है और चिता से उठकर भागी है। इस बात का खुलना था कि गाँव की मौसी-बूआ और नानी-मामी उससे विमुख हो उठीं। इन सबको फुलकी के चरित्र का पता था, लेकिन उसे सबने माफ कर दिया था। लेकिन रेशमी का तो किस्सा ही और ठहरा। हो सकता है, उन्ही का ख्याल ठीक हो। जिसने प्रवृत्ति के नियम को तोड़ा है, उसका शासन अदृष्ट करेगा। लेकिन समाज के कायदा-कानून तोड़नेवाले पर समाज शासन करेगा ही।

गाँववालों से ठुकराई हुई रेशमी के और भी करीब आकर खड़ी हुई फुलकी। वह बोली, तुमने बहुत अच्छा किया है। नाहक मर जाना भी क्या अच्छा है ? जीने में कितना मजा है।

कमलपोखरे के ऊँचे बाँध पर खड़ी दोनो बातें कर रही थीं। तालाब

के काले जल को दिखाती हुई फुलकी बोली, चलो, थोड़ा तैर लें। बड़ा मजा आएगा।

उसके बाद जरा रुककर बोली, हुं:, चिता पर जल मरूँ? मरे मेरा दुश्मन!

रेशमी को आगा-पीछा करते देख अपनी साड़ी उतारकर ऊँचे बाँध पर से तेजी से पानी में कूद पड़ी फुलकी। दूसरे ही क्षण पानी बेतरह मचल उठा।

रेशमी ने देखा, चंचल काले जल में साँवली स्नानरता फुलकी काली नागिन-सी लग रही है।

छाया-संगिनी

अकेली, अकेली, बिलकुल अकेली! भविष्य की ओर जहाँ तक नजर दौड़ा सकती, कहीं कोई साथी नहीं, आश्रय नहीं, किसी छाँहवाले पेड़ का नेह नहीं, गाँव की झलक तक कहीं नहीं। ऐसा घोर अकेलापन कि मन डर जाता और आखिर डर भी चरम अवस्था में पहुँचकर ओझल हो जाता — जैसे जंगल की क्षीण सीमा-रेखा न जाने कब अनजान दिगंत में खो जाती है।

रेशमी अकेली बैठी-बैठी सोचती और देखा करती। कब उसका सोचना देखने में बदल जाता और देखना कब सोचना बन जाता, उसे पता भी न चलता।

टाँगन नदी के पश्चिम लाल मिट्टी के वीरान मैदान का नीरव उतार-चढाव नीरव विहाग राग-सा क्षितिज में विलीन होकर सम में पहुँच जाता है। निर्जन तरुलताविहीन नीरव उतार-चढाव में रेशमी मानो

अपने जीवन की तसवीर देख पाती — मानो उसका सूना भविष्य साकार होकर सामने खड़ा हो जाता।

साँझ को समय मिलता तो — समय की उसे क्या कमी थी — वह अकेली वहीं चली जाती। निर्मल पानी भरे एक पोखरे का पता चल गया था उसे जिसके एक ओर कुसुम का वही अकेला पेड़ था। रेशमी यहाँ जाकर बैठा करती। पानी को छूता हुआ पत्थर का एक ढोंका पड़ा था। वह उसी पर बैठती, पाँवों को पानी हलके-से छू जाता। काक-चक्षु के समान स्वच्छ जल में उसकी परछाई पड़ती। वह पानी में पत्थर के छोटे-छोटे टुकड़े फेंक-फेंककर उस परछाईं को चंचल बना देती। इस तरह वह अपने आपसे खेलती। मनुष्य जब अपनी परछाईं का साथ चाहता है, तो समझना चाहिए कि उसकी दशा दयनीय है। पहले उसका काफी समय गाँव में बीतता था। लेकिन उसके जीवन की घटना जान जाने से गाँववालों ने दरवाजा बंद कर लिया। अब यह फुलकी ही एक साथी थी। लेकिन वह भी कई दिनों से गायब थी। भोला बागदी के यहाँ रात में उसके रहने को लेकर भोला और उसके भाई में सिर-फुड़ौअल हो गया था। भोला ने इस उम्मीद पर कि फुलकी उसके साथ रात भर रहेगी, उसे साड़ी दी थी। लेकिन भोला का छोटा भाई हारू नाक की कील का वादा करके उसे अपने घर में खींच ले गया। सुबह फुलकी जब हारू के कमरे से निकली तो दोनों भाइयों में लाठी चल गई — दोनों का सिर फट गया। फुलकी उन्हें रोकने गई थी। उसका कपड़ा लहू से रँग गया। ये बातें फुलकी ने ही बताई थीं। बेझिझक वह सारा कुछ सुना गई। बेहया लड़की को जरा भी लाज नहीं, जरा आबरू नहीं। रेशमी ने पूछा था, तो तुमने ऐसा क्यों किया ?

फुलकी ने कहा, मेरे लिए जैसा भोला, वैसा हारू। फर्क क्या है, कहो ?

लेकिन दोनों ने एक दूसरे का सिर जो फोड़ा ?

यह उनकी आदत है। महीने में एक बार सिर फूटता ही है उनका।

इस बार समझ लो मेरे लिए फूटा।

शर्म नहीं आती तुम्हें ?

शर्म की भी तो एक हद है। जो बात सभी जानते हैं, उसके लिए शर्म क्यों करूँ ?

नहीं-नहीं, यह अच्छी बात नही है।

प्रसंग बदलकर फुलकी बोली, तुम जरा होशियारी से रहना।

डरकर रेशमी ने पूछा, क्यो ?

गाँव के कुछ मनचलों की निगाह तुमपर पड़ी है।

कहती क्या हो ? मैं तो वैसी लड़की नही हूँ।

अरी, इसीलिए तो निगाह पड़ी है।

रेशमी कुछ समझ नही पाई। पूछा, यह क्यों ?

फुलकी ने कहा, जब तक वे तुम्हे क्वारी समझते रहे तब तक उनकी निगाह तुमपर नही पड़ी। लेकिन जब वे जान गए कि तुम्हारा यह और वह दोनो कुल गए हैं, तो तुम्हारी तरफ झुके। बहन, पुरुषों की आदत ही ऐसी होती है। लावारिस लड़की देखकर उनके लोभ का अंत नहीं रहता। जरा सावधान रहना, हम-तुम जैसी लड़कियों पर ही उनकी निगाह पड़ती है।

यह 'हम-तुम जैसी' कहना रेशमी को अच्छा न लगा। फुलकी से उसकी दोस्ती चाहे जितनी हो, तो भी उसके संग अपने जिक्र मे उसे आपत्ति थी।

इस घटना के बाद से फुलकी से उसकी भेंट नहीं हुई। गाँव जाकर पूछने का साहस नहीं होता और फुलकी भी नही आती।

रेशमी सोचती, तो क्या फुलकी कही चली गई ? उसे फुलकी का कहा याद आता, हवा के झोंके से बादल जैसी उड़ती आई, फिर एक दिन उसी तरह चली जाऊँगी। तो क्या हवा के झोंके के संग चली गई ? रेशमी नहीं समझती कि हवा का झोंका क्या होता है। फुलकी के प्रति उसका मनोभाव बड़ा विचित्र था — घृणा और प्यार साथ-साथ। दारुण

कौतूहल ने उसके मन मे घृणा और प्यार को एक साथ मिला दिया था।

बाँध के उस पार निगाह जाते ही कुसुम का वह पेड़ दिखाई पड़ा — सीधा खड़ा वह पेड़ नीचे से ऊपर तक लाल हो उठा था। याद आया, कई दिनों से इधर नही आई थी। इससे पहले जिस दिन आई थी, उस दिन ऊपर के पत्तों पर लालिमा का आभास था। आज तो कहीं हरियाली का पता ही न था। सारे मैदान में अकेला वही एक पेड था — गहरा लाल। उसे लगा उसी एक रास्ते से मैदान की सारी लाली ऊपर उठ आई है। उस अकेले भूले-भटके बेमेल पेड से रेशमी को न जाने कैसी आत्मीयता का अनुभव हुआ। वह मन ही मन सोचने लगी, हम दोनो की दशा एक-सी है। हम न तो वन के है, न बगीचे के।

टुप, टुप, टुप! पत्थर के टुकडे पानी में फेकने से उसकी परछाईं चंचल हो उठी।

गरदन हिलाकर रेशमी ने पूछा, क्यों, छटपटा क्यों रही हो इस तरह?

परछाईं ने सिर हिलाया, जवाब नहीं दिया।

मुग्ध होकर परछाईं को देखती हुई रेशमी सोचने लगी, अहा, कितनी सुंदर है। उसे लगा, संसार का सारा सौन्दर्य मानो शरद्कालीन शिशिर-बिंदु-सा पीपल के पत्ते के किनारे पर काँप रहा है।

ओ हो, कितना रूप!

परछाईं हँसी। उसके गालों के गड्ढे साफ दीखने लगे।

इतना रूप है किसके लिए?

अब परछाईं चुप रही। शायद उसकी आँखों के कोनो मे आँसू भर आए। आँसू और पानी एक हो गए, कुछ समझ मे न आया!

फिर रेशमी ने सिर हिलाकर कहा, इतना रूप अच्छा नही है।

सिर हिलाकर छाया ने समर्थन किया।

सुना नही, दो-चार की निगाह तुमपर पडी है?

छाया डर से चुप हो रही।

कुछ दिनों से रेशमी अपने हृदय की गहराई में एक अजीब बेचैनी महसूस करने लगी थी। अकारण रह-रहकर मन न जाने कहाँ उड़-उड़ जाता। पिंजड़े का पंछी बार-बार आसमान मे उड़ जाता, मालिक पिंजड़े का दरवाजा बंद करना भूल जाता। वह समझ नही पाती कि यह बेचैनी है क्यो, लेकिन भले ही न समझ पाए, लेकिन बेचैनी तो झूठी नही है। उसे लगता, उसके मन में कही फूल खिला है, उसकी सुगंध स्वर्गीय है, बड़ी ही मीठी है मादकता उसकी। लेकिन कौन-सा फूल, कहाँ खिला? वह व्याकुल होकर ढूंढने लग जाती! लेकिन हाय, मन के फूल का बाहर कहाँ पता चले। हर कोई भला मन के अगम मे प्रवेश कर सकता है! सो वह इधर-उधर सिर्फ टटोलती फिरती। धीरे-धीरे खुशबू से हवा भारी होने लगी; रेशमी का जीवन भारी हो उठा। कितनी ही रात उसकी नींद उचट गई, वह दोनों हाथो कलेजा थामकर रोती रही। आँसू से अँधियारी धुलकर सवेरा हो गई। वह समझ नहीं पाती कि यह अकारण आवेग, निर्मूल वेदना क्यों है। जिस दु:ख का कारण होता है, उसकी सीमा होती है। कारणहीन दु:ख अनंत होता है। जब वह ठंढे दिमाग से सोचती, तो पाती कि यह दु:ख भी निश्छिद्र नहीं है, उसमे भी जोत की किरण है, कैसा तो एक आनन्द है, खासा मजा-सा है। और तब वह दु:ख के साथ खेलने लगती, जैसे उस छाया के साथ खेलती थी। दु:ख की लता उसके कलेजे का लहू पीकर रस जुटाता, वही रस उसका खाद्य है, प्राण है — इतना ही पीड़ादायक है। मगर बलि-बलि जाऊँ, उस दु:ख की लता पर खिले फूल की क्या अनूठी शोभा है! मनुष्य है पेड़, दु:ख है उसपर आ लिपटी अमरबेल। पेड़ के फूल से उस अमरबेल के फूल की शोभा ज्यादा होती है।

लेकिन एक दिन वह दु:ख के कारण को समझ सकी। उसे समझा दिया उस छाया-संगिनी ने। अपनी छाया को देखकर वह चौंक उठी — सामने वह कौन है? कोई परी तो नही, जिसकी कहानी बड़ी-बूढियों से सुनी है? इतना रूप? रूप तो गौरव है। उसे खुश होना चाहिए था,

लेकिन यह उसके बदले रोई, साथ-साथ उसकी परछाई भी रोई। रूप रमणी का गौरव है, गौरव मे गुरुता होती है, उसी भार से पीड़ित हुई — यह रोना उसी पीड़ा का परिणाम था। फूल के भार से पेड़ पीड़ित है, फल के भार से डाल पीड़ित है, तारों के भार से पीड़ित है शरत् का आकाश और आज रेशमी पीड़ित थी रूप के दुर्वह भार से।

जो बाढ़ अचानक रात को आकर अग-जग को डुबो देती है, उसका पता पहले से कैसे पाया जा सकता है, रेशमी के रूप का यह आविर्भाव भी तो बाढ़ का ही आकस्मिक आक्रमण है! कल तक वह किशोरी थी, रूप की कली यहाँ-वहाँ झाँकती थी। आज वह पूर्ण युवती है। शरीर मे सर्वत्र रूप की बाढ़, एक अँजुरी और ज्यादा हो जाए, तो छलक पड़ेगा।

टुप, टुप, टुप!

अरी ओ सुन। बदन पर सँभालकर कपड़ा रखना। फुलकी की हालत देख ली न। छाया हँसने लगी।

खाक हँसती है। तीन कुलो में अपना कहने को कोई नही।

छाया का जवाब छीनकर खुद बोली, फुलकी का भी तो कोई नही है। क्या उससे उसकी हँसी थोड़े ही कम हो गई है?

तो? फुलकी जैसी होना चाहती है?

फिर छाया का जवाब खुद देती! छिः, छिः। खुद अपना गला घोंट लूंगी न।

इतने मे हवा से छाती पर का आँचल खिसक पड़ा। अपनी उघरी छाती को देखकर रेशमी पलक भी न झपका सकी।

काया और छाया, सौंदर्य-मेरु-शिखर की ओर अपलक देखती रही।

पुराण के अनुसार दुनिया का सारा सोना मेरु-शिखर पर एकत्र हुआ है। यहाँ भी शायद वही हुआ है। रेशमी सोचने लगी, काश, पल भर के लिए उसे पुरुप की नजर मिली होती तो देख लेती इस दृश्य को।

सहसा उसकी यह तंद्रा टूटी। पानी पर दूसरी परछाईं पड़ी। उसने झट छाती पर कपड़ा सँभाल लिया।

कौन ? कायथ दा ? कब आए ?

राम बसु ने कहा, इधर से जा रहा था कि तुमपर नजर पड़ी। मगर तुम यहाँ अकेली बैठे क्या कर रही हो ? शाम को मैदान मे अकेली रहना ठीक नही है।

रेशमी को फुलकी का कहा याद आया। उसने तुरंत पूछा, चोर-उचक्के का डर है क्या ?

मैदान मे चोर-उचक्के क्या लेंगे ? भेडिया निकल सकता है।

तो चलिए, कोठी लौट चलें। शाम होने का ख्याल ही नहीं था।

दोनो कोठी की ओर चल दिए।

राम बसु ने यह जो कहा कि जाते-जाते तुमपर नजर पड़ गई, यह बात सच न थी। नजर एकाएक ही पडी थी, लेकिन वह वहाँ रुककर रेशमी के अजानते कुछ देर उसे देखता रहा था। यह बात उसने नहीं बताई। बताने लायक बात थी भी नही।

राम बसु ने आज मानो नए सिरे से रेशमी का आविष्कार किया। देखा, वह अनोखी सुंदरी है। बाँध के उस तरफवाले लाल कुसुम के पेड़ से वह उसे मिलाकर देख रहा था। उसे लगा, वाह, इन दोनो की कैसी जोडी ? दोनों ही अकेले, भूले-भटके-से और एक ही-से रहस्यमय, सौंदर्यमय।

रेशमी ने पूछा, कैरी साहब महीपालदीघी चले गए ?

कैसे जाएँ ! श्रीमती कैरी तो और भी ज्यादा पागल हो गई है।

क्यों न हो बेचारी ! गोद का बच्चा चल बसा। मै तो यही सोचती हूँ, वह जिंदा भी रहेगी या नही।

यह फिक्र मत करो। साहबी जान बडी सख्त होती है। डंठल मजबूत होने से पहले ही जैवेज जैसा झड़ जाना और बात है। लेकिन कही डंठल सख्त हो गया तो यमराज के दूतों की मजाल क्या — उनको लिवा जाने के लिए खुद यमराज को ही आना पडेगा।

बातें करते-करते दोनों कोठी के पास आ पहुँचे। इतने मे गीत की एक कड़ी कानों में पड़ी — भरी नदी का जरा न मय मानि, भय है

बाढ़ के पानी से।

यह कौन गा रही है ?

फुलकी ! आप नही जानते उसे ?

हाँ, हाँ, देखा तो है उसे।

अच्छा तो आप जाइए। मैं उससे बात कर लूं जरा। बहुत दिनों से भेंट नहीं हुई है उससे। फुलकी, इधर आ बहना।

अँधेरे की भूल

फुलकी ने पूछा, इतनी रात को कहाँ गई थी ?

रेशमी ने कहा, रात कहाँ ! अभी-अभी तो साँझ हुई है।

क्या कहना, कलियुग की साँझ। साथ में वह कौन था ?

नहीं जानती हो तुम ? कायथ दा।

जो हो, आखिर कायथ दा के साथ रात को मैदान की तरफ क्यों गई थी ? फुलकी मुस्कराई।

उसकी हँसी से रेशमी जल उठी। वह जल-भुनकर बोली, मैं कहो जाऊँ, किसी के साथ जाऊँ, तुम्हारा क्या ?

वाह भई वाह ! मैं तो तुम्हारे लिए लड़कर जान दे रही हूँ और तुम नाराज हो रही हो ?

रेशमी का गुस्सा उतरा न था, फिर भी उसने शांत होकर पूछा, मेरे लिए किससे लड़ रही थी ?

गोपाल नायब से।

किसलिए, सुनूं जरा ?

तो सुन ही लो, सुन रखना अच्छा है। यह कहकर वह सुनाने लगी,

बहुत दिनों से नायब कह रहा है, फुलकी, कोठी की उस लड़की से तेरी तो खूब पटती है, पहुँचा न मेरे पास। मैंने कहा, नायब बाबू, वह लड़की वैसी नहीं है। उसपर नजर न डालिए। नायब ने कहा, रख भी अपनी बात! तीन कुलों में कहीं कोई नहीं और फिर यह उमगी जवानी। फिर वैसी नहीं है। जानें कितनी बार रात को उसे मैदान की ओर से आते देखा है। वहाँ पूजा करने जाती है, क्यों?

फुलकी की बात सुनकर रेशमी ठक रह गई। उसने सपने में भी यह नहीं सोचा था कि उसे किसी ने जाते-आते देखा है और उस जाने-आने का मतलब इतना भद्दा लगाया गया है।

रेशमी को चुप रहते देख फुलकी बोली, नायब ने आज फिर पकड़ा मुझे। कहा, फुलकी, उसे समझा-बुझाकर तैयार कर दे। कहना, गहना दूँगा और तू भी घाटे में नहीं रहेगी।

जरा रुककर फिर कहना शुरू किया — मैं तुम्हें होशियार करने ही जा रही थी। मगर देख रही हूँ, नायब ने गलत नहीं कहा। आज पकड़ी ही गई न रंगे हाथ और वह भी मेरी नजर में।

झगड़ा करने की आदत रेशमी की नहीं है। उसने कभी झगड़ा भी किया है, यह कोई नहीं जानता। लेकिन फुलकी की इस बात से उसे ऐसी आग लगी कि वह अपना स्वभाव भूल गई।

वह फुफकार-सी उठी, मैं जब जी चाहे, जितनी भी रात में जहाँ भी चाहे जाऊँगी, मैं किसी की परवा नहीं करती।

नाराज फुलकी भी जल्दी नहीं होती, लेकिन चिकोटी खूब काट सकती है। कहा, और चाहे जिसके भी साथ, क्यों?

बेशक!

अब की फुलकी ने व्यंग का पुट देकर कहा, तो एक बार नायब बाबू के साथ जाओ न! अहा, बूढ़ा है बेचारा, बहुत दिनों से अरमान है। और कहीं इसी से मुझे एक-दो गहने नसीब हो जाएँ। तुम्हारे लिए तो बाजूबंद है ही।

तो अपने नायब बाबू से कह दो, गहने बनवाएँ। रंजिश से काँपती हुई रेशमी बोली।

फुलकी को लगा था कि रेशमी अच्छी लड़की है। इसीलिए वह ज़बर्दस्ती उससे मिलने आती थी। अभी उसकी इस धारणा को चोट-सी लगी, सो मन में एक आलोड़न-सा होने लगा। उसे ख्याल था, वह आदमी का भला-बुरा समझती है। अभी अपने इस ख्याल को ठेस लगने से वह बेवकूफ-सी बन गई। उसने समझा, रेशमी उससे भी चालाक है। वह अपने पर धिक्कार अनुभव कर रही थी। चालाक आदमी के साथ यह मुसीबत होती है कि कभी अगर मूर्ख बन जाए तो वह अपने को हरगिज माफ नहीं कर सकता। उसने अपनी बेवकूफी के लिए जिम्मेदार रेशमी की तीक्ष्ण बुद्धि को माना। सो ताने के स्वर में बोली, और कौन-कौन-से गहने पसंद हैं, बता दो। एक साथ बनवाने में बेचारे नायब को कुछ सस्ता पड़ेगा।

बेचारे नायब के लिए बड़ी हमदर्दी देख रही हूँ।

क्यों न हो, मुझे भी तो कुछ-कुछ मिला है न।

तो फिर आप ही क्यों नहीं जाती, कुटनपना क्यों करती हो ?

ये जागते हुए देवता है नित्य नया भोग चाहिए, नहीं तो क्या मुझे अरमान नहीं है ?

रेशमी के पास गालियों की पूँजी बड़ी नहीं थी। कौन-सा शब्द कहे, यह सोच ही रही थी कि नाढ़ा आ पहुँचा। कहा — रेशमी दीदी, तुम अब तक नहीं लौटी, सो कायथ दा सोच में पड़ गए हैं। उन्होंने मुझे भेजा। चलो।

रेशमी समझ गई, आज का घटनाचक्र उसके प्रतिकूल है। फुलकी ने जो धारणा बना ली है, उसी की पुष्टि हो रही है। उसे यह डर हो रहा था, जाने फुलकी नाढ़ा के सामने क्या कह बैठे।

फुलकी ने ऐसा कुछ तो नहीं कहा, जिससे नाढ़ा को संदेह हो, लेकिन मामूली-सी बात में उसने ऐसा एक सुर मिला दिया कि रेशमी को समझने

में गलती न हो। कहा, जाओ बहन, जल्दी जाओ। कायथ दा की बात न मानने से वे नाराज होंगे।

रेशमी को जवाब देने का साहस न था। कहीं नाढ़ा को शुबहा हो, फिर उत्तर देने की इच्छा भी नहीं थी। वह नाढ़ा के पीछे-पीछे तेजी से चली गई। फुलकी के इस संदेह से उसके तन-बदन में आग लग गई थी। गीत की दूर खिसकती आवाज से यह साफ समझ में आ रहा था कि फुलकी धीरे-धीरे दूर, और दूर चली जा रही है— भरी नदी का जरा न भय सखि, भय है बाढ़ के पानी से।

राम वसु का आविष्कार

सहसा राम वसु ने यह आविष्कार कर लिया कि रेशमी गजब की सुंदरी है। जो भी महान आविष्कार होते हैं, आकस्मिक होते हैं। अपार समुंदर पार की नई दुनिया को जिस दिन कोलंबस ने देखा था, क्या उस दिन वह घटना निरी आकस्मिक नहीं थी? जाने-पहचाने सागर ने उसे एक महान अपरिचय के आमने-सामने ले जा खड़ा कर दिया था। राम वसु की ठीक यही दशा हुई।

रेशमी को वह दो साल से ज्यादा समय से देख रहा है, लेकिन वह एक चपल-चंचल बालिका के सिवा और कुछ नहीं प्रतीत हुई। उसने जब अंग्रेजी पढ़ना, लिखना और बोलना सीखा, तो मुंशी को कौतूहल हुआ। नाढ़ा से वह अंग्रेजी में बोलने की कोशिश कर रही थी, नाढ़ा ने अंग्रेजी बंगला और हिंदी मिलाकर उसका जवाब दिया। रेशमी के पल्ले कुछ नहीं पड़ा। वह किसी काम का बहाना बनाकर खिसक पड़ी। विजयी नाढ़ा की हँसी से मुंशी को कौतुक हुआ। नाढ़ा ने कहा, कायथ दा, देखा

आपने, बहाना बनाकर भाग खड़ी हुई रेशमी। वह मुझसे अंग्रेजी में पार कब पा सकती है।

नाढा ने यह भी कहा कि उसने अंगरेजी सीखी है और मैंने सीखा है अंगरेज को। उनकी भाषा में बारह आना तो शरीर की ताक़त होती है। हिन्दी बंगला मिलाकर गरज उठने से ही अंगरेजी होती है।

धत्, बेवकूफ। राम बसु ने कहा।

आप इतने दिन अंगरेजों के साथ रहे, मगर लगता है, आप भी कुछ नहीं समझ सके।

खैर, तू ही समझा दे न।

अदम्य उत्साह से नाढा बोला, सुनिए। सूअर माने होता है सूअर नाम का पशु। लेकिन साहब जब गरजकर कहता है, यू सूअर, यहाँ आ तो सूअर का माने बदल जाता है।

तब सूअर का माने क्या होता है?

माने होता है, खानसामा, बवर्ची, उस वक्त साहब को ठीक जिसकी जरूरत रहती है।

राम बसु हँसने लगा।

नाढा ने कहा, आपको तो हँसी आई, लेकिन वह गरज सुनकर खानसामा-बवर्ची के प्राण उड़ जाते हैं, वे साहब के सामने जाकर थर-थर काँपते रहते हैं।

नाढा जरा रुका और फिर कहने लगा, मार्तुनी साहब को तो भाषा की भी जरूरत नहीं पड़ती थी। हाथ के पास जो भी मिल जाता, वही फेंककर मारता था। एक दिन तो उसने एक-एक करके तीन प्लेट मुझपर फेंके। मैंने तीनों को लोक लिया। इससे खुश होकर साहब ने मेरी पीठ ठोंकी — वेल डन, हैट ट्रिक! और चूँकि प्लेट नहीं टूटे, इसलिए मेमसाहब भी मुझपर बहुत खुश हुईं।

फिर रेशमी ने जिस दिन साया-समीज पहनना शुरू किया, नाढा बोला, भला रेशमी दीदी को बंगाली कौन कहेगा! इसे तो खास मेम-

साहब कहकर चला दिया जा सकता है।

रेशमी ने मजाक में कहा, तो मेरे लिए कोई साहब दूल्हा ढूंढ़ ला!

ढूंढना क्यों होगा, पास ही है।

कौन?

अपने टामस साहब। चार-पाँच दांत ही नहीं हैं उनके, तो क्या हुआ?

टामस का नाम सुनकर रेशमी लाठी लिए उसके पीछे दौड़ी।

दूर से राम बसु यह सब देखा करता। खुशी होती। अहा, जैसे भी हो, बेचारी अपने दुःख को भूली रहे।

रेशमी सहज ही साया-समीज पहनने को राजी नहीं हुई थी। कैरी और उनकी पत्नी के बहुत कहने पर ही तैयार हुई। फिर भी राम बसु से उसने राय पूछी थी, आपका क्या ख्याल है कायथ दा?

हर्ज क्या है।

हर्ज क्या है? साया-समीज पहनने पर क्रीस्तान होने को बाकी क्या रहा।

धत् बेवकूफ। छिरू की माँ तो पहनती है, क्या वह क्रीस्तान हो गई? कोई साहब धोती पहन ले तो वह हिन्दू हो जाएगा?

हिन्दू तो हुआ नहीं जाता, क्रीस्तान हो सकता है।

हो सकता है, इसीलिए हो तो नहीं जाएगी।

यह सब पहनने से मैं तो पहचान में भी न आऊँगी।

यह तो तेरे लिए अच्छा ही होगा। चंडी बख्शी के खुफिए तुझे पहचान नहीं सकेंगे। कभी पास आ भी पहुँचे तो मेमसाहब समझकर भागने की राह नहीं पाएँगे।

यह बात उसे जँची और उसने साया-समीज पहनना शुरू किया। वह जानती नहीं थी कि चंडी बख्शी की आँखों में धूल झोंकना इतना आसान नहीं है।

इस रेशमी को राम बसु घाट-बाट घर-बाहर हमेशा देखता जाता था,

लेकिन यह बात कभी उसके ध्यान में नहीं आई कि वह बहुत सुंदरी है।

वह उसकी सुंदरता का उस रोज अचानक आविष्कार कर बैठा। गोधूलि की धूपछाँही आभा में, बीच-बसंत की ख्याली बयार के चामर डुलाने के छंद में, निर्मल जल के किनारे एकाकी नारी-मूर्ति उसकी आँखों में सहसा रहस्य की कौंध-सी उद्घाटित हुई। पहले तो वह समझ नहीं सका कि यह कौन आई यहाँ। दूसरे क्षण मन ने कहा, रेशमी। लेकिन समझ जाने के बावजूद रहस्य फीका होने के बजाय और गाढ़ा हो गया। रेशमी! जिसे हजार बार देखा, लेकिन हजार बार के बाद एक बार के लिए इतना रहस्य बाकी था? अचरज का अंत नहीं मिल रहा था राम वसु को। वह काठ का मारा-सा अवाक खड़ा रहा। दोनों पाँव पानी में लटकाए झुकी-सी बाईं हथेली पर ठोढ़ी रखे वह तन्मय बैठी थी। अकेली युवती, सूनेपन में आँचल खिसक पड़ा था, घास पर लोट रहा था, गोरी गरदन पर केश के गुच्छे हवा से काँप रहे थे। अधढँके पूरनमासी के चाँद का आभास दे रहा था खुला पयोधर। सुघड़ सुडौल शरीर रेखा और रंग से, धूप और छाँह से मिलकर आँखों से पीने लायक एक रागिनी का सृजन कर रहा था। राम वसु पलक झपकाना भूल गया। उसने सोचा, खुशकिस्मती की बात है कि आमने-सामने नहीं आया, वरना क्या इस तरह से देखने का मौका मिलता! चेहरा देखने से मैं रोज-रोज की देखी-सुनी उस लड़की को देखता, जिसपर दुनिया ने सुख-दुख के चक्र का चिह्न आँक दिया है। सोचने लगा, यह सोचा भी नहीं था कि इसमें रोज-रोज से परे भी कुछ है। अब समझ में आया कि समग्रता से देखने के बाद ही सौंदर्य, सौंदर्य के साथ सत्य को पाया जा सकता है। रेशमी जैसे चुप बैठी थी, वह वैसे ही चुप खड़ा रहा। सुंदरता सोने की मीनाकारीवाली हथौड़ी है, जो हठात छाती पर लगती है और देखनेवाले को हतचेत कर देती है।

राम वसु बड़ा ही धूर्त था, बड़ा ही काइयाँ, बड़ा ही प्राज्ञ, वास्तववादी; दाएँ-बाएँ अंगरेज और बंगाली समाज को रखकर तेज डोंगी की तरह कतराकर निकलने का आदी। पांडित्य का बजरा पीछे पड़ा रह

जाता, ऐश्वर्य की नाव छूट जाती, निर्बुद्धिता की पालवाली नौका बेकार हो जाती, राम वसु की डोंगी संसार की तरंग-ताल पर नाचती हुई निकल जाती। जिंदगी भर धूर्तता करते-करते उसे यह ख्याल हो गया था कि वह नीति के ऊपर है; हिन्दू और ईसाई दोनों धर्मों को बेवकूफ बनाकर वह अपना उल्लू सीधा करता आया है; रुपए का दारुण लोभ भी उसे लुभा न सका; ज्ञान के क्षेत्र को उसने सरायखाना बनाया, जी भरकर शराब पी और फिर दूसरे सरायखाने को चल दिया। नारी-देह जड़ है, एक टुशकी के सिवाय उसने किसी में जादू नहीं पाया।

वह केवल अनुभव नहीं करता, अनुभूति को खोद-खोदकर विचार-विश्लेषण करता; अपनी अनुभूति को बाहर स्थापित करके निरीक्षण करता। वह एक साथ ही 'तन्मय' और 'मन्मय' था। पुराने लोग सिर्फ तन्मय होते हैं, नए सिर्फ मन्मय। पुराने लोग हैं हरगौरी, नए लोग हैं अर्धनारीश्वर। राम वसु पूर्वी भूखंड का पहला 'माडर्न मैन' अथवा नव्य मनुष्य था। इस विषय में वह राममोहन राय का अग्रज था।

टुशकी के प्रसंग में वसुजा के मन में अपने यौन-जीवन का इतिहास जग पड़ता। यौवन की सूचना के बाद से उसके जीवन में जितनी भी नारियाँ आईं — कोई आई एक रात का दिया जलाए, या कोई एक साल की मशाल लिए — उनकी संख्या गिननी हो तो स्वयं शुभंकर या आर्यभट्ट को बुलाना होगा। एक दिन एकाएक आ पहुँची टुशकी — उसके आने पर उसने समझा, जड़ और जीव में भेद होता है। जीव सत्य है, फिर भी जादू नहीं। टुशकी की देह के साथ-साथ उसे स्नेह मिला था; इसी दाक्षिण्य के नाते टुशकी और-और के साथ एकाकार नहीं हो गई, उसे हृदय के पास स्थान मिला। घर का स्वाद और शांति पाने की जो एक चिरंतन आकांक्षा पुरुष के मन में होती है, टुशकी के यहाँ उसे उसी का आभास मिला। तब से वह गृहहीन गृही हो गया।

लेकिन आज यह जो रहस्यमय मूर्ति गोधूलि की बुझती जाती आभा में और भी स्पष्ट होकर ज्यादा मोहक हो उठी — इसमें और टुशकी में

बड़ा अंतर था। इसकी जीव है, रेशमी जादू। जीव में पृथ्वी का प्राण होता है, जादू मे स्वर्ग की झलक। जीव मे रूप है, जादू मे सुंदरता; रूप रक्त-मांस का बना होता है, सौंदर्य कल्पना की सृष्टि है।

पेड़ के पत्तों की आवाज हुई होगी या आगे बढ़ने में पैरों का शब्द हुआ होगा राम बसु के, रेशमी घबराकर चौंकी, कौन?

मैं कायथ दा हूँ।

ओ। रेशमी को भरोसा हुआ।

इतनी रात को यहाँ अकेले बैठे रहना ठीक नहीं, घर चलो।

रेशमी उठी। दोनों कोठी की ओर जाने लगे।

राम बसु को ज्यादा बोलने की आदत थी, लेकिन आज जैसे वह बोल नही पा रहा था। वसंत की मादकता से भरा आसमान बजते-बजते मौन हुई वीणा के तार-सा रो-री कर उठा, तारो से मुखर। पश्चिम क्षितिज की बुझती आती आभा और मंद पड़ गई, और भी क्षीण, और भी मलिन हो आई — नजर के साथ अनुमान के संयोग के सिवाय देखने का और चारा न रहा।

रात राम बसु को नींद नहीं आई। भोजन में भी रुचि न रही। काफी रात तक बिस्तर पर करवटें बदलता रहा। इस नए अनुभव के धक्के ने उसके मन को चंचल कर दिया था। एकाएक गीत का स्वर सुनाई पड़ा, कोई गा रहा था — रजकिनी प्रेम निकषित हेम, काम गंध नाहि ताय। यह पंक्ति जाने कितनी बार सुनी थी। आज ऐसा लगा कि इतनी बड़ी मिथ्या और किसी महाकवि की कलम से नही निकली। काम मे प्रेम नही हो सकता है, लेकिन प्रेम मे काम जरूर रहेगा। हो सकता है, अगोचर हो, लेकिन होगा जरूर। उसे लगा, काम फूल है, प्रेम फल। फूल बिना फल नही हो सकता। इस विषय पर वह मन के साथ विचार करने लगा। बोला, आज इस बात को नए सिरे से समझा। मन बोला, समझने का एकाएक आज क्या कारण हो गया? रेशमी के प्रति तुम्हारी दृष्टि मे परिवर्तन हुआ है क्या? उसने कहा, राम कहो, वैसा कुछ नही,

लेकिन भूल होगी तो कबूल क्यों नहीं करूँ?

मन ने कहा, खैर वही सही, काम फूल है, प्रेम फल। फिर सौंदर्य क्या है?

क्यों, सौंदर्य पेड़ है।

और यौवन?

यौवन? वह है जमीन।

मन ने कहा, खूब! अभी तुम्हारी अवस्था चिकित्सा के अतीत नहीं।

आखिर बीमारी क्या है कि चिकित्सा होगी। मेरी अवस्था तुमने समझी कैसे?

ऐसे कि अभी भी बहुत सुलझाकर व्याख्या कर पा रहे हो।

ऐसा न करने का कारण क्या होता है?

रोग?

कौन-सा रोग?

मन ने कहा, जिस रोग के जल्द ही शिकार होगे।

नाम उस रोग का?

प्रेम।

मतलब यह हुआ कि मूल में काम है?

मन ने कहा, खुद ही सोच देखो। तुम रेशमी के सौंदर्य से अभिभूत हुए हो, यह अनुभूति जब जाती रहेगी, तो असली अवस्था समझोगे।

खीझकर राम बसु बोला, खैर वह फिर देखा जाएगा। अभी सोने तो दो।

राम बसु की ऐसी अनमनी और उद्भ्रांत अवस्था कई दिनों तक चली।

कैरी ने कहा, अधिक परिश्रम से तुम बेहद थक गए हो मुंशी, कुछ आराम करो।

नाटा ने कहा, साहब दा, चलिए दो-चार दिन घूम-घाम आएँ। पास ही प्रेमतली का मेला लगता है। बड़े जोर का मेला लगता है।

रेशमी ने कहा, सोचते-सोचते आपका शरीर तो गल गया साहब

दा। आखिर आप किसकी इतनी चिंता करते हैं ? कायथ भाभी की ?

राम वसु क्या उत्तर दे ? टाल गया।

उस रोज रात को नाढ़ा, पार्वती चरण, गोलोक शर्मा सब गाँव में यात्रा देखने गए। बहुत कहने-सुनने के बाद भी राम वसु नहीं गया, वह बिस्तर पर लेटे-लेटे अपने मन को चीर-चीरकर देख रहा था कि हो क्या गया। बाहर मौजी वसंत की आधीरात की हवा आम-कटहल के पेड़ों से मनमानी कर रही थी, सूनापन पीड़ित हो उठा था, झाऊ के पेडों का युगों का जमा हुआ निश्वास आकाश को अनमना कर रहा था। इतने दिनों के विचार-विमर्श से वह जो स्थिर नहीं कर पाया था, सो एक पल में स्थिर हो गया। रेशमी को पाना ही होगा। रात के अँधेरे मे चमकते हुए हीरे-सी रेशमी की यौवन-जोत ने बरबस उसे आकृष्ट किया और वह भी लुब्ध नागराज की तरह आकृष्ट हुआ। वह झट उठा और कमरे से बाहर निकल गया। सीधे रेशमी के कमरे के दरवाजे पर जाकर उसने दस्तक दी।

धर्मस्य तत्वम

रात काफी हो चुकी थी। किताब, खाता-पत्तर समेटकर कैरी सोने की तैयारी कर रहा था। अभी तक वह अपने पढने के कमरे में था। ऐसे समय जैसे हवा का झोंका आता हो, कमरे का दरवाजा खोलकर टामस आ घुसा।

चकित होकर कैरी बोला, अरे, टामस ? इतनी रात में !

टामस हाँफ रहा था। कैरी ने यह देखा। कहा, बैठ जाओ। तुम तो बेतरह हाँफ उठे हो।

जरा दम लेकर टामस ने कहा, भला हाँफ न उठूं ! घोड़ा दौड़ाते हुए एक साँस मे आना पड़े तो हाँफे विना उपाय क्या है ?

आखिर ऐसा क्या हुआ कि इतनी रात मे घोड़ा दौड़ाकर आना पड़ा ?

टामस बैठा । बोला, खबर मिली कि एक आदमी को हैजा हुआ है, सो मै रामकानाइ नाम के एक गांव मे गया था, पचीस मील दूर । शाम को महिपालदीघी लौटने पर देखता क्या हूँ कि मिस्टर उडनी का आदमी मेरी राह देख रहा है ।

कैरी ने कहा, मगर इसमे ऐसी हडवड़ी क्या पड़ गई ?

पहले सब सुन तो लीजिए । वह आदमी उडनी के एजेंट रीडर का अग्रदूत था । मिस्टर रीडर कल सवेरे पहुँच जाएँगे ।

बड़ा अच्छा है । इतने दिनो बाद देश के एक आदमी से भेंट होगी ।

अजीब मुसीवत है । पहले सुन तो लीजिए सब ।

अच्छा, कहो ।

मिस्टर रीडर उडनी की सभी कोठियों की जाँच-पड़ताल को निकले है । कल यहाँ आते ही वह पहले कैश मिलाकर देखेगा ।

ठीक तो है । कैश मिलाकर दिखा देना ।

कैश जो कम रहा है ।

यह कहकर टामस चुप हो गया । कैरी भी चुप । केवल दीवाल घड़ी की टिक-टिक सुनाई देती रही ।

चुप्पी तोड़ते हुए कैरी ने कहा, तुमने फिर कैश का रुपया खर्च किया ?

क्या करूँ कहिए, दुखी को देखकर मुझसे रहा नहीं जाता ।

लेकिन दुखी के लिए दूसरे का रुपया दान करने का तुमको कोई अधिकार नहीं है ।

कैरी कुछ देर चुप रहा और तब बोला, असल में तुमने जुआ खेल-कर रुपया बर्बाद किया है ।

मौन रहकर टामस ने कसूर मान लिया। दोष करने से दोष मानना कठिन होता है, वह कठिन काम उसे करना नहीं पड़ा, कैरी के मुँह से ही जाहिर हो गया। इससे टामस की परेशानी बहुत हद तक कम हो गई। अब दूसरी बात थी, आज ही रुपया जुटाना। वह कैरी को खूब जानता था। समझता था कि उसके पास जाकर रोने-धोने से रुपया मिल जाएगा। उसने बहुत बार उसे बहुतेरी विपत्तियों से बचाया था।

टामस बोला, ब्रदर कैरी, इस बार किसी तरह मुसीबत से मुझे बचा लीजिए। भविष्य में सावधान रहूँगा। अगर मेरी बात का भरोसा न हो तो ईश्वर का नाम लेकर —

कैरी ने टोक दिया, छोड़ो-छोड़ो। नाहक ही भगवान का नाम लो।

टामस सिर झुकाए बैठा रहा। मन ही मन उसे अफसोस जरूर हो रहा था, लेकिन परेशानी कम हो जाने से काफी चैन भी उसे महसूस हो रही थी।

लेकिन बड़ी आफत है। संदूक है कार्यालय में और कार्यालय की कुंजी नमुंशी के पास है! हो सकता है, वह औरों के साथ गाँव में यात्रा देखने चला गया हो।

मुंशी को मैं ढूँढ लाता हूँ। यह कहकर टामस तेजी से निकल गया। कैरी उसके लौटने के इंतजार मे फिर किताब खोलकर बैठ गया।

टामस सीधे राम वसु के कमरे के बरामदे में पहुँच गया। कमरा बंद था। उसे पता था, बगल के कमरे में पार्वती ब्राह्मण रहता है। वह कमरा भी बंद पड़ा था। समझ गया, कैरी का अंदाज ठीक था। सभी लोग यात्रा देखने गए हैं। यात्रा कहाँ पर हो रहा है, इसका उसे पता न था। इसलिए उसने नाढा को साथ ले जाने की सोची। नाढ़ा का कमरा दूसरी तरफ था। रेशमी के कमरे के पास। वहाँ पहुँचा। देखा, नाढ़ा का कमरा भी बंद है। समझ गया कि सभी कोई गए हैं। सोचा, रेशमी को पुकारकर यह पता कर लें कि यात्रा-मंडली गाँव में कहाँ जमी

है। सो वह रेशमी के कमरे के सामने पहुँच गया। रात को किसी अकेली स्त्री के घर जाकर हाँक-पुकार करना सामाजिक नीति जरूर नहीं है, किंतु जहाँ सुबह होते न होते रोकड़ की कमी पूरा कर लेने का सवाल हो, वहाँ ऐसे सूक्ष्म शिष्टाचार की बाधा कितनी मामूली है, यह आफत मे पडे व्यक्ति के सिवाय दूसरे के लिए सहजबोध्य नहीं है।

टामस ने दरवाजे पर थपकी दी।

किसी ने न तो जवाब दिया, न दरवाजा खोला। दरवाजा लेकिन अंदर से बंद था। अंदर कोई है जरूर, और उसकी नीद टूटी नहीं समझकर टामस ने जोर-जोर से दरवाजे पर थपकी दी।

फिर खटखटाया। फिर।

इतनी रात को कौन?

टामस चौंक उठा। यह मुंशी की आवाज है!

मुंशी, तुम यहाँ न इतनी रात मे?

राम वसु का बोलना उचित न हुआ था। दरवाजे पर थपकी पड़ने का कोई दूसरा उपाय करना चाहिए था। लेकिन दुनिया मे उचित ढंग से काम होता कितना है? संकट की घड़ी मे बड़े से बड़ा धूर्त आदमी भी मोटी से मोटी भूल कर बैठता है, तभी तो जीवन का रस सूखा नही है आज तक। संसार के जमा-खर्च की पक्की बही मे कहीं मानो हिसाब की कोई बारीक भूल रह गई है।

जवाब देते ही राम वसु समझ गया कि वह बड़ी भूल हो गई है, शायद उसके जीवन की सबसे बड़ी भूल। लेकिन उस भूल के साथ एक बात हुई, इस अप्रत्याशित संकट के सामने पड़कर, टामस की आवाज से वास्तविकता की भूमि पर आकर उसकी इन कई दिनों की वह उद्-भ्रांति जाती रही। जैसे वह उद्भ्रांति के कुहरे में छिप गया था वैसे ही एकाएक होशियारी के सूर्यालोक में लौट आया; प्रेमिक भावुक की क्षणिक रोमांटिक सत्ता लुप्त हो गई और स्वाभाविक प्रखर उपस्थित बुद्धिवाला स्वेच्छा-कुशल वास्तववादी रामराम वसु जाग उठा।

इतनी रात को तुम रेशमी बीवी के कमरे मे हो मुंशी ! अजीव है। अंदर से स्थिर कंठ से राम वसु ने उत्तर दिया, उससे ज्यादा अजीव तत्व से उलझा हूँ।

टामस समझ नही सका। साश्चर्य पूछा, वह कौन-सा तत्व है ?

अंदर से राम वसु बोला, धर्मस्य तत्वम्।

फिर मूढ़ की भांति टामस ने पूछा, लेकिन वह यहाँ क्यों ?

इसलिए कि वह तत्व तो निहितं गुहायाम्।

टामस बोला, यह शायद संस्कृत है, मै ठीक से समझ नहीं पा रहा हूँ। समझाकर कहो।

ठीक है, तो सुनिए — दी मिस्ट्री ऑव रिलीजन इज हिड्न इन दी केव।

टामस ने पूछा, रिलीजन तो समझ गया, लेकिन यह मिस्ट्री क्या है, और यह केव ?

भई, वही तो खोज रहा हूँ। हमारे शास्त्रों में कहा गया है, केव यानी गुफा मे खुद प्रवेश किए विना उस मिस्ट्री का पता नहीं चल सकता।

तुम्हारा शास्त्र सचमुच आश्चर्यजनक है। लेकिन इतनी रात मे क्यों ?

रात कहाँ है ? राम वसु ने कहा, फिर गुफा में दाखिल होने के लिए रात ही तो सबसे अच्छा समय है। शास्त्र का कहना है, या निशा सर्व-भूतानां तस्यां जागर्ति संयमी।

अनुवाद करके समझाओ।

राम वसु बोला, व्हेन इट इज नाइट टु घोस्ट्स, संयमी यानी पीपुल लाइक माइसेल्फ, कीप अप लेट।

टामस के मन मे अचरज उमड़ आया। कहा, खूब है तुम्हारे शास्त्र। हर बात का समर्थन उनमें है।

कुछ देर चुप रहकर फिर टामस बोला, लेकिन किसी अकेली औरत के घर में पुरुष का प्रवेश करना क्या ठीक है ?

तुम्हारे इस सवाल का जवाब भी शास्त्र के वचन में दूँ —

शास्त्र में इनका भी समर्थन है ? बाप रे बाप !

'बाप रे बाप' कहने की आदत थी टामस को।

राम बसु बोला, शास्त्र में लिखा है, न स रमण, ना ही रमणी। डा० टामस, औरत-मर्द, यह सब नजर का भ्रम है।

तो फिर तुम लोग हो क्या ?

जीवात्मा और परमात्मा। जीवात्मा भोग के लिए लालायित है।

और परमात्मा की क्या मर्जी है ?

फिलहाल नाराज है।

टामस ने अब गंभीर होकर कहा, मुशी, शायद तुम्हारा उद्देश्य महान है और पंथ भी शास्त्र-सम्मत, लेकिन आधीरात को किसी जवान स्त्री के साथ एक कमरे में रहने का मतलब लोग गलत भी लगा सकते हैं।

राम बसु ने कहा, डाक्टर टामस, शास्त्र को मानने पर शास्त्र की सारी बातों को मानना पड़ता है। ऐसी धर्म-साधना के लिए युवती नारी सबसे बड़ी सहायक है।

लेकिन रेशमी क्या राजी है ?

अरे भाई, गड़बड़ी तो वहीं है।

क्यों ?

क्यों का क्या कहें ! नादानी है। मिस्ट्री ऑव रिलीजन जो हिड्न इन दी केव है, इस बात को वह मानना ही नही चाहती।

क्यों, वह क्या शास्त्र नही जानती ?

जानती है, लेकिन न जानने का बहाना कर रही है।

तो फिर दरवाजा खोल दो। हम दोनों मिलकर कोशिश करें।

क्या मुसीबत है। ऐसे विषय में दो गुरु नहीं चलते।

तो तुम अकेले ही कोशिश करो।

दीर्घ निश्वास छोड़कर टामस ने फिर कहा, मुशी, तुम बड़े भाग्यवान हो, नही तो मिस्ट्री ऑव रिलीजन समझाने का इतना बढ़िया अवसर तुम्हे नहीं मिलता।

टामस के आगे कहा, मैंने बहुत कोशिश की सफलता नहीं मिली।

साहब, इसके लिए उपयुक्त साधना चाहिए।

टामस ने कहा, अच्छा, यह तो कहो मुशी, इस तत्व को समझ जाने पर रेशमी बीबी ईसाई होने को राजी होगी ?

राम बसु बोला, फिर ईसाई बनने के सिवाय उपाय क्या रहेगा ?

फिर तो उसे समझाओ मुशी, अच्छी तरह समझाओ, अपनी सारी शक्ति लगाकर समझाओ और जरूरत हो तो सारी रात समझाओ !

वही तो समझा रहा था, बीच में टपक पड़े आकर।

मेरी भी खुशकिस्मती देखो, अचानक आकर यह जान गया कि यहाँ एक ऐसा पवित्र काम चल रहा है।

लेकिन अब भी तो चल दीजिए !

टामस ने जैसे सुना नही। पूछा, अच्छा मुशी, तुमने क्या इसे पहले भी मिस्ट्री ऑव रिलीजन समझाने की कोशिश की है ?

नहीं साहब, बस यही पहली बार।

मगर, यही अंतिम नही है, क्यों ?

बेशक नही। अभी कुछ दिनों तक चलती रहेगी।

क्यों नही ? ऐसा मौका कोई जल्दी नही छोड़ना चाहता। अच्छा यह तो कहो, कुछ ला सके ठिकाने पर ?

कुछ तो आशा हो रही है।

टामस भक्ति के आवेग से बोल उठा, जरूर होगा, जरूर होगा।

मगर ऊपर-ऊपर ही कोशिश न करके गहराई मे प्रवेश करने की चेष्टा करो।

उसके बिना आनन्द भी क्या है ?

मुंशी, तुम्हारी बातों से लगता है, तुम इसके विशेषज्ञ हो।

आखिर इतने दिनों से आप लोगों के साथ रह रहा हूँ।

टामस ने गिड़गिड़ाकर कहा, मुशी, दया करके एक बार दरवाजा तो खोल दो। मैं इस परम रमणीय दृश्य को देखकर प्रभु का नाम-

कीर्तन करूँ।

नही, नही। अब दरवाजा नही खुल सकता। रेशमी यों ही बड़ी संकोचशील है।

टामस ने मान लिया, हाँ, मैंने देखा है। बाइबिल की एक मामूली कथा से उसके गाल लाल हो जाते है, यह तो गूढ़तम रहस्य ठहरा।

कुछ ठहरकर बोला, मेरी ईश्वर के नाम लेने की इच्छा हो रही है।

तो वहीं खड़े-खड़े लीजिए। हम यही से मजे मे सुनते रहेंगे।

नही, खडे होकर नहीं, घुटने टेककर। मुशी, मै यहीं प्रभु का नाम-कीर्तन करता हूँ और तुम वहाँ धीरे-धीरे हृदय की गहराई मे पहुँचकर उसे गूढ़तम तत्व समझा दो।

मुशी बोला, अब आप जाइए भी तो।

जरूर जाऊँगा, आनन्द समाचार साथ ले जाऊँगा। लेकिन उससे पहले एकबार यह तो कह दो कि उसने समझा या नही।

खीझकर मुशी बोला, समझ गई, समझ गई। तुम्हारे जाने से वह और भी अच्छी तरह समझेगी।

'जय हो' कहकर टामस उछलकर खडा हो गया और 'स्वर्ग की कुजी मिल गई, मिल गई' कहता हुआ कैरी साहब के कमरे की ओर दौड़ पड़ा।

स्वर्ग की कुंजी

टामस के लौटने मे देर हो रही थी, इससे मन ही मन कैरी खीझ उठा था। वह सोच ही रहा था कि बाहर निकलकर पता लगाऊँ कि

धड़ाम से दरवाजा खोलकर आंधी के झोंके की तरह टामस अंदर आया।

यह खुशी से चिल्ला उठा, पा गया, पा गया।

टामस की भावुकता कैरी को मालूम थी, किन्तु आज कुछ ज्यादा लगी। इसलिए खीझकर ही बोला, पा गए तो लाओ, ख्वामख्वाह वैसे चिल्ला क्यों रहे हो?

टामस ने कहा, यह देने की नहीं, अनुभव करने की चीज है।

क्या बकवास कर रहे हो, संदूकवाले कमरे की कुंजी कहां है?

संदूकवाले कमरे की! टामस विस्मित हुआ।

तुम क्या कुंजी लाने नहीं गए थे?

टामस को अब सारी बातें याद आईं। बोला, हां, गया तो था, लेकिन मिला उससे कहीं ज्यादा!

ऐसा क्या मिल गया?

ऐसा क्या मिल गया! सविस्मय टामस ने कहा। फिर पूछा, आप ही कहें ब्रदर कैरी, क्या पा सकता हूं?

खीझकर कैरी ने कहा, देखो टामस, इतनी रात को तुम्हारे साथ बचपना करने का मेरे पास समय नहीं है। संदूकवाले कमरे की कुंजी ले आए हो, तो दो!

ब्रदर कैरी, गया था संदूकवाले कमरे की कुंजी के लिए, और स्वर्ग की कुंजी का पता मिल गया।

कैरी उठ खड़ा हुआ। बोला, तो तुम स्वर्ग मे जाने की कोशिश करो, मैं सोने जा रहा हूं। बड़ी थकावट लग रही है।

ब्रदर कैरी, स्वर्ग जाने का अवसर मिलता तो बाहर रह सकता था भला! लेकिन मुंशी किसी तरह राजी नहीं हुआ। रेशमी को शायद बड़ा संकोच होता है। इसके बाद वह स्वगत ही बोल उठा, अब तक मुंशी शायद अकेले ही स्वर्ग पहुंच गया होगा। स्वार्थी कहीं का!

राम बसु और रेशमी का नाम साथ-साथ सुनकर कैरी के कान खड़े हो गए। पूछा, क्या बात है, बताओ तो।

टामस ने बड़े ढंग से भावना का रंग चढ़ाकर शुरू से आखिर तक सब सुनाया। कहा, मैं सोच भी नहीं सका था कि ऐसा भी देखने की नौबत आएगी।

कैरी ने कहा, मैंने भी पहले नहीं सोचा था कि ऐसा भी होगा।

टामस बोला, मैंने बाहर से भी जितना आभास पाया, आपको उतना भी न मिला। फिर बोला, चलिए न, देख आएँ। मुंशी ने रेशमी को अब तक जरूर ही मिस्ट्री ऑव रिलीजन सिखा दिया होगा। वास्तव में वह ज्ञानी पुरुष है!

कैरी धिक्कार उठा, मुंशी जैसा ज्ञानी है वैसे ही तुम भक्त! गधे हो तुम!

क्यों? इसमें बेवकूफी क्या देखी आपने?

तुमने जब देखकर भी नहीं समझा, तो समझाऊँ क्या?

साफ-साफ कहो न।

इतनी रात में एक पुरुष एक युवती के सूने कमरे में गया, क्या उद्देश्य हो सकता है इसका?

यही तो मैंने भी पूछा था, लेकिन मुंशी ने कहा, मिस्ट्री ऑव रिलीजन समझाने के लिए।

उसने कहा और तुमने वही विश्वास कर लिया।

इसमें हर्ज क्या? क्या आप कुछ और शक कर रहे हैं?

और कुछ शक करने का है नहीं! ऐसे में एक ही बात हो सकती है।

वह क्या?

ओफ्! तुमको कैसे समझाऊँ? बोला कैरी।

फिर बोला, मुंशी उस लड़की को नष्ट करने के लिए गया है। यह रवैया कब से चल रहा है, कौन जाने।

मुंशी ने तो कहा पहली ही बार!

मुंशी ने कहा और तुमने यकीन कर लिया? उसने यह पहली बार कहा, तुमने वही विश्वास कर लिया। उसने कहा, मैं इसे मिस्ट्री ऑव

रिलीजन सिखाने आया हूँ, तुमने विश्वास कर लिया।

टामस की भक्ति का नशा फिर भी टूट नहीं रह था। बोला, अगर बुरी ही नीयत से गया, तो उसने धर्मतत्व की बात क्यों कही?

क्योंकि वह खूब जानता है कि भक्ति तुम्हारी पुरानी व्याधि है, सो उसी दावँ पर खेलकर उसने तुम्हें संदेह की राह से भक्ति की राह पर चला दिया।

मुझे चाहे जो करे लेकिन धर्म से ऐसा मजाक क्षमा के योग्य नहीं है।

व्यभिचारी आदमी से तुम और क्या उम्मीद कर सकते हो?

मैं तो मुंशी को भला आदमी समझता था।

मेरा भी यही ख्याल था। इसके सिवाय उसमें गुण बहुत हैं। उससे बराबर के तौर पर बात की जा सकती है।

अब कैरी कुछ देर चुपचाप चहलकदमी करता रहा, फिर अपने निश्चय की घोषणा करते हुए कहा, मुंशी मस्ट गो।

ऑफ कोर्स, ही मस्ट गो।

टामस गरज उठा। जो कच्चा भक्त होता है, वह भक्ति पर व्यंग के सिवाय सब कुछ सह सकता है। टामस को असह्य हो उठा। मेरे साथ मजाक! मैं देख लूंगा उस शैतान को।

वह तेजी से रेशमी के कमरे की तरफ दौड़ा।

कैरी ने पुकारा, टामस, ओ टामस, अचानक कोई तमाशा न कर बैठना। लौट आओ।

मगर कौन किसकी सुनता है! टामस तब तक अँधेरे में ओझल हो गया था। धर्मशास्त्र के अपमान के लिए ही टामस यों आपे से बाहर हो गया था, यह समझना भूल है। उसका और भी गूढ़ कारण था। उसे रेशमी का लोभ लगा था और राम बसु को अपना सफल प्रतिद्वन्द्वी देखकर उसका मन विष से बुझ गया। यही उत्तेजना उसे अंदर से उकसा रही थी। टामस से पूछा जाता तो वह निश्चित इसे कबूल करता।

कल शाम को एक आदमी को देखकर संदेह हो गया।

संदेह कैसा ?

लगा, चंडी बख्शी का आदमी है। कल शाम को वह बगीचे के आसपास चक्कर काट रहा था।

सबने कहा, ठीक ही तो है। अकेली कैसे रहेगी ?

लेकिन रेशमी का कहना सही न था। उसने ऐसे किसी आदमी को नहीं देखा था। लेकिन चूँकि वैसा कुछ कहे बिना उसके जाने का उपाय सहज नहीं होगा, इसीलिए मजबूर होकर उसने ऐसा बहाना किया।

नाव खोल दी गई।

एकाएक कलकत्ता क्यों चल दिया राम बसु, लोगों के यह पूछने पर उसने एक कहानी गढ़कर सुनाई। कहा, कुछ न पूछो, कम्बख्त टामस की करतूत था। उस रोज तुम लोग तो चले गए यात्रा देखने और इधर वह आया। आकर रेशमी के दरवाजे पर धक्का मारने लगा। मैंने देखा और मना किया। मना करना था कि मुझसे ठन गई! उसने कैरी को उलटा समझाया, जिससे यह नौबत आई। उसने सोचा था, यह काँटा उखड़ जाए तो रेशमी उसके चंगुल में आ जाएगी।

पार्वती और गोलोक ने कहा, अच्छा, यह बात है! हमें पहले से ही उसपर शुबहा था। अब पता चल गया।

राम बसु ने कहा, खैर जाने दो। इसकी चर्चा ा। रेशमी सुनेगी तो शर्मिन्दा होगी। कुछ ऐसा भाव दिखाना, तुम कुछ जानते ही नहीं।

सबने कहा, राम कहो, भला उस रत्ती भर लड़की के सामने यह सब कहने की बात है !

नाव प्रवाह में बडी तेजी से वह चली।

अकेले लेटे-लेटे राम वसु सोचता रहा। उसके विस्मय का अंत नही था। सोचा अद्भुत है यह रेशमी। आज तक जितनी भी स्त्रियो से उसका नाता रहा, किसी से भी उसकी तुलना नही। नही, टुशकी से भी नही। टुशकी मे माया-ममता कुछ ज्यादा है, लेकिन नारी-सुलभ रहस्य तो रेशमी मे ही है, यह खूबी उसे और किसी मे भी नही मिली। वह सोचता रहा, ज्यादातर स्त्रिया दूर मे ही स्फटिक-द्वार सी लगती है, लगता है, प्रवेश पाना कठिन है। लेकिन पास जाते ही पता चलता है, रास्ता साफ है। सहज ही जाया जा सकता है। इसी अनुभव से उसने रेशमी को भी वैसा ही सहज समझ लिया था। लेकिन उस रात जो अनुभव हुआ, उससे समझ गया, यह स्फटिक का द्वार नही, बल्कि स्फटिक की दीवार है, दूर से स्वच्छता के कारण द्वार का भ्रम हुआ था। दीवार पर सिर पीट-पीटकर उसे आखिरकार समझ मे आया कि यहाँ प्रवेश करना मना है।

टामस के लौट आने के पहले ही रेशमी ने राम वसु को विदा कर दिया था। कहा था, कायथ दा, अब आप जाइए।

राम वसु ने कहा था, क्यो, इतनी जल्दी किस बात की? अब तक तो कम्बख्त से जूझता रहा। जरा सुस्ता लेने दे।

नही-नही, आप जाइए। टामस फिर आएगा। हो सकता है, इस बार वह कैरी को साथ लेकर आए।

राम वसु के दिमाग में यह बात नही आई थी। वह जाने को तैयार हुआ। पूछा, टामस आकर चीख-पुकार करे तो क्या करेगी तू?

कुछ नही करूँगी। चुपचाप दरवाजा खोल दूँगी और कहूँगी, देखो, कोई नही है।

दरवाजा खोलने में डर नही लगेगा?

डर तो तुम्हारे लिए भी दरवाजा खोलते समय नही लगा।

रेशमी की इस बात ने वसु के हृदय में चाबुक की चोट की। तो क्या हम दोनों रेशमी की निगाह मे एक ही है। फिर उसे लगा, हर्गिज नही, मेरा स्थान रेशमी के लिए आज टामस से बहुत नीचे है। अपनी इस

भूल को मान लेने के बाद भी उसके मन को संतोष नहीं मिला, गुम्बज के अंदर की गूंज की तरह रेशमी की बात उसके मन मे घुमड़ती ही रहीं।

लौटकर राम वसु फिर दरवाजे के पास खड़ा हुआ। बोला, अच्छा यह तो बता रेशमी, मैंने आज जो हरकत की, इसके बाद कल तू मुझसे स्वाभाविक तौर पर बात कर सकेगी? झेंपेगी नही?

रेशमी ने सहज भाव से कहा, झेंपने की क्या बात है?

राम वसु के मुँह से निकल पडा — संस्कार?

मेरा सारा संस्कार तो जलकर राख हो चुका है।

क्या कहती है तू?

रेशमी ने पहली बातो के क्रम मे कहा, अब मेरे पास फटकने की मजाल किसी पुरुष मे नहीं है। मेरे चारों ओर चिता की लपटें धधक रही हैं।

राम वसु अप्रतिभ हुआ। वह चुपचाप निकल आया। समझ गया, यह लडकी वास्तव मे अग्नि-संभवा है, यह लालसा का ग्रास नहीं हो सकती।

राम वसु चला गया। रेशमी ने कमरा बंद किया और बिस्तर पर लेटकर रोने लगी। तकिया भीग गया। पता नहीं क्यों उसे रह-रहकर फुलकी की याद आने लगी। उस दिन सांझ को जो कुछ हुआ था, उससे उसका मन घृणा से भर गया था। फुलकी उसे बहुत बडी शत्रु लगने लगी थी। फिर भी आज इस गहरे दुख की घड़ी में वह स्वैरिणी लडकी ही रह-रहकर उसे याद आने लगी। विष से ही विष उतारना होता है। जो विष उसने अभी-अभी पिया, उसकी जलन साध्वी कुल-बालाएँ कैसे जान सकती हैं! इस विष की जलन को बुझाने का उपाय तो पतिता नारी ही जानती है, जिसने आकंठ इस विष को पिया है। रेशमी ने सोचा, बला से वह विषकन्या हो, लेकिन आज तो मेरे लिए वही धन्वन्तरि है।

याद आया, एक दिन फुलकी से उसने पूछा था, अच्छा बहन, गीत की वह एक कडी, जो सदा तुम्हारी जबान से लगी रहती है — 'जरा नही भय भरी नदी का, भय है बाढ के पानी से' — इसका मतलब क्या है ? यह भरी नदी क्या है और बाढ़ के पानी का क्या मतलब ? फुलकी ने जवाब दिया था, भरी नदी हुई भरी जवानी। इससे वैसा खतरा नही, खतरा तब है जब नदी मे पहली बार बाढ़ आती है। ऐसे मे किनारों के छलक जाने का डर रहता है। मै तो बहन उसी पहली बाढ़ में बह गई हूँ। फिर उसने रेशमी को सावधान किया था, देखो, तुम्हारी नदी में पहली बाढ का पानी उमड रहा है, सावधान रहना।

रेशमी ने पूछा था, तुम तो बहन पढ़ी-लिखी नहीं हो, इतना जाना कैसे ?

फुलकी ने हँसकर कहा था, पाठशाला मे सीखा भी कितना जा सकता है ? वहाँ लडकियाँ दस साल में जो सीखती हैं, वह मर्द के साथ एक रात रहने से सीखा जा सकता है — यही है आग का छूना।

रेशमी ने इन सारी बातों का विश्वास नहीं किया था पूरी तरह से — लेकिन हाँ, फुलकी के कहे मुताबिक, उसने उस समय तक आग को छूआ नहीं था।

उसके बाद उस रात आग की मशाल लिए राम बसु पहुँचा। बेशक उसने आग को छूआ नहीं, लेकिन आँच बदन को लगी। उस आँच से वह अंदर-बाहर से एकाएक बढ़ गई। उसी ताप की मरीचिका मे उसके सपनों का सवार कामना के दिगंत को दौड़ पड़ा। उसके सीने पर गज-मोतियों की माला झलमला उठी, झलमला उठे वक्ष का कवच और माथे का मुकुट। रेशमी समझ गई, वह सवार और चाहे जो हो, राम बसु नहीं है — बहुत हो सकता है राम बसु उसका नकीब होगा। नकीब की खातिरदारी में उसने कोर-कसर नहीं की।

दरवाजे पर थपकी देकर नाम बताते ही उसने राम बसु के लिए दरवाजा खोल दिया था। सोचा, अचानक कोई जरूरत आ पड़ी होगी।

लेकिन बिना किसी भूमिका के राम वसु जब बिस्तर पर जा बैठा, तो उसकी आँखों को देखते ही वह पल भर मे सब समझ गई। उसे फुलकी का गीत याद आ गया, समझ गई कि पहली बाढ का दुर्दम आवेग उसके जीवन मे पहले पुरुष को ले आया है। कुछ क्षण दोनो चुप रहे। नर-नारी के यौन-संबंध की यह अंतिम बाधा दुर्लघ्य है। ज़्यादातर मौकों में यह बाँध टूटता नहीं, दोनो दोनो ओर से धक्का मारकर लौट जाते है। रात के सन्नाटे मे सूने कमरे मे अकेले पुरुष के संग ने उसके तन-मन में दावाग्नि भडका दी। उसने उठकर दरवाजा बंद कर लिया और आकर बैठ गई। दोनो फिर विमूढ-से निर्वाक हो रहे। चालाक से चालाक पुरुष तथा प्रगल्भा से प्रगल्भा स्त्री भी उस समय निर्वाक हो जाती है, विमूढ हो जाती है। इसका कारण यह है कि वही आदिम परिवेश जग जाता है जब भाषा नही बनी थी, सामाजिक चतुराई जब भविष्य के गर्भ में थी। यह स्थिति कब तक चलती, पता नहीं। बीच मे फिर दरवाजे पर थपकी पड़ी। अब की बार टामस साहब था।

टामस की आवाज सुनते ही राम वसु एक पल मे एक सौ जन्मांतर पार करके फिर अपने समय मे आ पहुँचा और कुशलता से सवाल-जवाब करता रहा। रेशमी की भी सुध-बुध लौटी। तकिया मे मुँह गाड़कर वह हँसी से फूल-फूल उठने लगी।

आ जाओ भाई। खाना तैयार है।

पार्वती ब्राह्मण पकाता और सभी लोग खाते। और किसी का बनाया पार्वती नही खाएगा, इसलिए रसोई का प्रबंध पार्वती पर ही था।

नाढ़ा ने पूछा, अच्छा पार्वती दादा, खाते तो सब एक ही जगह है नाव पर। इससे जात नही जाती?

पार्वती ने कहा, इतनी बडी लकड़ी पर कोई दोष नही लगता।

अगर पीछे को बड़ा बना लिया जाय तो क्या दोष लगेगा ?

इस सवाल का जवाब न देकर पार्वती बोला, फिर गंगा मैया की गोद में बैठे हैं न।

दोनों वक्त पकाने-खाने के सिवा कोई काम नहीं था। नाव के टप्पर में बैठे रेशमी और दादा बातें करते, उजान और भाटे में नावों का आना-जाना देखते और शाम को आसमान के तारे और गाँव के दीए गिना करते। समय का प्रवाह नदी के स्रोत की नाई दोनों के कोमल मन पर से फिसल जाया करता, कोई रोक नहीं।

एक दिन पार्वती ने राम बसु को गंभीर देखा। उसने पूछा, क्या सोच रहे हो भैया ?

सोच रहा हूँ रेशमी साथ तो जा रही है, लेकिन कलकत्ते में इसे रखूँगा कहाँ ?

पार्वती कह उठा, तुम अपने घर में रखना। फिर खुद इस प्रस्ताव की असंभवता भाँपकर बोला, नहीं, ऐसा तो संभव नहीं।

फिर बोला, टुशकी के यहाँ रखने से काम नहीं चलेगा ?

राम बसु ने कहा, भला वैसी जगह ऐसी छोटी लड़की को रखना ठीक होगा ?

क्यों, टुशकी वैसी बुरी तो नहीं है।

हाँ, बुरियों में अच्छी है। राम बसु बोला, लेकिन वह जगह तो अच्छी नहीं है।

फिर तो मुश्किल है। और रखना भी होशियारी से पड़ेगा। तिनू चक्रवर्ती ने कहा था, चंडी बख्शी की हजार आँखें हैं।

राम बसु ने उसाँस लेकर कहा, देखा जाएगा। पहुँचें तो पहले। चलो, अब सोने चलें।

राम बसु को नींद नहीं आ रही थी। एक दिन उसे लगा था, चंडीदास का वह पद 'रजकिनी प्रेम निकपित हेम काम गंध नाहि ताय' झूठा है। अब लगा, नहीं, झूठ नहीं है। हाँ, सच और झूठ के बीचोबीच और भी

कई स्थितियां हैं, स्थूल विचार के समय वे छूट जाती हैं। उसे लगा, 'निकषित हेम' गलत नहीं है। लेकिन शुद्ध सोने से दुनिया का काम नहीं चलता, उसे संसारोपयोगी बनाने के लिए उसमें थोड़ी मिलावट करनी पड़ती है। उसे लगा इस मिलावट की मात्रा को समझने की कुशलता पर ही सुनार की चतुराई है। जिन तीन स्त्रियों को उसने बहुत निकट से देखा है, उनकी बात याद आई। टुशकी में सोने के अनुपात से मिलावट ठीक है, इसी से वह सब काम में लग सकती है। अन्नदा में मिलावट की मात्रा जरा ज्यादा है। अपने घर से बाहर वह इसीलिए नहीं चल सकती। और यह रेशमी है शुद्ध सोना। दुनिया को अभी इसमें मिलावट मिलाने का मौका नहीं मिला है।

तिनू चक्रवर्ती ने कर्तव्य निबाहा

शाम को मल्लाहों ने पूछा, नाव यहीं बांध दें?

राम वसु ने पूछा, क्यों?

आगे का रास्ता ठीक नहीं है। रात को चलने में कोई हर्ज नहीं, लेकिन लुटेरों का डर है।

ऐसा है, तो आज रात यहीं नाव रोक दो।

गाँव कौन-सा है यह? पार्वती ने पूछा।

जी, यह जोड़ामऊ है।

जोड़ामऊ! सब चौंक उठे।

राम वसु ने रेशमी को बुलाकर कहा, सुन, अंदर दुबकी रह। हर्गिज बाहर मत आना। रेशमी ने जब जाना कि वह चंडी बख्शी के इलाके में आ निकली है, तो अंदर दुबक गई। दुबक तो गई, लेकिन एक ही साथ

उसके मन में कौतूहल और करुणा आलोडित होने लगे। यही गाँव है उसका। जरा नानी से भेंट नहीं हो सकती। नहीं, हर्गिज नहीं। काश, तिनू दा से किसी तरह भेंट हो जाती! जमाने से उसे गाँव की कोई खबर नहीं मिली थी। नहीं, यह भी संभव नहीं। इसी तरह गाँव की बात सोचते-सोचते वह न जाने कब सो गई।

चावल-दाल, पान-तम्बाकू खरीदने के लिए मल्लाह लोग गाँव में गए।

उन्हें सावधान कर देना सभी भूल गए कि किसी से नाववालों का परिचय न दे वे। न भूलते तो भी सावधान करना सहज न था, शायद उसी से ज्यादा खतरे की आशंका थी।

बातों के सिलसिले में मल्लाहों ने लोगों से कह दिया कि वे कौन हैं, कहाँ से आ रहे हैं, कहाँ जाएँगे। नाव पर के लोगों के बारे में भी कहा। वे क्या जानें कि यह भी छिपाने की बात है। वहीं मौजूद था चंडी बख्शी का कोई चेला। वह झट चंडी को खबर पहुँचाने के लिए चल पड़ा।

सुनते ही चंडी बोल उठा, हे माँ काली, तुम्हारी इच्छा से बलि आप ही घाट पर आ पहुँची है। इसके बाद अपनी मंडली के कई लोगों से कहा, क्यों न हो, शास्त्र तो झूठा नहीं हो सकता।

तब मंडली जुटी और राय-मशविरा हुआ। तय पाया, रात को हम नाव पर टूट पड़ेंगे और उसे छीनकर रातों-रात काम तमाम कर दिया जाएगा।

सभी शास्त्रों के पारंगत चंडी बख्शी ने कहा कि चिता से उठकर भागनेवाली को चिता में जलाना ही शास्त्र का विधान है।

एक ने कहा, देखना दादा, आफत में न पड़ना पड़े।

आफत कैसी? नाव पर साहब थोड़े ही हैं।

मल्लाहों ने बताया था कि नाव पर साहब नहीं हैं।

एक दूसरे ने कहा, अँधेरे में नाव पहचानने में भूल न हो।

पागल हुए हो। चंडी बख्शी की आँखें उल्लू की हैं, अँधेरे में ही ठीक देखती हैं। साहब की नाव है तो बजरा ही होगा। पहचानने में

भूल नहीं होगी ।

चंडी बख्शी का मनसूबा धीरे-धीरे तिनू चक्रवर्ती के कानों तक पहुँचा । तिनू की मछुआओं पर बड़ी धाक थी । उसने रसिक मछुए को बुलाकर कहा, देख, कुछ आदमी तैयार रखना। ठीक समय पर मैं खबर दूँगा ।

आधी रात को हलचल हुई । बंदूक छूटी । इससे नाव पर राम बसु आदि की नींद टूटी । हड़बड़ाकर सब बाहर निकले और मामला क्या है, जानने के लिए उत्सुक हो उठे । सबकी जबान पर एक ही सवाल — क्या हुआ ? कौन है वे लोग ? किसपर हमला किया ? नीद की खुमार कट गई तो सबने देखा, पास ही एक बजरे पर बहुत-से लोग चढ़ना चाह रहे है । अँधेरे में भी इतना दिखाई पड़ा कि बजरे की छत पर दो आदमी खड़े हैं । शायद वे ही बंदूक छोड़कर हमलावरों को भगाने की कोशिश कर रहे है ।

राम बसु ने कहा, अब यहाँ ठहरना ठीक नहीं । नाव खोलकर चुपचाप चल देना चाहिए । अभी वे लोग उस बजरे को लूट रहे है । इसके बाद, हो सकता है, हमपर टूट पड़े ।

सबने हामी भरी । मल्लाहो ने नाव खोल दी और खेते हुए बीच नदी मे पहुँचे । नाव प्रवाह मे बहने लगी । मल्लाह आपस मे बातें करने लगे, लुटेरों के डर से गाँव मे पनाह ली । अब देखते है, गाँव में ही लुटेरे थे ! उनकी बातों से खिचकर पार्वती और राम बसु उनके पास गए । देर तक उनसे जिरह करने पर पता चला कि मल्लाहों ने गाँववालों से बातों ही बातो मे सब कुछ बता दिया था । नाव पर कौन है, कहाँ से आ रहे है, कहाँ जा रहे हैं आदि ।

राम बसु पार्वती को अलग ले गया । बोला, भाई, अब सब कुछ साफ समझ मे आ गया । यह करतूत चंडी बख्शी की है । मल्लाहो से खबर पाकर उसने हमपर छापा मारने की सोच रखी थी । भूल से बजरे पर हमला कर दिया ।

पार्वती ने पूछा, लेकिन बजरे पर कौन थे ?

राम वसु ने कहा, जो भी हों, कायर नहीं थे वे। बंदूक लगता है उन्होंने ही छोड़ी थी।

नाव गाँव से बहुत दूर निकल गई। उजाला भी होने लगा। सबने देखा, पीछे-पीछे एक बजरा आ रहा है।

पार्वती ने कहा, पीछा तो नहीं कर रहा है ?

राम वसु ने गौर से देखा। कहा, यह वही बजरा है। फिर भी सावधान होना ही अच्छा है। ऐ मल्लाह, पाल नहीं ताना जा सकता ?

मल्लाहों ने भी बजरे को देखा था और पाल तानने की बात सोची थी। बोला, जी नहीं। पाल नहीं खोला जा सकता। हवा उतरंगा है !

खासा उजाला फैल चुका था। बजरा भी करीब पहुँच गया था। बजरे पर के लोग साफ दीख रहे थे। बंदूक लिए तीन आदमी उसपर खड़े थे।

राम वसु बोला, पार्वती, ये लोग तो चीन्हे-से लगते है !

अरे, साहब हैं !

समझ गए, बजरे से डरने का कारण नहीं। नाव की चाल धीमी कर दी गई।

राम वसु ने कहा, जरा उनसे पूछकर सुनें कल क्या हुआ था।

राम वसु ने जोर से अंगरेजी मे पूछा, कौन मिस्टर स्मिथ ?

जॉन उन्हें पहचान गया — अरे, मुंशी ? आप लोग कहाँ से ?

मदनाबाटी से आ रहा हूँ।

मिस्टर कैरी कहाँ है ?

वे नहीं आए। हम कुछ लोग ही आ रहे हैं।

नाव भिडाइए। बहुत-सी बातें करनी है।

नाव भिड़ाकर पार्वती और राम वसु बजरे पर गए।

राम वसु ने कहा, मेरे इस मित्र को आप जरूर पहचानते होंगे मिस्टर स्मिथ, पार्वती ब्राह्मण हैं।

बेशक। अब अपने मित्रों से आपका परिचय करा दें। मिस्टर रिगलर

और मिस्टर मेरिडिथ। मेरे यहाँ इन्हें जरूर देखा होगा।

खूब देखा है। याद भी है।

जॉन ने अपने मित्रों से कहा, ये राम बसु हैं। पंडित आदमी। कैरी साहब के मुंशी हैं। और ये राम बसु के मित्र हैं। ये भी बड़े शास्त्रज्ञ हैं।

राम बसु ने पूछा, कल क्या हुआ था?

जॉन ने कहा, कुछ समझ नहीं सका। हम लोग कई दिनों से शिकार में निकले थे। कल शाम इस गाँव में नाव भिड़ाई थी। एकाएक रात में लुटेरों ने धावा कर दिया। और कुछ नहीं मालूम।

राम बसु बोला, लेकिन लगता है, मैं जानता हूँ।

आप कैसे जानते हैं?

असल में उनका लक्ष्य हम लोगों की नाव था। भूल से बजरे पर चढ़ दौड़े।

लेकिन, आप ही लोगों पर हमला करने की क्या बात थी?

वह एक लंबी दास्तान है। राम बसु ने आदि से अंत तक रेशमी की कहानी कह सुनाई। छः साल मदनावाटी में कैसे बीते वह भी सुनाया। लेकिन वहाँ से एकाएक चले आने का सही कारण दबा गया। कहा, काफी दिन हो गए थे। बाल-बच्चों को देखने के लिए कलकत्ते जा रहा हूँ। खैर, आप लोगों से भेंट हो गई, बड़ी खुशी हुई।

जॉन ने कहा, उस लड़की को आप ले तो आए अपने साथ, कलकत्ते में रखेंगे कहाँ? मुझे लगता है, दुश्मन बड़े तगड़े हैं। छीन न ले जाएँ।

उसी की सोच में पड़ गया हूँ।

जॉन ने कहा, लड़की को अगर एतराज न हो तो एक बहुत अच्छे परिवार में रहने का इंतजाम कर दे सकता हूँ। वहाँ यमराज के सिवाय कोई दूसरा घुस नहीं सकता।

कैसा परिवार, सुनें जरा।

अपने ही मुहल्ले में रहते हैं — जॉन रसेल। सुप्रीम कोर्ट के जज हैं। कुछ दिनों से उनकी साली की लड़की आई हुई है। उमर उसकी

कम है। काम-काज में उसका हाथ बँटाने के लिए एक देशी लड़की की जरूरत है।

क्या काम करना होगा ?

काम ऐसा क्या! उन्हें आदमी की कमी थोड़े ही है। अंगरेजी में जिसे 'मेड ऑव ऑनर' कहते हैं, वही बनकर रहेगी। बाल सँवार देगी, आईना ला देगी, घूमने के समय साथ जाएगी, गप-शप करेगी — और क्या ?

राम बसु बोला, इन कामों के लिए इससे बेहतर लड़की जल्दी नहीं मिलेगी। यह अँगरेजी बोल लेती है, लिखना-पढ़ना जानती है, अंगरेजों के तौर-तरीके भी मालूम हैं। अच्छी लड़की है, मिठबोली है और फिर उमर भी कम है।

जॉन ने उल्लास के साथ कहा, जॉन एलमर से खूब पटेगी।

मैंने बहुत तलाशा, कहीं नहीं मिली। तो बात पक्की ?

जरूर।

बिन माँगे रेशमी के लिए सुरक्षित स्थान मिल गया, इस बात से राम बसु और पार्वती को बड़ा संतोष हुआ।

इतने में राम बसु की नाव से रेशमी के रोने की आवाज आई। रेशमी रो रही थी! पूछा, नाढ़ा, रेशमी रो क्यों रही है ?

वह देखो न, क्यों रो रही है। मुझे भी रोना आ रहा है!

नाढ़ा के बताने पर लोगों ने नदी की ओर देखा। एक ताजा लाश बह रही थी। राम बसु को पहचानने में देर न लगी, लाश तिनू चक्रवर्ती की थी।

जॉन ने कहा, डकैतों में से किसी की लाश होगी। कल हमने गोली चलाई थी। अँधेरे में पता नहीं चला कि कोई मरा है।

राम बसु ने कहा, मिस्टर स्मिथ, यह डाकू नहीं है। इस गाँव में हम लोगों का एकमात्र जो मित्र था, यह लाश उसी की है।

तो वह डाकुओं के साथ क्यों आया था ?

साथ आया होगा, लेकिन उसी इरादे से नही। वह जरूर हम लोगों को मदद के लिए आया था।

जॉन ने अफसोस करते हुए कहा, और अंत मे मारा वही बेचारा गया! इससे दुःखद और क्या हो सकता है?

इसके बाद राम वसु, पार्वती और नाड़ा ने मिलकर लाश को उठाया। लकड़ी जुटाकर दाह-संस्कार किया। लाश जलकर जब तक राख नहीं हो गई, रेशमी उसके मुंह की ओर ताकती हुई रोती रही। उस लाश के साथ उसके गाँव के जीवन की अंतिम यादगार भी राख हो गई। तिनू चक्रवर्ती मरने के बाद भी अपना कर्तव्य नही भूला था, रेशमी के पीछे-पीछे बहता आया और उसे अभय आशीर्वाद दे गया।

और एक अनावश्यक अध्याय

राम वसु आदि के चले आने पर कैरी की समस्या और संकट एक-एक करके जटिल हो आए। सबसे पहले तो बंगला पाठशाला टूट गई। लड़के तो पहले ही भाग गए थे, अब गुरु जी भी खिसक गए। और, जैवेज की मृत्यु के कुछ ही दिनों बाद पिटर भी चल बसा। कैरी जिस समय शोक से घिरा था, कुछ बर्तन-बासन लेकर छिरू की माँ चंपत हो गई। विपदा का यहीं अंत न हुआ। कोठी के काम में लगातार नुकसान हो रहा था। यह देखकर उडनी ने पत्र लिखा कि मेरे लिए और नुकसान सह सकना संभव नही। मैंने काम समेट लेने का निश्चय किया है। उधर खानाबदोश टामस के पाल को हवा का झोंका लगा। वह चला गया। कहाँ, कोई नहीं जानता। कोई कहता, राजमहल गया है, तो कोई कहता वीरभूम।

ऐसी विपत्ति मे भी कैरी का आदर्शवाद अटल था, स्थिर। सब मानो पहले जैसा ही नियम से चल रहा है, इस ढंग से वह सवेरे संस्कृत व्याकरण खोलकर बैठा कि मिसेस कैरी ने कमरे से झांककर कहा, किसी को देख नहीं रही हूं। सबको बाघ ले गया, तुम अभी भी अकेले बैठे हो? भागो, जल्दी भागो। अब तुम्हारी बारी है।

इतना कहकर वह बाहर को दौड़ पड़ी।

पीछे-पीछे कैरी दौड़ा — डोरोथी, रुको, रुक जाओ, कोई डर नहीं।

आजकल ऐसा लगभग रोज ही हो रहा था। एक-एक कर जैबेज और पिटर के मर जाने से डोरोथी का दिमाग बिलकुल खराब हो गया था। इस समय पागल पत्नी की देख-भाल और कठिन संस्कृत व्याकरण की चर्चा में कैरी का रात-दिन दो भागों मे बंटा था। स्थानीय एक आदमी की मदद से फेलिक्स सब काम-काज करता।

राम बसु के रहते-रहते ही कैरी ने संस्कृत साहित्य के विपुल भंडार का आविष्कार किया था। अपने पांडित्य और विचार से उसने समझ लिया था कि न तो राम बसु की फारसी में, न नाढा की लोकभाषा में है, बल्कि सभी भाषाओं का प्राण-रहस्य कहीं है, तो संस्कृत मे ही है। राम बसु और पार्वती ने भी कैरी की इस बात की ताईद की थी। फिर तो कोई संदेह ही नही रह गया। कैरी ने अपने को संस्कृत भाषा के समुद्र में डुबो दिया। उसी की प्रेरणा से उसने समझा कि इसी के आदर्श पर बंगला-गद्य की रीति को गढना है। उसने संस्कृत व्याकरण के अनुसार बंगला व्याकरण और संस्कृत अभिधान के अनुसार बंगला अभिधान तैयार करना शुरू किया। साथ-साथ बाइबिल का अनुवाद चलता रहा। सेंट मैथ्यू रचित सुसमाचार का अनुवाद उसने राम बसु के सहयोग से कर लिया था, अब संस्कृत के नए ज्ञान से उसका संशोधन करना शुरू किया।

कैरी सोचने लगा, अनुवाद तो चल ही रहा है, धीरे-धीरे बहुत हो जाएगा। लेकिन उसकी छपाई का क्या होगा? इस बीच उसे खबर मिली कि कलकत्ते मे एक छापाखाना बहुत ही सस्ता बिक रहा है। वह झट

कलकत्ता गया और छापाखाना खरीदकर मदनावाटी लौट आया। लौटने पर उसे उडनी की चिट्ठी मिली। उडनी ने कारोबार बंद करने का निश्चय लिखा था। इसलिए कैरी ने पास ही खिदिरपुर गाँव में एक नील-कोठी खरीदी और परिवार के साथ वहीं चला गया।

टामस के जाने के बाद फाउंटेन नाम के एक उत्साही युवक ने उसको सहयोग दिया। उसी के सहारे किसी प्रकार काम चला। लेकिन मन में वह हर घड़ी राम वसु का अभाव महसूस करता रहा। राम वसु का उत्साह, विचक्षणता, भाषा-ज्ञान और साहित्य-प्रेम का अभाव अनुभव होता पग-पग पर। कभी-कभी जी मे होता, उसे लाने के लिए फाउंटेन को भेज दे। दूसरे ही क्षण ख्याल आता, छोडो। आदमी बड़ा दुश्चरित्र है। इसी दुविधा में किसी तरह उसके दिन बीतते रहे।

तीसरा खंड

रोज एलमर या गुलबदनी

बगीचे मे देशी-विदेशी तरह-तरह के फूल। गुलाब की बहार ही ज्यादा। सफेद, लाल। कही कली। कही अधखिली। कहीं पूरे खिले फूल। रेशमी चुन-चुनकर खिलती आती कलियों को तोड़ रही थी। एकबार एक को तोड़ने के लिए हाथ बढ़ाया। भली तरह से उसे देखा और हाथ समेट लिया, हरगिज पसंद नहीं आया। आखिर देर तक घूम-घूमकर उसने बहुत-सी कलियाँ तोडीं और घर चली गई। घर में उसने सुंदर-सा गुलदस्ता बनाया।

फिर गुलदस्ते को एक युवती के पास ले जाकर बोली, लो मिसी बाबा।

युवती ने गुलदस्ता ले लिया। करुण-सुंदर हँसी हँसकर बोली, इस भद्दे नाम से मुझे न पुकारा करो — इसका मतलब होता है 'मिस फादर'।

रेशमी बोली, सब तो आपको इसी नाम से पुकारते है। सबकी छोड़ो, तुमसे संबंध ही जुदा है। देखो तो सही, मैं तुम्हें कैसा 'सिल्केन लेडी' नाम से पुकारती हूँ।

रेशमी का अर्थ पूछकर उसने उनका अनुवाद कर लिया था — सिल्केन लेडी।

किस नाम से पुकारने पर आप खुश होंगी ?

कभी-कभी तुम गुलबदनी कहते थे न। उसी नाम से क्यों नहीं पुकारते ? या फिर आंटी जैसे रोजी कहती है, वही कहो।

उससे यह देशी नाम ही अच्छा है। मैं गुलबदनी ही कहूँगी।

याद रहेगा न ?

देखिएगा, अब गलती नहीं होगी।

रोज एलमर फूलों का वह गुच्छा लेकर उठी और मेज पर जो एक नौजवान की तसवीर थी, उसके पास रख दिया।

रेशमी ने कहा, मैं रोज आपको इतने जतन से गुलदस्ता बनाकर देती हूँ, मगर आप उसे इस तसवीर के पास क्यों रख देती हैं ? किसकी तसवीर है यह ?

रोज एलमर हँसी। कहा, यह एक कवि की तसवीर है।

उस कवि से आपका क्या नाता ?

एलमर उसके सवाल का जवाब टाल गई। कहा, मालूम है तुम्हें, यह तसवीर मैंने बनाई है ?

अच्छा, आप तसवीर बनाती हैं ? कभी देखा तो नहीं बनाते ?

जब अपने मुल्क में थी, बनाया करती थी। यहाँ बस यही एक बनाई है।

लेकिन इस आदमी को तो यहाँ मैंने कभी नहीं देखा ?

आदमी वहीं मुल्क में है।

वाह ! आदमी देश में रहा, तो आपने तसवीर कैसे बनाई ?

रोज एलमर ने हँसकर कहा, दूर होने से ही कोई दूर रहता है सदा ?

तो ?

मन में भी तो रह सकता है ?

पता नहीं, रेशमी उसकी बात समझ भी पाई या नहीं। वह बोली,

मिस्टर स्मिथ आ रहे हैं ! मैं जाती हूँ ।

नहीं । तुम ठहरो ।

रेशमी ने कुछ नहीं सुना । एक दरवाजे से वह बाहर चली गई, दूसरे से जॉन स्मिथ अंदर आया ।

गुड इवनिंग मिस एलमर !

गुड इवनिंग मिस्टर स्मिथ । आओ बैठो ।

कनखियों से जॉन ने देखा, रोज की तरह आज भी तसवीर के पास नियमित जगह पर गुलदस्ता रक्खा है । वह अप्रसन्न-सा बैठ गया ।

आशा है, आज का दिन आनंद से बीता है ।

कल जैसा बीता था, न तो उससे ज्यादा अच्छा, न कम ।

मिस एलमर, एक दिन तुम्हारे साथ नौका-विहार में जाने की इच्छा है । हमने एक नया हाउस बोट लिया है ।

एलमर चुप रही । इसपर जॉन बोला, मिस स्मिथ भी साथ रहेगी ।

नहीं, इसलिए नहीं, असल में मल्लाहों का शोरगुल मुझे अच्छा नहीं लगता, उससे बगीचे की नीरवता मीठी लगती है ।

लेकिन कर्नल रिकेट तो तुम्हें यदा-कदा यहाँ-वहाँ ले जाता है ।

उसको छोड़ो, वह छोड़नेवाला जीव नहीं है ।

मैं निरीह हूँ, यही दोष है ?

एलमर ने हँसकर कहा, कभी-कभी ।

ठीक है, अब से मैं भी जबरदस्ती करूँगा ।

जो अपना स्वभाव नहीं, वैसा आचरण करना और बुरा लगेगा ।

मिस एलमर, उस गँवार को मैं कतई पसंद नहीं करता । हैरान हूँ, तुम उसे बर्दाश्त कैसे करती हो ।

आखिर वह जंगी सिपाही है, गँवारपन उसका व्यवसाय है ।

बड़ा असभ्य है वह ।

सभ्यता करने से लड़ाई नहीं की जा सकती ।

तो क्या तुम्हारा घर लड़ाई का मैदान है ?

हो सकता है वह इस घर को पराया नहीं समझता।

ठीक ही कहती हो, इस अदा से वह तुम्हारे यहाँ दाखिल होता है, गोया यह घर उसकी बपौती दौलत है।

यही तो राज है युद्ध में जीतने का।

मगर यहाँ जीतने की उसे कोई उम्मीद नहीं।

यह कैसे समझा तुमने ?

बड़ी आसानी से। उस दंभी ने अपनी जो तसवीर तुम्हें दी थी, साफ देख रहा हूँ कि उसपर धूल की परत चढ़ गई है ! और फूलों का गुच्छा रोज...। अच्छा हाँ, :यह तसवीर तो शायद किसी कवि की है। नाम तो इसका सुना नहीं कभी।

कभी सुनोगे।

ग्रे, वर्न्स आदि जैसा लिख लेता है ?

खूब कहा ! एक कवि कभी दूसरे कवि जैसा लिख सकता है ? गुलाब कहीं डलिया जैसा होता है ? उसके बाद एलमर बोली, इस कवि से मेरी एक शर्त तय पाई है।

शंकित मन जॉन ने पूछा, कैसी शर्त ?

यही कि मेरे मरने पर वह ऐसी एक कविता लिखेगा, जिससे मेरा नाम अमर हो जाएगा।

अहा, तुम मरने क्यों लगी।

तो क्या मैं अमर होकर पैदा हुई हूँ ?

कम से कम एक आदमी के मन में।

तो फिर वह अमर होगा। खैर ! मजाक छोड़ो। मुझे लगता है, यहाँ की विपरीत आवहवा में मैं ज्यादा दिन जिंदा न रह सकूँगी।

फिर वह अपने आप कहती चली गई — वाह रे जीवन ! नाचना-गाना, हो-हल्ला, खाना-पीना, जूआ, अड्डेबाजी, डुएल-मारपीट। असह्य है। इसमें आदमी जीता कैसे है ?

जॉन ने कहा, जीता कहाँ है ? कलकत्ते में कितने लोग पचास पार करते है ?

गनीमत है, पचास तक पहुँचते है। मै तो बीस भी नहीं लाँघ सकूँगी।

थ्री स्कोर ऐंड टेन ! उससे पहले तुम्हे मारने की मजाल किसे है ! गर्व के साथ घर मे दाखिल होते हुए जंगी सिपाही कर्नल रिकेट ने कहा। और, अपनी टोपी मेज की ओर फेकते हुए एक कुर्सी पर बैठकर बोला, गुड इवनिंग रोजी। उसके बैठने से मानो कुर्सी चीख उठी।

गुड इवनिंग कर्नल। मिस्टर स्मिथ भी है।

मिस एलमर के कहने का कोई नतीजा नही निकला। कर्नल ने जॉन की तरफ ध्यान ही नही दिया। उसके बदले कर्नल अपनी जगह मे उठा और तसवीर के पास पडे गुलदस्ते को हथियाकर बोला, यह तो मेरा पावना है। गलत जगह कैसे रक्खा है ?

जॉन मौन ईर्ष्या से जलता रहा।

कर्नल ने अपने बटन से लाल गुलाब की कली निकालकर एलमर की ओर बढ़ाई और फ्रांसीसी कायदे से झुककर कहा, रोज टु रोज। और कनखियों से जॉन की तरफ ताककर बोला, यह फ्रासीसी कायदा मैंने मोशिए दुबोया से सीखा है। शरुस है गुणी आदमी।

जॉन मारे शर्म के धूल मे गड़ गया। मिस एलमर की शर्म की भी हद न रही।

मिस एलमर, कल हम बहुत-से लोग नाव से पिकनिक को जा रहे है। खूब खुशी मनेगी, मौज से कटेगा।

मिस एलमर को शांति मिली कि प्रसंग बदला। बोली, अच्छा ! और कौन-कौन जा रहे है ?

बहुत-से लोग चल रहे है। तुम भी चल रही हो।

रोज दुविधा में पड़कर बोली, लेकिन मुझे यह अच्छा नहीं लगता।

साथ में मैं रहूँगा तो जरूर अच्छा लगेगा।

रोज ने फिर हलकी-सी आपत्ति की। रिकेट ने उसकी जरा परवाह न की। कहा, सब तय हो चुका है। नाश्ते के बाद मैं आकर तुम्हें ले जाऊँगा।

जॉन उदास छाया-सा वहाँ से हट गया। इसके बाद उससे वहाँ रहा नहीं गया। प्रेम और संकट में जो आगा-पीछा करते हैं, उनकी हार निश्चित है।

प्रतिद्वन्द्वीहीन युद्ध-भूमि में विजयी के निष्कंटक विश्वास के साथ कर्नल बोल उठा, तुम जरूर चल रही हो। तुम्हारे ही लिए तो यह सारी तैयारी है, इतना खर्च। अभी-अभी मुल्क से आई हुई तीन कास्केट बी हाइव ब्राडी! ...लो, ऐसी मुर्झाई-सी मत हो रोजी, चलो, जरा घूम आएँ। देखना, मेरी गाडी का नया जंतु कैसा दौड़ता है! चलो, रेस के मैदान का एक चक्कर हो जाए — जी भी हलका हो जाएगा, भूख भी लगेगी।

जंगी कर्नल के उत्साह को बाधा देने की मजाल एलमर में न थी। सो वह फाँसी के असामी-सी नए जानवर द्वारा खींचे जानेवाली गाड़ी पर उस आदिम जानवर को बगल मे जा बैठी।

गाड़ी दौड़ने लगी। चरम विजय की आशा से उल्लसित कर्नल रिकेट जीवन के दर्शन की व्याख्या करने लगा। वह जीवन-दर्शन जैसा था, वैसा ही जीवन-दर्शन तत्कालीन कलकत्ते के श्वेतांग समाज के अधिकांश लोगों का था।

रोजी डियर, यह जीवन जो है, वह आधा तो है युद्ध का मैदान, आधा जूए का अड्डा। ये दोनों ही जगहे ऐसी है, जहाँ लड़ाई होती है और लड़ाई के लिए चाहिए रुपए। लिहाजा जैसे हो, जिस उपाय से हो रुपया कमाना है। जो थोड़ा दिन जीना है, मौज-मजा कर लेना चाहिए। क्या पता, कब कलकत्ते का डिच-फीवर दबोच बैठे।

कर्नल के इस अनोखे दर्शन से एलमर स्तंभित हो गई। कहा, तो इतनी लागत से सेंट जॉन चर्च जो बन रहा है, उसकी क्या सार्थकता है?

यह सब सनकी लोगों का काम है।

अच्छा ! फिर तो जीवन में धर्म का कोई स्थान नहीं है ?

बिलकुल नही है, ऐसा नही कहता। लड़ाई फतह करने के लिए एक भगवान की जरूरत है।

बस, सिर्फ इसीलिए ?

और नही तो क्या ? अपने दिमाग मे तो और कुछ नहीं आता। असली बात बता दूँ प्यारी, चाहे लड़ाई हो चाहे जुए की मेज — हर जगह चाहिए साहस। डरपोक के लिए जीवन मे जगह ही नही है।

अपनी वाग्मिता पर रिकेट इतना बाग-बाग हो गया कि उसने गला छोड़कर गाना शुरू कर दिया — नन बट दी ब्रेव, नन बट दी ब्रेव नन बट दी ब्रेव डिजर्व्स दी फेयर — और साथ ही उसने लगाम ढीली कर दी — गाड़ी तेज दौड़ने लगी। जॉन स्मिथ पैदल जा रहा था। उसे गाड़ी का यह दौड़ना टूटता तारा-सा दिख गया। बीते एक दिन की याद आई और रोज एलमर के लिए वह बेचैन हो उठा।

बीते एक दिन की बात

मैदान की ओर से जॉन लौट रहा था। ऐसे मे देखता क्या है कि एक छोटी-सी गाड़ी बेतहाशा भागी जा रही है — युवती सवार से घोड़ा सम्हल नहीं रहा है। जॉन ने हालत देखी — बस, अब गाड़ी उलट जाएगी। सो जैसे ही गाड़ी उसके करीब आई, अपनी जान की ममता छोड़कर वह गाड़ी की पादान पर उछलकर चढ गया और जोर से लगाम थाम ली। दस-बीस ही गज बढ़ने के बाद एक जोरों का झकोला खाकर गाड़ी रुक गई। तरुणी जॉन पर लुढ़क गई। जॉन ने बाएँ हाथ

से उसे सम्हाल लिया, नही तो वह गिर जाती ।

ज्यादा चोट आई ?

जरा साँस लेकर तरुणी ने कहा, दो क्षण भी आप आने मे देर कर देते तो आज मेरा बुरा हाल होता ।

जॉन ने कहा, अंत भले का सब भला । आपका यों अकेली निकलना ठीक नही था ।

रोज तो अकेली ही आती हूँ । आज घोडा जरूर नया था । कृपा करके आप हमारे घर चलें । आपने मेरी जान बचाई है, यह सुनकर मेरी मौसी और मौसा बेहद खुश होंगे ।

इतनी देर के बाद जॉन ने उसपर गौर किया । अब तक वह आई मुसीबत को सोच रहा था । अब उसने देखा, युवती गजब की सुन्दरी है । शरत् की ऊषा को जैसे पेटीकोट और अँगिया पहनाकर छोड़ दिया गया हो । परिश्रम और उद्वेग से सौंदर्य आमूल प्रकट हो आया था — आँधी का आभास लिए शरत् की ऊषा !

वह तरुणी रोज एलमर थी, सुप्रीम कोर्ट के जज सर हेनरी रसेल की साली की लड़की ।

सर हेनरी और लेडी रसेल ने सब सुना और जॉन का सादर स्वागत किया । कहा, जॉन, तुम्हारा घर तो करीब ही है । जब जी मे आए, आ जाया करना । रोज अभी-अभी मुल्क से आई है । किसी से जान-पहचान नही हुई है अभी । अकेलापन महसूस करती है । तुम्हारे आने से खुश होगी । हम भी कम खुश न होंगे ।

घटनाचक्र से जॉन के लिए उनके यहाँ जाने-आने का रास्ता सुगम हो गया । नही तो ऐसी आशा थी नही, क्योंकि सामाजिक रुतबे के हिसाब से रसेल स्मिथ से ऊपर स्तर के थे ।

रोज एलमर से जॉन की दोस्ती हो जाने से लिजा मन ही मन खुश हुई । सोचा, अब जॉन केटी की कमी का दुःख भूल सकेगा । इसलिए बीच-बीच मे रोज को वह अपने घर बुला लाया करती । लेडी रसेल के

निमंत्रण पर वह भी उनके यहाँ जाती। जॉन और रोज का परिचय प्रेम का रूप ले चुका है, अपनी स्त्री-सुलभ बुद्धि से वह समझ गई।

एक दिन लिजा ने जॉन से कहा, रोज से ब्याह कर लो न।

पहले का जॉन रहा होता, तो यह बात उसे असम्भव नहीं लगती। लेकिन केटीवाली घटना से उसे ऐसी चोट लगी थी कि मन में एक दीनता का भाव स्थायी हो गया था। इसलिए उसने कहा, कभी यह भी कहोगी, जॉन, चाँद से ब्याह कर लो न।

ऐसा तो नहीं कह रही हूँ।

लगभग वैसा ही कह रही हो। जानती हो कि रोज लाट घराने की है?

उससे भी ज्यादा जानती हूँ। रोज के बाप ने फिर से शादी की है। इसी दुःख से तो वह यहाँ आई है।

वह जरा रुकी और फिर बोली, इस देश में, तुमसे अच्छा लड़का मिलेगा कहाँ?

जॉन ने कहा, शायद यह असंभव नहीं होता; लेकिन बीच में एक कवि आ टपका है।

वह कौन? लिजा ने अचरज से पूछा।

नाम है उसका वाल्टर लैंडर। रोजी की उम्र का है। कवि है शायद।

कहाँ रहता है?

देश में।

लिजा ने निश्चितता की साँस लेकर कहा, अरे वह देश में है तो तुम्हारे लिए कौन-सी बाधा है?

उसकी तसवीर। मैं रोज जो फूल ले जाकर उसे देता हूँ, वह उस तसवीर के चरणों चढ़ जाता है।

तसवीर से क्या डरना जॉन, वह तो महज छाया है।

छाया आती कहाँ से है, मन में काया है, तभी तो?

मन को उस काया को ठेलकर तुम आसन जमा लो। गैरहाजिर

कवि से मौजूद व्यापारी का दावा बड़ा है। तुम मेरी बात सुन लो जॉन, स्त्रियाँ लता जैसी होती हैं, सामने जिस पेड़ को पाती हैं, उसी से लिपट जाती हैं।

लंबी उसाँस छोड़कर जॉन ने कहा, मन के आदमी से बढ़कर पास कौन होता है!

फिर जरा चुप रहकर बोला, यह होने का नही लिजा, मिस एलमर जरा और ही प्रकृति की है।

लिजा हँस उठी। कहा, प्रकृति हर स्त्री की एक ही होती है। उसके लिए अंततः मन के आदमी से पास के आदमी की ही कीमत ज्यादा हो जाती है।

फिर तुम्हारे लिए इस नियम का अपवाद कैसे? तुम्हारे पास तो रिंगलर और मेरिडिथ दो वृक्ष मौजूद हैं।

यही तो आफत हो गई। किसपर लतराऊँ, यही सोचते-सोचते ब्याह की उमर निकल गई।

कुछ देर मे गंभीर होकर बोली, नही भाई, मैं ओल्ड मेड हूँ, क्वाँरी ही रहूँगी।

यह कैसी ख्वाहिश!

ख्वाहिश की भी कोई वजह होती है?

उसके बाद दिल से लिजा ने कहा, नही-नहीं, जल्दी ब्याह करो जॉन। पिताजी के चल बसने के बाद से घर भाँय-भाँय कर रहा है। और तुम्हे बेचारी एलमर की भी सोचनी चाहिए, वह अकेली है।

बहरहाल एक संगिनी ला दी है।

मैने उसे देखा है। इधर वैसी लड़की कम नजर आती है। पहले दिन अचानक देखा तो लगा, कोई यूरेशियन लडकी है।

अंगरेजी बोलने, और लिखने-पढ़ने मे तेज है।

फिर उसने लिजा को रेशमी की कहानी बताई।

एक नदी में दो बार नहाना संभव नहीं

दार्शनिकों का कहना है, एक नदी मे दो बार नहाना संभव नहीं। मनुष्य के बारे मे तो यह कथन और भी सत्य है। हर पल संचरण करने-वाली चेतना का प्रवाह मनुष्य का सहारा लिए चलता है। इस क्षण आदमी जो है, दूसरे क्षण वह वही आदमी नही रहता। एक ही आदमी से दो बार बात करना संभव नही। पानी का प्रवाह सतत परिवर्तनशील है, लेकिन नदी नही बदलती। चेतना का प्रवाह परिवर्तनशील है, मनुष्य-रूपी संस्कार का परिवर्तन नही होता। लेकिन गहरे डूबकर देखें तो पता चलेगा, नदी और मनुष्य, दोनों ही चंचल है। सभी नदी मे स्रोत का आवेग समान नही होता, सब मनुष्य मे चेतना का प्रवाह एक-सा गति-शील नही होता। महानदी और महापुरुष मे परिवर्तन की गति तेज होती है।

जो राम बसु मालदा गया था और जो राम बसु मालदा से लौटा, ये केवल तत्व-विचार से ही भिन्न नहीं है — व्यावहारिक विचार से भी उनके भेद साफ दीख जाते हैं।

बिना सूचना दिए पति को लौट आते देख अन्नदा झनक उठी — कहा नहीं, सुना नहीं और बस चले आए!

अच्छी वीणा और साध्वी पत्नी का बिना कारण झनकना स्वभाव होता है।

पहले की बात होती तो राम बसु जवाब देता, शायद कहता, अपने घर आना है, इसमें सूचना क्या देना! शायद यह कहता, साले के यहाँ जाऊँगा तो तुम्हें पहले खबर देकर जाऊँगा। इसी बात पर पति-पत्नी में एक झड़प हो जाती। लेकिन अभी उसने वैसा नहीं किया। सिर्फ जरा हँसकर बोला, अच्छा नहीं लगा, इसलिए चला आया। बहुत दिनों से तुम्हें देखा भी नहीं था।

हाय-हाय, प्रेम की बलिहारी ! |कहा और कंगन झनकाते हुए अपना हाथ उसने पति के मुँह के पास दो-चार वार हिला दिया।

उसका वेटा नरोत्तम यानी नारो नाढा दा के आने से खुश हो गया था। वह जा जुटा उससे।

अन्नदा ने गौर किया, राम वसु इस वार कैसा तो मुर्झाया हुआ-सा रहता है, चुपचाप, नही तो वाहर-वाहर घूमता रहता है।

राम वसु कहीं जा रहा था कि अन्नदा ने पूछा, किस मरघट मे जा रहे हो ?

अरे भई, एक नौकरी छोड़कर आया तो दूसरी खोजनी होगी न ? चलेगा कैसे ?

क्यों, लफंगेबाजी से। जाओ न, किरीस्तानो के साथ घूमा करो। कैसा मजा मिला, झाड़ू मारकर निकाल दिया न !

चादर कंधे पर रखकर राम वसु चुपचाप निकल गया।

झगड़े मे निरुत्तर पति पत्नी के लिए असह्य होता है। उत्तर-प्रत्युत्तर का वँटवारा कर लेना ही कलह का घरेलू नियम है। लेकिन दुर्भाग्य से जव दोनों पक्ष अकेले स्त्री को ही लेना पड़ता है, तो उससे जो आँच पैदा होती है, वह अड़ोस-पड़ोस पर पडती है जाकर। पति की मलामत को स्त्री प्रेम का रूपांतर समझ लेती है, लेकिन उसकी चुप्पी का मतलव होता है अवहेलना। भला कौन साध्वी स्त्री उसे सह सकती है ? राम वसु की चुप्पी की इस अवहेलना से अन्नदा अचानक ग्रीष्म के आँधी-पानी की तरह गरज उठी — ऐसे पत्थर के पाले पड़ी मैं ! —और फिर वैशाख-जेठ के वादल की तरह वह गरज उठी, हड्डी तक जल गई, अव मौत हो तो छुटकारा पाऊँ।

जो परिणाम होना चाहिए था वही हुआ। बगल की प्रौढा ब्राह्मणी आ पहुँची।

अरी ओ कायथ वहू, हो क्या गया ? इतने दिनों के वाद पति आया। भला ऐसे रोना चाहिए ?

पति घर आया तो मेरे सात पुश्त स्वर्ग मे गए ! मर जाऊँ तो चैन आए बाँभन दीदी ।

तो तुमसे सच कहूँ कायथ बहू — कहती हुई धीरे-धीरे बैठ गई और मीठे उपदेशो के साथ जहर मिलाकर — वैसा जहर औरतें ही मिला सकती है — कहा, सच्ची बात कहूँ, मर्द जरा स्त्रियो की सेहत भी चाहते है, केवल नकियाकर रोने से भी कही पुरुष का मन जीता जाता है। तुम तो काठ की पुतली हो — अगर मेरा कहा मानो —

बाँभन बहू को अपनी बात सुनाने का मौका न मिला। डोरी टूटे धनुष की तरह तनकर खड़ी हो गई अन्नदा — अरी, तुम्हें तो सात बाघ भी खाएँ तो खत्म नही कर सकते, लेकिन तो भी बाँभन दादा रात बाहर-बाहर क्यों बिताया करते है ? मै कहती हूँ, मुझे न छेड़ो।

इतनी बड़ी तोहमत के बाद भी बाँभन दीदी उखड़ी नहीं। धीरज के साथ धीरे-धीरे कहा, असली बात जानती नहीं हो न, इसलिए ऐसा सोचती हो। तुम्हारे बाँभन दादा श्मशान मे शव-साधना करते है तान्त्रिक है न।

जानती न होती मैं तो उड़ाती। श्मशान है सोनागाछी और शव है खेंतीमनि।

चुटकी भर तम्बाकू मुँह में डालकर मजे में चबाती हुई बाँभन दीदी ने कहा, अच्छा, इतना पता रखती हो! तुम्हारी उनसे भेंट हुई थी, या तुम्हारा भी उधर आना-जाना होता है ?

अरी री मुँहझौंसी —

इसपर बाँभन दीदी उठी और धीरता से जाते हुए उसने बचा-खुचा विष उड़ेल दिया — अब से बाँभन को रात में इतनी दूर न जाने दिया करूँगी — कह दूँगी, बगलवाले घर में ही शव का डौल बैठ गया है — वह चंडाल का शव खोज रहा था न !

इसका जवाब मनुष्य की भाषा में संभव नहीं, यह समझकर अन्नदा झाड़ू खोजने लगी थी। जब वह हथियार के साथ पहुँची तो देखा, दुश्मन

जा चुकी है। लिहाजा जी का गुबार मिटाने के लिए उस जगह पर झाड़ू मारने लगी, जहाँ दुश्मन बैठी थी, मर जा, सूखकर सोंठ होते-होते मर जा।

टुशकी ने कहा, कायथ दा, अब की तुम्हारे लच्छन और ही लग रहे हैं।

कैसे ?

पहले जैसी बातचीत नहीं है।

राम बसु ने कहा, हाँ, अब बातों का फूल खिलाना नहीं, अब जड़ को गहराई में चला रहा हूँ।

वहाँ रस कौन जुटाती है, गौतमी ? टुशकी ने पूछा।

राम बसु ने हँसकर कहा, कौन, वह इत्ती-सी लड़की ? उसकी क्या मजाल है ?

रेशमी ने कह रखा था, कायथ-दा, मेरा यह नाम और गाँव का नाम किसी से कहिएगा मत। मुंह में कालिख पुती है, कोई पहचान लेगा !

राम बसु ने कहा, चंडी बख्शी का भी खतरा है।

सो नाढ़ा और राम बसु रेशमी को गौतमी ही कहते थे।

टुशकी ने कहा, उसे ले आओ न किसी दिन। देखने को जी चाहता है।

उसे ले आना इतना आसान नहीं है। अब वह साहब के यहाँ की दाई है। मेम साहब बहुत चाहती है उसे।

तो एक दिन मुझे ही वहाँ ले चलो।

क्या परिचय दूँगा तुम्हारा ?

कहना, मै उसकी दीदी हूँ।

खैर, देखता हूँ। आजकल मुझी को मिलने का मौका कम मिलता है।

टुशकी ने कहा, इतने दिनों के बाद आए। आज रात यहीं रहो न।

कुछ सोचकर राम वसु ने कहा, नहीं, आज रहने दो।

कायथ भाभी के डर से ? कैसी है भाभी ?

बस, तुम्हारे चरखे जैसी। जितना धागा कातता है, उससे ज्यादा उलझाता है और घरर-घरर उससे भी ज्यादा करता है।

टुशकी ने कहा, वाह, कितना सुखी है तुम्हारा जीवन !

राम वसु ने कुछ कहा नहीं। एक लंबी उसांस दबा गया।

टुशकी से विदाई लेकर राम वसु निकला और बेमतलब इस रास्ते उस रास्ते चलता रहा।

पहाड़ की चोटी पर सूखा ईंधन जमा था। वह जानता था, एक न एक दिन बिजली गिरेगी और जलते हुए दावानल से सार्थक होगा मेरा जीवन। वह बिजली सहसा गिरी, ईंधन की आग ने जलते हाथ ऊपर उठाकर कहा, मेरी प्रतीक्षा धन्य हुई, सार्थक हुआ मेरा जीवन। जितना जलाओगे, सार्थकता उतनी ही ज्यादा होगी।

राम वसु का मन इसी चोटी के ईंधन के ढेर-सा था, रेशमी थी बिजली। मध्ययुग में जीवन का मानदंड था पाप और पुण्य। नए युग ने उस पुराने मानदंड को बदल दिया, नया मानदंड स्थिर किया — सुन्दर और असुन्दर। नए युग की नजर में सुन्दर ही पुण्य है, असुन्दर पाप। नवीन युग है शिल्पी, मध्ययुग साधक। नए युग के पहले आदमी राम वसु की नजरों में सुन्दरता की अरुणिमा रेशमी के दिव्य सौन्दर्य से उद्घाटित हुई। राम वसु प्रच्छन्न कवि था।

वह जब आपे में आया, तो पाया कि वह रसेल साहब के मकान के पास आ निकला है। सोचा, मिल ही क्यों न लूं जरा। बगीचे की ओरवाले दरवाजे के पास जाकर आवाज दी — रेशमी ! रेशमी !

अलक्षित प्रेम

राम वसु ने पूछा, क्यों री रेशमी, कैसा लग रहा है ?

रेशमी बोली, मै सोच भी नही सकी थी कि मेरे नसीव में इतना सुख होगा। रोजी दीदी मुझे बहुत चाहती है।

और बड़े साहब, मेम साहब ?

उनसे मुलाकात ही बहुत कम होती है और होती भी है तो मै उनके पास थोड़े ही जाती हूँ ? दूर से ही सलाम कर लेती हूँ। उनका महल अलग है।

और कौन-कौन आते है ?

आनेवालों में से एक को तो आप पहचानते है — जॉन साहब।

और दूसरा ?

महाजन साहब।

यह महाजन फिर कौन बला है ?

पूछिए मत, जितना मोटा, उतना ही लंबा। पेट का घेरा कुम्हार का चाक जैसा। ऐसे को महाजन नही तो और क्या कहूँ ?

और कोई नही आता ?

इन दो के सिवाय और चाहिए ? खास करके यह महाजन जो है, सो अकेले ही एक सौ के बराबर। कैसे ?

कमरे मे बात करता होता है, तो छत काँपती रहती है।

और तू काँपती नहीं ?

मै काँपती हूँ या नहीं, नहीं जानती, मगर जॉन साहब काँपता है।

क्यों ?

क्यों ? गुस्से से, डाह से। एक कोने मे बैठा काँपता रहता है और अंत मे उठकर बाहर चला जाता है।

चला क्यों जाता है ?

क्यों क्या ? आप इतना समझते हैं, यही नहीं समझते ? दोनों रोजी से प्यार करते हैं। लेकिन जॉन उस महाजन से क्या पार पा सकेगा ?

तेरी रोजी दीदी किसे चाहती है ?

महाजन कुछ ऐसी कच्ची गोटी थोड़े ही है कि उसे चाहना होगा। वह पुराने दामाद जैसा बेफिक्र आया करता है।

और जॉन साहब ?

वह उतरा-सा मुँह लेकर चला जाता है।

बेचारा ! तब तो उसे बड़ी तकलीफ है।

तकलीफ होती तो आता क्यो है। वैसे औरतानी मर्द को कौन-सी लड़की पसंद कर सकती है ? रेशमी ने ये बातें जरा तुनककर कहीं।

देख रहा हूँ, तू भी महाजन की ही तरफ है।

चारा भी क्या है उसके बिना। बेशक मर्द है वह।

ओ, यह बात है ! तो द्रौपदी होकर सैरन्ध्री बनी कब तक रहेगी ?

जब तक कीचक का काम तमाम नही हो जाता ?

कीचक ? कीचक कौन ?

क्यों ? चंडी चाचा ! पता चला कुछ उसका ?

नजर तो नहीं आया कभी। हो सकता है, अब सब भूल गया हो।

पागल हुए हैं आप ? बर्रे पानी में सात हाथ नीचे तक जाकर काटता है और चंडी बख्शी सत्तावन हाथ !

ऐसा है तो तू बड़ी सुरक्षित जगह मे है।

इसमे क्या शक। और भूले-भटके कभी इधर आ भी निकला, तो यहाँ भीमसेन मौजूद हैं ही।

कौन भीमसेन ?

यही महाजन साहब।

रेशमी हँसी।

तो अब चलता हूँ रेशमी।

कभी-कभी आ जाया कीजिए। एक दिन नाढ़ा को साथ ले आइए।

'कोशिश करूँगा' कहकर राम वसु चला गया।

कमरे में अकेली पड़ी-पड़ी रेशमी रोज एलमर, जॉन और कर्नल रिकेट के बारे में सोचने लगी।

कुछ फल ऐसे होते हैं, जो बाहर से पकना शुरू करते हैं और उसकी परिणति आखिर एक दिन अंदर होती है। और एक तरह का फल ऐसा होता है, जिसका परिवर्तन शुरू होता है अंदर से, बाहर देखने पर लगता है, कच्चा है। उसके बाद जब बाहर रंग चढने लगता है तो समझना चाहिए कि उसमें कहीं भी रत्ती भर कोर-कसर नहीं। रेशमी इस दूसरे फल जैसी थी। फुलकी उसे ज्ञान के वृक्ष का पता दे गई थी और उसके बाद एक रात राम वसु ने उस पेड़ का मोहक फल उसके हाथ पर रख दिया। रेशमी न तो उसे फेंक सकी, न निगल ही सकी। क्या करना चाहिए, यह न समझ पाकर उसने उसे आँचल में बाँध रखा। लेकिन ज्ञान-वृक्ष के फल को कोई न चखे तो उसका कोई प्रभाव ही न होगा, ऐसी बात नहीं। उसकी खुशबू से हवा भर जाती है और जी उतावला हो उठता है, उसकी सुन्दरता से मन रंगीन हो उठता है, उसकी मीठी आँच से मन तपता रहता है। बेचारी रेशमी जानती न थी, कोई कहता भी तो नहीं मानती कि उसका अंदर पकने लगा है। उसने एक दिन राम वसु से कहा था कि उसका सारा कुछ चिता की आग में स्वाहा हो गया है। लेकिन सब कुछ भी जलता है कहीं? सोना और वासना भी कहीं आग में जल सकती है? जलती होती तो वासना की ताडना से मृत्यु के बाद भी अशरीरी प्रेत क्यों घूमता रहता है, ऐसा नहीं होता। चिता की लपटों में रेशमी का सिर्फ हिन्दू नारी का संस्कार जला था। नारी-हृदय नहीं। बंधन जल गया था, वासना बची थी। शायद हो कि वासना निस्तेज-सी हो गई हो उसके जीवन में, लेकिन अब वह एक ऐसे परिवेश में आ गई थी, जहाँ सारा कुछ वासना के अनुकूल था। जाना-सुना आचार-विचार, शास्त्र-संस्कार जाने कितनी दूर छूट गया। फिर रोज एलमर की रोज-रोज जो प्रेम-लीला उसकी नजरों

के सामने चल रही थी, उसके ताप से उसका तन-मन उत्तप्त हो रहा था। उस शराब के छींटे उसे छू जाते, उसकी तीखी नशीली महक नाक से अंदर जाकर उसे मतवाली कर रही थी, तपा रही थी। वह रोज एलमर की आड़ लेकर प्रेम करती थी। लेकिन किससे ?

स्त्री-सुलभ अशिक्षित पटुता से उसने समझ लिया था कि उस गँवार कर्नल को कोई आशा नहीं। आँधी के वेग से लतर झुकती है, उखड़ती नहीं। कर्नल के सामने एलमर की ठीक यही दशा थी। इसलिए कर्नल से रेशमी को जलन नहीं होती। लेकिन जॉन की बात ही जुदा थी। रेशमी समझती थी कि एलमर जॉन के अनुकूल है। एक बाधा है तो वह तसवीर। पता नहीं, उस तसवीर के व्यक्ति के लिए एलमर कृतज्ञता का भाव क्यों अनुभव करती। जॉन को आते देखती तो उस तसवीर पर और भी ज्यादा फूल डाल दिया करती। जॉन का चेहरा स्याह पड़ जाते देख उसे बड़ी खुशी होती।

उस रोज रोज एलमर का जन्म दिन था। जॉन बन-ठनकर उसके लिए बहुत-सा उपहार ले आया। आकर देखा, फूलों के गुच्छों से तसवीर खूब सजी है। धूपदानी से अगुरु की सुगंध आ रही है। जॉन का मन डूब गया।

रोज ने कहा, जॉन, देखो, कैसे भारतीय ढंग से सजाया गया है।

जॉन सिर्फ 'हूँ' करके रह गया।

पास ही खड़ी थी रेशमी। जॉन ने उसकी ओर रोष भरे कटाक्ष से ताका। रेशमी ने कौतुक भरे आनंद का अनुभव किया।

दूसरे एक दिन की बात है। जॉन के आने पर रोज ने कहा, देखो जॉन, रेशमी मुझे कितना प्यार करती है! उसने तसवीर के पुराने फ्रेम को हटाकर चंदन की लकड़ी का फ्रेम लगा दिया है!

रेशमी ने राम बसु के मारफत चीनाबाजार से चंदन की लकड़ी का वह फ्रेम मँगवाया था। कहना फिजूल है, यह किसी के प्रति प्रेम नहीं था उसका, सिर्फ इसलिए कि इससे जॉन को चोट पहुँचेगी।

जॉन ने कहा, ठीक है।

बस, इतना ही कहा। अरे, उसे धन्यवाद तो दो।

जॉन ने दबे गले से कहा, धन्यवाद। यह लगभग डैम-सा ही सुनाया। उसकी रंजिश से रेशमी के होठों पर हँसी की रेखा फूटी। रेशमी की हँसी से जॉन को आग-सी लग गई। वह बोला, मिस एलमर, मैं शायद दो-चार दिन यहाँ नही आ सकूँगा।

एलमर ने व्यस्त-सी होकर पूछा, क्यों?

रेशमी अपने मन मे बोली, अरी, इतनी घबरा मत, चौबीस घंटे बीतते न बीतते बंदा खुद ही आकर हाजिर होगा।

जॉन ने कहा, मै जरा सुन्दरवन जाऊँगा।

रेशमी मन ही मन बोली, अजी जनाब, एक बार जाकर शौक पूरा नहीं हुआ? उस बार तो केटी को खोया, अब की बपौती जान को भी खोने का शौक चर्राया है क्या?

रेशमी ने केटी की कहानी राम बसु से सुन रक्खी थी।

जॉन को यह मालूम था कि मिस एलमर पशुओं का वध नहीं पसंद करती। सो उसने कहा, शहद की खोज में जाना है।

रेशमी मन मे बोली, और यहाँ के शहद की उम्मीद छोड दी?

रोज ने कहा, थोडा-सा मुझे देना।

फूलकर जॉन ने कहा, तुम लोगी शहद? इनडीड!

फिर उसने पूछा, क्या करोगी? खाओगी?

नहीं। शहद मुझे अच्छा नहीं लगता। रेशमी कह रही थी, अगर बढ़िया शहद मिले, तो वह तसवीर को भारतीय तरीके से आफरिंग देगी।

जॉन का चेहरा स्याह पड़ गया। बोला, ठीक है। मिलेगा तो दूँगा। आजकल सुंदरवन मे बढिया शहद नहीं मिलता।

क्यों, सब क्या मोशिए दुबोया चाट गया? रेशमी ने अपने मन में कहा।

रेशमी को दूसरे एक दिन की बात याद आई। जॉन के आते ही मिस

एलमर ने उमगकर कहा, जॉन, आज तुम्हारे नसीब में एक सर-प्राइज है।

लेकिन सुखद होगा, ऐसी आशा है।

बेशक।

इस जुही की माला को देखो!

वाह! बहुत सुंदर।

यह तो कहो, यह गूँथी किस चीज से गई है?

यह मैं कैसे बताऊँ?

मेरे बाल से।

वण्डरफुल! हेवन्ली! रोजी, मुझे दो।

तुम्हें? इसे तो तसवीर पर देने के लिए रेशमी ने जाने किस जतन से तैयार किया है।

जॉन कुछ रूखा-सा जवाब देने जा रहा था कि उसे पर्दे की आड़ में रेशमी की मुसकराती आँखें नजर आईं। मुँह फेरकर जॉन खिड़की के पास जाकर खड़ा हो गया।

कर्नल रिकेट के कमरे मे आते ही रेशमी को जमीन तक झुककर उसे सलाम करते देख जॉन के बदन में आग लग जाती। वह उसकी कुर्सी मिस एलमर के पास रख देती। और जॉन को सलाम की कौन कहे, मानो आदमी ही नहीं समझती वह। उसकी कुर्सी अगर एलमर के पास भी होती, तो उसे करीने से रखने के बहाने कुछ दूर खिसका देती। जॉन ने ऐसा भी पाया कि जब कर्नल कमरे मे आता तो वह सादर कमरे से बाहर हो जाती, लेकिन जॉन के रहते वह कमरा छोड़ना नहीं चाहती। बाहर जाती भी तो परदे का हिलना साबित करता कि वह पास ही खड़ी है। एक अव्यक्त क्रोध से जॉन जलता रहता और दूसरी ओर रेशमी उतना ही कौतुक अनुभव करती।

उस दिन का वाक्य याद आया रेशमी को। उस रोज तो वह मन ही मन खूब हँसी थी। आज भी हँसी आ गई। छोटे बच्चे जिस प्रकार

चोरी की हुई मिठाई का स्वाद छिपकर लिया करते हैं और पकड़ जाने के डर से फिर उसे छिपा लेते है, रेशमी उसी प्रकार इस अभिज्ञता का स्वाद लेती।

कमरे के अंदर आकर जॉन ने देखा, एलमर वहाँ नहीं है। पूछा, मिस एलमर कहाँ है ?

रेशमी ने कहा, वाहर गई है।

वाहर कहाँ ?

सो नहीं जानती।

किसके साथ गई है ?

रेशमी को कहना चाहिए था, अकेली। क्योंकि एलमर अकेली ही निकली थी। लेकिन वैसा न कहकर 'अश्वत्थामा हत इति गज' जैसा उसने कहा, आम तौर से मिसी बावा कर्नल साहव के सिवा और किसी के साथ वाहर नहीं जाती।

खोद-खोदकर जिरह करने की प्रवृत्ति नही हुई जॉन को। वह गंभीर होकर खिड़की के पास खड़ा रहा।

रेशमी ने उसकी ओर कुर्सी वढाते हुए कहा, वैठिए।

रहने दो। यहीं अच्छा लग रहा है। हवा लग रही है।

रेशमी ने उदास भाव ने कहा, सिर गरम हुआ हो तो पंखा खींचने को कहूँ।

जॉन को असह्य लगा। कड़ा जवाव देने की सोचकर उसकी ओर ताका कि अवाक रह गया। अव तक जॉन ने उसे ठीक से देखा नहीं था। आज लगा, अरे, यह तो मामूली सुदरी नहीं है। रोज एलमर उसे पेटीकोट पहने शारदीया ऊपा-सी लगी थी, रेशमी ऐसी लगी, मानो साडी-समीज पहने वसंत की संध्या हो। हाँ, उन्माद वनाने की जो शक्ति इन ओरियंटल लड़कियों मे है, वह सौंदर्य ठंडे देश की लड़कियों मे कहाँ ?

अवाक होकर यों ताकते रहना अभद्रता है, कुछ वोलना चाहिए, सो जॉन ने कहा, रेशमी वीवी, तुम वड़ी सुंदरी हो।

आपकी प्रशंसा से मैं तो वेशक खुश हुई, मगर यह बात कहीं मिसी बाबा के कानों पहुँचे, तो वह क्या ऐसी ही खुश होंगी ?

क्यों, इसमे नुकसान क्या है ?

लाभ-नुकसान की वह जाने।

जो भी हो, उसका कान तो यहाँ है नही।

मैं ही उनके कानो तक यह बात पहुँचाऊँगी।

कुछ तो हार्दिकता से और कुछ उसे खुश करने के लिए जॉन ने कहा, बड़ी होशियार हो तुम।

मेरे ये सब गुण आज एकाएक आविष्कृत हुए क्या ?

जॉन ने उसकी बात का जवाब नहीं दिया। कहा, अँगरेजी का ऐसा उच्चारण इस देश की लड़कियों के मुँह से नही सुना है।

देशी लड़कियों से काफी रब्त है, क्यों ?

तुम्हारी वाक्पटुता गजब की है रेशमी बीबी।

इतने में मिस एलमर कमरे मे आई। जॉन को डर लगा, कहीं यह सारी बातें कह न दे।

मिस एलमर ने पूछा, कब आए ?

जॉन कुछ कहे, इसके पहले ही रेशमी बोली, आ ही रहे है।

जॉन समझ गया, रेशमी उसे कुछ बताएगी नही। इसलिए, उसकी प्रशंसा का जो मनोभाव था, उसमे कृतज्ञता का भाव मिल गया।

इन स्मृतियों की जुगाली करती हुई रेशमी सो गई। उसने सपना देखा। देखा कि आसमान में तीन तारे जल रहे है! गौर किया तो लगा, ये तीन तारे तीन शकल के हैं — मिस एलमर, कर्नल रिकेट और जॉन स्मिथ। एकाएक जॉन स्मिथवाला तारा टूट गिरा। अरे, यह सितारा तो खिड़की की तरफ दौड़ा आ रहा है। जॉन खिड़की के पास ठिठक गया।

अरे, वहाँ क्यों रुक गए ? अंदर आओ।

नहीं, नहीं। मिस एलमर है!

तो फिर आए क्यों थे ?

सिर्फ यह कहने के लिए कि तुम खूबसूरत हो।

रेशमी को नींद टूट गई। उसके कान में संगीत-सा गूंजता रहा, रेशमी, तुम बड़ी खूबसूरत हो ; रेशमी तुम बड़ी खूबसूरत हो !

जिस लड़की ने कभी पुरुष के मुँह से यह प्रशंसा नहीं सुनी, उसका नारी-देह धारण करना बेकार है। लेकिन ऐसी लड़कियाँ क्या वास्तव में हैं ?

बिस्तर से उठकर रेशमी आईने के सामने जा खड़ी हुई। स्वप्न के ओस-बिंदु से मुखड़ा अलौकिक हो उठा था। उसने एक बार बाल सम्हाल लिया और तकिए मे अपना लंबा निश्वास दबाकर सो गई।

सुबह होने में अभी काफी देर थी।

सुरा-साम्य

राम बसु घर लौट रहा था कि पीछे से आवाज आई — मिस्टर मुंशी !

कौन पुकार रहा है ? पीछे मुड़कर देखा, मि० स्मिथ उसकी ओर चला आ रहा था।

अरे, मिस्टर स्मिथ ! गुड इवनिंग। क्या खबर है ?

गुड इवनिंग। इधर कहाँ आए थे ?

बहुत दिनों से रेशमी को नहीं देखा था। मिल आया। आपसे भी एक जमाने के बाद भेंट हो रही है। कुशल तो है ?

कुशल ही कहिए। अच्छा मिस्टर मुंशी, आपको क्या जल्दी है ?

मुझे कभी जल्दी नहीं रहती। जो काम सामने आ जाता है, उस

समय मेरे लिए वही बड़ा काम होता है।

तो आपके सामने ऐसा काम कौन-सा है ?

घर लौटना।

मगर मैं अगर थोड़ी गप-शप के लिए आग्रह करूँ ?

तो फिर वही एक मात्र काम हो जाएगा मेरा।

आपकी मिसाल नही मिस्टर मुशी !

अपना भी यही ख्याल है।

जॉन ने कहा, वगल मे ही तो घर है मेरा। चलिए, जरा देर कुछ गपशप हो। अभी रात भी कुछ ज्यादा नही हुई है।

राम वसु ताड़ गया, जरूर कोई न कोई मतलव है, नहीं तो कोई गोरा किसी काले को इस तरह अपने यहाँ नहीं बुलाता।

चलिए।

जॉन उसे साथ लेकर घर पहुँचा। लिजा से वोला, देखो, मैं ड्राइंगरूम में वैठकर जरा मुशी से स्कॉलरली डिसकसन करूँगा। अभी वहाँ कोई न जाए। लिजा ने हँसकर कहा, अच्छा-अच्छा, कोई नही जाएगा। लेकिन ब्रांडी सोडा भिजवा दूँ ? मैंने सुना है, स्कॉलरली डिसकसन के लिए ये दोनों चीजें अहरिहार्य है।

जॉन ने मुस्कुराकर कहा, गलत नही सुना है। भिजवा दो।

सोडा के साथ ठीक अनुपात में मिली हुई ब्रांडी का वहुत वड़ा गुण यह है कि उससे उम्र, विद्या, लिंग, जाति, वर्ण, भाषा आदि सारे ही लौकिक गुण पल में काफूर हो जाते है। यहाँ भी इस नियम का अपवाद नहीं हुआ। जरा ही देर में जॉन का सादा चमड़ा भूरा और मुंशी का काला चमड़ा फीका होते-होते दोनों मित्रता की सरहद पर पहुँच गए — और तव आमने-सामने रह गए महज दो आदमी ; उम्र , रंग, विद्या आदि का तुच्छ भेद मेढकी के वच्चे की दुम-सा गायव हो गया।

मुंशी, यू आर ए जॉली गुड फेलो।

सो यू आर जॉन।

मिस्टर मुशी, आप लोगों का हिन्दू रिलीजन एक आश्चर्य वस्तु है।

अपना भी यही ख्याल था, लेकिन जब से इन पादरी ब्रदर-इन-लॉ लोगों से परिचय हुआ है, तब से मायूस हो गया हूँ।

आपने पादरियो को ब्रदर-इन-लॉ क्यो कहा ?

बंगला मे यह शब्द सबसे ज्यादा आदर का है।

इनडीड ! क्या है बंगला उसका ?

साला।

जॉन ने उच्चारण किया — सा-ला। खूब ! फाइन साउंडिंग वर्ड।

सा....ला। हाउ आइ विश मिस एलमर्स ब्रदर्स आर माइ साला !

फिक्र न करो, होगा।

जॉन ने आवेग से काँपते हुए स्वर मे पूछा, कैसे जाना आपने ?

आपने हिन्दू धर्म की बात अभी कही न, उसी की कृपा से।

ऐसी कोई चीज नहीं, जो अपने प्राचीन शास्त्र मे नही है।

इनडीड !

अब तुम्हारा एक प्रतिद्वंद्वी हो गया है।

यह कैसे जाना ?

मुशी ने इस बात का उत्तर न देकर कहा, आदमी वह बडा मोटा है।

गजब !

वह जंगी सिपाही है।

बिलकुल सही।

बहरहाल मिस एलमर उसकी तरफ झुकी हुई है।

प्रश्न और रुलाई के बीच के स्वर मे जॉन बोल पड़ा, तो मेरा क्या होगा मुशी ?

ऋषि-वचन की गंभीरता से मुशी बोला, एलमर तुम्हारी ही होगी।

ऋषि-वचन से कुछ आश्वस्त होकर जॉन बोला, आपका चिरकृतज्ञ रहूँगा, कोई उपाय कर दें।

ठीक है, वही होगा। बसुजा ने कहा।

मैंने सुना है, आपके शास्त्रों के योगिक राइट्न से असंभव को संभव किया जा सकता है ?

शास्त्र के गौरव से राम बसु की छाती फूल गई। संक्षेप मे कहा, बेशक, किया जा सकता है ! लेकिन उसमे खर्च है।

खर्च करने मे मुझे एतराज नहीं। आप जरा कोशिश करके उस कम्बख्त जंगी सिपाही को अंटाचित्त कर दें। आदमी वह पावरफुल है, पर आपकी कोलीगोट (कालीघाट) की कोली (काली) ऑलमाइटी है।

जरूर ! और काली के सम्मान को बसु आत्मसात कर गया।

जॉन ने कहा, तो आप जल्द ही इंतजाम करें।

फिक्र न कीजिए, मैं कल ही योग-क्रिया के जो सबसे बड़े एक्सपर्ट हैं, उनसे भेंट करूंगा। उनकी क्रिया यानी फक्शन से हाथों हाथ फल यानी हैंड टु हैंड फ्रूट मिलता है।

आप वही करें। तब तक यह लीजिए — कहकर जॉन ने मुंशी के हाथ में कुछ रुपए रख दिए !

मुंशी ने कहा, आप देखें तो सही, आपके राइवल ब्रदर-इन-लॉ को कैसा मजा चखाता हूं।

अरे, आपने शुरू में ही दगा करना शुरू कर दिया ?

मुंशी अचंभे में पड गया। — कैसे ?

आपने उस गँवार के लिए उस मोस्ट एनडियरिंग टर्म का इस्तेमाल किया।

राम बसु ताड़ गया, उसकी व्याख्या में ही भूल का मूल है। कहा, अफसोस है मुझे ! भूल हो गई।

नेवर माइंड मैन ! अब आप जैसे भी हो, इतना कर दें कि मिस एलमर का भाई मेरा ब्रदर-इन-लॉ हो सके। ब्रदर-इन-लॉ के लिए क्या तो कहा था आपने ?

साला।

सा....ला ! फाइन ! इट टेस्ट्स ऐज स्वीट ऐज मिस एलमर !

सा-ला ! होनेवाली जीत की उम्मीद में वह इतना उमग उठा था कि सोडा डालकर दो ग्लास ब्रांडी भरी और एक ग्लास वसुजा के हाथ में देकर कहा, मुशी जी, अलग होने से पहले लेट अस ड्रिंक टु दी ऑनर ऑव इटरनल, युनिवर्सल, एवरप्रेजेंट, आल पावरफुल —

राम वसु ने कहा, ब्रदर-इन-लॉ ।

जॉन ने कहा, नो-नो, आपका शब्द कही ज्यादा मीठा है, सा-ला ।

तव दोनों ने साथ कहा, सा-ला ।

अग्निमय पानीय यथास्थान पहुँच गया ।

विदा होते हुए राम वसु ने कहा, घबराने की बात नहीं, मैं कल ही एक्सपर्ट ओपिनियन लेता हूँ — हैड टु हैड फूट मिलेगा ।

जॉन ने कहा, हुंः, इस ईसाई धर्म में कुछ नहीं रक्खा है । मैं कल से ही 'हिन्दू स्टूअर्टों' के यहाँ जाना-आना शुरू करता हूँ ।

रूपचाँद पक्षी

दूसरे ही दिन राम वसु पटलडांगा जाकर रूपचाँद पक्षी के यहाँ हाजिर हुआ ।

रूपचाँद पक्षी का माँ-बाप का दिया हुआ नाम सनातन चक्रवर्ती या ऐसा ही कुछ था । महापुरुषों के जीवन मे अक्सर यह बात पाई जाती है कि उनके अपने कमाए परिचय से कौलिक परिचय दब जाता है । रूपचाँद पक्षी की बाबत भी उस नियम का अपवाद नहीं हुआ । स्वोपार्जित रूपचाँद पक्षी नाम ने पैतृक सनातन न नाम को दबाकर गायब कर दिया था ।

उन दिनों ऐसा था कि जो महापुरुष एक बैठक में लगातार एक सौ

आठ चिलम गाँजा पी सकते थे, उन्हें एक ईंट मिलती थी और इस तरह एक-एक ईंट जमा करके जो अपना मकान बना लेते थे, उन्हें पक्की की उपाधि मिलती थी। उस जमाने के कलकत्ते में पक्की डेढ़ थे। पटलडांगा के रूपचांद पूरे और बागबाजार के निताई आधे पक्की थे। आधे पक्की का मतलब यह कि वैसी कमाई से मकान की चार दीवारें खड़ी करके निताई अचानक चल बसा। सो लोग उसे हाफ पक्की कहते थे। सच पूछिए तो पक्की एक रूपचांद ही था। निताई की बात आती, तो रूपचाँद दुःख के साथ कहा करता, छोकरे में इल्म था, अचानक गुजर नहीं गया होता, तो पूरा पक्की हो जाता। और फिर भविष्य के लिए खेद प्रकट करते हुए कहता, अब वे पुरानी प्रथाएँ तो उठती गईं लगभग, मेरे जैसे दो-एक जने गुजरे कि सब साफ। आज के छोकरे मसें भींगते न भींगते एले-बेले पढ़कर फिरंगियों के यहाँ नौकरी पाने के लिए बेचैन हो उठते हैं। कौलिक प्रथा को बनाए रखने का आग्रह किसी में नहीं है। दिन-दिन क्या होता जा रहा है यह? एँ! — और वह चिलम ढूंढने लग जाता।

जो भी हो, रूपचाँद को यह भरोसा था कि अपनी जिंदगी में वह इस प्रथा को लुप्त नहीं होने देगा। कहना फिजूल है, अपनी यह प्रतिज्ञा उसने रखी थी।

शहर के बहुतेरे संभ्रांत घरों के उठती उमर के छोकरे रूपचाँद के अड्डे पर नियमित रूप से आया-जाया करते थे — और यह कहना बेकार है कि वहाँ वे कुछ शास्त्रचर्चा नहीं करते थे। पादरियों के संपर्क में आने से पहले राम वसु भी उसके अड्डे पर जाया करता था। परिचय उसी सिलसिले में हुआ था। राम वसु को पता था कि इस मुख्य गुण के सहायक और भी अनेक गुणों का अधिकारी है रूपचाँद पक्की। जंतर-मंतर, झाड़-फूंक और तांत्रिक क्रिया-कर्म की भी उसे खूब जानकारी थी। और इसी भरोसे राम वसु ने जॉन की प्रार्थना मान ली थी।

दरवाजा खटखटाते ही अंदर से बड़े रूखे स्वर में किसी ने कहा,

कौन है, कौन ? इतना सवेरे-सवेरे ?

दरवाजा खोलिए पच्ची महाशय, जाना-चीन्हा आदमी हूँ।

दरवाजा खोलकर एक मूर्ति बाहर आ खड़ी हुई। एक लंबा-सा कंकाल। घुटने तक मैली धोती। बदन नंगा। पैरों में खड़ाऊँ। जीर्ण जनेऊ। गढ़ों में धँसी हुई चमकती आँखें। मुखमंडल का बाकी हिस्सा — गाल, कपाल, ठोढ़ी आदि — शिकनों से भरी। सफेद बाल। काँटों-सी खड़ी दाढ़ी-मूँछ भी सफेद। उम्र पैंतीस भी हो सकती है और पचहत्तर भी। कोई बाधा नहीं।

जी, प्रणाम !

गौर से देखकर गले में जैसे काँसे को बजाकर पच्ची ने कहा, अरे, वसुजा ! जमाने के बाद ! एकाएक पहचान नहीं पाया। तो ? मजे में हो ? बैठो-बैठो।

एक टूटी चौकी पर दोनों आदमी पास-पास बैठ गए।

कैसे हैं आप ?

अरे अब कैसे का क्या, अब चल बसूँ, यही ठीक है।

कहते क्या हैं आप ? अभी ही चल बसने से कैसे चलेगा ?

रहकर ही क्या कर रहा हूँ। आज के बाबू-भैयों के छोकरे इधर आना ही नहीं चाहते। कम्बख्त फिरंगियों की देखा-देखी सबने शराब शुरू कर दी है। शराब में है क्या भला ? — जिज्ञासु आँखों से पच्ची ने वसुजा की तरफ ताका।

कुछ कहना ही चाहिए, यह सोचकर वसुजा ने कहा, जमाने का धर्म है, क्या कीजिएगा ?

भला यह भी कोई जवाब है ? तुम तो किरीस्तान हो गए।

कुछ देर तक ऐसी ही बातें होती रहीं। फिर पच्ची ने पूछा, तो ? किस इरादे से चले ?

राम वसु ने अपने आने का कारण बताया। पच्ची ने सब कुछ बड़ा गंभीर होकर सुना और कहा, हो जाएगा। लेकिन काम यह खर्चे

का है।

आप पैसों की चिंता न करें। बहरहाल कुछ रख लें। — वसुजा ने उन रुपयों में से कुछ उसे दिए, जो जॉन ने दिए थे।

रुपए के स्पर्श से पची के शरीर में मानो बिजली छू गई। वह सम्हल-सम्हलकर बैठा। बोला, और कुछ नहीं, बँगला पूजा करके एक वशीकरण कवच तैयार करना पड़ेगा ; लेकिन सबसे पहले कालीघाट में षोड़शोपचार पूजा देनी होगी।

इन सबमें कोई कमी न होगी, लेकिन मेम साहब भला कवच पहनना चाहेंगी ? सारा कुछ तो उससे छिपाकर किया जा रहा है न !

हाँ, सो तो है बात। कुछ देर तक उसने सोचा और फिर कहा, देखो, शास्त्र में सभी प्रकार का विधान है। किसी प्रकार से कवच को एक बार मेम साहब के माथे से छुलाकर उनके सोने के कमरे में तो रख दे सकते हो न ?

राम वसु ने कहा, हाँ, यह हो सकता है।

पची ने कहा, तब काम बन जाएगा।

अच्छा, आपसे एक बात पूछूँ, कलयुग में कवच-तावीज का कोई नतीजा होता है ?

सुनो भैया, मानो तो देवता, नहीं तो पत्थर — यही है तंत्र-मंत्र का रहस्य।

वह तो सही है। मगर बात यों है, इन म्लेच्छों पर इन सबका असर होगा ?

क्यों नहीं होगा ? स्टूअर्ट साहब को लो, जिसका नाम ही हिन्दू स्टूअर्ट पड़ गया, जो शालिग्राम की पूजा किए बिना एक बूँद पानी भी नहीं पीता, खुद से गंगा जल में अन्न पकाकर खाता है — जानते भी हो, यह सब कैसे हुआ ?

राम वसु को मान लेना पड़ा कि उसे इसका पता नहीं है।

उभरी हुई हड्डियोंवाले अपने पंजरे पर दो-एक बार थाप जमाकर

पत्री ने कहा, यह सब इसी बंदे की करामात है। बताऊँगा कभी। खैर। साहब से कह देना, फिक्र न करें। सब ठीक हो जाएगा। मेम साहब के कपाल से कवच को छुला दो, साल दिन के बाद ही दईमारी साहब के कदमों पर लोट न पड़े तो कहना। बीसियों ऐसा देखा।

राम बसु ने कहा, तो आज चलता हूँ। साहब को यह खुशखबरी कह दूँ।

फिर कब आ रहे हो ?

कल ही, नहीं तो परसों।

परसों क्यों, कल ही आओ। इसी तरह लगभग पचास रुपए लेते आना।

जरूर लाऊँगा — कहकर राम बसु चला गया।

स्वास्थ्य-लाभ का सरल तरीका

बाँभन बहू को झाड़ू मारकर अन्नदा ने निकाल बाहर तो किया, लेकिन उसके उपदेश को वह हरगिज नहीं भूल सकी। व शब्द बार-बार उसके मन मे गड़ते रहे — मर्द जरा तंदुरुस्ती भी खोजते हैं, ऐसी लकड़ी-सी औरत पर उनका मन नहीं लगता। कहना फिजूल है, अन्नदा अपने को सुंदरी समझती थी और कौन-सी स्त्री ऐसा नहीं समझती! टोले की जानी-चीन्ही स्त्रियों से उसने अपनी तुलनात्मक आलोचना की — यहाँ तक कि सुंदरी कहकर जिनकी ख्याति है, मन ही मन उनसे भी अपने को मिलाकर देखा और एक ही निष्कर्ष पर पहुँची कि वह सुंदरी है। लेकिन हाँ, कुछ दुबली जरूर है। सो एकबार ठीक से अपना चेहरा देखने के लिए, उसने बहुत दिनों से यों ही पड़े पुराने आईने को निकाला।

मुँहजला आईना ! पटक दिया उसे ।

काफी दिनों से पड़ा था, इसलिए जगह-जगह से पारा उखड़ गया था। चेहरे का कुछ दीखता, कुछ नहीं । इस तरह उसपर उसकी जो परछाई पड़ी, वह संतोषजनक नहीं लगी । जरूर यह दोष आईने का है । पटक दिया उसे ।

सोच लिया, नया आईना खरीदना होगा, साहब की दुकान से । उसका ख्याल था, साहब की दूकान के आईने में सूरत मेम-सी दीखेगी ।

उसने नाढा को दो रुपए देकर कहा, एक आईना ला देगा ?

यह कौन-सा बड़ा काम है ?

लेकिन साहब की दूकान से लाना होगा ।

हाँ-हाँ, साहब की दूकान से । कसाईटोला से । कहूँगा, गिव मी वन् लूकिंग ग्लास ।

अरे ग्लास नहीं रे कम्बख्त, ग्लास नहीं । आईना ।

अपने ज्ञान के गर्व से फूलकर नाढा ने कहा, ग्लास नहीं दीदीजी, ग्लास — यानी जिसे तुम आईना कहती हो । जानती हो दीदी, मार्तुनी साहब के यहाँ एक इत्ता बड़ा आईना था । उछलकर उसने आईने की ऊँचाई बताई ।

तो जा भैया, ले आ । देखना, कोई देखे नहीं ।

देख ही लेगा तो क्या है । अपने पैसे से लेना है, छिपाना किस लिए ?

न-न, छिपाकर लाना । भागकर जा ।

साहब की दूकान के आईने में उसने छिपकर अपने को गौर से देखा । देखकर समझा, उसने जो समझा है, सो गलत नहीं है । हाँ, कई कारणों से इधर वह कुछ दुबली-सी हो गई है । गाल वैसे पुष्ट नहीं है, गले की हड्डी उभर आई है, हाथ भी पतले-पतले । उसे लगा, अगर यह मामूली

कमी दूर की जा सके तो वह बेशक निर्दोष सुंदरी हो जाएगी। दरअसल कमी सुंदरता की नहीं है, है तंदुरुस्ती की। बाँभन बहू का कहना याद आया, मर्द लोग तो यही चाहते हैं। खैर, वह मोटी होने की जुगत में जुट गई।

अचानक उसे पड़ोसी के घर के पाँचू की याद आ गई। कुछ ही दिन पहले वह लड़का हड्डियों का ढाँचा-सा था, अब खासा मोटा-ताजा और खूबसूरत-सा हो गया है! जब वह पन्द्रह साल का लड़का मोटा-ताजा होकर ऐसा खूबसूरत हो सकता है, तो पैंतीस साल की उम्र में उसे न जाने और कितनी खूबसूरत होने की संभावना है। मन मे इस समस्या के समाधान से वह खुश हो उठी — इतनी खुशी शायद बुढ़ापे को जीतनेवाले ययाति को भी नहीं हुई होगी।

दूसरे दिन उसने पाँचू को बुलाया। खाने को भुना चावल देकर उसने उससे बातों-बातों मे सेहत का रहस्य जान लिया।

कहा, अरे पाँचू, इन दिनों तो तेरी तंदुरुस्ती ठीक चल रही है, है न?

पाँचू ने खुश होकर कहा, ठीक क्यों नही होगी माँ जी, साँझ-विहान कसरत करता हूँ, मुगदर भाँजता हूँ, सौ बैठक मारता हूँ।

अन्नदा ने देखा, यह सब तो उसके लिए संभव नहीं। वह कुछ हताश-सी हुई। फिर भी उम्मीद नहीं छोड़ी। पूछना जारी रखा, और क्या-क्या करता है?

मुहल्ले के लड़कों को बटोरकर कबड्डी खेलता हूँ।

कबड्डी खेलता है, यह तो देखा ही करती हूँ। और क्या करता है? खाता क्या है?

खाना क्या, चावल-दाल, मछली।

यह सब तो तू पहले भी खाता था। सेहत कैसे सुधरी?

ओ, तो यह कहो। सुबह-शाम भीगा चना खाया करता हूँ।

भीगा चना! अन्नदा को अचरज हुआ।

जी, माँ जी । भीगा चना । रात भीगने देता हूँ, कुछ सवेरे खा लेता हूँ, कुछ शाम को । रात फिर भिगो लेता हूँ ।

उसी से यह तंदुरुस्ती बनी है !

क्यो नहीं ! गफूर मियाँ ने बताया, वह हम लोगों का उस्ताद है न, चने मे जो ताकत है, वह माँस, मछली, मिठाई किसी मे नही ।

अन्नदा को अँधेरे मे रोशनी मिली । पूछा, कितना खाता है ?

दोनों शाम दो मुट्ठी ।

दोनों शाम चार मुट्ठी करके खाया करे, तो ?

जल्दी ही उतना खाने लगूंगा । और भी ताकत बढ़ेगी, छाती चौड़ी होगी ।

एँ, भीगे चने में यह सिफत है !

एतबार न आए तो खाकर ही देखो न, माँ जी ।

घत् बेवकूफ, भीगे चने से मेरी जैसी बुढिया की तंदुरुस्ती बनेगी ?

दुगना जोर देकर पाँचू बोला, आजमाकर देखो तो सही । तुम्हारी ऐसी क्या उमर है । गफूर मियाँ की उमर है पचास, मगर जैसी चौड़ी छाती, वैसा ही हट्टा-कट्टा हाथ-पांव ।

वैसा क्या भीगे चने से ही हुआ है ?

मुँह का भुना चावल खत्म हो जाने से, जो लंबा निश्वास कंठनली में जमा हो गया था उसे जवाब में ही डालकर पाँचूगोपाल ने कहा —जी हाँ ।

गफूर दोनों शाम दो-दो मुट्ठी खाता होगा, क्यों ?

आप भी बड़ी भोली है माँ जी । उत्ते बड़े जवान का दो मुट्ठी से क्या होना ? वह दोनों शाम सेर भर खाता है । जब उतना जुटता नहीं है, तो घोड़े की रातिब में से चुराकर खाता है । वह बनाके बाबू का साईस है न । इधर रातिब की कमी से घोड़े सूखते जाते है और उधर चने के जादू मे गफूर मियाँ फूलता जाता है । यह दुनिया बड़े मजे की जगह है माँ जी । — पाँचू खूब हँस उठा ।

पाँचू की जीभ बेकार किसी तरह रुकना नही चाह रही थी। कहा, मैंने गफूर से एक दिन पूछा था, मियाँ घोडे का चना चुरा लेते हो, दोप नही लगता ? उसने कहा, धत्, घोडे का चना चुराना भी चोरी है ? आदमी की चीज चुरा लेना ही चोरी है।

अन्नदा का इरादा पूरा हो चुका था, पाँचू की गप्प सुनने की अब जरूरत न थी उसे। तन्दुरुस्ती बनाने का सहज उपाय हासिल हो चुका था। पाँचू को उसने विदा किया। अंदर गई। छिपाकर सेर भर चना भीगने को डाल दिया।

मालदा से लौटने के बाद पत्नी को खुश करने के लिए राम बसु एक दिन एक समीज खरीद लाया था। अन्नदा ने गरजकर पूछा — यह क्या है ?

राम वसु ने हँसकर कहा, खोलकर देख ही लो।

अन्नदा ने कागज की पोटली खोली — झबला-सा कुछ था।

मुझे स्वाँग सजाने के लिए लाए हो, क्यों ? — उसने समीज कभी देखी नही थी।

अरे नहीं-नहीं, इसे मेम पहना करती है। खास साहब की दुकान से खरीदी है।

उसने तुरन्त उसे फेंक दिया। गरजकर बोली — खुद किरीस्तान होकर जी नही भरा, अब मुझे बनाने के फेर मे है। थू -थूः। उसी क्षण गंगाजल छूकर वह पवित्र हुई।

अप्रतिभ होकर राम वसु चला गया। उसकी बदचलनी का नया सबूत मिला अन्नदा को। भला मेम साहब के अंदर के पहनावे से ऐसे गहरे परिचय का मतलब क्या होता है ?

आज उसे उस समीज की याद आई। वह थी, वसुजा ने उसे उठाकर रख दिया था। उसे निकालकर अन्नदा ने छिपकर देखा। रंग, फीता, काम किया हुआ था किनारे पर — कुल मिलाकर उसे वह बुरी नही लगी। पहनकर देखा, बडी ढीली हुई। सोचा, जरा तंदुरुस्ती सुधरे तो पहनूंगी। उसी शुभ दिन के लिए उसने एक अच्छी साड़ी और उस समीज को सहेज-

कर रख दिया। मुहल्ले की देवरानी का कहा याद आया, मर्द जरा साज-सिंगार पसंद करते हैं — बनना-ठनना।

सती स्त्री का एक प्रधान लक्षण यह है कि वह पति पर एकाधिपत्य चाहती है। सौत से बाँटकर लेने के बजाय सौत-रहित पति की लाश भी उसे मंजूर है। लेकिन अन्नदा की समस्या कुछ और थी। उसके सौत नहीं, मगर फिर भी पति पर उसका पूरा अधिकार क्यों नहीं है, यह समझ नहीं पाती। आदमी से भूत का भय कहीं ज्यादा भयंकर होता है, क्योंकि उसका कोई वास्तविक आधार नहीं होता। इस रहस्यमय समस्या-समुद्र में वह जितना ज्यादा हाथ-पैर पटकती, उतना ही और गहरे डूब जाती, किनारे की तरफ नही बढ़ पाती। पति के मन को पाने के लिए जितनी ही ज्यादा लहरें उठाती, वह मन उतनी ही दूर छिटक जाता। कलाकार का मन पतंग जैसा होता है, उसकी लीला के लिए आसमान का खुलापन चाहिए। गिरस्ती के बर्तन-भाँडों मे उसकी वास्तविक जगह नहीं। राम वसु जन्मजात कलाकार था। यह उसकी स्त्री कैसे समझे, उस युग मे किसी ने नही समझा। अनात्मीय समाज आसमान का वही विस्तार है, जहाँ कलाकार का मन मनमाना उड़ सकता है। आत्मीयों के बर्तन-भाँडों मे वह संकुचित हो जाता है। शिल्पी के लिए अपना है अनात्मीय, आत्मीय होता है पराया। अन्नदा कैसे समझ पाती कि राम वसु बाहर क्यों घूमा करता है। यही था कलाकार की पत्नी का कठिन सौभाग्य।

तलैया में चाँद की परछाईं

उस दिन जॉन के आते ही रोज एलमर ने खुश होकर आग्रह के साथ कहा, जॉन, आओ, आओ। दो दिन तुम्हारे दर्शन क्यों नहीं मिले ?

अप्रत्याशित स्वागत से अभिभूत होकर जॉन ने कहा, कुछ व्यस्त था। और फिर मेरा अनुमान क्या है, मालूम है ?

सुनूं, क्या अनुमान है तुम्हारा ?

यही कि मेरा बार-बार आना तुम पसंद नहीं करती।

तुम मुझपर अन्याय कर रहे हो जॉन। मैं तमाम दिन इंतजार करती रहती हूँ कि तुम कब आओगे।

अगर यह सच ही तुम्हारे मन की बात है तो अब कभी गैरहाजिर न होऊँगा।

रोज एलमर हँसकर बोली, जरूर !

हँसते-हँसते जॉन बोला, देख लेना।

रोज ने कहा, तुम जरा इंतजार करो, मैं एक चादर ले आऊँ। तुम्हारे साथ घूमने जाऊँगी।

जॉन के आश्चर्य की सीमा न रही। कहा, जिंदगी के अंतिम दिन तक इंतजार करता रहूँगा।

उतने धीरज की जरूरत नहीं, दस मिनट में आ जाती हूँ। यह कह-कर हँसती हुई वह हलके पाँव बाहर चली गई।

जॉन सोचने लगा, रोज में अचानक यह परिवर्तन कैसे संभव हुआ ? फिर सोचा, यही तो स्वाभाविक है। ऐसा न होना ही आश्चर्यजनक होता। ढाई सौ खर्च करके क्या नाहक ही इंडियन योगिक टैलिसमैन जुटाया है ! उसे राम बसु की बात याद आ गई। कवच देते हुए राम बसु ने कहा था, मिस्टर स्मिथ, सफलता जरूर मिलेगी। मदर काली एवर वेवफुल गॉडेस है ! राम बसु के कहे मुताबिक हैड टु हैड फूट पाकर जॉन मन ही मन बोल उठा, जय माँ काली ! बीच-बीच में ऐसा कहने के लिए राम बसु ने उसे कह रखा था।

पिछले दिन मंत्रपूत कवच लेकर राम बसु ने जॉन से भेंट की थी और कहा था, मिस्टर स्मिथ, यह अव्यर्थ कवच है, मनोकामना जरूर पूरी होगी।

जॉन ने पूछा, अब क्या करना होगा ?

राम वसु बोला, ले जाकर इसे मिस एलमर की बाँह मे बाँध दो।

जॉन बोल उठा, यह कैसे होगा? यह तो बिल्ली के गले मे घंटी बाँधने जैसा है। नही, मिस एलमर से ऐसा अजीब आग्रह मै नहीं कर सकूंगा।

गंभीर होकर राम वसु बोला, फिर तो मुश्किल है!

जॉन ने पूछा, इसका दूसरा कोई उपाय नही है क्या?

उपाय नही हो, यह कैसे हो सकता है। हमारा हिन्दूशास्त्र बड़ा उदार है। उसमे क्षेत्र के हिसाब से उपाय भी अलग-अलग है।

तो वह बताइए न।

लेकिन वह तो खर्च का मामला है।

डैम इट! कितना चाहिए, कहिए। जॉन ने एक मुट्ठी रुपए निकाले।

ज्यादा नही, अभी लगभग बीस रुपए से काम चल जाएगा।

लीजिए। लेकिन टैलिसमैन कब दीजिएगा?

कवच तो बस अभी ही ले लीजिए — मै इसके बाद पूजा दे आऊँगा।

दीजिए, कहकर जॉन ने एक प्रकार से कवच राम वसु के हाथ से झपट लिया। पूछा, अब क्या करना होगा?

किसी तरह उसे रोज एलमर के बिस्तर के नीचे रख देना होगा। बस।

जॉन फिर मुश्किल में पड़ गया। कहा, मै उसके सोने के कमरे मे कैसे जाऊँगा?

राम वसु ने मन ही मन कहा, अरे बुद्धू, यह क्या मुझे नही मालूम है! यदि उसके सोने के कमरे मे ही जा सको तो मेरे फंदे में कैसे फंसते। अरे, तुम तो उसके सोने के कमरे के बाहर ही हमेशा खाक छानते रहोगे। अंदर तो कम्बख्त वही जंगी सिपाही जाएगा। शायद अंदर जा भी चुका हो, नहीं तो वह छोकरी तुम्हारी बात क्यों नहीं पूछती।

राम वसु को चुप देखकर जॉन ने कहा, देखिए मुंशी, मेरे दिमाग में

एक सूझ आई है। रोज का बिस्तर रेशमी बीवी लगाया करती है। वह चाहे तो कवच को छिपाकर बिस्तर के नीचे रख दे सकती है। और, वह तो आपका कहा मानती है। उसी को क्यों नही सौंप देते यह काम ?

क्या खूब सूझी है जॉन ! हमारे शास्त्र मे लिखा है, प्रेम मे पडने से आदमी का दिमाग खुल जाता है।

सो तै हुआ कि यह भार रेशमी को ही दिया जाएगा।

राम वसु ने रेशमी से भेंट करके कहा। सुनकर रेशमी बिगड़ उठी —कायथ दा, इतना पढ-लिखकर भी आप इन वाहियात बातो पर विश्वास करते हैं ?

राम वसु ने कहा, अरी, राम वसु किसी बात का विश्वास नहीं करता और न किसी बात का अविश्वास ही करता है। लेकिन एक बात है, लगे तीर, न लगे तुक्का। जो कहता हूँ, तुम करो ता।

रेशमी ने कहा, लेकिन यह विश्वास भंग करना होगा। मिस एलमर को कहे बिना उसके बिस्तर के नीचे —

बेवकूफ लड़की ! विश्वास भंग की बात तो दूर, उसकी निद्रा भी भंग न होगी। जो कहता हूँ सो कर।

अंत तक सच ही अगर रोज जॉन से ब्याह करना चाहे ?

चाहे तो करेगी। उससे तुम्हारा या मेरा क्या बिगड़ता है ?

मेरा बेशक कुछ न बिगड़ेगा। लेकिन कहीं कर्नल साहब भी आपको कवच के लिए कहे ?

तो उसे भी दूँगा।

और वैसे में मिस एलमर — तब तो मिसेस स्मिथ हो चुकी होगी — फिर कहीं कर्नल से शादी करने को पागल हो उठी तो ?

तो कर्नल से शादी करेगी। नुकसान क्या है ? उन लोगों मे कितनी बार तलाक होता है और ब्याह होता है, जानती नहीं है क्या ?

लेकिन तब मिस्टर स्मिथ की क्या दशा होगी, सोचा है ?

रेशमी की बात सुनकर राम वसु ठठाकर हँस पड़ा — आँधी कहाँ

उठी और कौआ मरा कहाँ — कुछ इस तरह की वात कह रही है तू।
खैर, जॉन की हालत अगर खूब खराव ही हो जाए तो तू ही न हो तो
उससे व्याह कर लेना।

राम वसु फिर हँस उठा।

आप भी कायथ दा...चुप रहिए।

खैर, चुप हो जाता हूँ। यह वता, कवच लेती है या नही।

वह कुछ देर चुप रही और कहा, दीजिए।

जैसा कहा है, ठीक वैसा ही करना। सिरहाने की तरफ विस्तर के
नीचे।

ठीक वैसा ही करूँगी।

राम वसु के चले जाने के वाद रेशमी ने तै किया कि वह विश्वास
हरगिज नही तोड़ेगी। एलमर के विस्तर के नीचे कवच नहीं रखेगी।
और वह वुद्धू मिस एमलर से व्याह करेगा! अपनी मर्दागनी से न वना
तो तावीज और कवच! हुँः, ऐसा नीच काम मैं नही करती।

वह कमरे मे गई। कवच को उसने अपने तकिए के नीचे रख दिया।
मन ही मन कहा, तव तक यही रहे। और चाहे जो हो, मिस एलमर
को मै मुसीवत मे नहीं डाल सकती। तावीज कवच के चलते वहुत वार
लोगों की जान चली जाती है।

उसे हठात् वैसी तीन-चार घटनाएँ याद आ गई।

रेशमी निश्चिन्त थी। किन्तु जॉन की वैसी सादर अभ्यर्थना से उसकी
एड़ी से चोटी तक जल उठी, अचरज और कड़वेपन से मन भर गया।
जॉन और एलमर के प्रेमालाप की पृष्ठभूमि में खड़ी होकर वार-वार ही
वह मन में कहने लगी, ओह, सभी ऐसे है! सभी ऐसे है!

सवका मतलव कौन-कौन और ऐसे का क्या-क्या, यह सोचने लायक
मन की अवस्था नहीं थी उसकी। अपना मकान नीलाम पर चढ़ गया हो,
यह देखकर धीरज से सोच कितने लोग सकते हैं?

जॉन और रोज घूमने निकले। जव तक वे दिखाई पड़ते रहे, रेशमी

उनकी ओर देखती रही, जैसे साँप का काटा आदमी एकटक काटनेवाले साँप को देखता रहता है। उसके बाद वह एक साँस मे दौड़ी गई और कवच को निकाला। दबाकर उसे चिपटा कर दिया। उसे लेकर अहाते के छोर पर पोखरे* के पास गई और उसे पानी मे फेंक दिया — जा:।

लौटी, तो देखा, कर्नल रिकेट इंतजार कर रहा है।

झुककर उसने सलाम किया।

कर्नल ने पूछा, मिस एलमर कहाँ हैं ?

घूमने गई हैं।

अकेली ?

नहीं। मिस्टर.स्मिथ के साथ। उसी के साथ तो जाती हैं।

कैसे ? कल तक तो मैं साथ गया हूँ।

तो आज से ही शुरू हुआ।

लेकिन मैं तो आने को कह गया था।

शायद इसीलिए पहले चली गई हों।

असंभव है।

लेकिन हो तो गया संभव।

मधु मे बूंद-बूंद करके औरतें किस खूबी से जहर मिला सकती हैं। मगर होठ पर कठोर बात, कोमल उँगली में हीरे की अँगूठी-सी कैसी सोहती है।

कर्नल के 'दंभ' को चोट लगने से उसका कर्तव्य-ज्ञान लुप्त हो गया था, नहीं तो वह समझता कि एक मामूली दासी से इस तरह जिरह करना भद्रता के अनुकूल नही।

कर्नल ने पूछा, तुमने आग्रह किसमे ज्यादा देखा ?

रेशमी ने जरा सोचकर कहा, दोनों मे समान ही लगा।

कह सकती हो, कब लौटेगी ?

रात होगी शायद।

---

* यह पोखरा अभी भी मौजूद है।

यह कैसे समझा ?

चादर ले गई है ।

कर्नल खौल रहा था गरम पानी-सा। कमरे में चहलकदमी करने लगा था।

मेरे बारे में कुछ कहा ?

नहीं। कभी-कभी उदासीनता ही बुरी होती है।

राइट ! मैदान की ओर गई है ?

नहीं। जंगल की ओर। और फिर अपने आप बोली, शायद एकांत चाहती है।

पैदल गई है ?

हाँ।

गाड़ी नहीं थी ?

थी।

तो गाड़ी से क्यों नहीं गई ?

निरे निर्विकार भाव से रेशमी ने कहा, कभी-कभी तीसरे जन की उपस्थिति खलती है।

राइट ! आज उस तसवीर पर फूल क्यों नहीं देख रहा हूँ ?

आज फूल दूसरी जगह शोभा बढ़ा रहे हैं।

कहाँ ? जल्दी बताओ।

मिस्टर स्मिथ के सीने पर।

किसने दिया ?

एक के सिवाय देनेवाली है भी कौन ?

मैं उस स्काँड्रेल को देख लूँगा — गरजकर यह कहते हुए कर्नल रिकेट लपककर वहाँ से चला गया।

खिड़की से रेशमी ने देखा, कर्नल रिकेट की बग्घी नक्षत्र की गति से बरियल ग्राउंड के पूरब को तरफ निकल गई।

लौटकर रोज एलमर ने पूछा, कर्नल आया था क्या ?

रेशमी ने कहा, आया था।

मेरे लिए रुका था?

नही।

तुमने रुकने को कहा था?

अब रुकने को कहने से क्या लाभ?

रेशमी के कहने के ढंग से कुछ चकित-सी होकर एलमर ने कहा, क्यो?

क्यो क्या? लगा, आप भी नही चाहती और खूब संभव है, मिस्टर स्मिथ को भी अच्छा न लगे।

अजीब बात है, मै क्यों न चाहूँ और मिस्टर स्मिथ को ही क्यों बुरा लगेगा?

असल मे कर्नल को छोडकर कभी आप जाती तो नही थीं, इसी से —

हठात् एलमर की समझ मे आ गया। वह बोली, ओ, समझ गई, तुमने सोचा कि मै मिस्टर स्मिथ को प्यार करती हूँ।

मेरे सोचने से क्या आता-जाता है, कर्नल ने यही सोचा है।

कर्नल अव्वल दर्जे का गँवार है और तुम हो निरो बेवकूफ।

यह तो हमेशा से हूँ, नए सिरे से याद दिलाने की क्या जरूरत?

याद दिलाने की वजह यह है कि आज सवेरे मुझे कवि का भेजा हुआ एक खत मिला है।

उदास चेहरा लिए रेशमी बोली, बडी खुशी की बात है।

पहले सब सुन लो, फिर जवाब देना। मैने जॉन और कर्नल की बात कवि को खोलकर लिखी थी। जवाब में कवि ने लिखा है, कर्नल जैसे आदमी को चिन्ता नही, वैमों के हाथ मे हर समय एक से ज्यादा तीर रहते है, वे जन्मजात तीरंदाज होते है। तुम उसे ठुकरा दोगी तो वह निराश होकर मर नहीं जाएगा — उसी उत्साह से दूसरे लक्ष्य पर तीर का निशाना बैठाना शुरू कर देगा। फिक्र मुझे दूसरे भले आदमी के लिए हो रही है, जिसका नाम तुमने जॉन स्मिथ बताया है। संसार में

थोडे ऐसे लोग है, जो जन्मजात प्रेमिक होते है। स्मिथ उसी कोटि का है। प्रेम का ठुकराया जाना ऐसो के लिए मौत के समान है। सो, तुम उसे प्यार अगर नहीं ही कर सकती हो, तो उसका सादर सत्कार करना। कवि ने लिखा है, जानता हूँ कि यह प्रेम का विकल्प नही है लेकिन उससे ज्यादा कर भी तो कुछ नहीं सकती। संसार मे हमेशा प्रियतम धन नहीं मिलता, ऐसी दशा मे उसके आसपास का पाकर संतोष करने के सिवाय और चारा क्या है?

धीरे-धीरे इतना कहकर रोज एलमर कुछ देर चुप हो रही। उसके वाद फिर कहने लगी, कवि की वात से मै समझ गई। इसीलिए आज जॉन को साथ लेकर जरा घूमने निकल गई। इसमें प्यार मुहब्बत नहीं है। तुम्हे तो आज तक समझ जाना चाहिए था कि दुनिया में जिस एकमात्र व्यक्ति को मै प्यार करती हूँ, उसी की तसवीर है वह। कभी किसी से अगर मैं व्याह करूँगी तो उसी से।

रोज एलमर की बातों की इस आंतरिकता से रेशमी के कलेजे का भार उतर गया। उसने स्वाभाविक होकर कहा, मिस एलमर, मुझे क्षमा कीजिए।

इसमे क्षमा करने की वात क्या हुई? तुमने कोई अन्याय तो किया नहीं। वहुत कहूँ तो कहूँगी, भूल की है।

रेशमी चली जा रही थी कि रोज एलमर ने कहा, सिल्केन लेडी, मैंने गौर किया है कि तुम जॉन को वर्दाश्त नहीं कर सकती। और कुछ न सही कम से कम इस नाते भी तुम्हें उसे वर्दाश्त करना चाहिए कि वह मेरा दोस्त है।

रेशमी भी कह सकती थी, मिस एलमर, आपने भी मुझे गलत समझा है।

उस रात विस्तर पर पड़े-पड़े सुख की तंद्रा में लीन जॉन जव कोली-गोट (कालीघाट) की कोली (काली) को वार-वार नमस्कार कर रहा था, जव मन ही मन कह रहा था कि हिंदूशास्त्र की यौगिक क्रियाएँ अचूक है, नहीं तो हैड टु हैड फ्रूट कैसे मिला — पिछले दिन भी रोज उदासीन थी

और आज गले लग गई — ठीक उसी समय विस्तर पर पड़ी-पड़ी कालीघाट की काली माँ को बार-बार प्रणाम करती हुई रेशमी मन ही मन कह रही थी — देवी, तुम्हारी लीला का अंत नहीं। कवच को विफल बनाना भी तुम्हारी एक लीला है। न जाने क्यों समझने की भूल से मैंने तुमपर अविश्वास किया था, इसलिए निर्बोध संतान का दोष मत लेना माँ। इस तरह की कितनी ही बातें मन ही मन कहती हुई वह न जाने कब सुख की नींद सो गई।

रेशमी के इस विचित्र मनोभाव का कारण क्या है? क्या वह मन ही मन जॉन को प्यार करने लगी है? जॉन और उसकी स्थितियों में अपार अंतर रहने पर भी क्या यह संभव है? यदि सम्भव किसी तरह नहीं है तो तलैया मे चाँद की परछाईं पड़ती क्यों है?

पृथुला

राम वसु ने कहा, नारो की माँ, तुम्हारी सेहत ठीक नहीं लग रही है।

फूटा घड़ियाल और भी भोड़े स्वर में वज उठा, क्यों, मुझे क्या रामसिंह पहलवान वनना पड़ेगा?

राम कहो, इसी मे जो प्रताप है तुम्हारा, कहीं पहलवान हो गई तो घर मे टिकना मुहाल हो जाएगा।

क्या कहने है, लगता है, तमाम दिन घर में ही बैठे रहते हो! दिन भर कहाँ-कहाँ की खाक छाना करते हो? किस डाल-पत्ते पर?

सिहोड़ की डाल पर।

जानती हूँ। फूटा घड़ियाल वज उठा — तुमपर प्रेतिन सवार है।

फिर तो दिन भर घर ही मे बैठे रहना पड़ता ।

ऐं जितना बड़ा मुँह नहीं, उतनी बड़ी बात ! मै प्रेतिन हूँ ?

राम-राम, प्रेतिन के भी बदन पर थोड़ा मास रहता है यह तो साक्षात चुड़ैल !

अन्नदा के मर्म की गहराई मे चोट लगी । जिस सेहत के लिए वह इतना कुछ कर रही है, उसी की कमी का उलाहना । पहले की बात होती तो वह झाड़ टटोलती, अब वह मुमकिन न था, इसलिए वहाँ से हट गई ।

वैसा सम्भव न होने की वजह थी । मुटाने के लिए पाँचूगोपाल के बताए मुताबिक अन्नदा ने भीगा चना खाना शुरु किया कि अनपच और पेट की पीडा शुरु हुई । अन्नदा ने एक दिन पाँचू को बुलाकर पूछा, अरे पाँचू, तुम लोग भीगा चना खाते हो तो कोई गड़बड़ी नही होती ?

होती क्यों नही है माँ जी ! मैंने जब शुरु किया था, तो पहले हुआ चेचक, फिर सर्दी-खाँसी, उसके बाद पैर मे दर्द । उस्ताद से पूछा, उस्ताद, क्या करुं अब ? उस्ताद ने कहा, छोडो मत बेटा, वैसा थोड़ा-बहुत होता है । जब मैंने शुरु किया था —

अन्नदा ने टोका, वैसी गड़बड़ी की नहीं पूछती, पूछती हूँ, अनपच—

ओ ! सो तो होगा थोड़ा-बहुत । मगर छोड़ना मत माँ जी ! शुरु जब कर दिया है, तो खाती चली जाओ । आगे चलकर —

अन्नदा ने फिर टोका, भला मै किस लिए खाऊँ...

फिर चिन्ता किस बात की ? अगर उस टोले के किसी को अनपच हो, तो तुम्हारे सिर में दर्द क्यों ?

पाँचूगोपाल से उत्साह पाकर अन्नदा दूने वेग से चना खाने लगी । कहना न होगा, पेट की पीड़ा भी दूनी बढ़ गई ।

कभी-कभी उसे शुबहा होता कि टोटका का कोई फल नही हो रहा है । शायद कुछ और दुबली ही हो गई है । कभी-कभी एकांत मे धागे से कलाई-बाँह आदि नापकर देखा करती, उससे भी वैसा उत्साह नहीं होता ।

फिर चेहरे के लावण्य को परख के लिए साहब की दूकान का आईना निकल पडता। नः, चेहरे पर थोड़ी चमक आई है! उम्मीद बँधती, जल्द ही एक दिन शान्तिपुरवाली साडी और वह ममीज पहनकर जवानी की शोभा भरे मुखड़े से पति से बात करने मे समर्थ होगी। पति का ऐसा आदर पाएगी कि टोले की उन मुँहजलियों की जमात ईर्ष्या से जल मरेगी। और तब न्योता करके, जिसका तीन काल जा चुका है, उस बाँभन बहू को दिखाना होगा। हुँः, दईमारी को अपनी तंदुरुस्ती का बड़ा अहंकार हुआ है!

लेकिन ज्यादा दिन ऐसे न चल सका। खाट पकड़नी पड़ी।

राम बसु ने वैद्य को बुलाया। वैद्य ने बताया, बुरी तरह के अनपच और पेट की पीड़ा का नतीजा है यह।

राम बसु ने पूछा, तो? क्या किया जाए?

इलाज। यानी दवा और पथ्य। खाने-पीने के मामले मे बड़े एहतियात की जरूरत है। खाने को गरई मछली का शोरबा और सूजी। बस। इससे ज्यादा कुछ भी नहीं।

अन्नदा ने पूछा, दाल?

कच्चे मूँग की दाल थोड़ी ली जा सकती है।

कुंठित कंठ से अन्नदा ने पूछा, चने की?

उसकी बात खत्म होने के पहले ही वैद्य इस तरह चिल्ला उठा, जैसे साँप पर पाँव पड़ गया हो। चने का नाम लिया कि मृत्युरेव न संशयः।

वैद के चले जाने पर अन्नदा ने स्वामी से कहा, इस मुँहजले को अब बुलाने की जरूरत नहीं, उसके बदले सोनापुर से देवरानी को लाने के लिए किसी को भेज दो।

देवरानी को बुला भेजने के प्रस्ताव से राम बसु सच ही शंकित हो उठा, समझ गया कि हालत खतरनाक है।

राम बसु की विधवा बहन पहले यहाँ रहती थी। उसे नाक में दम करके अन्नदा ने भगाया था — आज उसी को बुलाने का प्रस्ताव! एक राज्य

मे कभी दो राजाओ का रहना सम्भव हो भी सकता है ; परन्तु एक घर मे दो स्त्रियों का वास असम्भव है ।

देवरानी के आने पर शय्याशायी कंकाल-सी अन्नदा ने उसे गिरस्ती का भार समझा दिया । पति के पाँवो की धूल ली, नारो के माथे पर हाथ रखकर उसे आशीर्वाद दिया और अगले जन्म मे पृथुला होकर पैदा होने की उम्मीद लिए इष्टमंत्र जपते-जपते उस टूटे दिलवाली स्त्री ने निडर होकर अंतिम साँस ली ।

नारो चीख उठा, मुझे किसके पास छोड़ गई माँ ?

नाढा ने उसे कलेजे से जकड लिया । रोते-रोते बोला, मैं, तेरा नाढा दा हूँ न, डर काहे का भाई !

राम बसु ने काठ का मारा-सा पास ही खड़ा-खड़ा सब कुछ देखा। उस मुखर आदमी के मुँह से न तो फुरा एक शब्द, न आई आँख मे आँसू की एक बूँद ।

अपनी देवरानी से जरा हँसकर, कुछ संकोच के साथ अन्नदा ने यह ख्वाहिश जाहिर की थी कि मरने के बाद मुझे उसी साड़ी और समीज से अंतिम बार के लिए सजा देना ।

मृतदार राम बसु

स्त्री का दाह-संस्कार करके वैसे ही अस्त-व्यस्त वेश में राम बसु टुशकी के यहाँ गया । टुशकी ने पूछा, अरे, यह कैसी शकल कायय दा ?

टुशकी रे, नारो की माँ स्वर्ग सिधार गई है ।

एँ ! टुशकी स्तंभित हो गई, पूछा, कब ? कब आई यह आफत ?

आज ही सवेरे । अभी सब-कुछ करके ही तो आ रहा हूँ ।

क्या कहे, टुशकी कुछ समझ न पाई। वह गाल पर हाथ रखे चुप बैठी रही। बोलने की जिम्मेदारी से उसे राम वसु ने ही छुटकारा दिया। कहा, मैं सोच नहीं सका था कि इतनी चोट लगेगी!

एक इसी छोटे-से वाक्य से टुशकी राम वसु की चोट की गहराई समझ गई। राम वसु के आते ही वह 'टुशकी रे' संबोधन से समझ गई थी कि चोट कुछ मामूली नही है। टुशकी को पता है कि राम वसु बोलता बहुत है, लेकिन वे बातें मन के ऊपर की हैं, जहाँ आकाश-कुसुम खिलता है। मन की गहराई की बात बोलने का आदी वह नही है। लेकिन इसी-लिए वहाँ का पता टुशकी को नही है, ऐसा नही। महज छोटी-सी 'रे' ध्वनि से ही टुशकी ने उसके भीतर के दावदाह को देख लिया। गाल पर हाथ धरे वह मूढ-सी बैठी रही और कमरे मे इधर से उधर चहल-कदमी करते हुए राम वसु अनर्गल बकता चला गया।

राम वसु के स्थिर, अविचल भाव से सभी अवाक रह गए। कहा, अरे, थोड़ा रो लो, हल्के होगे।

टुशकी, आँख के पानी का स्वभाव बड़ा अजीब होता है। जो बारिश भादों में रुका नही चाहती, सिर फोड़ने पर भी अगहन में उसके दर्शन नहीं मिलते। अजीब है यह आँसू। किसी अपने का सिर दुखते देख मेरी आँखें भर आती है, पर मौत पर आँखों मे एक बूँद पानी नहीं।

इतना ही कहकर वह रुक गया, जाकर खिड़की के पास खड़ा हुआ, चुपचाप उधर ताकता रहा, जहाँ डूबते सूरज की किरणें चलती हुई नावों के पालो को रंगीन बना रही थीं।

जरा देर बाद फिर कहने लगा — शोक मे जो रो लेते हैं, वे भाग्य-वान है; आँसू बहाकर हल्के हो जाते है। लेकिन मै? देख जरा इधर — उसने अपनी छाती दिखाई — शोक का दुर्वह भार ढोता फिर रहा हूँ, कब तक इस तरह ढोना पडेगा, पता नही। इतना जरूर जानता हूँ कि तमाम जिंदगी तिल-तिल पल-पल बूँद-बूँद आँसू झरता रहेगा। लोग कहते हैं, मै रोता नही हूँ। अरी, रो पाता कहाँ?

टुशकी समझ गई, ये अनर्गल वाक्य ही उसके शोक-प्रकाश के साधन है — आँसू के विकल्प। टुशकी ने कहा, कायथ दा, बैठो, मैं थोड़ा शर्बत बना लाऊँ।

राम बसु ने शर्बत पिया। टुशकी ने पूछा, हुआ क्या था, सो तो कहो। तुमने तो कभी कोई जिक्र ही नहीं किया।

जिक्र क्या करता, मुझे ही खाक खबर थी कुछ! वह सदा की दुबली-पतली थी। थी तो थी, दुबली-पतली बहुतेरी होती है। इधर कुछ दिनों से बहुत कमजोर हो गई थी। बिस्तर से उठ नहीं सकती थी। मैंने वैद्य को बुलाया। उसने उसे भगा दिया। अंत में जब उसने मुझसे मेरी बहन को बुला लेने को कहा, तो मैं समझ गया, अब इसकी कोई आशा नहीं रही। उसके बाद तो दो दिन का भी समय नहीं मिला।

यानी पता ही नहीं चला कि हुआ क्या था?

पता क्यों नहीं चलेगा, अनपच था, पेट की बीमारी।

यह मामूली-सी बीमारी असाध्य हो उठी?

असाध्य तो उसने खुद ही कर लिया था, ठीक कैसे होती?

मतलब?

सब कुछ हो-हवा जाने के बाद भंडार घर से इत्ता भीगा चना मिला! अरे, मामला क्या है? आखिर मुहल्ले के एक लड़के से उस रहस्य का पता लगा। मुटाने के लिए वह भीगा चना खाया करती थी। इधर पेट की बीमारी, और उधर चल रहा था भीगा चना।

एकाएक उसे ऐसी इच्छा क्यों हो आई, कुछ सुना नहीं?

यह कहाँ सुनूँगा। हाँ, अनुमान करता हूँ — मोटी होने से पति का प्यार मिलेगा, इस आशा से जो-सो खाकर उसने अपनी जान दी।

धीरे-धीरे टुशकी के आगे जाकर दो उँगलियों से उसका गाल दबाकर कहा, तुम स्त्री की जात अजीब है टुशकी, पति का प्यार पाने के लिए सब कुछ कर सकती है।

टुशकी की आँखें छलछला उठीं और उसकी आँखो मे आँसू देखकर अब राम वसु की आँखों मे पहली वार आँसू आया !

राम वसु का ही कहना ठीक है, आँखों के पानी का स्वभाव अजीब होता है ।

साँझ हो आई थी । घर मे दीया जला । मदनमोहन के मंदिर मे शंख-घडियाल वजे । हठात राम वसु वोल उठा, मै आज यही रहूँगा टुशकी ।

अपने विस्मय को दवाकर टुशकी ने कुण्ठित भाव से कहा, आज यहाँ न रहो तो हर्ज होगा ?

नहीं, आज ही खास जरूरत है । अच्छा, उस वोतल मे कुछ है ?

कहाँ से हो ? इतने दिन से आए कहाँ ?

खैर, होगा इंतजाम उसका ।

राम वसु के मन को फेरने के ख्याल से वह वोली, तुम घर नहीं जाओगे तो नारो को वडा सूना लगेगा ।

उसकी फूआ है, नाढा दा है, वह मेरो कमी महसूस नहीं करेगा । जरा रुककर वोला, लेकिन मेरी कमी कौन पूरा करेगा, वता । यह कहकर उसने टुशकी को वलपूर्वक छाती मे भीच लिया ।

मृत्यु के वाद मनुष्य की चेतना अगर निर्मल और सर्वव्यापी होती हो तो अन्नदा अवश्य खुश होती । अभी उसके पति के आलिंगन मे वँधी जो नारी है, वह टुशकी नहीं, स्वयं अन्नदा है देहांतर मे । उसके अगले जन्म की आशा उसी जनम में सार्थक हुई, जिसे वह छोड़ आई । पृथुला होकर वह अपने पति के कलेजे से लगी ।

रात को भोजन के वाद टुशकी ने कहा, अव से तुम्हे वड़ी असुविधा होगी कायथ दा, है न ?

राम वसु ने कहा, एक वात मे इसका क्या उत्तर दूँ, वता ।

एक वात में न सही, समझाकर कहो ।

तो सुन । असुविधा होगी और नहीं भी होगी ।

टुशकी ने कहा, यह एक बात से ज्यादा जरूर हुई, मगर समझ कुछ भी न सकी।

जानता हूँ, नही समझ सकेगी। समझा देता हूँ। स्त्री पति को किस बल पर आकर्षित किए रहती है?

प्यार के बल पर।

यह बात बेवकूफ औरत जैसी हुई! हाँ, प्यार से पुरुषों के मन का दरवाजा जरूर खुलता है, लेकिन वही तक।

टुशकी ने पूछा, उसके बाद?

उसके बाद स्त्री अशिक्षित पटुता से धीरे-धीरे पति के रोजमर्रे की छोटी-मोटी आदतों को जानकर उसके अजानते ही उन्हे पूरा करके उसको असहाय बना देती है। समय पर लोटा-अंगोछा बढा देना, समय पर दतुवन तोड़कर देना, नहाते समय तेल, नहाने के बाद धोती बढा देना; पति की पसंद की विशेष चीजें पकाकर देते रहना — इन्हीं बातों से वह पति को अपने ऊपर निर्भरशील बना लेती है। आदतों के हजारों महीन-महीन बिना धागे के बंधन से वन का पंछी बँध जाता है। बँध जाने पर पिंजरे का दरवाजा खुला पाने पर भी उड़ जाने को जी नहीं चाहता। जो स्त्री स्वामी के अनजानते यह काम कर सकती है, वह साध्वी है और जो पुरुष इस अवस्था में सहज ही आत्मसमर्पण कर देता है, वह है सुखी।

और प्यार? टुशकी ने पूछा।

अरी भोली औरत, प्यार का प्राण बड़ा दुर्बल होता है, उसके पर होता है, पैर नहीं। दुनिया में उस जैसा असहाय कम ही है।

तो यह स्वामी-स्त्री के प्रेम की बात जो सुनती हूँ, वह क्या है?

अश्वत्थामा के दूध के नाम से चावल पीसकर पीने की बात नहीं सुनी?

चुप हो रही टुशकी।

चुप हो गई?

तो सब भूल ही है ?

भूल कुछ भी नही। पति-पत्नी मे आदत की वश्यता का यह जो संबंध है, वही क्या तुच्छ है ?

मगर मुझे अपने असली प्रश्न का जवाब नही मिला। अपनी सुविधा-असुविधा की बात बताओ।

मैं हमेशा दूर-दूर रहा। आदत का गुलाम नही बना। इसीलिए मुझ-पर उसके गुस्से का अंत नहीं था। लिहाजा उधर से असुविधा की कोई बात ही नही है मेरे लिए।

तो ?

तो क्या ! इतने दिनो से मुझे देखा किया, समझ नही सकी ? मै अपना दुःख किसी तरह सह सकता हूँ, लेकिन वही दुःख दूसरे पर पड़ते देख मुझे असह्य हो उठता है। बच्चे का रोना-धोना, घर का सूनापन — यही असुविधा है।

तुम बड़े संगदिल हो कायथ दा।

तुम्हारा कहना बिलकुल गलत नही।

राम बसु थोड़ा रुककर कहा, मेरे पास मन होता, तो अब तक दुःख-दुर्दैव के बोझ तले दब गया होता।

आखिर तुम्हारा मन है कहां ?

कुछ किताबें मिलें तो सब भूल जाता हूँ। घर से भागकर शोभा-बाजार के राजमहल के पुस्तकालय में चला जाता हूँ और पलभर में सब भूल जाता हूँ।

इस प्रसंग को बंद करने की आशा से टुशकी ने कहा, भूल जाते हो, अच्छा ही करते हो। अब सो तो जाओ।

रात काफी हो गई, न ?

हाँ, हो गई।

अच्छा सुन, अभी दो-चार दिन तेरे ही यहां रहूँगा। टोले-मुहल्ले-वालों का बक-बक करते रहना मुझे कतई अच्छा नही लगता।

ठीक तो है, यहीं रहना।

दूसरे दिन तीसरे पहर बाहर से लौटकर राम वसु ने कहा, टुशकी तेरे यहाँ रहना नसीब न हुआ।

अचानक राय बदल कैसे गई?

कैरी साहब का खत मिला है। तुरंत मिलने के लिए लिखा है।

फिर से मालदा जाओगे?

नहीं, वे श्रीरामपुर चले आए हैं।

लेकिन ऐसे जोर की बुलाहट कैसे?

यह तो जाकर ही मालूम हो सकेगा।

कब तक लौटोगे?

यह वहाँ पहुँचे बिना कैसे बता सकता हूँ।

कब जा रहे हो?

कल। देर करना ठीक नहीं है।

टुशकी ने दुःख से कहा, बेचारा नारी एकदम अकेला पड़ गया!

अकेला कैसे, नाढ़ा रहेगा। दोनों में खूब पटती है।

तुम्हारा समाचार कैसे मिलेगा?

समाचार नहीं मिलेगा, यही समझो। मिल जाए तो ठीक ही है। नाढ़ा से मैंने कह दिया है, बीच-बीच में यहाँ आकर मिल लेगा।

तो आज रात यहाँ रह रहे हो न?

और कहाँ रहूँगा, कहो?

कैरी के आकस्मिक बुलावे से राम वसु सच ही बहुत खुश हुआ था। पत्नी-वियोग की दुखदायक परिस्थिति से दूर जाने का मौका मिला, यह प्रधान कारण होते हुए भी दूसरा एक कारण था। कैरी की ज्ञान-चर्चा का परिवेश उसके जीवन-धारण के लिए अनिवार्य-सा हो उठा था।

कलकत्ते में यही कमी उसे हर पल खलती थी। लेकिन कैरी की चिट्ठी से वह खुश चाहे जितना ही क्यों न हुआ हो, विस्मित जरा भी न हुआ था। उसे विश्वास था कि कैरी का बुलावा जरूर आएगा; समझ गया था कि कैरी के लिए वह भी वैसा ही अपरिहार्य हो उठा है।

श्रीरामपुर जाने पर न जाने कब तक फिर रेशमी से भेंट होगी, यह सोचकर वह उसी समय रसेल साहब की कोठी की तरफ चल पड़ा। टुशकी से नहीं बताया कि कहाँ जा रहा हूँ। राम वसु को मालूम था कि रेशमी की स्मृति टुशकी के कलेजे में एक छोटे काँटे-सी गड़ती रहती है। इसलिए नाहक ही क्यों दुखाया जाए उसे!

श्रीरामपुर में पुनर्मिलन

श्रीरामपुर में 'डेनमार्क टैवर्न' घाट के पास ही था। कैरी ने उसे यहीं पूछताछ करने के लिए लिखा था। वहाँ पहुँचते ही कैरी दौड़ा आया — वेलकम मुंशी, वेलकम! मैं जानता था, तुम जरूर आओगे।

कैरी ने उत्साह के साथ आवाज दी, मि० मार्शमैन, मि० वार्ड आओ, जल्दी आओ। देखो, हमारे मित्र मि० वसु आए हैं।

बगल के कमरे से वार्ड और मार्शमैन बाहर निकल आए।

परिचय, हाथ मिलाना और कुशल-क्षेम की बारी आई। राम वसु ने देखा, वार्ड और मार्शमैन दोनों ही कम उम्र के हैं। तीस से दो-चार साल ज्यादा। इससे अधिक नहीं।

कैरी ने कहा, मुंशी, तुम्हारा परिचय मैं इन्हें विस्तार से दे चुका हूँ, अब तुम्हें इनका परिचय बताऊँ।

उसके बाद जरा रुककर बोला — इनका परिचय जबानी दूँ भी क्या, धीरे-धीरे आप ही मालूम होगा। इनके आने से मेरी शक्ति सौ गुनी बढ़ गई है। हमने प्रेस का काम जोरों से शुरू कर दिया है।

राम बसु ने पूछा, कलकत्ता के होते आपने यहाँ क्यों डेरा डाला? इन कामों के लिए कलकत्ता ही सुविधाजनक है।

वही तो इच्छा थी, लेकिन बीच मे एक गलतफहमी हो जाने से इसके सिवाय दूसरा उपाय नहीं नजर आया।

ऐसी क्या गलतफहमी हो गई कि यहाँ बसने के सिवाय चारा न रहा?

तो सुनो, खोलकर कहता हूँ। कैरी बोला।

इनका जहाज कलकत्ता पहुँचने से पहले ही वहाँ के अखबार में खबर छप गई, कुछेक 'पैपिस्ट' पादरी आ रहे हैं। लिखना था, 'बैपटिस्ट', लिखा गया 'पैपिस्ट'। यानी पोप के चेले, रोमन कैथोलिक। तुम्हें यह जरूर मालूम होगा कि कलकत्ते मे जो ईसाई है, वे है प्रोटेस्टैट। उन्हे पोप के शिष्य रोमन कैथोलिकों से बड़ा डर है। अखबार में छपना था कि फरमान निकला, उन्हें कलकत्ते में उतरने न दिया जाए। लाचार होकर इन्हें श्रीरामपुर में उतरना पड़ा। यह शहर अंगरेजों के अधीन नहीं है, यह है डेनमार्क के राजा के अधीन। यहां के ईसाइयों ने इन्हें सादर अपना लिया।

राम बसु ने पूछा, किंतु यह छोटी-सी भूल सुधारी नहीं जा सकती?

मुंशी, भूल बड़ी खतरनाक चीज है, खासकर छपाई की भूल।

उसके बाद जरा रुककर सबकी तरफ देखते हुए कहा, हम लोगों ने भी छापाखाना खोला है। मैंने कह दिया है, छापाखाने के भूतों से — वे भूत हम लोग ही हैं — तुम लोग होशियार रहना। छपाई की एक खतरनाक भूल के तुम लोग शहीद हो, कहीं तुम लोग भी वैसी गलती न कर बैठना।

सभी ठठाकर हँस पड़े।

इतने में मार्शमैन वाहर की ओर देखकर वोल उठा, वह देखिए एक नन्हा भूत आ रहा है।

एक गैली का गीला प्रूफ लिए फेलिक्स कैरी आया — इसे अभी ही पढ देना होगा।

उसके हाथ से झट प्रूफ लेकर कैरी उसी मे तन्मय हो गया।

मुंशी ने आगे वढ़कर फेलिक्स से हाथ मिलाया, पूछा क्या हाल है मास्टर कैरी ?

वुरा होने की गुंजाइश कहाँ ? मैं और मि० फाउन्टेन रात-दिन काम में जुटे हैं।

क्या छाप रहे हो ?

मत्ती रचित सुसमाचार।

यह कव लिखा गया ?

आपके चले जाने के वाद पिता जी ने अकेले ही लिखा।

तुम्हारे पिता जी की तुलना नहीं है मास्टर कैरी।

फेलिक्स प्रूफ लेकर लौटने लगा तो राम वसु ने कहा, चलो, तुम्हारे साथ चलकर जरा देख आऊँ, छापाखाना का काम कैसा चल रहा है। इसी वहाने मदनावाटी छोड़ने के वाद का इतिहास भी सुन लिया जाएगा।

ठीक है। चलिए। फेलिक्स ने कहा, पास ही उस मकान मे अपना छापाखाना है।

उन्हे जाते देख कैरी ने कहा, मुशी, एक मिनट रुक जाओ। सुनो, आज से ही तुम हमारे मिशन के काम में दाखिल कर लिए गए। तीस रुपए माहवार मिलेंगे। राजी ?

राम वसु ने कहा, डा० कैरी, मैंने कव आपकी वात नहीं मानी ?

उन दोनों के चले जाने पर कैरी ने वार्ड और मार्शमैन से कहा, मुंशी से परिचय होने दो, देखोगे, पाडित्य, वाग्मिता और निष्ठा में सारे देश में इसका सानी नहीं।

आप तो चले गए मुशी, क्यों चले गए, मै आज तक नही जान

पाया। उसके बाद विपत्ति आनी शुरू हुई। एक पर एक।

फेलिक्स बीती बातें बताने लगा — पहले तो बंगला पाठशाला टूट गई, उसके बाद एक रात बर्तन-भाड़ा चुराकर छिरू की माँ चंपत हो गई और साथ ही साथ तहबिल के रुपए उड़ाकर अमले-गुमाश्ते रफू-चक्कर हो गए। इधर माँ का पागलपन और भी बढ़ गया और उधर उडनी साहब ने कोठी उठा देने की नोटिस दी। मैंने पिता जी से कहा, चलिए, हम कलकत्ते चले चलें। इसपर पिता जी ने क्या कहा, मालूम है? कहा, जीवन की लड़ाई में एक भी कदम पीछे डालने से फिर आगे बढ़ना मुमकिन नहीं। उन्होंने कहा, अगर इतनी-सी असुविधा से कलकत्ता भाग खड़े हो तो कलकत्ते में असुविधा होने पर विलायत भागना होगा। नहीं फेलिक्स, यह न होगा।

मुंशी तन्मय होकर सुन रहा था। कहा, बात सही है फेलिक्स, अंत तक हटने की इच्छा न होने से कोई पहला कदम पीछे नहीं हटाता।

ऐसे समय आ पहुँचे मि० फाउंटेन। उनकी मदद से पिता जी चालीस पाउंड पर कलकत्ते में एक छापाखाना खरीद लाए। कोठी उठ गई। हम पास ही के खिदिरपुर ग्राम में चले गए। उस छापेखाने पर जिस दिन पहला पन्ना छपा, आस-पास के गाँवों के लोग देखने को टूट पड़े — कल से किताब छपती है। उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। इसपर गाँव के लोगों ने एक गीत रचा था। कुछ पंक्तियाँ आज भी याद हैं।

फेलिक्स ने गाकर सुनाया —

> धन्य साहब कंपनी!
> किताब छापी कल से
> हाय, इसी के चलते
> गुरु जी का उठा दाना-पानी।
> धन्य साहब कंपनी।

वाह, खूब लिखा है। खैर आगे क्या हुआ कहो। राम बसु बोला।

इसी बीच यह खबर मिली कि ये लोग श्रीरामपुर आए हैं। पिता जी को उन्होंने आदर से बुलाया। पिता जी ने देखा, लक्ष्य तो एक ही है, फिर इतनी दूर क्यों पड़े रहना। आखिर हम सब चले आए।

और टासम का क्या हुआ ?

आपके चले जाने के बाद ही जो वह गायब हुआ सो आज तक पता नहीं चला! कोई कहता है, राजमहल गया। कोई कहता है वीरभूम।

मदनाबाटी का बाद का इतिहास राम वसु को मोटे तौर पर मालूम हुआ।

रात बिस्तर पर लेटते ही दिन भर के विचित्र अनुभव मकड़े के जाले-से वहाँ बिखर गए। याद आ गया रेशमी का रोता हुआ कातर चेहरा। स्थिर आँखों के कोने से आँसू ढुलक रहा है — सारा मुखड़ा किसी कुशल मूर्तिकार की गढ़ी मूर्ति-सा अचल। सामने खड़ा राम वसु, लेकिन देख नहीं रही है — आँखें न जाने किस अदृश्य दिगंत में खो गई हैं।

क्यों री रेशमी, क्या हो गया, रो क्यों रही है ?

उत्तर कौन दे ? उत्तर देने का मालिक जो मन है, वह तो आज किस अगम गहन में भटक गया है। राम वसु विमूढ़-सा खड़ा रहा — दोनों आमने-सामने।

अचानक सुध आने पर रेशमी बोली, कायथ दा कब आए ?

राम वसु व्याख्या में नहीं पड़ा। पूछा, रो क्यों रही है ? क्या बात है ?

इस सवाल से आँसू और जोर से उमड़ आया।

राम वसु ने खीज कर कहा, रोने का कारण नहीं बताती, तो रहने दे, मैं जाता हूँ।

ओ, आपसे नहीं कहा ? कायथ दा, मिस एलमर आज सवेरे चल बसी।

एँ, कह क्या रही है ? वसुजा चौंक उठा । पूछा, अचानक ?

एकदम अचानक नहीं, सेहत कुछ दिनों से खराब रह रही थी । प्रायः मुझसे कहा करती थी, रेशमी बीबी, मैं अब ज्यादा दिन नहीं जिऊँगा ।

मैं कहती, ऐसी बातें करेगी तो मैं आपके पास भी नहीं आऊँगी !

वह कहती, इसका मतलब यह नहीं कि यम भी तुम्हारा ही उदाहरण ग्रहण करेगा । वह रोज-रोज थोड़ा-थोड़ा करके मेरी तरफ बढ़ता आ रहा है ।

समझ गए कायथ दा, हमारी उसकी ऐसी ही बातें रोज हुआ करती थीं ।

राम वसु ने कहा, अंत मे हुआ क्या, सो बता ।

खास कुछ नहीं हुआ । दो दिन पहले मामूली-सा बुखार हुआ । कल बुखार बढ़ जाने से अंड-बंड बकने लगी । आज सवेरे सारा किस्सा खत्म हो गया ।

राम वसु ने कहा, मिस्टर स्मिथ जरूर बड़ा दुखी हुआ है ?

वह तो एकबारगी मुरझा गया है, उसकी हर बात बढ़-चढ़कर होती है !

पगली, कहती क्या है ? मिस एलमर उससे प्यार करती थी । दो दिन के बाद दोनों की शादी होती और ऐसी घटना घट गई — मुरझा नहीं पड़ेगा भला ?

खाक प्यार करती थी ! मिस एलमर उसे फूटी आँखों भी नहीं देख सकती थी ।

लेकिन मुझसे तो स्मिथ ने कहा था कि कवच से फायदा हुआ है ।

फायदा जो हुआ, वह तो देख लिया आपने । जो पुरुष कवच-तावीज का भरोसा करता है, उसका यही हाल होता है, यही होना भी चाहिए ।

रेशमी ने ये बातें बड़ी रुखाई के साथ कहीं । इस रुखाई का कारण राम वसु समझ नहीं सका ।

यह तो नई समस्या आ खड़ी हुई ।

कैसी समस्या ?

अब तू रहेगी कहाँ ?

लेडी रसेल ने मुझे यहीं रहने को कहा है। कहा है, तुम अब कहाँ जाओगी ? जब तक हम लोग है, यही रहो।

खैर, निश्चित हुआ। वरना कल मेरा जाना बन्द हो जाता।

कल आखिर जा कहाँ रहे है आप ?

श्रीरामपुर। कैरी साहब ने बुलवा भजा है।

वे सब श्रीरामपुर आ गए ? क्या वही रहेंगे अब स्थायी रूप से ?

मेरे लिए जितना स्थायी हो सकना संभव है।

नारो को तकलीफ नही होगी ?

इस बीच नाढ़ा उसे अन्नदा के मरने की खबर दे गया था।

राम वसु ने कहा, माँ के मरने से किस लड़के को तकलीफ नहीं होती ?

तिस पर आप भी जा रहे हैं ?

माँ की कमी कहीं बाप दूर कर सकता है ? मैं रहकर भी क्या करूँगा ?

राम वसु को नींद आ ही नही रही थी। रह-रहकर रेशमी का चेहरा, रेशमी की आँखों का आँसू याद आ रहा था। अब तक रेशमी की याद थोड़ी धुँधली हो आई थी, लेकिन आँसू से धुलकर वह फिर उसके मन में दमक उठी। जरा-सा धब्बा न होता तो चाँद शायद इतना खूबसूरत नहीं होता।

रात जब बीत चली थी तो जरा देर के लिए राम वसु की आँखें लग आई थी। अचानक शोर-गुल से नींद उचट गई।

आँगन में खड़े-खडे सब जोर-जोर से बोल रहे थे। विशेष उत्साह का कोई कारण हुआ होगा। कुतूहल से राम वसु उठकर बाहर गया। देखता क्या है कि पादरियों के बीच डाक्टर टामस खड़ा है। उसकी पोशाक जैसी फटी थी, वैसी ही मैली-कुचैली। शकल भी वैसी ही। ऊपर से साथ में

था एक अधेड़ बंगाली मरियल-सा।

अरे मुंशी, तुम भी आ पहुँचे हो! अहा, प्रभु का मन्दिर भर गया —
टामस दौड़कर राम बसु से लिपट गया।

अच्छे तो रहे टामस साहब ? राम बसु ने पूछा।

मजे में। बड़े आनन्द मे था।

कहाँ थे इतने दिनो तक ?

वीरभूम मे एक गाँव है मुरुल। वही था।

वहाँ कोई गिरजा है क्या ?

कम्पनी की हर कोठी ही तो गिरजा है। वहाँ के कोठीवाल मिस्टर चीप बड़े सज्जन है।

साथ में यह नौकर है क्या ?

नौकर और मेरा ? प्रभु का नौकर है। नाम है उसका फकीर। ईसा के बाड़े में घुसने की इच्छा रखनेवाला एक भेंड़ है वह।

बहुत खूब ! बड़ी खुशी की बात है। मुंशी ने कहा।

उसे ईसाई बनाकर पहला ईसाई बनाने का गौरव पाऊँगा मैं !

राम बसु ने मन ही मन में कहा, देखा जाएगा, कितने बड़े बहादुर हो।

इस बीच कैरी, वार्ड, फाउंटेन, मार्शमैन — सभी एक-एक करके वहाँ से खिसक पड़े थे। इसलिए कि टामस की कहानी संक्षेप मे एक बार सभी सुन चुके थे, दुबारा सुनने का आग्रह किसी को न था।

टामस ने देखा, श्रोता कहने को एक मुंशी ही रह गया है। औरो की तरह यह भी न खिसक पड़े, इसलिए कसकर उसका हाथ पकड़कर उसे बैठाते हुए संक्षिप्त इतिहास की विस्तार से व्याख्या करने लगा। राम बसु को टामस का स्वभाव मालूम था। वह समझ गया, आज का सवेरा इसी में गया।

उद्देश्य -- तीर्थ-दर्शन

चंडी बख्शी ने रेशमी की नानी को अपनी मुट्ठी में करके रेशमी की जमीन-जायदाद, घर-द्वार, खेत-खलिहान सब कुछ अपने कब्जे में कर लिया था। जब उसे लगा कि लोगों में इसपर काना-फूसी चल रही है, तो बोला, अरे बाबा, जरा देख-रेख न रखो तो लोग-बाग लूट खाएँगे। बूढ़ी से सम्हले तो कैसे ?

फिर कहता, कैसी मुसीबत है देखो। सब जिम्मेदारी क्या मेरे ही कन्धे ?

लोग मन ही मन कहते, बात गलत नहीं है। गाँव की तथा आस-पास के दूसरे कई गाँवों की ऐसी बहुत-सी जमीन-जायदाद की जिम्मेदारी तुम्हारे ही गले पड़ी है।

चंडी बख्शी कहता, यह कौए के घोंसले में कोयल का बच्चा पालना हुआ। डैने सम्हले नहीं कि उड़ भागा। फिर तो काकस्य परिवेदना ! मतलब समझा न, कौए के मन में पीड़ा ही हासिल ! इससे लाख गुना अच्छा था कि मैं अपनी जोत-जमीन की देखभाल करता।

चंडी को ऐसे खेद की जरूरत ही नहीं थी, क्योंकि अपने नाम से उसे चुटकी भर भी जमीन न थी। चंडी जैसे आदमी के लिए पराया ही अपना होता है।

लेकिन लोगों से जो भी चाहे कहे, चंडी के मन में चैन न थी। उसे पता था कि रेशमी अभी जिन्दा है और साहब की हिफाजत में है। क्या पता, कब आ खड़ी हो। वैसे में जमीन-जायदाद तो जाएगी ही, न जाने और क्या आफत आए। उसकी दुश्चिन्ता का अन्त न था। ऐसी विपत्ति के समय का एकमात्र सहारा महाराज नवकृष्ण भी कुछ समय पहले चल बसे थे। चंडी को अब कौन बचाए।

मेघ काला कितना की क्यों न हो, उसमे चाँदी की दो-चार रेखाएँ जरूर होती हैं। चंडी के उल्लू सीधा करने की राह का सबसे बड़ा बाधक तिनू

चक्रवर्ती मारा जा चुका था। गाँववाले उसकी हत्या के रहस्य को आज तक भी नही समझ सके थे। सिर्फ चंडी ने ही सही अंदाज लगाया था। बुरे लोगो के लिए धूर्त हुए विना नहीं चलता — साधुओं को ही निर्बोध होना सोहता है।

चंडी समझ गया था तिनू उसका इरादा समझकर रेशमी को बचाने के लिए बजरे पर गया था। अँधेरे मे दोस्त-दुश्मन की पहचान न हो सकी थी। मरने को तिनू मर गया। इसे भी वह विधाता की ही इच्छा कहता था।

वह कहता, मित्तूजय — मृत्युजय उसके सारे दुष्कर्मो का प्रधान संगी था — कहो तो, यह कैसे सम्भव हुआ ? मै अगर अन्याय करने गया था, तो मरना मुझे चाहिए था, तिनू क्यों मरा ?

लोग कहते है, साहब ने अँधेरे मे गोली चलाई थी। भई मित्तूंजय, अंतर्यामी की आँखों के लिए भी रोशनी और अँधेरा होता है ? वे तो देख रहे थे कि कौन मर रहा है। फिर बचा क्यो नही लिया ?

मृत्युजय ने कहा, यह आप ही समझा दीजिए। हम तो लोगों के सवालों का जवाब नही दे पाते।

इससे दु:ख मत करो, शास्त्र का मर्म समझना आसान नहीं।

उसके बाद शास्त्र की आलोचना के लायक शांत और संयत भाव से बैठकर बोला, क्या भगवान ने गीता में कहा नहीं है कि 'परित्राणाय साधूनाम् विनाशाय च दुष्कृताम्, संभवामि युगे-युगे।' अरे भैया, जब तिनू मरा तो समझना चाहिए कि वह दुराचारी था और मैं जब बच गया, तो मानना होगा कि मैं साधु हूँ।

जरा देर रुककर फिर बोला, गीता पढ़ो, अच्छी तरह से गीता पढ़ोगे तो किसी काम में रुकावट नहीं होगी।

बहुत संभव है, चंडी को चेले की पूरी महिमा मालूम न थी, नहीं तो वह ऐसा उपदेश देता ही क्यों !

मृत्युंजय ने कहा, अब क्या करने की सोच रहे है ?

एकबार कलकत्ता जाना होगा।

कलकत्ता ? किसलिए ?

मुझे लगता है, वह छोकरी वहीं है। वहाँ तो साहब लोगों की चूमा-चाटी चलती ही रहती है। कहाँ तक क्या हुआ खुद मौके पर जाकर ही देख आऊँ। जानते ही हो, क्षेत्रे कर्म विधीयते।

साथ में और किसे ले जाएँगे ?

ज्यादा लोग ले जाना ठीक नहीं, बात खुल जाएगी।

तो, अकेले ही जा रहे है ?

एकदम अकेले भी नही। तुम नहीं चल सकोगे ?

हर्ज क्या है ?

मोक्षदा बूढ़िया को साथ लेना होगा।

क्यों ?

नादान हो, कुछ समझते ही नहीं। कलकत्ता कम्पनी का है, कानून का राज है वहाँ। उस छोकरी के बहकावे से अगर साहब लोग कुछ गोल-माल करना चाहें तो इस बुढिया को आगे कर दूँगा। कहूँगा कि यह अपनी नतनी को ले जाने के लिए आई है। समझ गए। इसके बाद अपनी कोई जिम्मेदारी नहीं रहेगी।

ठीक कह रहे है। लेकिन बुढ़िया को इतना कहा तो नहीं जा सकता।

जो कहा जा सकता है, कह दिया है। कह दिया है, काली के दर्शन करने कालीघाट जा रहे हैं। वह उछलकर राजी हो गई।

तब तो आपने पूरी तैयारी कर ली है। पूरी तैयारी करके ही आगे बढ़े हैं।

बढा कहाँ हूँ ? अभी-अभी तो जोड़ामऊ में ही बैठा हूँ। तुम जाकर तैयारी कर लो, कल सवेरे ही चल देंगे।

दूसरे दिन सवेरे मोक्षदा को साथ लेकर चंडी और मृत्युंजय कलकत्ता रवाना हो गए।

लोग आपस मे बोलने लगे, चंडी मुंह से कड़ुवा बोलने के बावजूद भी मन का सादा है। देखो, आखिर बुढ़िया को कालीघाट ले तो गया। अकेले ही जाता तो कौन रोकता ? जो भी कहो, दोष-गुण दोनों से बनता है आदमी।

तिनू चक्रवर्ती के न रहने से चंडी के असली मतलब को कोई न जान सका।

जिन्दा या मरा

बरियल ग्राउण्ड रोड से पूरब सुन्दरवन मे पेड़-पौधो को काटकर थोडी-सी जगह साफ-सुथरी करके कब्रगाह बनाई गई थी। वही एक ओर एक नई कब्र बनी थी। पत्थरों की जोड़ाई। चूना-सुरखी तक नही सूख पाई थी अभी। एक दिन थोड़े-से सफेद फूल लेकर जॉन वहाँ पहुँचा। वह धीरे-धीरे, उदास कब्र के पास पहुँचा कि चौंक उठा। अरे, ये फूल यहाँ कौन रख गया? जॉन कल आया जरूर था, मगर फूल नही छोड़ गया था। सफेद गुलाबों का एक गुलदस्ता वह अपने साथ ले आया था। उसे कुछ देर तक कब्र पर रक्खा और जाते समय उठा ले गया। सफेद गुलाब रोजी को बड़े प्यारे थे। इसलिए जॉन व्हाइट रोज कहकर उससे मजाक किया करता था। उसे याद आया रोजी ने कहा था, कर्नल मुझे रेड रोज कहता है और तुम अब व्हाइट रोज कहने लगे हो। तुम लोगों में कही वार ऑव रोजेज न छिड़ जाय! रोज की यादगार स्वरूप सफेद गुलाबों के गुच्छे को लेकर वह घर लौट गया था। तो ये सफेद गुलाब कहाँ से आए यहाँ? उसके आश्चर्य की सीमा न रही। साथ ही ईर्ष्या ने भी काँटा गड़ा दिया। अपनी प्रियतमा और किसी की भी प्रेयसी है, किसी प्रेमिक के लिए यह

चिंता प्रिय नहीं होती। प्रेयसी के गुजर जाने के बाद भी यह चिन्ता मिटती नहीं, बल्कि बढ़ती है। मृत्यु जब यवनिका डाल देती है, तो सारे ही सम्बन्ध मिट जाते हैं, एक ही सम्बन्ध रह जाता है प्रेम का। उस सम्बन्ध से को दूसरे किसी जीवित व्यक्ति ने याद रक्खा है, प्रेमी के लिए यह बर्दाश्त बाहर है। उसके मन में एकबार बिजली-सी गिर गई — कर्नल तो नहीं? लेकिन उसी क्षण उसे याद आ गया, नहीं! कर्नल ने तो उसी दिन, जिस दिन रोज़ी मरी, एक हार्ड मन की मिस स्पेंगलर को सौंप दिया था अपने को — बेशक उतना ही सौंपा, जितना कर्नल जैसों के लिए सम्भव था। यह उसने अपनी आँखों देखा था। लोग जब रोज की लाश लिए कब्रगाह की ओर जा रहे थे, कर्नल उसी समय अपनी नई प्रेमिका को लेकर जोड़ी हाँकता चला जा रहा था! उसने गाड़ी नहीं रोकी, गाडी से उतरा नहीं, यहाँ तक कि अपनी टोपी भी जरा देर के लिए नहीं उतारी। मन ही मन सबने उसे धिक्कारा। मगर सच पूछिए तो जॉन के मन में कैसा एक आनन्द हुआ! ओह, साबित हो गया कि तुम्हारा प्रेम कितना सच्चा था। मौत के आगे चालाकी नहीं चलती।

लेकिन ये फूल दे कौन गया? कल तो ये फूल थे नहीं। हो सकता है फूल देनेवाला वह अजाना व्यक्ति मेरे जाने के बाद आया हो, यानी और साँझ होने पर। खैर, किसी ने भी दिया हो, हर्ज क्या है? इतना ही तो पर्याप्त है कि कर्नल ने नहीं दिया। कब्र पर फूलों को रखकर वह मूढ की नाई बैठा रहा। इतने में पीछे से पत्तों की मर्मराहट सुनाई दी। चौक-कर उसने पीछे की ओर देखा। देखा, रेशमी है। हाथ में लाल गुलाब! फूल का रहस्य पलक मारते ही सुलझ गया।

जॉन उठ खड़ा हुआ, रेशमी बीबी तुम!

हाँ, मि: स्मिथ!

ये फूल तुम रख गई थी कल?

जी हाँ।

मैं सोच में पड़ गया था, यह कौन आया फिर?

आया तो हर्ज भी क्या ? मौत के आगे क्या खींचा-तानी ?

नही। और फिर तुमसे हो भी क्यों। अरे, खड़ी क्यों हो ? फूल रक्खो। बैठो।

रेशमी ने कब्र पर फूल सजा दिए। बैठ गई। लाल फूल। रेशमी के और जॉन के फूल एकाकार हो गए।

मरे को कोई लाल फूल देता है रेशमी बीबी ?

मेरा मन यह मानना ही नहीं चाहता कि मिस एलमर मर गई।

काश, यह सच होता !

सच होने मे रोक क्या है। सब कुछ तो मन का व्यापार है।

फगुनी हवा का झोंका बडे-बड़े पेडों मे दबे दीर्घ निश्वास-सा हा-हा कर उठा। तरह-तरह के फूलों की मिली-जुली गंध एक अजानी और अस्पष्ट अकुलाहट बिखेर गई ; हजारों हजार पतंगों के चंचल पंख अदेखे के उत्तरीय के छोर-से तन को छूने लगे और वह छिपी पोंड़की अपने विलाप की न खत्म होनेवाली रस्सी अतल के तल की खोज में नीचे गिराती ही चली जा रही थी।

दोनों की बातें बहुत पहले ही खत्म हो गई थी — वन के रहस्य की ओर आँखें बिछाए दोनों निर्वाक बैठे रहे। मौत के सामने मुखरता को स्थान नहीं होता।

रेशमी क्या सोच रही थी, कैसे बताऊँ ! हाँ, जॉन का आर्त भाव, फूल लेकर उसका आना शायद उसे नहीं सुहाया। कल जब उसने कब्र पर किसी के फूल का कोई चिह्न नहीं देखा — उसे खूब पता था कि जॉन के सिवाय फूल देनेवाला और कोई नहीं है — तो मन ही मन उसे खुशी हुई थी। उसने अपने मन को समझाने की कोशिश की थी कि ठीक ही है, मरने के बाद उसे मिस एलमर का एकाधिकार मिला। मगर खुशी क्या महज इसीलिए थी ? शायद मन के नीचे खुशी का और भी एक कारण था — उसे मिस एलमर का और कोई खिचाव नहीं, वरना दो ही दिन में इस तरह भूल नही जाता ! फूल तो कब्र पर पराए से पराए

लोग भी दे जाते है ! आज लेकिन जॉन को देखकर उसके मन में खरोच-सी लगी, जॉन भूला नहीं है ! बुरा भी क्या, इतनी जल्दी भूल जाना क्या ठीक दीखता है । फिर सोचा, क़ब्र पर दो फूल रख देना निरी सामाजिक प्रथा है इससे भूलने न भूलने का कोई सम्बन्ध नही ।

मि: स्मिथ, आप क्या आज ही पहली बार आए ?

नहीं रेशमी बीबी, कल भी आया था ।

आए थे, तो फूल क्यों नही रक्खा ?

सफेद गुलाब ले आया था । क़ब्र के सिरहाने से छुआकर वापस ले गया । सफेद गुलाब बड़े प्रिय थे मेरी प्रियतमा के ।

समाधि पर चढ़ाए फूल को भी कोई वापस ले जाता है ?

क्यों ?

मौत को दिया हुआ दान लौटाया नहीं जाता ।

अभी-अभी तो तुमने कहा, रोजी को तुम मृत नहीं मान पाती ।

लेकिन आप तो देखती हूँ मान पाए हैं ।

कैसे ?

आप पुरुष हैं, प्रेमिका के मरने से नितांत दुखी नहीं होते ।

चौंककर जॉन ने कहा, सो कैसे ?

आप लोगों को और भी तरुण प्रेयसी ढूंढ़ने का सुयोग मिल जाता है ।

रेशमी बीबी, तुम जैसी कोमल हो, वैसी ही कठोर हैं तुम्हारी बातें।

रेशमी मन ही मन खुश हुई । बोली, आप लोगों के मन पर चोट कर सके, ऐसी कठोर बात औरतों के अज्ञात है ।

जॉन को जवाब नहीं सूझा ।

अपनी कूक से दो कोयलों ने आसमान को गुंजा दिया ।

जॉन ने कहा, रेशमी बीबी, अब यहाँ से चलो । शाम के बाद बहुत बार जंगली जानवर निकलते है यहाँ ।

रेशमी उठ खड़ी हुई ।

जॉन ने पूछा, कल फिर आओगी न ?

कोशिश करूँगी। समय मिलना मुश्किल है।

नहीं-नहीं, जरूर आना! एलमर को तुम्हारे हाथों के फूल बड़े प्यारे थे।

आप तो आ रहे हैं न?

मुझे दूसरा काम ही क्या है। चलो, तुम्हें कुछ दूर तक पहुँचा दूँ।

दोनो पश्चिम की ओर गए और बस्ती के पास पहुँचकर दोनो दो ओर को चले गए।

जॉन ने मन मे सोचा, आएगी तो रेशमी बीबी?

रेशमी ने सोचा, धरती चाहे रसातल को चली जाए, आए बिना जॉन को कोई उपाय नही।

दूसरे दिन जॉन जब निश्चित समय से बहुत पहले एलमर की कब्र पर पहुँचा, तो उसका दिल बैठ गया। कहीं कोई नही। लेकिन जब कब्र पर उसे ताजे फूल दिखाई दिए तो वह निराशा से बिलकुल टूट गया। रेशमी फूल रखकर लौट गई है। जॉन को लगा, अन्याय है। यह लगा, रेशमी बड़ी विश्वासघातक है। लगा, सुख, सुन्दरता और आशा से भरी-पूरी यह पृथ्वी बिलकुल बेकार है। वह घुटनो के बीच मुँह छिपाकर बैठ गया।

पास ही एक कब्र की आड़ से जॉन की यह दशा देखकर रेशमी की आँखो मे कौतुक की चमक चमकी। होंठों पर हँसी की रेखा फूटी, सारे चेहरे पर सार्थकता का प्रकाश दमक उठा, जो चाहती थी वह, वही हुआ। कहना नहीं होगा कि वह पहले आई और कब्र पर फूलों को रखकर जॉन की हालत देखने के लिए छिपकर जा खड़ी हुई। वह जाँचना चाहती थी, किसका आकर्पण ज्यादा है, जीवित का या मृत का! महज कला तक उसका ख्याल था कि मरे चाँद के खिचाव से जैसे समुंदर मे जोरों के ज्वार उठता है, वैसे ही मृत एलमर जॉन के कलेजे मे हलचल पैदा करती होगी। लेकिन अभी-अभी उसने जॉन की जो दशा देखी, उससे समझा कि इस दिशा मे जिन्दा का स्थान मृत से ऊपर है। उस अभागे युवक पर उसे कैसी तो दया-सी हो आई, कैसा तो माता जैसा भाव! प्रत्येक प्रेम में

मातृभाव मिला होता है, हर नारी संभावित माता है, इस लिहाज से छोटी से छोटी वालिका भी वडे से वडे पुरुप से वडी होती है।

फागुन के झडे पत्तों की मर्मरहट में पैर की आहट मिलाकर रेशमी ने पास जाकर पुकारा — मि: स्मिथ !

चौंककर जॉन ने सिर उठाया। चेहरा चमक उठा। बोला, तुम आई हो रेशमी वीवी ?

और इसके वाद ही, क्या करने जा रहा है, यह विना सोचे ही उसने रेशमी का हाथ पकड़ लिया, कहीं भाग न जाए वह छलनामयी, कही रहस्यमयी स्वप्न न वन जाए। उसे कब्र पर विठाया।

तुम्हारे फूलों को देखकर मेरा दिल वैठ गया था। लगा, तुम आकर लौट गई हो।

जाने क्यों लगी, घूम-घूमकर दूसरी कब्रों को देख रही थी।

इन कब्रों मे क्या रक्खा है देखने को ?

आप कहते क्या है मि: स्मिथ, मरे हुओं की कब्र वड़ी रहस्यमय होती है।

नहीं वीवी, यह तुम्हारी भूल है। रहस्यमय कोई चीज है, तो वह है जीवन। जीवन जैसा रहस्यमय होता है, वैसा ही सौंदर्यमय, वैसा ही सार्थक।

लेकिन मौत क्या जीवन का ही अंग नहीं है मि: स्मिथ ? मौत का रहस्य भी तो जीवन के ही रहस्य के अंतर्गत है।

तुम्हारा कहना ठीक है वीवी, लेकिन मौत का प्रवेश-द्वार तो जीवन का ही तोरण है — कब्र मे प्रवेश करना पडता है सौर-घर से।

यही तो कह रही थी — जीवन मे प्रवेश करने के दो दरवाजे हैं, एक सौर घर, दूसरा कब्र।

वीवी, तुम हिन्दुओं का दर्शन शास्त्र पर सहजात अधिकार है।

उसके वाद वोला, काश, तुम हिंदू न होती !

तो क्या मेरे नीग्रो होने से खुशी होती आपको ! खिलखिलाकर हँस

पडी रेशमी, मानो प्रमिक के सिरहाने पंखा झलती हुई वनांगना की कलाई की चूडियाँ वज उठीं।

जीवन और मृत्यु के बारे मे इतनी वाते उनके जानने की नहीं, जो कहते है उन्हे यह याद रखना चाहिये कि प्रेम जवान पर अजानी भाषा ला देता है और फिर प्रेम ही मुँह की भाषा छीन लेता है। जो वसंत वन-वन मे खिलाता है असंख्य फूल, वही फिर हवा के झोंकों से उन फूलों को धूल मे गिरा देता है।

उनके मुख की भाषा मूक हो गई! मगर आदमी महज मुख से ही तो भाव प्रकाश नही करता। चैत की साँझ मे आसमान के कोनों मे जैसे विजली की रेखाएँ कौंध-कौंध उठती है, उनकी आँखों के कोनों मे वैसे ही जिज्ञासा फूटी ; सुदी तीज के चाँद जैसी खिल पड़ी हँसी की लकीर होंठों पर ; प्यास की अनदेखी मरीचिका उनके अंगों को घेरकर जोत की झिमझिक विखेरने लगी।

आखिर उन दोनो की जवान एकवारगी वन्द हो गई! वसंत की रात मे हवा का पागलपन जरा देर के लिए शान्त हो जाता है, तो आम की वौर की सुगन्ध को वन की छाती दवा लेती है — वह दवाव समान रूप से असह्य सुख और दुर्वह दुःख का होता है। उसे सह सकना या झाड़ फेंकना, दोनों ही समान कठिन है।

कुछ देर वाद, कितनी देर वाद, उन्हें भी नहीं मालूम, प्रेम की दुनिया देश काल से परे होती है, जॉन एकाएक वोल उठा, रेशमी वीवी, मै तुमसे प्यार करता हूँ।

जॉन अपनी ही आवाज से चौंक उठा। उसके मुँह से यह वात किसने कही। मूढ जैसा, शर्माया-सा ताकता रहा। सोचा, पता नहीं अभी क्या कड़ुवा उत्तर सुनना पड़े।

वड़े ही सहज भाव से रेशमी ने कहा, अव चलिए मिः स्मिथ, साँझ हो आई।

ऐसे सहज जवाव से जॉन की जान मे जान आई — फाँसी के हुक्म के

बदले रिहाई मिली !

उसने दूसरे ही क्षण हृदय मे निराशा के धक्के का अनुभव किया, अभी लौटना होगा !

लेकिन रेशमी ने उठने की कोई जल्दी नही दिखाई, इससे वह खुश हुआ। किंतु फिर निराशा का भाव प्रबल हो उठा मन मे — असली बात का तो कोई जवाब नहीं मिला। बेकसूर असामी फाँसी की सजा से छुटकारा पाकर देखता क्या है कि फाँसी से तो छुट्टी मिली, पर और कुछ तो नही मिला। घर-द्वार, अपना-पराया, यहाँ तक कि राह-खर्च भी सामने नहीं।

पता नहीं, कौन अदृष्ट मनुष्य को प्रेम के झूले पर बिठाकर निर्दय परिहास करता है, इसमें उसे क्या आनन्द मिलता है, वही जाने।

उठिए मि: स्मिथ। साँझ हो गई।

साँझ हुई तो क्या हुआ ?

वाह, आपने ही तो कहा था, शाम को इधर बाघ निकलता है।

निकलता है तो निकले। हर्ज क्या है ?

हर्ज क्या है, दोनों की गर्दन तोड़कर खून पिएगा।

पौरुष दिखाते हुए जॉन बोला, डियरी वह पहले मेरी गर्दन तोड़ेगा।

मगर उससे ही क्या लाभ, उसके दो क्षण बाद मेरी भी तोड़ सकता है।

ऐसा दुःसाहस उस शैतान को हरगिज न होगा।

आखिर न होने की वजह ? वह तो मेरे प्रेम में नहीं पड़ा है।

इनडीड ! कहकर जॉन हँस उठा।

हँसी के वेग से भावुकता का कुहरा फट गया। हँसी तत्व-जिज्ञासा की पहली सीढ़ी है।

कब्रगाह से निकलकर दोनों रास्ते पर पहुँचे। चौककर जॉन ने इशारे से रेशमी को दिखाया। रेशमी ने डरकर आश्चर्य से देखा, पास ही झुरमुटों की आड़ में विचरता हुआ शार्दूलराज। किसी ने चूँ तक न की। रेशमी जॉन से सट गई। जॉन ने उसे अपनी बाँहों में लपेट लिया। बाघ

का भय बाहु के बंधन से जिस जोर की अपेक्षा करता है, जॉन के बाहुओं में उससे कुछ ज्यादा ही जोर था शायद। और बाघ का भय पुरुष की जिस घनिष्ठता की अपेक्षा करता है, रेशमी के सटने मे वह घनिष्ठता कुछ ज्यादा ही थी। दोनो लगभग एक होकर निश्चल जैसे, मूढ की नाईं, शिशु की भाँति, संसार मे सबसे ज्यादा सुखी-से भय, आनंद और विचित्र सौभाग्य से खडे थे; और अभी जुदा होना होगा — इस दुर्भाग्य से काँप रहे थे। वे निर्वाक देखते रहे बाघ की ओर — जल्दी जाए यह, धीरे-धीरे जाए, फिर कभी न आए; कल फिर इसी तरह आ पहुँचे — ऐसी न जाने कितनी परस्पर विरोधी भावनाएँ वलाका-सी उड़ती रहीं मन में। मुग्ध प्रणयी-युगल की लीला की ओर नजर डाले बिना ही बाघ अपनी राह चला गया। जिस जगल मे उनके प्रेम की भूमिका तैयार हुई थी, उसी वन के व्याघ्रराज ने उनके कपड़ों मे अटूट गाँठ बाँध दी। युगों पहले जंगल के एक साँप ने आदिम दंपति के जीवन में जिस भूमिका की सृष्टि की थी, उसी जंगल के ही एक पशु ने अनेक युगों बाद दूसरे दंपति के जीवन मे उसी तरह एक और अध्याय की सूचना कर दी।

बाघ के चले जाने के बाद भी उनकी बाहुओं का बंधन ढीला न पड़ा, निकटता हटी नहीं। खतरा अभी गया नहीं — यह आशंका जगाए रख-कर वे वैसे ही खड़े रहे। ऐसा कब तक चलता कौन जाने? लेकिन एका-एक कोयल की कूक से मानो दूसरा बाण छूटा, आम की बौर की गंध का दबाव कुछ और बढ़ा, हवा के हलकोरे में शायद नया छंद गूंजा और शुक्ला तृतीया के उत्सुक चाँद ने पेड़ों की शाखा-प्रशाखा को छेद कर जैसे कौतुक भरी पिचकारी जरा और जोर से मारी — क्या हो रहा है, यह जानने से पहले ही जॉन के होंठ रेशमी के होंठों से छू गए। इस तरह पल भर में रेशमी की सत्ता में ज्वालामय और सुखमय, विष और अमृतमय, वेदना और आनंदमय, सुख-दुख के निर्यास भरे, जलते हुए और शीत भरे अनुभव का सुदीर्घ शूल आमूल चुभ गया। अपने को एक झटके से छुड़ा-कर वह तेजी से भाग गई घर की ओर — पलटकर जॉन की हालत न

देखो। जॉन कुछ देर अप्रतिभ-सा खड़ा रहा, फिर अपराधी की नाईं उसने धीरे-धीरे चलना शुरू किया।

अब तक कौतुकप्रिय अदृष्ट इन दो अबोध तरुण-तरुणी की प्रेम-लीला देखकर निश्चय ही खूब हँस रहा था — अब उसे छुट्टी मिली।

तत्वज्ञानी सदा से विचार करते आ रहे हैं कि मनुष्य स्वयं भला है या बुरा। लेकिन सच बात तो यह है कि मनुष्य स्वयं न तो भला है, न बुरा, वास्तव में वह विचित्र है, अद्भुत, और अप्रत्याशित है उसकी प्रकृति। इसीलिए कब्रगाह में बैठकर भी प्रेम रचने में उसे संकोच नहीं, इसीलिए अभी-अभी मरी प्रेयसी की चिता की राख उसकी मुट्ठी में सिंदूर हो उठती है, इसीलिए कब्र पर चढ़ाए फूलों से वह प्रेम की माला गूँथता है। यह भले-बुरे का काम है भला! यह काम है अद्भुत का! शायद यही मानव-स्वभाव का सत्य है। या उससे भी बढ़कर — यही शायद विश्व प्रकृति का सत्य है। सूखे-मरे पत्ते नए जीवन की भूमिका रचते हैं, प्रेम की समाधि बनाती है नए प्रेम का रंगमंच, श्मशान की छाती पर खड़ी हो जाती है पंचवटी, और आखिर एक दिन समाधिस्थ शव नवीन जीवन का प्याला हाथ में लिए ज्योतिर्मय रूप में प्रकट होता है। जीवन का घोड़ा मरण के अचल रथ को उल्लास के साथ तेजी से सार्थकता की ओर खींच ले जाता है। हारी हुई मौत जयजयकार कर उठती है, जय, जीवन की जय!

कर्तव्य-परायण जॉन

तीर लगी मृगी-सी भाग आई रेशमी; राह में कोई था नहीं, नहीं तो उसे उस हालत में देखकर सब अवाक रह जाते, एक जीती-जागती

लड़की ऐसे भाग क्यों रही है। बगीचे की तरफ के दरवाजे से मकान में घुसी — सीधे पहुँची अपने कमरे मे और सो गई। उस रात खाने के लिए भी वह न उठी।

धीरता से सारी बातों पर गौर करने लायक मन की अवस्था नहीं थी उसकी। जब जो भाव प्रबल हो उठता था, उसी को चरम मान ले रही थी, लिहाजा हर पल मन में भावांतर की बाढ़ प्रबल हो रही थी। पहले तो उसे जॉन पर एक दारुण क्रोध हुआ। लगा, उसने उसकी असहायता का लाभ उठाकर उसका घोर अपमान किया है। लेकिन एक बार के लिए भी उसे इसकी याद नहीं आई कि असहायता की अवस्था महज उसी की नहीं थी, चंगुल में पाता तो बाघ जॉन को भी नही छोडता। फिर उसे लगा, जॉन डरपोक है, नहीं तो अकेली पाकर कोई पुरुष स्त्री से ऐसा व्यवहार नहीं करता। लेकिन इतने पर भी उसने यह नही सोचा कि मन ही मन वह जॉन के प्रति आकृष्ट हुई थी। गौर करने पर उसे यह मानना ही पड़ता कि उसका मन भी जॉन की तरफ भली-भाँति झुक गया था। मन के दो मेघखंड जब सजलता का भार लिए पास-पास आ गए थे, तो बाघ ने अचानक आकर उन्हे बिजली की राखी से बाँध दिया! इतने दिनो की मंद-मंथर मंदाक्रांता एक पल मे शार्दुलविक्रीड़ित छंद में बदल गई।

यह तो उसके मन की गवाही है। तन की गवाही इसके ठीक विपरीत थी। उसका शरीर रह-रहकर जॉन के स्पर्श-पुलक का अनुभव करके उमंग से काँप-काँप उठता था। उस चुंबित पल को स्मृति के सहारे खींच लाने की चेष्टा का अंत नहीं था, लेकिन ठीक से बन नहीं रहा था। निर्मल जल के नीचे वह छूटी हुई चुन्नी नजर आ रही थी — उसने हाथ बढाया, और, और नीचे, लेकिन तो भी वह हाथ नहीं लगी। आँखों से इतना करीब दीखती, लेकिन हाथ से मिलती क्यों नहीं! विमूढ़ देह समझ नहीं पाती, यह कैसा रहस्य है! कैसी रहस्यमय पीड़ा है। इंद्रधनुप मे दो-एक रंग है, मन कहता बेशक है, लेकिन आँखें पकड़ नही पातीं। मन जितना ही तन्मय होता, आँखें उतनी ही उद्भ्रांत हो जाती हैं। आँख

और मन की गवाही हरगिज एक नहीं हो पाती। रेशमी का मन जितना ही कह रहा था कि जॉन कापुरुष है, अत्याचारी है, निर्दय है, उसका तन उतने ही आग्रह से चुंबन के उस उज्ज्वल क्षण को जैसे का तैसा पाना चाह रहा था। मन और तन के इस द्वन्द्व से दूर खड़ी रेशमी सोचती, यह कैसी आफत! ऐसे मे उसे जॉन की तसवीर दिख गई। वह उत्तेजित हो उठी, इस तसवीर को कौन ले आया। मगर ले वह खुद ही आई थी। रोज एलमर की मृत्यु के वाद उसके कमरे से उसे उठा लाई थी वह अपने कमरे में। उसे हटा देने के लिए हाथ मे उठाते ही वह चौंक उठी — जॉन के चेहरे पर मन और तन के विपरीत साद्य का चिह्न उसे दिखाई पड़ा। दोनों आँखो को देखकर मन कह उठा, निष्ठुरता से भरी है ये; प्रत्यंचा खिचे अधर के धनुप की विलास-वक्रता देखकर सर्वाङ्ग रोमाचित हो आया, चुम्बनमय वह क्षण अमृत-सने एक छोटे तीर-सा उसके हृदय मे चुभ गया! यह ठीक से समझने के पहले ही कि क्या कर रही है वह, देह ने वहाँ पर एक और चुम्बन अंकित कर दिया। दूसरे ही क्षण मन ने इसका विरोध किया, तसवीर दूर फेंक दी गई। पता नहीं यह स्थिति कब तक चलती, लेकिन एक समय इस द्वन्द्व से थककर वह सो गई — कपड़े वदलना भी भूल गई।

उधर जॉन की दशा का सहज ही अनुमान किया जा सकता है। दूसरे दिन वह निश्चित समय पर रोज की कब्र पर पहुँचा। साँझ जब तक रात मे नही समा गई, वह वैठा रहा। कोई नही आया। उसे यह भी सुध न रही कि कल यहाँ बाघ निकला था जो आज भी आ सकता है। जिसे मन के वाघ ने दवोचा हो, उसका वन का वाघ क्या कर सकता है! अन्त मे लम्बी उसाँस भरकर वह लौट आया। इस तरह रोज जाता, रोज निराश लौट आता। उसकी यह उदासी देखकर लिजा सोचती, हाय वेचारा जॉन! कितना कष्ट झेल रहा है। वह सोचती, जॉन ने इतनी कम उम्र में कितना कष्ट उठाया! केटी का शोक भूलते न भूलते रोजी का शोक मिला। कभी-कभी उसे सात्वना देने को सोचती, लेकिन भाषा नहीं

मिलती। भाई के शोक को चुपचाप मन में पालती रहती। सोचती बेचारा जान!

रेशमी ने एलमर की कब्र पर जाना बन्द कर दिया था। जानती थी कि वहां जाने से जॉन से जरूर भेंट होगी। सोचा, वह अहमक बैठा रहे वहाँ दिन झुक जाता तो वह समझ जाती, जॉन वहाँ बैठा है। निर्बोध की निरर्थक प्रतीक्षा की बात सोचकर कभी-कभी कौतुक होता उसे। गुस्सा भी आता — कम्बख्त आ जाए एक दिन बाघ के चपेट में, सबक सीखे। लोग कहते हैं, प्रेम अंधा है। यह अतिरंजना है। दरअसल प्रेम काना होता है। वह महज एक ही आँख से देखता है, जो आँख उसकी ओर होती है।

धीरे-धीरे जॉन के मन में भी प्रतिक्रिया हुई। सोचा, कितना अकृतज्ञ हूँ मैं! एक नेटिव लड़की के लिए मैं स्वर्ग की दूती रोजी की अवहेलना कर रहा हूँ। छि यह कायरता है! सोचा, यह दुःख मेरा वाजिब पावना है, यही सबक है! और उसने निश्चय कर लिया, रोजी के सिवा किसी दूसरी स्त्री के बारे में वह सपने में भी नहीं सोचेगा। मेज की ओर देखा। देखा, उपेक्षा से मिस एलमर की तसवीर पर गर्द जम गई है, बहुत दिनों के फूल सूखे पड़े हैं। जाकर उसने ताजे फूल तोड़े, सफेद गुलाब के फूल! तसवीर की धूल झाड़ दी, उसे सजाया और बहुत दिनों के बाद तन्मय होकर रोजी की ओर निहारा। कितनी सुंदर! आँखें आनन्द से, कौतुक से, सुन्दरता से झलमला रही हैं। इनके साथ उन आँखों में अविश्वास की जो हल्की-सी झलक थी वह जॉन को दिखाई न पड़ी।

एक दिन की बात याद आ गई। जॉन ने कहा था, रोजी, मैं तुम्हें सदा प्यार करता रहूँगा।

रोजी ने कहा था, यानी इस बेला!

क्षुब्ध होकर जॉन बोला, तुम मुझे इतना अस्थिर समझती हो रोजी!

इसमें तुम्हारा क्या दोष है जॉन, प्यार चीज ही अस्थिर होती है!

हाँ, लेकिन क्या इस बेला, उस बेला?

एक ही बेला मिले तो क्या बुरा है?

तुम देख लेना रोजी, मैं तुम्हें आजीवन प्यार करूँगा।

मेरे मरने के बाद भी? पूछकर रोजी की आँखों में कौतुक भरा अविश्वास का भाव जग आया था।

बेशक!

लेकिन क्यों, अस्थिर वस्तु को चिरस्थायी करने की नाकामयाब कोशिश क्यों?

मैं तुम्हारे सिवा किसी को जानता जो नहीं।

मगर मुझे ही कितना-सा जानते हो?

तुम्हें पूर्णतया जानता हूँ।

जॉन के बचपने पर रोजी हँसी थी।

जॉन बहुत ज्यादा नासमझ नहीं होता, तो समझ लेता कि उसके प्रति रोजी का मनोभाव और चाहे जो हो, प्रेम नहीं है। जो प्यार करता है, वह प्यार को अस्थिर जानकर भी चिरंतन मानता है। तात्विक के लिए प्यार चंचल है, प्रेमिक के लिए चिरंतन।

तसवीर देखकर आज जॉन को वे सब बातें याद आईं। तसवीर को खींचकर उसने चूमा। संकल्प किया कि आज रोजी की कब्र पर जाकर फूल सजाऊँगा। संकल्प करते ही तन-मन में उसने एक नए तेज, नए उत्साह का अनुभव किया। तुरन्त वह जोर से दर्प के साथ मारे अवसाद को झाड़ फेंककर तनकर खड़ा हो गया। उसके बाद बहुत दिनों के अनतर दोनों जेबों में हाथ डालकर खुशी-खुशी किसी हल्के गीत की सीटी में बजाता हुआ कार्यालय की तरफ चला गया, कर्तव्य-परायण जॉन!

तीसरे पहर जॉन मिस एलमर की कब्र पर पहुँचा। वहाँ किसी को न देखकर वह हताश नहीं हुआ है, मन को यही बात समझाने के लिए सीटी बजाते हुए दो-एक बार कब्र के चारों ओर घूम गया। उसके बाद फूल लाने के ख्याल से जंगल में गया। आज वह ऑफिस से सीधे चला आया था, इसलिए फूल नहीं ला सका था।

उधर कब्र के पास आ खड़ी हुई रेशमी। इतने दिनों के बाद एका-

एक आज वह क्यों आई ? रेशमी मन को समझाने लगी, जरा उस बेवकूफ का अहमकपना देख आऊँ। कहा, मर्द की बेवकूफी देखना मुझे बड़ा अच्छा लगता है। इसके सिवाय और कुछ अगर उसके मन के अगोचर है तो कैसे जानूं। इतना जरूर सत्य है कि जॉन से ईर्ष्या रहने के बावजूद बहुत दिनों से उसे नही देखने के कारण वह मायूस-सी हो गई थी। मन को समझाती, एक बार मिल जाता तो उसे खरी-खोटी सुना देती कि वह समझता, रेशमी रोजी नहीं है, रेशमी वाजिब बात बोलना जानती है। लेकिन खरी-खोटी सुनाए किसे ? वह कम्बख्त तो दिखता ही नही। मन कहता, क्यों; कब्र पर जाओ न। सुना आओ खरी-खोटी। रेशमी बोली, पागल हो, फिर तो वह सोचेगा, मैं उससे मिलने आई हूँ। उससे अच्छा तो यह है कि उसे इस घर मे आने दो। मन ने कहा, लगता है तुम भी पागल हो गई हो। इस घर मे अब किस नाते आएगा वह ? रेशमी ने कहा, खैर, इस घर मे नहीं सही, लेकिन सामने के रास्ते से भी जाना-आना मना है क्या ? मन ने कहा, तो क्या तुम आम रास्ते पर उससे झगड़ोगी ? रेशमी ने कहा, धत्, झगड़ने क्यों लगी, लेकिन देखती एकबार। मन ने कहा, आखिर देखने का इतना आग्रह क्यो ? यह बात संदेहजनक नहीं है ? रेशमी ने कहा, आग्रह किस बात में देखा ? वह दुबला कितना हुआ है, यही देखती जरा ! मन ने कहा, दुबलाएगा किसलिए ? तुम्हारे विरह मे ? और कही यह देखो कि खासा मोटा-ताजा हो गया है, तब ? रेशमी ने कहा, हो सकता है, जैसा अहमक है वह !

मन से लगातार झगड़ते हुए थक गई थी रेशमी। सोचा, एक बार देख ही क्यों न आऊँ, क्या बात है ? और फिर गुलबदनी के लिए भी तो फर्ज था। लेकिन कब्र को सूना पाकर दिल बैठ गया। अपने मन को इस लिए समझाने लगी कि अपनी निराशा को अस्वीकार कर सके — अहा, खरी-खोटी सुनाने का मौका नहीं मिला। सो वह कब्र के पास उदास बैठ गई।

जरा देर बाद पत्ते खड़खड़ाए। पलटकर रेशमी ने देखा, सफेद

कनेर के फूल लिए जॉन खड़ा था। इसकी उम्मीद नहीं थी, इसलिए चकित हुई। जॉन भी रेशमी को देखकर कुछ कम चकित नहीं हुआ। पहले वह भी उसे नहीं देख पाया था। बीच में ओट किए एक पेड़ खड़ा था। अप्रतिभ होकर उसने हाथ के फूल हड़बड़ाकर गिरा दिए।

रेशमी बोली, फूल फेंक क्यों दिए ?

उसने कहा, तुम तो सफेद फूल पसन्द नहीं करती हो रेशमी।

लेकिन लाए तो उसके लिए थे, जो सफेद फूल पसन्द करती थी।

किसने कहा ? मैं तो तुम्हारे लिए ला रहा था।

मेरे आने की तो उम्मीद नहीं की थी ?

जरूर की थी। जॉन ने कहा, प्रेमिक की आशा भी कभी जाती है ?

जॉन की बात का विश्वास न करते हुए भी रेशमी उसका अप्रतिभ भाव देखकर खुश हुई। उमड़ते समुद्र को देखकर चाँद क्या खुश नहीं होता !

जॉन ने पूछा, इतने दिनों से यहाँ आई क्यों नहीं ?

कैसे जाना कि मैं नहीं आई ?

आ-आकर मैं निराश जो लौटता रहा हूँ।

निराश क्यों हुए ? कब्र तो कहीं भागी नहीं।

बिलकुल असहाय की नाईं जॉन बोल उठा, तुम्हें मालूम है रेशमी, मैं यहाँ क्यों आता हूँ।

नितांत निरीह-सी रेशमी ने कहा, मैं भला कैसे जानूँ ?

अधीर आवेग मे जॉन बोल उठा, नहीं जानती ? जरूर जानती हो।

क्या जानती हूँ ?

यह कि मैं तुम्हे प्यार करता हूँ, तन-मन-वाक्य से प्यार करता हूँ, तुम्हे छोडकर और किसी को प्यार नही करता।

जॉन की इस उक्ति के लिए प्रमाण की जरूरत नही थी — उसका कंठस्वर ही पर्याप्त प्रमाण था।

कहना फिजूल है, रेशमी खुश हुई। ऐसे कंठस्वर, ऐसी उक्ति से

कौन-सी स्त्री खुश नहीं होगी।

लेकिन इस बात का जवाब क्या दे रेशमी ? जहाँ बात विश्वास योग्य नहीं या मानने योग्य नहीं हो तो वहाँ जवाब चलता है, अन्यत्र तो मौन ही सबसे अच्छा जवाब है । लेकिन गड़बड़ी इस चुप्पी से ही होती है। चुप्पी सम्मति का लक्षण हो सकता है और असम्मति का लक्षण होने में भी कोई रोक नहीं।

रेशमी की चुप्पी से शंकित जॉन उसके बगल में बैठ गया और रेशमी के हाथ उसने अपने हाथों में खींच लिए। रेशमी ने उन्हें छुड़ाया नहीं। जॉन को इसी से रेशमी का मनोभाव समझ लेना चाहिए था, लेकिन न समझकर उद्विग्न होकर रेशमी के चेहरे की तरफ ताकता रह गया।

इन मामलों में पुरुष निर्बोध होता है। औरतें कहीं आसानी से पुरुषों के मन के भाव को भाँप सकती हैं। बुद्धिजीवी पुरुष प्रमाण चाहता है, संस्कारजीवी नारी अनुमान कर लेती है।

जॉन अचानक उठ खड़ा हुआ, बोला, ठहरो जरा। तुम्हारे लिए लाल फूल ले आता हूँ। वन में पलाश का पेड़ देखा है।

यह कहकर गाढ़े होते आते वन के अँधेरे में वह दौड़ पड़ा। शाम को वहाँ आफत भी आ सकती है, यह जानते हुए भी रेशमी ने बाधा नहीं दी। द्रौपदी ने भी तो पांडवों को नील कमल की खोज में जाते वक्त बाधा नहीं दी थी।

सुख के सपने में डूबी-सी रेशमी बैठी रही। कुछ सोचने की शक्ति नहीं थी मन की। जॉन के स्पर्श से उसकी देह की शिराएँ ऊँची निखाद में चोट खाई वीणा के तारों-सी झनझना रही थीं। जॉन कब टेसू के फूल लेकर लौटा, कब उसने आग के समान लाल वे फूल रेशमी के बालों में खोंस दिये — रेशमी ठीक से जान भी न सकी। उसके बाद जब उसे अपनी छाती में खींचकर जॉन ने चुम्बनों से उसे हजारों भ्रमर-चिह्नित निश्चल कमल-सा उद्भ्रांत कर दिया, तब कुछ जानने की स्थिति ही नहीं थी [illegible] — बाह्य ज्ञान खोकर दिव्य ज्ञान के स्वर्ग-तोरण से वह न जाने किस

आदिम अवस्था में पहुँच गई थी। तब उस स्थिति मे उसने यह अनुभव किया कि आकाश के सारे ग्रह-नक्षत्र सोने के घण्टे बने ज्योतिर्मय संगीत गुंजा रहे है, वन की सारी तरु-लताएँ अपनी अगणित बाँहे उठाकर महानृत्य मे विभोर हो गई है और धरती के सारे धूल कण उस महोत्सव के क्षेत्र के रजकण बन गए और स्वयं महाकाल अपने को भूलकर उस पर लोट रहा है — चराचर की चैतन्य चेतना के अंतिम छोर पर पहुँचकर अपने को खो दिया है उसने — सागर मे समाई बूँद !

पहले जॉन होश मे आया। देखा, एक पहर रात बीत चुकी है। सुरक्षित रहने का समय कब का बीत चुका है।

उसने कहा, रेशमी, अब उठो।

रेशमी ने कुछ कहा नही। बाल सँवारे और उठ खडी हुई।

तब दोनों एक दूसरे की बाँहों मे बँधकर बाहर निकले।

कब्र पर जब मुग्ध नर-नारी की यह लीला चल रही थी, तब बहुत संभव है कब्र में रोज एलमर यह सोचकर चैन से करवट बदलकर सोई कि चलो बेचारे जॉन को एक सहारा तो मिला। उसके आस-पास और-और जो मरे हुए लोग सोए थे, खूब संभव है, उन्होने भी बहुत दिनो के बाद मर्त्य-जीवन का यह प्रहसन देखकर अपनी जीवन-कथा याद करके दीर्घ निश्वास छोडा होगा। जीवन में और मरण मे मनुष्य वास्तव मे बड़ा विचित्र है।

निर्जन और अँधेरी राह मे चलते-चलते जॉन ने कहा, रेशमी, कल शाम को हमारे घर आओगी ?

अचरज से रेशमी ने पूछा, तुम्हारे घर ?

नहीं; घर में क्यों ? कसाईटोला का मेरा दफ्तर शाम को खाली रहता है। तुम अपने घर के सामने रास्ते पर खड़ी रहना, मै गाड़ी पर तुम्हें ले लूँगा। फिर गाड़ी पर ही घर पहुँचा जाऊँगा। चलोगी ?

रेशमी ने कहा, जाऊँगी।

उसके बाद कहा, उतनी रात में लौटना शायद ठीक न हो। अगर

रात वहीं रहूँ, तो ?

बड़ा अच्छा रहेगा। मैं भी रहूँगा। जॉन ने उसे जरा अपने पास खींच लिया — लेकिन लेडी रसेल से क्या कहोगी ?

वह क्या मुझ जैसी तुच्छ की खोज-खबर रखती है ? जो रखते हैं, उनसे कहूँगी, आज रात कायथ दा के यहाँ रहूँगी।

बड़ी अच्छी हो तुम ! तो यही तै रहा।

रहा।

चलो, तुम्हें घर के पास तक पहुँचा दूँ।

इतना कहकर रेशमी को अपनी बाँहों में बाँधकर जॉन आगे बढ़ा। कर्तव्य-परायण जॉन !

रेशमी का 'ना'

दूसरे दिन अपराह्न में जॉन ने रेशमी को अपनी गाड़ी पर बिठा लिया। जैसा कि तै हो चुका था, वह बरियल ग्राउण्ड रोड और चौरंगी के मोड़ पर खड़ी थी। उन दिनों बहुतेरे गोरे साहब देशी औरत को साथ लेकर खुले आम जाया-आया करते थे, गिरस्ती करते थे — लिहाजा रेशमी को किसी ने वैसा गौर नहीं किया। गाड़ी सीधे जाकर कसाईटोला के मोड़ पर पहुँची, वहीं पर जॉन का दफ्तर था। साँझ का समय, दफ्तर खाली पड़ा था। दो-चार दरवान-चपरासी ही थे। रेशमी को साथ लिए जॉन सीधे तिमंजिले पर पहुँचा। उसका खास कमरा वहीं था।

रेशमी से कहा, बैठो।

वह बैठ गई तो जॉन बोला, तुम आओगी, यकीन नहीं था।

खूब कही। क्यों न आती ? कल ही तो बात तै हो गई थी।

यु आर सच ए गुड गर्ल !

ऐम आइ ! आर यू श्योर ?

दोनों खिलखिलाकर हँस पड़े।

जॉन ने कहा, घर में क्या कहकर आई ?

यह तो कल ही बता दिया था।

कल की बात खाक याद है मुझे।

केवल मुझे साथ ले आने की बात नहीं भूल सके ?

इसका मतलब तो खुद को भूल जाना है।

लेकिन मुझे डर था कि तुम भूल जाओगे।

देख लिया न, नहीं भूला।

वास्तव में तुम्हारी याददाश्त गजब की है !

फिर दोनो जोर से हँस पड़े।

प्राण के प्राचुर्य का झाग है यह हँसी जो जवानी में ही सुलभ हो सकती है। बुढ़ापे मे प्राण का प्रवाह निस्तेज हो जाता है, हँसी मुरझा जाती है। युवक बिना कारण के ही हँसते हैं और कारण होते हुए भी बूढ़ों से हँसा नही जाता।

जॉन ने पूछा, यह तो कहो, मेरा अर्दली खाना ला दे तो खाओगी ?

क्यों नहीं खाऊँगी ?

मेरा ख्याल था, तुम्हारे सामाजिक संस्कार को खलेगा।

कब से तो मैं समाज से अलग हूँ, ईसाइयों के साथ रहते एक युग बीत गया। खाने-पीने के मामले में छूत-छात का परहेज मैंने छोड़ दिया है।

बहुत अच्छा किया है।

इसके बिना उपाय नहीं था। रात-दिन साथ रहने पर छूत बचाकर चलना कठिन है। और फिर डा० कैरी, मिस एलमर जैसे लोगों से छूआ-छूत मानूँ भी क्यों ?

और मुझ जैसे से ?

तुमने यह सोचने का समय ही कहाँ दिया !

रेशमी, काश, तुम मेरे मन की बात जानती —

उससे तो बल्कि तुम अपने अर्दली को बुलाओ, मुझे बड़ी भूख लगी है। तुम्हारे मन की बात पेट की भूख मिटाने के बाद इतमीनान से सुनूँगी।

जॉन का इशारा पाते ही अर्दली दो आदमियों का खाना ले आया। जहाँ तक संभव हो सका था जॉन ने देशी खाने का ही इंतजाम कर रखा था। रेशमी को कोई असुविधा नहीं हुई। जूठे बर्तन हटा ले जाने के बाद जॉन ने सिगरेट सुलगाई और फिर दोनों आमने-सामने बैठे।

हेमंत के घास-वन में हवा लगते ही जैसे अनगिन पतिंगे चंचल हो उठते हैं, वैसे ही उनके मुँह में रंगीन डैने फैलाकर असंख्य तुच्छ बातें मुखर हो उठीं। कभी-कभी हँसी का झोंका लगता और उनके डैने उतनी ही ज्यादा चंचलता दिखाने लगते। और अंत में बात कम हो आई, नीरवता का हिस्सा बढ़ने लगा — धीरे-धीरे सारी बातें अखंड नीरवता में लीन हो गईं। दोनों चुपचाप आमने-सामने बैठे। दो आदमी अगर चुप बैठे हों तो समझना चाहिए कि या तो उनका बोलना खत्म हो चुका है या ऐसी कोई बात है, जो अनिर्वचनीय है। युवक-युवती की ऐसी निकटता एक प्रकार जैव-विद्युत की सृष्टि करती है, जो मुँह के शब्द से भी गंभीर अर्थ से परिपूर्ण होती है। बिजली की वही नीरवता उस समय उन दोनों में बातों का आदान-प्रदान करा रही थी। बात ताला है, नीरवता कमरा।

रेशमी को ताकते हुए जॉन सोच रहा था, जिसकी आँखों में, होंठों में, कपाल और गले में, भवों के संगम और केशों में, वसन और भूषण में — अंग-अंग में इतना अमृत भरा है, उसमें ऐसी कंजूसी क्यों? एक आदमी सामने ही तीखी प्यास से तड़पकर मर रहा है और दूसरी शीतल वारिधि लिए निर्विकार बैठी है! जॉन सोच रहा था, ऐसा सौंदर्य और ऐसी निष्ठुरता; ऐसी प्यास और ऐसा पानी — इस तरह से पास-पास क्यों!

रेशमी जॉन के मन की बात समझ गई थी, बड़ी पीड़ा-सी हो रही थी उसे, लेकिन तो भी अंतिम संकोच हरगिज नहीं जाना चाह रहा था। आखिर जॉन जरा जबर्दस्ती क्यों नहीं करता! रेशमी युद्ध जरूर नहीं

चाहती, मगर एक बार युद्ध का बहाना भी न हो तो वह आत्मसमर्पण कैसे करे ! हार निश्चित है, किंतु आत्मसम्मान के बचाव के लिए युद्ध का यह अभिनय जरूरी है। रेशमी सोच रही थी, जान शायद यह सोच रहा है कि तने की जड़ अभी भी सख्त है। अबोध जॉन ! अभी तो बस एक हल्के धक्के की जरूरत है, इतने को भी तैयार नहीं है जॉन ? उसके मन में क्रोध-सा भी हुआ। लेकिन उसी वक्त जॉन की आर्त और असहाय आँखों पर उसकी नजर पड़ी। वह स्थिर नहीं रह सकी, संकल्प डोल गया। वह मन ही मन बोली, जॉन, मैं न केवल तुम्हें आत्मसमर्पण कर रही हूँ, बल्कि आत्मसम्मान की रक्षा की जो सात्वना भर स्त्री अपने हाथ में रखती है, मैं वह भी दे रही हूँ तुम्हें ! तुम बड़े ही असहाय हो इसलिए तुम्हारा दावा बड़ा प्रचंड है।

रेशमी अचानक उठ खड़ी हुई। बोली, जॉन अब बैठी नहीं रह सकती। मैं कपड़े बदलना चाहती हूँ। सोने का कमरा किधर है, बता दो।

जॉन जैसे निर्बोध ने भी इस बात का आशय समझा। कृतज्ञता और आनंद से उसकी दोनों आँखें चकमका उठीं। कहा, यह रहा तुम्हारा सोने का कमरा। पास ही स्नान-घर है। वहाँ सारा इंतजाम है। अंदर जाओ। मैं खटखटाऊँ तो आने को कहना।

बिना कुछ बोले रेशमी सोने के कमरे में चली गई।

थक गई थी वह। सोचा, नहा लेने से थोड़ा आराम होगा। नहानघर में सेमिज और साड़ी उतारकर ठंडे पानी में वह खूब नहाई ! बालों को पोंछकर शयन-कक्ष के आदमकद आईने के सामने जाकर कंघी लिए खड़ी हुई बाल सँवारने कि अपनी परिछाईं देखकर मुग्ध हो गई। विधाता-पुरुष अपनी रची हुई नवीन सृष्टि को देखकर कदाचित ऐसे ही चकित रह गए थे; आदिम नारी हौवा पहली बार अपनी परछाईं देखकर इसी तरह मोहित हुई थी; सागर-तल से निकली हुई उर्वशी ने पुरुषों की आँखों की पुतलियों में अपने को प्रतिबिंबित देख इसी प्रकार की तन्मयता का अनुभव किया था ! बाल सँवारना भूलकर रेशमी अपनी जीवित छाया को अपलक

देखती रही। खिलती आती सुई की नोक-सी मैगनोलिया की कली जैसी ठोढी से टपकती हुई एक-एक बूंद छाती के दुर्गम दर्रे में अविरल धारा की सृष्टि कर रही थी; चिकने, गर्म, उज्ज्वल चमड़े के स्पर्श से पानी की बूंदें मोती से ज्यादा मोहक हो उठी थी और स्नान के मौज से हलके कांपते हुए वक्षस्थल की तालों पर मोतियो की वह माला कांप रही थी। रेखा-चित्रित मोहक कंठ, पानी से भीगी पलकें, गीले केशाग्र अजीब ढंग से कपाल पर बिखरे — आंखो की दृष्टि स्वप्नाविष्ट मधुकरी तरी-सी अजाने की ओर जाने के लिए उतावली; और चुवन की कलियो से भरे अधरोष्ठ के कोनो पर पुलक का आभास। रेशमी की पलके स्थिर हो गईं, तृप्ति नही हो रही थी। लग रहा था, वह और ही किसी को देख रही है। रूप देह-लग्न, सौंदर्य देहविविक्त — निरी सौदर्य-सजग नारी को भी अपना पूर्ण सौदर्य ज्ञात नहीं; रूपसी स्वाधीन, सौंदर्यमयी अपने सौदर्य के वश; वह निरी निरुपाय! देव-समाज मे जिसका प्रताप असीम है, उस उर्वशी जैसी असहाय, दुर्वल और पराधीन दूसरा कौन है!

आईने के सामने बैठी रेशमी उस रहस्यमयी छाया को एकटक देखती रही। भूल गई जॉन की वात, भूल गई वेश-विन्यास। वाहरी ज्ञान ही न रहा। उसे मदनावाटी मे तलैया मे पड़ी परछाई की याद आई। लगा, उस समय सुदरता पत्ते की आड़ में कली थी और आज का सौदर्य है पत्ते के आवरण से मुक्त, निरावरण, निराभरण, खिला हुआ फूल।

दरवाजे पर खट-खट हुई। उसका यह आच्छन्न भाव कट गया। याद आ गया, जॉन बाहर इंतजार कर रहा है। जाने कैसे तो एक विस्वाद, विप्तृष्णा से उसका जी भर गया। जी में वस यही होने लगा, यह अन्याय है, अन्याय; जॉन का यह अन्याय दावा है। लगा, जॉन सौंदर्य का लुटेरा है, उसके शरीर का मन्थन कर वह सौदर्य चुरा लेना चाहता है। ऐसी मॉग करना अन्याय है जॉन!

फिर दरवाजे पर खटका हुआ। रेशमी ने कपड़े पहने और मेज पर से कलम उठा कर कागज के एक टुकड़े पर क्या तो लिखा, उसके बाद उस

व्यग्र, उत्कंठित खट-खट की आवाज का जरा भी ख्याल न करके नहान-घर से लगी जो लोहे की चक्करदार सीढ़ी थी, उससे उतरकर वरियल ग्राउंड रोड की तरफ तेजी से घर के लिए चल पड़ी।

और कुछ देर बाद, देरी से शंकित जॉन 'अन्दर आ रहा हूं' कहकर कमरे में घुस गया। कमरा सूना पड़ा था, कहीं कोई नहीं। डर और निराशा से जब वह टूट-सा पड़ा तो कागज के उस टुकड़े पर नजर पड़ी — झट उसे उठाकर पढ़ गया। लगा, वह मानो भाषा भूल गया है; बार-बार पढ़ा, मन ही मन पढ़ा, फिर अपने को सुनाने के लिए जोर-जोर से पढ़ा — 'जॉन मुझसे न हो सका। क्षमा करना। संस्कार बाधक है। मेरे मन को तुम जानते हो, मेरी बात का अर्थ ठीक समझ लोगे।

— रेशमी'

उखड़े महीरुह से टूटकर बैठ गया जॉन। सोचने की शक्ति भी जाती रही।

रेशमी के मन की बात को जॉन समझ सका या नहीं, नहीं जानता। लेकिन वास्तव में बाधक क्या था? संस्कार या सौंदर्य? उसने सोचा था सौंदर्य, लिखा संस्कार। उसकी कलम और मन, दो अलग रास्ते से चले। या कि सौंदर्य ने ही उसके संस्कार को प्रबल कर दिया? या सुन्दरी स्त्री के मन की बात यदि साफ सहज होती तो आदमी शिल्प रचना के असाध्य प्रयास में हरगिज न आत्म-समर्पण करता।

ननद-काँटा

दूसरे दिन बिना किसी भूमिका के जॉन ने लिजा से कहा, लिजा मैंने तै कर लिया है कि मैं शादी करूँगा।

लिजा ऐसे प्रस्ताव के लिए बिलकुल तैयार न थी, इसलिए उससे हठात् उत्तर देते न बना। उसकी चुप्पी को कोंचकर जवाब अदा करने की गरज से जॉन ने कहा, क्यों, कोई जवाब नहीं दिया?

अब लिजा को बोलना पड़ा। बोली, इससे बढ़कर खुशी की बात क्या हो सकती है?

जॉन ने कहा, यों जबान से चाहे जो कह लो, मगर खुशी तुम्हें नहीं हुई, यह तुम्हारा चेहरा ही बता रहा है।

लिजा ने कहा, खुशी न होने का तो कोई कारण नहीं देखती।

बात तो असल में यह थी कि जॉन के प्रस्ताव से लिजा अचकचा गई थी। रोज एलमर की कब्र पर घास उगने से पहले ही उसे जॉन से ऐसी उम्मीद नहीं थी। वह मन ही मन बोली, धन्य है ये पुरुष!

जॉन ने कहा, खुशी हो या न हो, मैंने तै कर लिया है।

लिजा ने हँसकर कहा, महज तै कर लेने से ही नहीं होता जॉन, एक लड़की भी चाहिए, इतना मैं जानती हूँ।

लड़की एक मिल गई है।

अब की यह सौभाग्यवती कौन है, जान सकती हूँ?

'अब की' शब्द की नोक जॉन के दिल में चुभी। वह खीजकर बोल उठा अब की के सिवा मैंने ब्याह का प्रस्ताव और कब किया है, बताओगी?

चाहती तो लिजा केटी और रोज एलमर का नाम ले सकती थी, लेकिन वह उस तरफ ही नहीं गई। बोली, कुछ ख्याल मत करना जॉन, मेरा जी ठीक नहीं है, इसीलिए शायद क्या कहते क्या कह गई।

जॉन बोला, आशा है, तुम्हारे जी खराब होने का कारण मेरा यह प्रस्ताव नहीं है।

बेशक नहीं। उसके बाद कहा, खैर, यह बतंगड छोड़ो, लड़की का नाम बताओ।

लिजा को जॉन और रेशमी की घनिष्ठता की तनिक भी खबर न थी। अब जॉन की बारी थी जवाब देने की! ब्याह का प्रस्ताव तो हव

सनक पर कह गया था, लेकिन उस आसानी से लड़की का नाम उसकी जबान पर नहीं आया। कल शाम तक भी रेशमी से ब्याह करने की इच्छा उसके मन में नहीं थी, लेकिन रेशमी का भाग जाना तथा उसकी चिट्ठी ने उसमें एक जिद-सी जगा दी थी। खास कर रेशमी ने जो लिखा था कि संस्कार बाधक हैं, उसका जॉन ने संस्कृत भाष्य कर लिया था। उसका मतलब उसने यह लगा लिया था कि किसी अच्छे घर की लड़की ब्याह के पहले अपने को नहीं सौंप सकती। रेशमी की चिट्ठी को लेकर वह बड़ी देर तक माथे पर हाथ रखसे सोचता रहा था और उसके बाद उसके जी में आया था, ठीक है, रेशमी अगर यही चाहती है, तो मैं ब्याह ही करूँगा। जॉन जैसे भावुक आदमी नीति संकल्प पर नहीं चलते, चलते हैं सनक पर। उस सनक के रहते-रहते वे असाध्य साधन कर सकते हैं, सनक के उतरते ही वे आखिरी बेचारे होते हैं।

जॉन को चुप देखकर लिजा ने हँसकर कहा, क्यों जॉन, पहले शादी की सोच ली और अब शायद लड़की का नाम सोचने लगे? नः, ऐसा बचपना ठीक नहीं।

बचपना क्या देखा तुमने? लड़की तो तै है।

तो नाम बताओ।

लेकिन नाम इतनी आसानी से नहीं कहा जा रहा था। उसे रेशमी की चिट्ठी याद आ गई — संस्कार बाधक है।

लिजा ने कहा, अच्छा आओ, हम आपस में बाँट लें आधा-आधा। तुमने शादी करने का संकल्प किया है, मैं लड़की ठीक करूँ।

धन्यवाद! तुम्हें तकलीफ नहीं करनी होगी। लड़की का नाम रेशमी है।

गाज खाई-सी लिजा बोल उठी, रेशमी!····उसके मुँह से और कोई बात नहीं निकली।

क्यों, चुप क्यों रह गई?

यह अगर मजाक नहीं है तो निरी बेवकूफी है।

क्यों?

अरे, वह नेटिव जो है ?

नेटिव क्या आदमी नहीं होते ?

मैं तर्क में नहीं जाना चाहती जॉन, लेकिन यह असम्भव है।

असम्भव कैसे है ? कलकत्ते के प्रतिष्ठापक जॉब चार्नक के क्या नेटिव बीबी नहीं थी ?

यह सौ साल पहले की बात है, गोली मारो। तब इस शहर में गोरे थे ही कितने ?

उससे क्या व्याह व्याह नहीं कहाएगा !

लिजा ने कहा, उस समय कलकत्ते में श्वेतांग समाज नाम की कोई चीज नहीं थी। सब चलता था। आज तुम नेटिव से शादी कर लोगे तो लोग जात से बाहर कर देंगे।

व्याह के बाद कोई मेरे घर नहीं आएगा तो मैं दुखी नहीं होऊँगा।

लेकिन मुझे भी तो यह घर छोड़ देना पड़ेगा।

एक न एक दिन तो तुम्हें छोड़ना ही होगा — शादी नहीं करोगी ?

लिजा ने कहा, करने की इच्छा तो थी, मगर तुम पुरुषों का व्यवहार देखकर अब वैसी इच्छा न रही।

मेरे व्यवहार में ऐसा क्या दोष देखा ?

चाहती तो लिजा रोज एलमर की चर्चा कर सकती थी। लेकिन जॉन को चोट पहुँचाने की इच्छा नहीं हुई। सो प्रसंग बदलकर बोली, जॉन तुमने सब कुछ सोचा नहीं है। वह विधर्मी है।

जॉन ने सचमुच ही यह नहीं सोचा था। लेकिन हार कैसे मानता ? बोला, धर्म परिवर्तन करेगी।

स्वर को कोमल करके लिजा बोली, छोड़ो, बचपना मत करो।

लिजा के कंठ से स्नेह का स्पर्श पाकर जॉन भी नर्म पड़ गया। पूछा, तो तुम क्या करने को कहती हो ?

मैं कहती हूँ, रेशमी की बात ही भूल जाओ, और अगर भूलते न हो बने, तो जैसे बहुतेरे गोरे नेटिव औरत रखते हैं, उसे उसी तरह से रक्खो।

जॉन पल में ही लहक उठा, जबान सम्हालकर बोलो लिजा, मेरा अपमान मत करो।

जॉन जाने को तैयार हो गया। लिजा को भी बड़ा गुस्सा आया। बोली — जा कहाँ रहे हो? मैं आशा करती हूँ, अपनी रेशमी को लेकर सीधे गिरजा हो जा रहे हो?

जवाब न देकर जॉन हनहनाता हुआ चला गया।

लिजा जाकर कमरे में लेट गई। लेकिन शांति कहाँ, चैन कहाँ थी। भूकम्प के बाद अपने सजे-सजाए घर मे जाकर गृहस्थ जैसे चौंक उठता है, दो पल पहले तक के अपने चिर-परिचित घर में अपने को जैसा अपरिचित समझता है, कदम बढ़ाते हुए जैसा डरता है, ठीक वैसी ही अवस्था लिजा की हुई। उसकी आँखो के आगे खड़ी दीवारों में दुःस्वप्न का पीलापन था, छत की कड़ियाँ अदृष्ट के शासनदंड से उद्यत, विशाल आईने में निर्दय परिहास की झाँकी, सरो-सामानों का चिकनापन और कोमलता जल्लाद की अतिविनय-सी मार्मिक थी — पलभर पहले जो घर सुख का था, वह आशा की कब्र में बदल गया था। उसकी नजर हठात् दो तैलचित्रों पर गई — ये चित्र उसके माता-पिता के थे। चित्रों को देखा कि आँखों से बाढ़ बही, उस बाढ का अन्त नहीं, स्मृति के हिम-स्तूप उसे गति दे रहे थे — अनंत गति। वह फफक-फफककर रोने लगी।

लेकिन रोकर ही अपने कर्तव्य की इति समझनेवाली लड़की नहीं थी लिजा। माँ की मृत्यु के बाद से घर-गिरस्ती का भार ढोते हुए उसके चरित्र का गठन हुआ था, उस चरित्र में सोना-लोहा बराबर मिलकर उसे जैसा सुन्दर बना दिया था, वैसा ही बना दिया था दृढ। आँखों की पहली बाढ़ निकल गई, तो वह उठी और तै कर लिया कि क्या करना है। मन ही मन बोली, उस नेटिव लड़की को इस घर मे हरगिज नहीं आने दूँगी। उसने उसी वक्त रेशमी के नाम एक चिट्ठी लिखकर नौकर के हाथ से भिजवा दी। लिखा, कृपा करके आज दोपहर में मिलो। उसके बाद खुशी-खुशी अपने काम-काज में लग गई।

चिट्ठी पढ़कर रेशमी को लगा, अद्य युद्धे त्वयामया। समझ गई, इसमें जरूर निर्बोध जॉन की कोई करनी है। खैर, अब पलटने का उपाय नहीं, अन्त तक देखना ही पड़ेगा।

घटनाएँ अगर एक ही चाल से सदा चलती होतीं, तो यह संसार शायद सुख का होता, लेकिन जीवन का नाटक इतना जमता या नहीं, नहीं कहा जा सकता। नियम से चलते-चलते घटनाएँ एकाएक रत्नाकर डाकू जैसी गर्दन पर अचानक आ टूटती हैं और सब गुड़ गोबर कर देती है, जीवन की पहली शृंखला टूट जाती है, जीवन नाटक का अंक अप्रत्याशित रूप से बदल जाता है। यहाँ भी वही हुआ। रेशमी, जॉन और लिजा की जिन्दगी मजे में चल रही थी, अब अंक-परिवर्तन की बारी आई।

दोपहर। जॉन ऑफिस गया हुआ था। रेशमी लिजा के यहाँ आई तो अत्यन्त विनय के गुप्त व्यंग से लिजा ने उसकी अगवानी की। स्वागत उसने उसका पहले भी किया है, किन्तु उसमें कातिल के खड्ग का तीखापन न था। रेशमी ताड़ गई, यह अतिभद्रता और कुछ नहीं, आसन्न अभद्रता की भूमिका है। तैयार होकर ही वह आई थी, अब मन को जगाकर और सजग कर दिया।

लिजा ने बिना भूमिका के कहा, आओ-आओ रेशमी बीबी, घर-द्वार को समझ लो, कैसा देख रही हो ?

समझते हुए भी न समझने का भान करके रेशमी ने कहा, तुम्हारी देख-रेख में भला बुरा हो सकता है, दुरुस्त है सब।

मेरी देख-रेख की क्यों कहती हो ? अब तो सब तुम्हारा है।

सीधे उत्तर न देकर रेशमी हँसी।

उसकी प्रशांत अटलता से लिजा बेहद जल उठी। उसने सोचा था, रेशमी आपे से बाहर हो जाएगी। और तब उसका काम आसान होगा, तीखे व्यंग करने का रास्ता साफ हो जाता। मगर अजीब मुसीबत है, यह तो नाराज ही नहीं होती। लेकिन इसीलिए चुप भी तो नहीं रहा जा सकता। और वह आँधी-सी रेशमी की गर्दन पर आ गिरी। पूछा, खैर।

यह शुभ विवाह हो कब रहा है ?

रेशमी समझ गई, यह करतूत जॉन ने की है। निर्वोध। सोचा, जरा बेवकूफ बनकर थाह ही क्यों न लूं, कहाँ तक क्या हुआ है।

चेहरे पर कुछ जाहिर न करके कहा, विवाह ? किसके साथ ?

अहा, दूध पीती बच्ची है। कुछ नहीं जानती। जॉन के साथ। निर्वोध जॉन के साथ।

रेशमी समझ गई, 'संस्कार बाधक है' का जॉन ने क्या अर्थ लगाया। कहा, जॉन निर्वोध हो सकता है, आशा करती हूँ, झूठा नहीं है। उसी से सब पता चल जाएगा।

क्यों, विधर्मी को ब्याह करने का संवाद तुम्हारे हिन्दू-मुंह को खटकता है शायद ?

हिन्दू-मुंह और ईसाई-मुँह का भेद मैं नहीं मानती मिस स्मिथ।

दोनों मुँह शायद एक हो चुके हैं। कितनी बार ?

हँसकर रेशमी ने कहा, बहुत बार।

और कहाँ तक बढ़ गए हो, जान सकती हूँ ?

बहुत दूर तक। विस्तार से मि: स्मिथ से सुन लेना।

जभी अब ब्याह तक पहुँचने की तैयारी····शैतान !

क्या इसीलिए दोपहर को बुलवा भेजा था मिस स्मिथ ?

सिर्फ इसीलिए नहीं, और भी है। जानती हो, लाट साहब से कहकर यह ब्याह रुकवा दे सकती हूँ ?

रेशमी ने कहा, जहाँ तक पता है मुझे, कम्पनी का ऐसा कोई कानून नहीं है।

ओ, कानून भी जानती हो, देख रही हूँ। तब तो यह जरूर जानती होगी कि हिन्दू से ईसाई का विवाह नहीं चलता।

लेकिन यह भी मालूम है कि हिन्दू को ईसाई बनने में कोई रोक नहीं।

अचरज से लिजा बोली, तुम ईसाई बनोगी ?

ईसाई का घर बसाने जा रही हूँ, ईसाई बने बिना काम कैसे चलेगा।

लिजा ने कहा, मैंने सुना है, तुम हिन्दू सब कुछ कर सकते हो, धर्म नहीं बदल सकते।

लेकिन जो बात तुमने नही सुनी है, वह भी सुन लो, हिन्दू नारी पति के लिए सब कुछ का त्याग कर सकती है।

लिजा ने कहा, उसके लिए अपने पैतृक धर्म को छोड़ दोगी ?

अपने प्रेम के पात्र के लिए अदेय कुछ नहीं। संसार में ऐसी कोई चीज ही नही जो प्रेम के पात्र के लिए छोड़ी न जा सके।

धर्म भी।

धर्म, इहलोक, परलोक, जीवन, यौवन — सब।

लिजा समझ गई, यह लड़की कुछ मामूली नहीं। यह भी समझा कि अब तक जीत रेशमी की ही हुई। इससे उसका गुस्सा बढ़ गया। अब तक भलमनसाहत के दायरे में लड़ाई चल रही थी, अब वह सीमा टूट गई।

तुमने निर्बोध जॉन को क्या देकर फुसलाया ?

रूप से मिस स्मिथ — रूप से। — गर्व के साथ रेशमी बोली।

लिजा ने इतनी साफगोई की उम्मीद नहीं की थी।

लिजा को चुप रहते देख रेशमी ने कहा, इसमे ऐसा दोष भी क्या है मिस स्मिथ ? सभी नारी पुरुष को भुलाना चाहती हैं — कोई रूप से, कोई धन-मान, वंश-मर्यादा से और कोई सिर्फ मिताई के हाव-भाव से। किसी से बनता है, किसी से नही बन पाता।

यह कहकर उसने लिजा पर कटाक्ष किया। मेरिडिथ और रिंगलर से उसके नाकामयाब प्रेम की कहानी वह सुन चुकी थी।

रेशमी के इस इशारे से जल-भुनकर लिजा बोली, तुम क्या मेरे घर चढ़कर अपमान करने आई हो ?

तुम भूल रही हो मिस स्मिथ, मैं आई नही, तुमने मुझे बुलवाया है और अब समझ रही हूं, अपमान करने के लिए ही बुलाया है। खैर, मैं जाती हूं —

रेशमी जाने को तैयार हुई। लिजा ने कहा, एक मिनट —

उसके बाद बोली, यह सुन लो रेशमी बीबी, मेरी जान रहते मैं यह

ब्याह नहीं होने दूँगी।

पलटकर रेशमी ने कहा, ठीक तो है। कोशिश कर देखो। लेकिन इतना याद रक्खो, निर्बोध को रोक लेना इतना आसान काम नहीं।

इतना कहकर व्यंग, गर्व, स्पर्द्धा भरा कटाक्ष मारकर रेशमी चली गई।

ठठेरे-ठठेरे

उधर रेशमी गई और इधर लिजा गाड़ी से मेरिडिथ के यहाँ चली। रेशमी का इशारा रिंगलर के बारे में सत्य चाहे हो, मेरिडिथ के बारे में संपूर्ण सत्य नहीं। रिंगलर ने एक दूसरी लड़की से शादी कर ली, लिजा के यहाँ उसका आना-जाना वन्द हो गया। रिंगलर के लिए ही मेरिडिथ का लिजा से मनोमालिन्य हुआ। उसने इसके यहाँ आना-जाना वन्द कर दिया। लेकिन आज इस मामूली-सी बात के लिए लिजा को संकोच करने की इच्छा न थी; विपत्ति के समय उसी की याद आई। सोचा, अच्छा ही हुआ। इसी सिलसिले में उससे मेटमाट हो जाएगा।

गाड़ी मेरिडिथ के यहाँ पहुँची। सौभाग्य से वह उस समय घर में ही विश्राम कर रहा था। लिजा को देखकर वह खुशी से बोल उठा, आओ-आओ लिजा, तुम आओगी, मेरे सोचने से बाहर थी यह।

लिजा ने कहा, बड़े संकट में हूँ मेरिडिथ, जभी सूचना दिए बिना ही आने को मजबूर हुई।

मेरिडिथ ने उसके मुँह की तरफ ताकते हुए कहा, सच ही तो, तुम्हारा चेहरा, तुम्हारी आँखें सूर्ख हो रही हैं। माजरा क्या है?

लिजा ने कोई भूमिका न बनाकर कहना शुरू कर दिया, मूर्ख जॉन

ने रेशमी नाम की एक नेटिव लड़की से शादी करने का संकल्प किया है।

विस्मित मेरिडिथ ने कहा, ऐं! परिचय कहाँ हुआ उससे?

सब कुछ यहीं कलकत्ते मे ही हुआ। विस्तार से फिर सुनना, अभी इस शादी को रोकने का उपाय करो।

सोच में पड़कर मेरिडिथ ने कहा, जॉन को आरजू-मिन्नत करने के सिवाय तो दूसरा उपाय नही दीखता। तुमने की है कोशिश?

वह सब हो-हवा चुका है, वह निर्वोध पागल हो उठा है।

तो फिर उस लड़की को डर या लोभ दिखाकर रोको।

वह कोशिश भी कर चुकी।

कोई नतीजा निकला?

नतीजा? माइ गॉड। वह साचात् शैतान है।

तो फिर क्या किया जाए?

इसीलिए तो तुम्हारी शरण मे आई हूँ।

मेरिडिथ ने पूछा, ईसाई है वह?

नहीं।

ईसाई नहीं है तो शादी कैसे होगी?

वह ईसाई वन जाएगी। इस विवाह को जैसे भी हो, रोको।

कैसे रोकें?

क्यो? तुमसे तो पादरियो की जान-पहचान है। ऐसा करो कि कोई उसे दीच्चा ही न दे।

लंबी उसाँस भरकर मेरिडिथ बोला, यह असम्भव है लिजा।

क्यों, तुमसे पादरियों की जान-पहचान नहीं है?

जान-पहचान है, जभी तो असंभव वता रहा हूँ। इन पादरियों की हालत तुम्हें मालूम नहीं है। ये समाज के हजारों-हजार रुपए खा रहे है, मगर आज तक एक नेटिव को ईसाई नहीं वना सके है। मायूस हो रहे है। ऐसे में कोई नेटिव ईसाई वनना चाहेगा तो सव के सब दौड़े आएँगे। पानी की धार को रोका जा सकता है, उन्हें रोक सकना सम्भव नहीं।

वड़े-वड़े साहवों से उनपर दवाव डालो।

वड़े साहवों को उत्साह कम है।

तो क्या कोई उपाय नहीं ?

लगता तो ऐसा ही है। और फिर साहवों के दवाव से कम्पनी के राज में दीक्षा वन्द कराने से वह वन्द ही रहेगी, इसके क्या मानी ?

क्यों ?

कलकत्ते के आस-पास पोर्तुगीज, डच आदि के उपनिवेश हैं, वहाँ क्या पादरी नहीं है ? उन्हें भी ऐसा ही उत्साह है। वहाँ दीक्षा लेने पर कौन रोकेगा ? अँगरेजों की वहाँ कुछ न चलेगी।

कम से कम कलकत्ते मे तो दीक्षा वन्द कराओ।

लिजा के ऐसे गिड़गिडाने से मेरिडिथ ने कोशिश करने का वचन दिया। कहा, मैं भरसक कोशिश करूँगा कि यहाँ उसकी दीक्षा न हो, लेकिन कहाँ तक सफलता मिलेगी, नहीं कह सकता।

जव लिजा और मेरिडिथ में यह राय-मशविरा चल रहा था, तव रेशमी क्या कर रही थी ?

लिजा के यहाँ से रेशमी ऐसे घर आई, जैसे स्वप्न उसे चलाकर ले गया हो। पैदल आई कि दौडकर या कि तैरती हुई, कुछ भी याद नहीं आता। घर लौटकर तव आपे मे आई।

उसने समझा कि उसके 'संस्कार वाधक हैं' कहने का कैसा खतरनाक अर्थ लगाया निर्वोध जॉन ने। लेकिन सच पूछिए तो जॉन पर उसे जरा भी क्रोध नहीं आया, वल्कि माया-सी हुई। निर्वोध पर वुद्धिमती की माया! उन दोनों के वीच में आकर लिजा अगर इस कदर उसका अपमान नहीं करती तो वहुत सम्भव है, व्याह के प्रस्ताव को वह टाल जाती, लेकिन अव न तो इसका उपाय रहा, न इच्छा रही। जॉन के प्रति आक-

दंभ और लिजा के प्रति दुर्जय क्रोध ने मिलकर उसके संकल्प को पत्थर से चुन दिया। उसने निश्चय किया, जैसे भी हो, जॉन से विवाह करके उसे इस घर की मालकिन बनना ही पड़ेगा — जभी लिजा को उसके हुक्म की दासी होना होगा या कि घर छोड़कर चल देना होगा। देखा जाएगा, किसका प्रताप ज्यादा है, बीवी का या बहन का ? प्रेम के खिंचाव से जो न भी संभव होना चाहे वही प्रतिशोध की आकांक्षा से दुर्वार हो उठा। उसने ठान ली, दुनिया रहे चाहे रसातल को जाए, जॉन को वह विवाह करेगी ही। विवाह का संकल्प किए हुए नारी के ग्रास से बच सकना संसार में सबसे असम्भव आशा है।

लेकिन हठात् उसे ध्यान आया, जॉन बड़ा निर्बोध है। सहसा वही नहीं पीछे हट जाए। लगा, लिजा रोएगी-धोएगी और पोस माने भाई साहब कह उठेंगे, खैर, रहने दो। दूसरी ही किसी से कर लूँगा। दिमाग में ऐसी बात आने से मन में भय हुआ। सर्वनाश, कहीं ऐसा हुआ तो — और होना कुछ असम्भव नहीं — मरने के सिवाय कोई रास्ता नहीं रहेगा उसके सामने। उसने तै किया कि जॉन का सारा भार मैं अपने ऊपर लूंगी। ब्याह के बाद जब लेना ही है तो दो दिन पहले ही सही। लिजा के बह-काए जॉन का संकल्प ढीला न पड़ जाए, इसका उपाय ढूँढ़ ही निकालना होगा। उसने उसी वक्त जॉन को एक चिट्ठी लिखी और एक छोकरे को कुछ पैसे देने का वायदा करके उसी के हाथ उसे भेज दिया। दफ्तर ही में भेजा ताकि घर वापिस जाने के पहले रेशमी से वह जरूर मिल ले। जगह लिख दी — चौरंगी-बरियल ग्राउंड रोड के मोड़ पर नई तालाब के पूरब-दक्खिन कोने पर मैं रहूँगी।

रेशमी का 'हाँ'

छुट्टी होते ही जॉन नई तालाब की ओर भागा। वहाँ गाड़ी से उतर-कर कोचवान से कहा, तुम गाड़ी ले जाओ। मैं घूमता-घामता आऊँगा ; कह देना, लौटने में देर होगी।

तालाब के किनारे वह रेशमी को खोजने लगा। रेशमी ने साफ लिख दिया था कि पूरब-दक्खिन कोने में रहूँगी। जॉन को यह बात याद नहीं रही। तालाब के तीन ओर खोजकर वह चकित और चिंतित हो गया। नहीं आई क्या? या किसी दुःख से तालाब मे ही डूब मरी? यही सब सोचते-सोचते जब पूरब-दक्खिन किनारे पहुँचा, तो देखा, इमली के पेड़ की आड़ मे कोई बैठी है। रेशमी! वह दौड़ गया। रेशमी ही थी।

रेशमी! डियरी!!

किन्तु न तो रेशमी हिली, न बोली। वह मुँह गाड़े जैसे बैठी थी, बैठी रही।

जॉन ने पकड़कर उसे उठना चाहा, रेशमी हट गई।

जॉन समझ नहीं सका, हुआ क्या है। अच्छी तरह से देखकर अच-रज से बोल उठा, तुम रो रही हो रेशमी? क्यों? आ तो गया मैं। मुझसे कोई दोष बन पड़ा है?

रेशमी फिर भी चुप।

देर तक पूछते-आछते, बहुत-से काल्पनिक कसूर कबूल करने के बाद रेशमी ने आँखें उठाकर जॉन की तरफ देखा — उसकी काली आँखें आषाढ़ के नए मेघ-भार से कुछ झुकीं-सी।

हुआ क्या है रेशमी, बताओ?

अब रेशमी बोली, मगर जॉन को पास नहीं फटकने दिया।

मैंने कौन-सा कसूर किया है, कहो।

तुम क्या मेरा अपमान कराने के लिए अपने घर ले गए थे?

अपमान ? मेरे यहाँ ? कह क्या रही हो ? मैं कुछ समझ नहीं रहा हूँ। दया करके खोलकर कहो।

उसकी विचलित अवस्था देखकर रेशमी समझ गई कि अब मैं जो कहूँगी, जॉन वही करेगा। बहन के खिलाफ नालिश करने पर भी नकार नही सकेगा। सो उसने दोपहर की घटना शुरू से अंत तक उसे कह सुनाई। रेशमी सयानी थी, इसलिए तथ्य मे किसी तरह का हेरफेर न करके सिर्फ सुर और स्वर के हेरफेर से ही उसके महत्व को बढ़ा दिया।

सब कुछ सुन लेने पर जॉन ने कहा, यह सब मै कुछ नहीं चाहता, लिजा ने बड़ा अन्याय किया है।

रेशमी ने कहा, क्या खूब ! अन्याय किया है। फिर क्या, जाओ, लिजा को क्षमा करके मजे में अपने घर दाखिल हो जाओ। मुझसे तुम्हारा नाता यही खत्म।

कहती क्या हो रेशमी, तुम्हारे बिना मेरा जीवन सूना है।

तुम्हारा जीवन सूना हो तो मै क्या करूँ ?

तुम क्या करोगी ! तुम मेरी स्त्री बनकर मेरे जीवन को पूर्ण करोगी। बनोगी न मेरी पत्नी ?

लेकिन वह घर मेरा है ! आज जो अपमान सहना पड़ा है वहाँ।

ब्याह के बाद उस घर पर तुम्हारा अधिकार होगा। फिर क्या मजाल लिजा की कि तुम्हारा अपमान करे।

लेकिन लिजा ने कहा है, यह ब्याह वह हरगिज नही होने देगी।

बुद्धिमती रेशमी समझ गई थी कि लिजा की चाल से कलकत्ते में दीक्षा लेने मे कठिनाई होगी। सो उसने शुरू से ही शुरू किया, लिजा को यह यकीन नही कि मै दीक्षा लेना चाहती हूँ।

इसे तो तुम ही ठीक-ठीक जानती हो।

जरूर जानती हूँ। तुम्हारे लिए मेरा कुछ भी अदेय नहीं। प्राण, मन, जीवन, यौवन, यहाँ तक कि अपना पैतृक धर्म तक तुम्हारे चरणों मे अर्पित करती हूँ।

उसके इस त्याग स्वीकार से अभिभूत होकर जॉन ने उसे पास खीच लिया। रेशमी ने बाधा न दी। सोचा, जॉन को अब जरा स्पर्श-रस से गरमा देना चाहिए।

जॉन ने कहा, तुम्हारे त्याग के मुकाबले मैंने तुम्हे क्या दिया रेशमी ?

तुमने मुझे अपने आपको दिया — इससे बड़ी कामना की वस्तु मेरे लिए दूसरी क्या हो सकती है ?

परस्पर के अभावित त्याग-स्वीकार के आनन्द से कुछ देर तक दोनों अभिभूत हो बैठे रहे। उसके बाद जॉन ने शुरू किया — मै कल ही तुम्हारे दीक्षा-ग्रहण की व्यवस्था ठीक_करता हूँ।

वह संभव नही है जॉन।

ताज्जुब से जॉन ने कहा, क्यों ?

यहाँ दीक्षा लेने मे बाधा होगी। लिजा लोगों की मदद से जरूर बाधा देगी।

तुम भूलो मत की यह राज कम्पनी का है।

इसीलिए तो डर है।

क्यो ?

क्यो का क्या है। कम्पनी के बड़े साहब लोग विरोध करें तो पादरो लोग मुकर जाएँगे।

मै पूछता हूँ, लेकिन क्यो मुकर जाएँगे वे ?

अन्यथा न लेना जॉन; तुम लिजा को नहीं पहचानते। उसके लिए असाध्य कुछ भी नहीं।

नहीं-नही, रेशमी, लिजा की क्या मजाल कि वह ऐसा करे।

कर सके या नही, एक अप्रिय घटना तो घटेगी। इससे तो यह अच्छा है कि और कही भाग चलो, जहाँ मै दीक्षा ले सकूँ।

लिजा से बदला चुकाने के लिए रेशमी सब तरह से तैयार थी — कृत-संकल्प। उसने तै कर लिया था कि अपना पैतृक धर्म छोड़ दूँगी, लेकिन ऐसे कि लिजा का आखिरी अपमान हो। देखती हूँ, अकल उसे ज्यादा है

या मुझे।

जॉन चुप था। पूछा, तो क्या राय है?

जॉन ने कहा, सोच रहा हूँ, ऐसी सुरक्षित जगह कौन-सी होगी।

रेशमी सब सोच चुकी थी। बोली, श्रीरामपुर में पादरी लोग हैं। वहाँ कम्पनी का राज नहीं है। वहाँ जाने से सब कुछ बिना विघ्न के होगा।

खूब! सचमुच तुम बड़ी बुद्धिमती हो!

उसके बाद बोला, तो कल ही चिट्ठी लेकर वहाँ आदमी भेज देता हूँ। हम दोनों परसों रवाना होंगे। क्यों?

रेशमी ने कहा, मगर इन दो रातों में तुम्हारा इरादा बदल जाएगा।

क्यों?

बहन आकर रोएगी-धोएगी, मनाएगी और भाई का मन गल जाएगा। कहोगे, मरने दो रेशमी को। एक नेटिव लड़की ही तो है। मैं बल्कि डॉली, पॉली या मॉली किसी से कर लूँगा ब्याह। तुम ऐसा ही प्रबंध कर दो, लिजा।

तीखे व्यंग से जॉन का पौरुष सजग हो उठा। कहा, मैं शपथ करता हूँ —

बाधा देकर रेशमी ने कहा, रहने दो शपथ।

तो? क्या करूँ?

कर सकोगे?

कहकर देखो।

ये दो रात घर न जाओ तो क्या हो? दफ्तर में तो रहने का सब इंतजाम है ही। वहीं दो रात रह लो।

तुम चाहती हो तो यही होगा।

लेकिन घर में कुछ कहला तो भेजना होगा?

वह दफ्तर से ही कहला भेजूँगा। — जॉन ने पूछा, तुम मेरे साथ दफ्तर में जाओगी?

सिर्फ जाऊँगी ही नहीं, तुम्हारे साथ दो रात रहूँगी वहाँ।

खुशी के मारे जॉन बोल उठा, दो रात मेरे साथ रहोगी ?

जिसके साथ सारी जिन्दगी रहना है, उसके साथ ये दो रात नहीं रह सकूँगी ?

लेकिन ब्याह से पहले ? तुम्हे तो मालूम है, मैं कितना कमजोर हूँ।

और तुम्हे तो मालूम है, मैं कितनी कठोर हूँ। वह उठ खड़ी हुई, बोली, चलो अब देर न करो।

दोनों दफ्तर के तिमंजिले पर पहुँचे। रेशमी की सलाह से जॉन ने लिजा को लिख भेजा, मित्रों के साथ मैं शिकार में सुन्दरवन जा रहा हूँ। लौटने मे दो-चार दिन लगेंगे। उसने एक चिट्ठी कैरी को लिखी। उसमे खोल-कर रेशमी के ईसाई होने की इच्छा का उल्लेख किया। लिखा कि उसके ईसाई धर्म ग्रहण कर लेने पर मैं उससे विवाह करूँगा। यह भी बता दिया कि हम परसो किसी समय वहाँ पहुँच रहे है — श्रीरामपुर। यह बात तै पा गई कि चिट्ठी लेकर कोई आदमी सवेरे श्रीरामपुर रवाना हो जाएगा।

टूटा पैर, टूटा मन

राम बसु ने कैरी साहब की जबानी जॉन की चिट्ठी का हाल सुना। सिर पर आसमान टूट पड़ा। वह अपने कमरे में जाकर लेट गया। आज, इतने दिनों के बाद उसने समझा कि मैंने जिस आग से खेलना शुरू किया था, आग के उस खेल की कुशलता से दर्शकों को आज तक दंग करता आया, मौन निपुणता से मानों कहा किया, देखो, सुलगती आग है, मगर मेरा कोई नुकसान नही कर सकी, लेकिन आज अचानक उस आग की चिनगी

मेरे ही छप्पर पर आ गिरी, सब कुछ लहककर जल जाने को है। यह ठीक है कि पादरियो का साथ राम वसु के लिए अपरिहार्य हो उठा था, पर हो उठा था उनकी धर्मप्राणता के लिए नहीं। उनके संग-साथ से उसे पाश्चात्य ज्ञान-विज्ञान, पाश्चात्य की उदार संस्कृति का आभास मिलता था — इतना ही उसका काम्य था, उनके धर्म के प्रति उत्साह ने उसे कभी विचलित नही किया। यही वजह थी कि वह इतने दिनों से उन सबके साथ रहा, किन्तु धर्म परिवर्तन के लिए उसे कभी भी, जरा भी उत्साह न हुआ। अगर सच पूछा जाए तो उसे ज्ञान के लिए जितना उत्साह था, धर्म के लिए भी उतनी ही उदासीनता। हिन्दू धर्म और ईसाई धर्म, दोनों के लिए उसकी एक ही धारणा थी — ये मानो ना-छोड़ आफत है। ये मानो रसीले आम की नीरस गुठली है। बीच-बीच मे वह कहता जरूर रहा है कि जल्दी ही धर्म परिवर्तन करूँगा। स्त्री के मर जाने के बाद कैरी से कहा था, साहब, मेरे धर्म परिवर्तन की जो आखिरी अड़चन थी वह दूर हो गई। अब किसी सुप्रभात मे खीष्ट के गुहाल में आ रहूँगा। इस तरह एक युग से वह उन लोगो की उम्मीद को जिलाकर रखता आया है। क्यो? इसका एकमात्र उद्देश्य पादरियो की आंतरिकता को खीचना था। क्यों? क्योंकि उनसे पाश्चात्य ज्ञान-विज्ञान का ताप अनुभव करने मे रुकावट नही होगी। ये पादरी एक ही साथ मध्ययुग और नव-युग की वाणी लेकर आए थे और, नवयुग की वाणी को अपनाने के लिए ही वह मध्ययुग की वाणी को बर्दाश्त करता था। लेकिन वह सोच भी नही सका था कि मध्ययुग उससे इसका बदला इस प्रकार से लेगा।

राम वसु ने रेशमी को प्यार किया था। वह प्रेम जरा अलग किस्म का था। रेशमी के उस बार ठुकरा देने के बाद से वह प्रेम मानो चौगुना प्रबल हो उठा था, साथ ही दैहिक सीमा से परे हो गया था। यह जैसे चाँद से प्रेम हो आदमी का। अभी-अभी खबर मिली, उसी चाँद में ग्रहण लगेगा, एक ही साथ राहु और केतु का ग्रास — जॉन का और ईसाई धर्म का। चाँद सदा के लिए डूब जाएगा और उसकी दुनिया सदा के लिए अँधेरी हो

जाएगी। कैसे जिएगा वह? इन चिंताओं की उलझन में जब वह गिरफ्त था, थका-सा था कि उधर से बड़े उल्लास के साथ दौड़ता हुआ टामस आया और चिल्लाकर बोला, मुंशी शुभ समाचार सुना तुमने। रेगिस्तान के राहियों के सामने दयामय प्रभु ने स्वर्गीय खाद्य रख दिया है — सुन्दरी रेशमी ईसाई धर्म ग्रहण करने के लिए आ रही है। मुंशी, तुम उदास क्यों दीख रहे हो?

आज तबीयत अच्छी नहीं है डा० टामस!

ऐं! नब्ज देखूं जरा।

जबर्दस्ती कलाई खींचकर नाड़ी देखी — नः, कोई खास बात तो नहीं।

राम वसु को मानना ही पड़ा कि कोई खास बात नहीं।

टामस बोला, फिर क्या है, उठो। उत्सव की तैयारी करें।

राम वसु ने नीरस की नाईं कहा, कुछ करना तो चाहिए ही।

विस्मित टामस ने कहा, कुछ! ऐसा मौका भला फिर आने को है? एक तो यह पहला धर्मान्तर है, तिस पर रेशमी जैसी सुन्दरी स्त्री! मैंने सोचा था, उस फकीर जैसे गँवार खेतिहर से ही धर्मान्तर का अभियान शुरू होगा। अब सोचता हूँ, कम्बख्त निकल जो भागा सो अच्छा ही हुआ।

राम वसु मन ही मन हँसा। हँसने का संगत कारण भी था।

उस फकीर को राम वसु ने ही चुपचाप भगा दिया था। कहा था, अबे कम्बख्त, तू यहाँ मरने को क्यों आ गया?

फकीर ने कहा था, जी साहब ने कहा, किरीस्तान हो जाएगा तो अच्छा खाना-कपड़ा मिलेगा।

मगर कितने दिनों तक?

क्यों? अकुलाकर फकीर ने पूछा था।

तो सुन, कंकाली पीठस्थान जानता है?

जरूर, चैत संक्रान्ति के मेले में बहुत बार गया हूँ।

यह जानता है कि कंकाली देवी बड़ी जीती-जागती देवी है?

जानता हूँ ! बहुत बार मन्नत मानी, कभी फल नहीं मिला ।

फल क्यों नहीं मिला, सोच देख । तेरे मन में पाप जो है ।

मेरे मन मे आपने पाप क्या देखा कायथ बाबू ?

यही तो । किरीस्तान होने आया है । मैं बताऊँ, कल रात मैंने सपना देखा है । देखा कि कंकाली मैया कह रही है, यह फकीर अगर किरीस्तान बना तो मै उसे निगल जाऊँगी !

ये साहब नही बचा सकेंगे ?

साहब के बाप की भी मजाल नहीं बचाने की ।

फिर मैं क्या करूँ कायथ बाबू ?

तू चुपके से चंपत हो जा, जाकर कंकाली थान में पूजा चढ़ाना और फिर कभी इधर क़दम न बढ़ाना ।

राम बसु ने राह-खर्च देकर फकीर को उसी समय रवाना कर दिया, दूसरे दिन जब ईसा के गुहाल में आने की इच्छा रखनेवाले भेड़ को लापता देखा, तो टामस का दिल बैठ गया ।

टामस ने पूछा, मुंशी चुप क्यों हो ?

राम बसु बोला, सोच रहा हूँ, रेशमी भी कहीं फकीरवाला रास्ता अख्तियार करे तो आखिर मे कृष्णदास तो है ही ।

हतोत्साह होकर टामस ने कहा, सो तो है, मगर दोनों में फर्क बहुत है ।

फर्क जरूर है, एक पुरुष है, दूसरी औरत ।

सिर्फ औरत ? अनोखी सुन्दरी !

सुन्दरी है तो तुम्हें क्या लाभ ? उसका मालिक भी साथ ही आ रहा है ।

टामस ने संक्षेप में कहा, मैं मि० स्मिथ को नहीं पसन्द करता ।

पसन्द मैं भी नहीं करता । अच्छा डा० टामस, मैं पूछता हूँ पहले धर्म परिवर्तन के फल का तुम्हीं क्यों नही भोग करते ? जॉन को भगाकर तुम्हीं रेशमी से व्याह कर लो ।

कहना बेकार होगा, यह राम बसु के मन की बात न थी । वह चाह

रहा था कि किसी तरह जॉन और टामस में कुछ झमेला खड़ा हो और रेशमी का धर्म-परिवर्तन रुक जाए।

कृतज्ञ होकर टामस ने कहा, मुंशी तुम वास्तव मे मेरे मित्र हो, मगर यह होने का नही।

होने का क्यों नहीं ? जहाँ तक मै जानता हूँ, रेशमी तुमसे विमुख नही है।

यह तो मैं भी जानता हूँ, मुझे देखते ही वह शर्म से भागती-फिरती है।

फिर न होने का क्या है ?

लम्वा निःश्वास छोड़कर टामस ने कहा, मि० स्मिथ ने व्याह के बाद मिशन को काफी रकम दान देने का वचन दिया है।

दोनों जने समझ गए, इसके बाद तो कोई युक्ति ही नहीं।

समयोचित कुछ कहना चाहिए, यह सोचकर राम वसु ने कहा, बात तो है! तो उपाय ?

उपाय अब वही करेंगे, जिन्होंने कृष्णदास को जुटा दिया है, फिर जो रेशमी को जुटाने जा रहे है।

बेशक ! बेशक !! राम वसु ने कहा, फिर यह देखो, उन्होंने सिर्फ जुटा ही नहीं दिया कृष्णदास को, उसकी टाँग तोड़कर तुम्हारा रास्ता सहज कर दिया।

इन दोनों से क्या सम्बन्ध हुआ, नहीं समझ पाया।

यह तो बड़ी आसान-सी बात है। अभी समझा देता हूँ। भला फकीर भागा क्यों ?

टामस ने कहा, किसी ने उसका कान भर दिया होगा।

यह कुछ अनहोनी नहीं। राम वसु ने कहा, लेकिन वह भागा पैरों के ही सहारे। पैर उसके अवश होते तो हरगिज नहीं जा सकता।

यह तो सही है।

अब यह देखो कि कृष्णदास बढ़ई टाँग तुड़ाए पड़ा है, जभी तो तुम्हें

निश्चित होकर उसे धर्म-तत्व सुनाने का मौका मिला।

लेकिन मौका तो उसका हाथ टूटा होने पर भी मिलता।

टूटा हाथ लिए भी वह भागने का मौका पाता। पाँव नही है, इसी से वह लाचार है।

सो तो है।

तो क्या इसे भगवान की विशेष दया नही कहनी होगी?

लेकिन उसकी बात भी जरा सोच देखो, वह बेचारा कष्ट पा रहा है।

और वह कही फकीर-सा चपत हो जाता तो तुम जो कष्ट पाते!

कष्ट तो बेहद पाता मुंशी! बीस साल से इस देश में धर्म-प्रचार का काम कर रहा हूँ, लेकिन एक भी नेटिव को ईसाई बनाने का मौका हाथ नहीं लगा।

अब विधाता ने लँगड़े कृष्णदास को जुटा दिया।

टामस ने कहा, लेकिन लोग क्या कहेंगे, मालूम है? कहेंगे मैंने उसके लँगड़े होने का लाभ उठाया।

या तो पाँव टूटा हो, या मन — कुछ न कुछ टूटे बिना कोई अपना धर्म बदलने को तैयार नही होता।

टूटे मन से क्या मतलब मुंशी?

यह बात रेशमी से पूछना, वह टूटे मन की पीड़ा लिए आ रही है।

घूम-फिरकर फिर दोनों रेशमी के प्रसंग पर आ पहुँचे।

टामस ने पूछा, रेशमी का मन किस चोट से टूटा?

बहुत सम्भव है मि० स्मिथ के प्रेम की चोट से।

जॉन का नाम आते ही टामस गरज-सा उठा, आइ डोंट लाइक दी फेलो! उस आदमी को मैं नहीं पसन्द करता।

अब पसन्द किए बिना उपाय क्या रहा! उसने मोटी रकम दान देने का वचन दिया है।

ठीक तो है, दे रुपया। रेशमी ईसाई बने। मगर वह उस रास्केल से ब्याह क्यों करेगी?

आप भूलते हैं मि० टामस, यह दान का जो वचन है, सो व्याह के ही लिए है, ईसाई बनाने के लिए नहीं।

इस तरह शर्त में बँधकर ईसाई बनाना अनुचित है।

मुशी ने हँसकर कहा, डा० टामस, लाचारी मे पड़े बिना कभी कोई दूसरा धर्म नही ग्रहण करता।

जो हो, मै रेशमी के लिए दूसरे दुलहे की चेष्टा करूँगा।

राम वसु ने बाहर से बड़े निस्पृह भाव से कहा, करो, अगर मिल सके।

कहना नही होगा, जॉन पर राम वसु भी बिगड़ उठा था, लेकिन कर क्या सकता था! एक तो रेशमी का जिद्दी स्वभाव, फिर जॉन गोरा ठहरा! सो यह सोचा, अगर काँटे से काँटा निकले तो क्या बुरा है? टामस कुछ टंटा खड़ा कर दे तो हो सकता है, रेशमी का धर्म-परिवर्तन रुक जाए। साफ़-साफ कुछ कहना उसने ठीक नहीं समझा, ये बातें कैरी के कानों न पहुँचनी चाहिए। इसलिए वह निस्पृह-सा हो रहा।

बातें करते हुए चलते-चलते जब दोनों एक अंधी गली के छोर पर पहुँचे, उधर से खुशी से चीखते हुए फेलिक्स पहुँचा — डा० टामस, मुंशी, आप यहाँ चुप क्या बैठे है? चलिए, घाट पर चलिए।

क्यों, वहाँ क्या हुआ? दोनों ने पूछा।

मि० स्मिथ और रेशमी दोनों आ गए। विशाल बजरा, झंडे फहरा रहे है, डङ्का बज रहा है। सब जा चुके, चलिए।

जवाब की राह देखे बिना ही वह उसी तरह दौड़ता हुआ चला गया।

चलिए डाक्टर टामस, प्रोडिगल सन का स्वागत करें।

फिर कहा, अब की वह खाली हाथों नहीं लौटा, रूथ को साथ लाया है।

नाखुश टामस और उत्सुक राम वसु धीरे-धीरे घाट की तरफ चले।

मोती राय

मोती राय उस समय के कलकत्ते के एक वडे विकट वावू थे। तिनू राय, काशी वावू आदि जो कई प्रसिद्ध वावू तव थे, मोती राय उनमे से अन्यतम था। उसका महल-मकान, जमीदारी, संदूक भरा कंपनी का कागज, अकवरी मुहरे, आठ-दस फिटन, ब्रुह्म, ब्राउनवेरी गाड़ी, पाँच-सात पालकी, दस-वारह रखैल, तीन-तीन स्त्री — दूसरे वावुओं के लिए ईर्ष्या और अनुकरण के केन्द्र थे। वागवाजार मे गंगा के किनारे, जहाँ कभी पेरिन साहव का वँगला-वाग था, उसी के पास पूरा एक मुहल्ला हो जैसे, मोती राय का घर, कचहरी और घुड़सार था। मराठों के हंगामे से भागकर मोती राय के पुरखे हुगली से कलकत्ता आए थे। उसके वाद कम्पनी से उनका रब्त हुआ। सन् १७५६ मे सिराजुद्दौला के हमले से कंपनी के साहवों ने जव फलता मे जाकर पनाह ली तो मोती राय के पितामह राम राय ने उनकी रसद जुगाई, रुपए की मदद की और इस प्रकार वे कंपनी के प्रियपात्र हो उठे। उसके वाद क्लाइव जब फौज लेकर प्लासी गया, तो राम राय ने सैकड़े वारह रुपए सूद पर कंपनी को वेहिसाव रुपया कर्ज दिया। प्लासी की लड़ाई से कंपनी का शासन कायम हुआ। राम राय के सौभाग्य का दरवाजा खुल गया और देखते ही देखते वह कलकत्ते के समाज का चरम प्रभावशाली आदमी वन बैठा। नवकृष्ण, उमिचाँद, राजवल्लभ, गोविंद मित्र के ठीक वाद ही उसका स्थान हो गया। दो पीढ़ी की कमाई दौलत और प्रताप पाकर मोती राय विकट वावूगिरी में डूव गया।

कलकत्ते मे उस समय जो भी धनी और वावू थे, चंडी वख्शी का उन सवसे परिचय था। अव की चंडी वख्शी ने कलकत्ते आकर मोती राय की शरण ली। उसके पास जाने के पहले वाजार से उमदा घी, कंदा, खजूर का गुड़ आदि खरीदा।

मृत्युंजय ने कहा, बड़े आदमी को यह सब सौगात भी देता है कोई ?

चंडी ने कहा, जो देवता जिस फूल से संतुष्ट हो। ऐसे लोगों को धन-रत्न से संतुष्ट कर सकने की औकात है हमें ? गाँव की इन चीजों से कलकत्ते के लोग बड़े खुश होते हैं।

चंडी ने सारी चीजें अपने घर की बताकर मोती राय के पैरों के पास रखीं और हाथ जोड़कर खड़ा हो गया।

क्या खबर है चंडी ?

समयोचित छोटी-सी भूमिका के बाद चंडी ने सब कुछ बताया।

मोती राय का दबा पड़ा हिन्दू प्राण एकाएक जाग उठा। गजब ! आखिर लड़की ईसाई के हाथ पड़ गई ? ऐसा होगा तो हिन्दू धर्म कै दिन टिकेगा ?

इसीलिए तो हुजूर के पास आया हूँ।

खैर, देखता हूँ मैं, कहाँ तक क्या कर सकता हूँ। पता लगाओ, वह लड़की कहाँ है, किसके पास है।

चंडी और मृत्युंजय साहब-मुहल्ले की खाक छानने लगे। वह समझता था, ऐसे अनमोल रत्न को छिपाने के लिए देशी लोगों का टोला हरगिज सुरक्षित नहीं। सो साहब-मुहल्ले का चपरासी, दरबान, अर्दली चंडी की आराधना के पात्र बन गए।

उधर मोक्षदा कहने लगी, बेटा चंडी, माँ काली के दर्शन तो कर लिए। अब लौटो।

चंडी लेकिन साफ-साफ बताता नहीं। क्या पता, उसको कैसी प्रतिक्रिया हो। बोला, बस दो दिन सब्र करो मौसी, चलता हूँ।

एक दिन गलती से मृत्युंजय ने कह दिया, हम रेमशो की खोज कर रहे हैं। बुढ़िया आग-बबूली हो उठी। उस जात से गई हतभागिन का नाम मेरे सामने न लो। वह मेरे लिए मर गई।

उसके बाद छिपकर मोक्षदा सारी रात रोती रही।

कोई पंद्रह दिन साहब-मुहल्ले की गवेषणा के बाद चंडी ने रेशमी का पता लगा लिया और तुरत मोती राय के यहाँ जाकर हाजिर हुआ। मोती राय अपने दोस्त-अहबाबों के साथ उस समय बुलबुल की लड़ाई देख रहा था। इशारे से चंडी को रुकने के लिए कहा।

वह तमाशा खत्म हुआ तो चंडी से पूछा, पता चला कुछ ?

चंडी ने रोनी-सी आवाज मे कहा, हुजूर आपका अनुमान बिलकुल ठीक है, हिन्दू धर्म अब रसातल मे गया।

क्यों, बात क्या है ?

हुजूर, वह लड़की साहब के यहाँ है, इतने से ही संतुष्ट नहीं है। एक साहब उससे ब्याह करना चाहता है।

सर्वनाश! — यह कहकर मोती राय बैठ गया। — उपाय ? अच्छा सुनो चंडी, मेरी नाव लेकर तुम लोग श्रीरामपुर जाओ और जैसे भी बने, उस लड़की को छीनकर ले आओ।

लेकिन गोलमाल तो नहीं होगा हुजूर ?

साथ में चार-पाँच प्यादे-लठैत दे रहा हूँ।

वह तो देंगे ही हुजूर! मै इस गोलमाल की नहीं कहता। साहब के मुँह का आहार छीन लेने से कंपनी न नाराज हो।

मोती राय ने कहा, श्रीरामपुर के पादरियों से कंपनी की नहीं पटती। उन्हें यहाँ जगह नहीं दी गई, इसीलिए तो वे श्रीरामपुर गए। कोई गड़बड़ न होगा।

चंडी ने पादपूरण करके कहा, और होगा तो हुजूर है ही।

हाँ-हाँ मै हूँ। तुम लोग तुरंत रवाना हो जाओ; मैं सब हुक्म किए देता हूँ।

उसके बाद चंडी को नजदीक बुलाकर पूछा, उस लड़की को लाकर करोगे क्या ? क्या सोचा है ?

हुजूर शास्त्र मे लिखा है, जो चिता से भाग खड़ी हो, उसे फिर चिता में ही डाल देना चाहिए।

मोती राय ने कहा, शास्त्र मे जो भी लिखा हो, लिखा रहे। वह लड़की मुझे देनी होगी।

जरा देर रुककर बोला, तुम्हारी बात से लगा, लड़की खूबसूरत है।

फिर जरा रुककर बोला, चंडी, शास्त्र की मर्यादा रखने के लिए कोई इतनी तकलीफ नहीं झेलता। अपना इरादा तुम जानो, मेरा इरादा मैंने तुम्हें बता दिया। मेरा काशीपुरवाला बाग-महल खाली पड़ा है, वहाँ वह मजे में रहेगी।

भला हुजूर की राय के खिलाफ कहने की हिमाकत कर सकता हूँ। आप जो कहते हैं, वही होगा।

उसके बाद मृत्युंजय की ओर ताककर बोला, क्या ख्याल है मृत्युंजय, उसका एक सहारा हो गया।

कलकत्ते के बाबू समाज से मृत्युंजय का यही तो परिचय हुआ। वह क्या कहे, ठीक नहीं कर सका।

मोती राय बोला, जाओ चंडी, उसे सीधे बागबाजार के घाट पर लाकर उतारना।

चंडी दूसरे दिन सवेरे नाव से श्रीरामपुर रवाना हुआ। साथ में मोक्षदा बुढ़िया को लेना न भूला। कहा, चलो मौसी, अब घर लौटें।

रेशमी और राम बसु

अच्छी तरह से सोचकर देख रेशमी, तू क्या करने जा रही है।

कायथ-दा, भली तरह बिना सोचे ही क्या इस रास्ते कदम बढ़ाया है?

नहीं, तूने सभी तरफ से सोचने का मौका नहीं पाया। अपना पैतृक धर्म छोड़ना महज व्यक्तिगत व्यापार तो नहीं है, एक पल मे तेरा स

अपना सगा, अपना धर्म, अपना देश — पराया हो जाएगा।

मैं पराया न कहूँ तो पराया कैसे होगा ?

पगली, दुनिया का तू समझती कितना है ? दुनिया का संबंध जिस दो पक्ष से है, उसमें से दूसरा पक्ष अगर अपना न माने तो तू पराई हो ही गई !

क्यों, मैं अपने घर बैठी उन्हें अपना समझूँगी।

पगली ! जरा सुनो इसकी — राम बसु हँसा। उसके बाद फिर बोला, समाज आखिर दस घर से बनता है न ! अगर तू एक ही घर की हो रही तो तेरा समाज कहाँ रहा ?

मैं जिनके घर जा रही हूँ, उन्हीं को लेकर तो मेरा समाज होगा जॉब चार्नक के क्या ब्राह्मण पत्नी नहीं थी ?

रेशमी ने यह जॉन से सुन रक्खा था।

राम बसु ने कहा, उस ब्राह्मण पत्नी को उनके समाज ने स्वीकार किया था क्या ? नहीं किया था। देख, इस देश में साहब-समाज से सबसे ज्यादा मैं मिला हूँ। वे कभी भी हमें अपना नहीं समझ सकते।

ब्याह करने के बाद भी नहीं ?

नहीं, ब्याह करने पर भी नहीं। वे जॉन को अपना समझेंगे — तुम्हें पराई।

लेकिन मि० स्मिथ तो और ही तरह की बात कहता है।

ब्याह के पहले बहुत लोग बहुत तरह की बातें कहते हैं, उन बातों का कोई अर्थ नहीं होता।

रेशमी चुप हो गई।

जो शंका राम बसु को थी, उसके मन में भी वह कई दिनों से उठी थी, कोई मीमांसा उसे नहीं मिली। इन कई दिनों में उसके मन की बहुतेरी बारीक जड़ों में तनाव होने से उसकी सारी सत्ता कसमसा उठी है। उसका पिछला जीवन मोहमय करुणामय आँसू और सौंदर्य की मूर्ति धारण कर बार-बार उसके सामने आकर खड़ा हुआ है। जोड़ामऊ बस्ती के सारे

दृश्य अनोखे सौंदर्य से मण्डित होकर उसकी आंखों के आगे आए है, आँखों के आगे आए हैं:उसकी संगिनियों के दल, बूढ़ी नानी; यहाँ तक कि एकाध बार के लिए माला-चन्दन से सजा मौर माथे एक कंकालसार मुखड़ा भी मन में झलका है। लेकिन जब उसका मन विचलित होने पर आया, तभी उसे याद आ गई लिजा की लाछना, ढोंग भरी भर्त्सना, इस शादी को हरगिज न होने देने की उसकी प्रतिज्ञा और साथ ही याद आ गया जॉन का करुणा-सुंदर, आर्त, पिपासित, असहाय मुखड़ा। और तुरंत उसने मन को समझाया, नही-नही, जॉन मेरा वर है, उसका घर है मेरा घर।

रेशमी को चुप देखकर राम वसु ने कहा, न हो तो भली तरह से सोचने के लिए और दो दिन का समय ले। कल दीक्षा स्थगित रहे।

रेशमी ने दीर्घनिःश्वास छोडकर कहा, नहीं-नही कायथ दा, अब रुकावट न डालिए। जो होना है, वह जल्दी ही हो जाए।

जल्दी हो जाना ही क्या सब समय काम्य है? शास्त्र मे कहा है, अशुभस्य कालहरणम्।

लेकिन मैं अभी तक यह नही समझ पाई कि यह अशुभ क्यों है?

जभी तो कह रहा हूँ, और दो दिन का समय ले।

रेशमी जानती थी, यह नही होने का। पहले तो जॉन नहीं राजी होगा, फिर दो दिन और लिजा के हाथ में बढ़ा देना ठीक नहीं, वह बहुत कुछ कर बैठेगी। लेकिन ये बातें राम वसु नहीं समझेगा, इसलिए वह चुप रह गई।

जॉन और रेशमी के आते ही साहबों ने इस बुरी तरह उन्हें घेर लिया कि रेशमी को एकांत मे पाना राम वसु के लिए मुहाल हो गया! आखिर कैरी की कृपा से वह मौका मिला। कैरी ने कहा, मुंशी, तुम रेशमी को सरल भाषा में खीष्ट धर्म की महिमा समझा दो।

राम वसु ने कहा, मैं इसीलिए सुबह से ही उसे अकेले में पाने की कोशिश में था।

खैर, अब देर न करो। उसे अपने कमरे मे बिठाओ। कल ही दीक्षा

है। आज उसे तैयार कर दो।

सो राम वसु अपने कमरे मे लाकर उसे तैयार कर रहा था।

ऐसे मे एक आदमी वहाँ आ खड़ा हुआ। रेशमी खड़ी हो गई — अरे! मृत्युंजय दादा! आप?

हाँ रे रेशमी, मैं!

हठात् यहाँ?

तेरी नानी जो चैन लेने दे। बस एक ही रट, मुझे रेशमी के पास ले चल। रोते-रोते उसने आँखें चौपट कर लीं। उसकी ताकीद से तंग आकर आखिर कलकत्ते आया। वहाँ जी-जान से खोज-पूछ की। पता चला, तू श्रीरामपुर गई है। सो बूढ़िया को लेकर आ गया। गनीमत कि तू मिल गई, नहीं तो फिर....

मृत्युंजय की बात खतम होने से पहले ही रेशमी बोली, नानी आई है? कहाँ है अब तक कहा क्यों नहीं?

कहने ही जा रहा था। गंगा के घाट पर नाव में बैठी है बुढ़िया।

मुझे ले चलो।

मृत्युंजय से चंडी की साँठ-गाँठ का पता नही था रेशमी को। इसलिए उसे किसी तरह का संदेह नहीं हुआ। और राम वसु ने सोचा, शायद ईश्वर को बचाना था, वरन यों अनसोचे बुढ़िया कैसे आ पहुँचती? लिहाजा, उसने भी बड़ी दिलचस्पी ली। कहा, चल रेशमी, नानी से मिल ले।

तीनों जने गंगा के घाट पर उपस्थित हुए। भाटे का समय था, नाव किनारे से कुछ दूर थी। पानी में उतरकर तीनों नाव पर गए।

रेशमी को देखते ही — 'अरी, ओ मेरे कलेजे की टुकड़ो' कहकर बुढ़िया रो उठी और उसे जकड़ लिया।

मेरी नानी, अब तक तू कहाँ थी — कहकर रेशमी भी रोने लगी।

इस बीच नाव खोल दी गई।

'नाव क्यों खोल दी?' — राम वसु का इतना कहना था कि किसी

का जोरों का धक्का खाकर वह छिटककर पानी मे जा गिरा।

'वसुजा इतना तैर जाओगे, जाओ, जान नहीं जाएगी। लौटकर अपने साहब बापों को खबर दो। पानी मे रहकर मगर से वैर करने क यही नतीजा होता है।'

आवाज चंडी बख्शी की थी।

रेशमी तब तक भी चंडी बख्शी की साजिश को नहीं समझ सकी थी। बोली, कायथ दा पानी मे गिर पडे जो!

गंगा की छाती को कँपाते हुए चंडी चीख उठा, चुप रह हरामजादी!

रेशमी ने कहा, मुझे ले कहाँ जा रहे हो?

इससे तुझे क्या मतलब? ज्यादा गड़बड़ करेगी तो बांध दूँगा। भला चाहती है, तो चुप रह।

अभी भी वह पूरी तरह से उनके षड्यंत्र को नहीं समझ सकी थी, इसलिए कुछ तो बेफिक्री और कुछ निरुपाय होकर वह नानी की छाती से लगकर चुप पड़ी रही। और छाती से उसे चिपकाए मोक्षदा सिर्फ यही कहती रही, मेरे कलेजे की टुकड़ी! अरी ओ मेरे कलेजे की टुकड़ी!

एक तो भाटे का खिचाव, तिस पर पाल पर लगती हुई उत्तर की हवा, नाव अँधेरे में हवा के वेग से ओझल हो गई।

उसके बाद की बात

राम वसु ने आकर लोगों से सारा हाल कहा। घटना के अप्रत्याशित परिणाम से पल भर के लिए सब हक्का-बक्का हो गए। लेकिन संकट के समय ज्यादा देर तक हक्का-बक्का रहना या बेकार का शोरगुल मचाना अंगरेजों का स्वभाव नहीं। वे तुरंत निश्चय कर सकते हैं। बात की बात

में फेलिक्स, मार्शमैन और वार्ड नाव लेकर निकल पड़े। अवश्य राम वसु साथ चला। टामस को साथ लेने का आग्रह लेकिन किसी ने नहीं दिखाया, न टामस ने ही तंग किया। सबका ख्याल था, चंडी बख्शी की नाव जोड़ा-मऊ की तरफ गई है, लिहाजा पादरियो की नाव भी उत्तर को चली।

बात दूसरे दिन समझ मे आई कि टामस ने साथ जाने के लिए खास तंग क्यों नहीं किया। रेशमी के बदले उसने कैरी की मदद से कृष्णदास की दीक्षा का काम नियम से सम्पन्न किया। उसके बाद जो हुआ, वह टामस के लिए अभावित चाहे न हो, लेकिन अती मे तो सन्देह नहीं। कृष्णदास की दीक्षा हो जाने से उसके बीस साल की आशा के पेड़ में पहली कली खिली, लम्बे बीस साल की कोशिश के बाद यह पहला दीक्षादान था सत्य-धर्म का। भाव से विभोर होकर उसने नाचते-गाते सारी रात बिताई। सुबह देखा गया, वह पागल हो गया है। पहले तो कोई समझ नहीं सका, क्योंकि दिव्योन्माद और पागलपन का बाहरी भेद बहुत कम होता है। दिन की रोशनी मे दर्शकों की नजरों की आशा में उसकी उन्मत्तता और भी बढ़ गई। लंगड़े कृष्णदास के साथ चौतरे पर उसने द्वैतनृत्य आरम्भ कर दिया। साथ ही राम बसु रचित द्वैतगीत भी गाने लगा —

और कौन तर सकता
जीसस क्राइस्ट बिना रे।
पातक सागर घोर
जीसस क्राइस्ट बिना रे।

लंगड़े कृष्णदास से वैसा नाचते नहीं बन रहा था। वह रुकता नहीं कि टामस झटका लगाता — कृष्णदास डेढ़ टाँग से नाचना शुरू कर देता।

टामस ने कहा, अरे ठीक से नाचो बाबा, ठीक से नाचो।

भरसक सम्हालकर नाचते हुए कृष्णदास ने कहा, पैर में लगता है। पहले पाँव ठीक कर दो, फिर देखो कि नाच किसे कहते है।

इसके जवाब में टामस जोर से गा उठा और लगा उसे झटका लगाने—

वही महाशय ईश्वर तनय
पापी परित्राण हेतु
उनका जो जन, करे आराधन
पार करे भवसेतु।

कृष्णदास समझ गया, उसका रोग पार्थिव औषधि से नहीं जानेवाला है, ईसा की दया ही एक मात्र भरोसा है। सो कहीं नाच की गड़बड़ी से उस दया में कमी न आए, यह सोचकर टूटे पाँव को हाथ से उठाकर वह एक ही पाँव से नाचने लगा। क्या कहने उन दोनों के नाच के! मुख्तसर में, तीन पैरों के नाच से महफिल सरगर्म हो उठी। छापाखाने के लोग दर्शक होकर दौड़े आए।

लेकिन यहीं अंत नहीं था। कैरी पत्नी कुछ दिनों से अधपगली-सी पड़ी थी। हठात् यह दृश्य जो देखा, तो उसका पागलपन जाग पड़ा। खिड़की से मुँह बढ़ाकर बोली — नाच हो रहा है और बाजे का पता नहीं! यह कैसी बात?

वह एक प्लेट लिए बाहर निकल आई। एक चम्मच से प्लेट बजाती हुई बोली, नाचो-नाचो। आज शायद बाघ के शिकार में जाओगे। नाच लो, खूब नाच लो; लौटोगे, ऐसा नहीं लगता। इत्ता बड़ा बाघ!

कैरी प्रूफ देख रहा था। हो-हल्ला सुनकर निकला। निकलकर जो देखा तो अवाक् रह गया। बात समझ में आ गई। लोगों की मदद से टामस और डोरोथी को धर-पकड़कर दो कमरे मे बन्द कर दिया। टूटे पाँव की पीड़ा भूलकर कृष्णदास के मन में नृत्य-रस जमता जा रहा था, अचानक रसभंग हो जाने से वह टुकुर-टुकुर ताकता रह गया। अपने मन मे यही कहता रहा, सम पर आने से पहले ही यह क्या हो गया! तारा, माँ इच्छामयी, सब तुम्हारी इच्छा।

उधर चंडी की नाव अंधकार में तेजी से कलकत्ते की ओर चल रही थी। चंडी ने कहा, देख लिया मृत्युंजय, हुआ कामयाब या नहीं। ये कम्बख्त साहब क्या बिगाड़ सके ?

इसके बाद क्या होगा कौन जानें। कहीं कुछ बुरा न हो अपना।

शास्त्रीय हँसी की कोशिश से अँधेरे को चौंकाकर चंडी ने कहा, डर की बात नहीं मृत्तुंजय, गीता मे भगवान ने क्या कहा है, जानते हो ? 'नहि कल्याणकृत् कश्चित् दुर्गति गच्छति तात।' यानी अच्छा काम करने से कभी बुरा नहीं होता।

उसके बाद ही भगवद्वचन से •कुछ डेग उतरकर बोला, इसे बाँधकर रक्खूँ क्या ?

मृत्युंजय ने कहा, नहीं-नहीं। बाँधने की जरूरत नहीं। सो गई है। और फिर नदी मे भागकर जाएगी कहाँ ?

पूछो मत, बड़ी शैतान है यह। उस बार नदी मे तैरकर भाग गई थी। याद नहीं है ?

उसके बाद कहा खैर, छोड़ो,।

अब की मृत्युंजय ने दबे गले से पूछा, अच्छा यह तो कहिए, इसे क्या सच ही मोती राय के बाग-महल मे भेज देंगे ?

धीरे से बख्शी ने कहा, पागल हो! कल ही इसे चिता पर चढ़ा दूँगा। अब जिंदा नहीं छोड़ने का।

संकट की घड़ी में इन्द्रियों की शक्ति बढ़ जाती है। ये सारी बातें रेशमी ने सुनीं। लेकिन कर क्या सकती थी, सोई-सी पड़ी रही।

बीच में रेशमी सो ही गई थी शायद। जगी तो देखा, नाव चल नहीं रही है। मल्लाहों की बातचीत सुनाई पड़ी।

एक ने कहा, बागबाजार का घाट है ?

दूसरे ने जवाब दिया, लगता है, वह निकल गया। यह मदनमोहन-तला का घाट है।

तो चल उधर।

ठहर, ज्वार आने दे।

ठीक है, रहने दे। रात भी बीत चली।— चादर लपेटकर वे सो रहे।

चंडी की आवाज नही मिली। रेशमी समझ गई, वे लोग पहले ही सो गए हैं। रेशमी ने सोचा, मौका है तो बस अभी, नहीं तो फिर कभी नहीं। सोई नानी की बाँहें छुड़ाकर वह उठ बैठी। एक बार इधर-उधर देख लिया। नः, कोई नही जग रहा है। वह धीरे-धीरे, ताकि जरा भी आवाज न हो, नाव से उतर पड़ी। किसी ने बाधा न दी। दबे पाँव और कुछ कदम गई, उसके बाद सरपट दौड़ा। किधर जा रही है, किसके पास जा रही है, यह सब कोई प्रश्न उसके मन में नहीं उठा। एक ही चिंता थी, चंडी के चंगुल से निकलना है।

चारों ओर अँधेरा। सन्नाटा, पास ही एक घर से रोशनी आती दीखी। वही जाकर दरवाजा खटखटाया।

दरवाजा खुल गया। रेशमी ने देखा, एक अधेड़ स्त्री आँगन बुहार रही है।

अंदर जाते ही रेशमी ने दरवाजा बंद कर लिया। कहा, मुझको बचाओ।

कौन हो तुम ? क्या हुआ है तुम्हें ?

डाकू मुझे भगा ले जा रहे थे। मौका पाकर भाग आई हूँ।

ऐसी घटनाएँ उस युग में होती ही रहती थीं, लिहाजा उस स्त्री ने अविश्वास नही किया। कहा, आओ, यहाँ तुम्हें कोई खतरा नहीं।

उसने झाड़ू रख दिया और रेशमी का हाथ पकड़ा। रेशमी ने पूछा, आपको क्या कहूँगी मैं ?

मुझे लोग टुशकी कहते हैं। तुम चाहो तो टुशकी दीदी कहना। और

तुम्हें क्या कहूँगी बहन ?

रेशमी ने जरा आगा-पीछा करके कहा, मेरा नाम सौरभी है।

टुशकी ने कहा, चलो, अंदर चलो। रात अभी भी है थोड़ी-सी, सो लेना जरा।

दोनों अंदर चली गईं।

चौथा खंड

शताब्दी का मोड़

इस बीच शताब्दी ने मोड़ लिया। अट्ठारहवीं सदी ने चुपचाप अपने को उन्नीसवीं सदी के हवाले कर दिया। इस चुप्पी के साथ कि दोनों की तरंग-ताल का भेद समझ सकना मुश्किल। महासागर मे बड़े-बड़े जहाज शायद इस तरह नहीं डोलते, लेकिन अपनी इस छोटी-सी कहानी की डोंगी बेबस-सी डोल उठी, तरंगों की ताल के परिवर्तन से कहानी की नायक-नायिकाएँ अपनी जगह से गिरी, विचलित हुई।

अट्ठारहवीं सदी हिन्दुस्तान के इतिहास में ऐडवेंचर का युग रहा। सदी के अंत होने पर देखा गया कि ऐडवेंचर में अंगरेज जीत गए। क्लाइव सर्वोपरि हो गया। ऐडवेंचर करनेवाला न होता तो क्लाइव महज बारह सौ गोरी सेना लेकर पचास हजार सैनिकों की नवाबी फौज का सामना नही करता। वारेन हेस्टिंग्स आदमी ऐडवेंचर-युग का था, लेकिन उसी में पहली बार ऐडवेंचरर और शासक का समावेश समान रूप से देखा गया। हेस्टिंग्स के रुखसत होने के साथ-साथ अंगरेजों के ऐड-वेंचर-युग का अन्त हुआ, दिखाई दिया स्थायित्व और दायित्व का प्रसंग।

पहला लक्षण था इसका परमानेंट सेट्लमेंट या चिरस्थायी बन्दोबस्त। युग-परिवर्तन का चिह्न बारीक लकीर से नहीं खींचा जा सकता, उसके लिए थोड़ी-सी जगह चाहिए। हेस्टिंग्स की विदाई से कार्नवालिस के दूसरी बार आने तक उस सीमा-रेखा का फैलाव है — ऐडवेंचर और बदस्तूर शासन का सम्मिलन। बीच में वेलेस्ली। उन दिनों अंगरेज व्यापारियों को नवाब कहकर मजाक किया जाता था। और वे अगर नवाब हों तो वेलेस्ली बादशाह था। शक्ति के चरम पर प्रतिष्ठित रहते हुए उसके जैसे प्रताप का भोग औरंगजेब ने भी किया था या नहीं, इसमें संदेह है। उसी के हाथ से वास्तव में पहली बार वणिक का मानदंड राजदंड में परिवर्तित हुआ। वेलेस्ली ने ही सबसे पहले यह निस्संदेह समझा था कि इस देश में अंगरेजों की भूमिका अब ऐडवेंचरर की नहीं, शासक की है, क्लाइव की नाईं उसे नवकृष्ण मुंशी की मदद की जरूरत नहीं रही; जैसे-तैसे बारह सौ गोरे सैनिकों को बटोरकर शतरंज खेलने की भाँति 'मरें या मारें' वाला मनोभाव उसका नहीं था; हेस्टिंग्स की तरह फारसी और लैटिन श्लोक-रचना करते हुए राज-काज चलाने का समय नहीं था उसे; सर जॉन शोर या कार्नवालिस की नाईं छोटे जमींदारों का पेट दबाकर गुड़ वसूल करने का मनोभाव भी नहीं था उसका; उसका कारोबार था हाथी-घोड़ा, राजा-रानी का; वह भी शतरंज का नहीं, वास्तविक। औपचारिक तौर पर भारत-साम्राज्य कायम होने से पहले अंगरेजों की देह में साम्राज्य का रस दौड़ाकर उन्हें मतवाला बनाया वेलेस्ली ने। वेलेस्ली के समय में साम्राज्यवाद की सूचना हुई।

अट्ठारहवीं सदी के अंगरेज राज-पुरुषगण इस रस से वंचित थे इस लिए देशी-विदेशी, सरकारी, गैर-सरकारी सबसे बेखटके मिलते-जुलते थे। वेलेस्ली सारे सम्बन्धों को तोड़कर नए बने विशाल प्रासाद में अकेले बैठा रहा, दूसरे-दूसरे राजपुरुष भी उसी प्रकार बन्धन तोड़ने को तैयार हुए। दूसरी बार आकर कार्नवालिस ने वेलेस्ली-शासन के राजकीय आडम्बर के पंखों को समेट दिया। समेटते ही चारों तरफ खर्च घटाने का

शोर मच गया। लेकिन इन बातों से भी ज्यादा परिवर्तन अन्दर-अन्दर हुआ था।

यूरोप की नीति-रहित अट्ठारहवीं सदी का अधिष्ठाता था 'रीजन' और प्रधान पुरोधा वालतेयर।

नीति-रहित 'रीजन' की आवहवा इस देश के श्वेतांग समाज में भी फैली थी। इसीलिए छल, बल, कौशल से अंगरेजों के लिए यह देश जीतना संभव हुआ; कासमोपालिटन उदार भाव श्वेतांग समाज का था, इसीलिए इस देश के लोगों के साथ उनके मिलने-जुलने का रास्ता बन्द नहीं हुआ था ···· ऐडवेंचर की मनोवृत्ति ने उस पथ को सुगम किया था — साम्राज्य हासिल करनेवालो के रवैये यह रवैया है ने उस पथ को कंटकित नहीं किया था। यही कारण था कि जॉन के लिए रेशमी से विवाह करने की सोचना सहज था। अट्ठारहवी सदी का श्वेतांग समाज धर्म के विषय में उदासीन था। राजपुरुषो से पादरियों को प्रश्रय नही मिला। टामस ने खुद ही कबुल किया कि बीस बरस तक कोशिश करने के बावजूद एक भी नेटिव को ईसाई-धर्म में दीक्षित नहीं कर सका। वास्तव में पहला बैपटिस्ट मिशन कायम हुआ था श्रीरामपुर में — कम्पनी के राज से बाहर।

लेकिन धीरे-धीरे आवहवा बदली। साम्राज्य हासिल करने का नशा जैसे-जैसे अंगरेजो को मतवाला बनाने लगा, वैसे-वैसे वे देशी समाज से अलग होते जाने लगे। इतने दिनों तक जो ऐडवेंचर था, वह राजा-प्रजा के सम्बन्ध में परिणत हुआ। उसी के साथ धर्म के बारे मे कट्टरता भी दिखाई देने लगी। ऐडवेंचर का युग बीता, शासक और पादरियों का युग आया। उन्नीसवीं सदो का फौजी जेनरल पादरी के साथ मानव-जीवन के उद्देश्य की आलोचना करने लगा। शासक और सैनिक हिदेन प्रजा की आत्मा की सद्‌गति के लिए चिंतित हो उठे। जिन कारणों से सिपाही-विद्रोह हुआ था, यह दुश्चिन्ता उनमें से अन्यतम प्रधान कारण थी। धीरे-धीरे राजा और प्रजा मे जो दूरी आई, सिपाही-विद्रोह से वह दूरी दुस्तर हो गई। सदी की शुरुआत में यह सब उतना स्पष्ट नहीं हुआ था, लेकिन

उसका प्रभाव शुरू हो गया था।

परिवर्तन शुरू हो गया। छ: घोड़ोंवाली पुरानी गाड़ियाँ धीरे-धीरे रेसकोर्स और मैदान से गायब होने लगी। नवाब के दल ने समझ लिया, उनकी बारी गई। आखिर एक दिन हिसाब-किताब चुका देने के लिए सरकार का तकाजा पहुँचा। खर्च का आँकड़ा बहुत बड़ा था, फिर भी सब चुकाकर जो बच जाता, उससे विलायत में नवाबी चाल से चलना संभव था, पार्लियामेंट की सदस्यता का दो-एक पद भी खरीदना असंभव नहीं था। लिहाजा जहाज में जगह की खोज का शोर हुआ — मौका देखकर कप्तानों ने किराया बढ़ा दिया — एक आदमी का किराया एक हजार पौंड।

इस युगांतर की स्पष्ट तिथि लार्ड कार्नवालिस का दुबारा कलकत्ता आगमन की तिथि थी। जहाज-घाट पर गाड़ी-घोड़ा, हाथी-ऊँट, सैन्य-सामंत की विशाल भीड़। अवाक् होकर कार्नवालिस ने बगल के सेक्रेटरी से पूछा, राबिनसन, यह सब क्या मामला है?

यह सब लार्ड वेलेस्ली ने हुजूर के स्वागत के लिए भेजा है।

सौजन्य की हद हो गई — लेकिन इतना आवश्यक था क्या? मैं क्या पैरों का व्यवहार भूल गया हूँ।

कार्नवालिस पैदल ही गवर्नमेन्ट हाउस आया।

नए गवर्नमेंट हाउस (वर्तमान भवन) के ईंट-काठ-पत्थर के जंगल में भटककर कार्नवालिस ने सेक्रेटरी से कहा, अपना सोने का कमरा खोजना भी एक साधना है।

दूसरे दिन नया लाट साहब सुबह के भ्रमण में घोड़े पर महज एक घुड़सवार के साथ निकला। बादशाह वेलेस्ली की जगह गवर्नर कार्नवालिस। नया युग शुरू हो गया।

लेकिन जो लोग नए बंगाल का निर्माण करेंगे, वे कहाँ हैं? राधाकांत देव सोलह साल के किशोर। पचीस-छब्बीस साल का युवक राममोहन पटना, भागलपुर, कलकत्ता की खाक छानता फिर रहा था, पाँव रखने के लिए थोड़ी-सी जगह की खोज में। मृत्युंजय विद्यालंकार बाग-

बाजार के टोल में पढ़ाने में लगे। कैरी, राम वसु श्रीरामपुर में बाइबिल के पहले बंगला अनुवाद का प्रूफ देख रहा था। बाकी लोग तब भी दूर और निकट भविष्य के गर्भ में थे।

प्रतिक्रिया

चंडी हड़बड़ाकर जगा। मृत्युंजय को धक्का दिया, ऐ मृत्युंजय! उठो-उठो, नाव घाट पर लग गई।

मृत्युंजय ने जगकर कहा, कौन-सा घाट है?

शायद बागबाजार — चंडी ने कहा।

ऐ माझी! लगता है, तुम सब सो गए!

हाँक-पुकार से मल्लाह जग गए। एक ने कहा, जी सोया नहीं, लेट गया था जरा।

मल्लाहों ने आवाज दी, ऐ सर्दार! जगो।

प्यादे जगे। सब सो गए थे।

चंडी ने बुढ़िया को पुकारा, मौसी, उठो। कितना सोओगी?

मोक्षदा जगी। जगकर धक्का देती हुई बोली, रेशमी! उठ। धक्के से तकिया हट गया — अरी, कहाँ गई तू?

रेशमी नहीं थी। रेशमी समझकर एक तकिए से लिपटी सोई थी बुढ़िया। मोक्षदा चीख उठी, चंडी! मेरी रेशमी कहाँ गई?

एँ! शैतान फिर भागी क्या? — चौंक उठा चंडी।

सच ही रेशमी कहीं नहीं थी।

चंडी गरज उठा, यह तेरी कारस्तानी है बुढ़िया! तूने ही उसे भाग जाने दिया।

बुढ़िया भी गरज उठी, क्या, जितना बड़ा मुँह नहीं, उतनी बड़ी बात। इतने दिनों के बाद अपने कलेजे की टुकड़ी को पाने के बाद मैं भाग जाने दूँगी! मुँह सम्हालकर बोल चंडी!

चंडी लेकिन दबा नहीं। बोला, अच्छा तू ठहर डाईन, तेरी शैतानी निकालता हूँ। बता, वह कहाँ गई?

नाव में तमाम ढूँढा जाने लगा। मगर जो थी नहीं, वह मिले कहाँ? मोक्षदा जोर-जोर से रोने लगी, कहाँ गई मेरे कलेजे की टुकड़ी।

अब चंडी मल्लाहों पर टूट पड़ा, तुम लोगों ने पहरा क्यों नहीं दिया?

मल्लाहों ने कहा, पहरा देने को तो प्यादे ही। हम मल्लाह हैं, नाव को घाट पर लगा दिया है।

चंडी चीख उठा, यही तुम्हारा घाट हुआ?

इसके बाद सब लोग प्यादों पर बिगड़े। प्यादे ने कहा, पहरा देते रहना अपना काम नहीं। आप तो जगे रह सकते थे।

इस तरह सब एक दूसरे पर दोष देने लगे।

रेशमी का अंजाम मृत्युंजय को मालूम था। लिहाजा उसके गायब हो जाने से वह खास दुखी नहीं हुआ। कहा, बख्शी जी, पानी में तो नहीं गिर गई?

मगर है या घड़ियाल कि पानी में गिरेगी। वह दईमारी भाग गई। नः, शैतान छूमन्तर जानती है। तीन-तीन बार मेरे चंगुल से भाग गई।

मोक्षदा रोती ही रही।

रेशमी के भागने का दोष किसी ने अपने ऊपर नहीं लेना चाहा, इसलिए अंत में आपस की झड़प बंद हुई।

चंडी ने कहा, ऐ माझी, यह टोला तो तुम लोगों का जाना-चीन्हा है। एक बार ढूँढ देखो न।

यह आपका जोड़ामऊ गाँव है क्या! किधर गई, कहाँ गई — कैसे

ढूंढ़ें ? — मल्लाहों ने जवाब दिया।

चंडी ने हताश होकर कहा, तो मोती बाबू से क्या कहूँगा ?

मृत्युंजय ने कहा, जो हुआ, वही कहिए। मल्लाहों और प्यादों ने आपत्ति की। कहा, भोग का नैवेद्य भाग गया, यह सुनने के बाद हमारी गर्दन पर सिर नहीं साबूत रहेगा।

जभी तुम्हें उचित सबक मिलेगा।

आप चुप रहिए बख्शी बाबू ! ऐसा करेंगे तो हम सब लोग हलफ उठाकर कहेंगे कि आप लोगों की साजिश से ही वह भागी है। फिर मजा मालूम होगा।

चंडी मोती राय को पहचानता था। नर्म पड़ा, बोला, तो उनसे कहा क्या जाएगा, सब मिलकर स्थिर करो।

इसपर सबने मिलकर एक रोमांचकारी उपन्यास तैयार किया। तै पाया कि उन्हें बताना पड़ेगा, हम उस लड़की को छीनकर ले आ रहे थे कि साहबों की चार-पाँच नावों ने हमें घेर लिया। गिने-चुने हम कई आदमी कर क्या सकते थे। उधर पचीस-तीस जने थे, साहब ही तो पन्द्रह बीस होंगे। फिर छीन ले गए उसे।

तै हो गया। मृत्युंजय मोक्षदा को लेकर डेरे पर चला गया। बाकी सब लोग मोती राय के पास गए। सुर, स्वर, आँसू, कंपन और हलफ के साथ वह उपन्यास मोती बाबू को सुनाया गया।

सारा हाल सुनकर मोती राय कुछ देर चुप रहकर बोला, देख रहा हूँ, इन पादरियों की हिमाकत खूब बढ़ रही है।

सबने समझा, इस बार उनके सिर बच गए।

मोती बाबू बोले, अच्छा, तुम लोग जाओ, मैं सोचता हूँ, क्या किया जा सकता है।

चंडी बख्शी रेशमी के बारे में सोचता हुआ चला गया।

उधर जॉन और राम बसु की नाव जोड़ामऊ पहुँची। वे गाँव में गए और रेशमी की खोज करने लगे। साहबों को देखकर सबने झूठ की शरण ली। सबने एक ही बात कही, रेशमी नाम की किसी लड़की को हम नहीं जानते हैं।

और चंडी बख्शी?

चंडी बख्शी? यह नाम भी नहीं सुना।

उसका घर कहाँ पर है, कह सकते हो?

नाम ही नहीं सुना है तो घर क्या बताएँ?

मोक्षदा बूढ़ी को जानते हो?

नहीं। हाँ, मुक्तिदा बूढ़ी एक थी। वह भी कई साल पहले गुजर गई।

इस गाँव का नाम तो जोड़ामऊ ही है न?

लोग-बाग कहते तो यही है, लेकिन इसको बाँभनडीह भी कहते हैं।

राम बसु समझ गया कि सब लोग शुरू से आखिर तक झूठ ही बोल रहे हैं। कमजोर का हथियार झूठ है। लेकिन किया क्या जाता। रेशमी का पता न चला। राम बसु ने जॉन आदि को समझाया, मेरा ख्याल है, वे लोग इधर आए ही नहीं। कलकत्ते गए हैं।

राम बसु ने कहा, आप लोग लौट जाएँ। मै और दो-चार दिन इसी आस-पास रहकर देख लूं, फिर लौटूंगा। यही ठीक हुआ।

जॉन आदि की नाव लौट गई और समय पर श्रीरामपुर पहुँच गई।

जॉन ने कहा, मैं कलकत्ता लौट जाता हूँ। और लोगों ने कहा, कलकत्ता जरूर जाना है, लेकिन पहले यहाँ उतरकर परामर्श कर लेना आवश्यक है।

जॉन श्रीरामपुर में उतरा। फेलिक्स की बाँह पकड़कर वह किसी तरह घर पहुँचा और लेट गया। पता नहीं क्यों, एकाएक लिजा की याद आ गई और उसकी दोनों आँखें आँसुओं से भर उठीं।

भाई-बहन

तब का कलकत्ता था ही कितना बड़ा ? बात की बात मे रेशमी-हरण का समाचार तमाम फैल गया। लेकिन वास्तव मे जो घटना घटी थी, प्रचारित उससे बिलकुल और तरह से हुई। अफवाह शरत् की बदली होती है — देखते ही देखते उसकी आकृति और प्रकृति बदल जाती है। किसी ने यह सुना कि रेशमी नाम की स्त्री गंगा नहाने गई थी, ऐसे मे कुछ लुटेरे (किसी का कहना था साहब, किसी का पादरी) उसे पकड ले गए। चूंकि बात यह गंगा के घाट से शुरू हुई, इसलिए ठिकाने पर ही जानने-सुनने के आग्रह से नहानेवालों की संख्या बढ गई। किसी ने यह सुना कि उसे घर से पकड़कर ले जाया गया है और ईसाई बना लिया गया है — अभी लोग उसे किले में बन्द किए हुए है। नंगी तलवार लिए गोरे सिपाही पहरा दे रहे है। किसी ने सुना, उसे जहाज पर बिठाकर विलायत भेज दिया गया है, वहाँ शायद राजमहल की दासी होगी। और किसी ने यह कहा, अरे यह सब फिजूल की बात है। वह लडकी आप ही बड़ी घाघ है, अपनी इच्छा से ही साहब की नाव पर सवार हो गई। बात सबकी एक-सी सत्य थी, इसलिए कि यह मामूली आँखों देखी नही, सुनी हुई बात थी — कहनेवाला सच्चाई मे युधिष्ठिर। दो-एक दुस्साहसिक लोगों ने किसी की एक न मानी। कहा, सब बेकार की बात — हमने उस औरत को अपनी आँखों देखा। बुढ़िया थी, बुढ़िया। पोते के शोक में डूब मरी। गंगा मे डूब मरना नैसर्गिक नियम है, इसमें उत्तेजना की आँच नही। सो किसी ने नहीं माना। कहा, अरे तुम जिस बुढिया की बात कह रहे हो, उसके पोते का दाह-संस्कार तो हम लोगों ने ही किया। अहा, राजकुमार-सा था देखने में। लेकिन यह बात जिसके बारे में है; वह तो छोकरी है, हमारे ही मुहल्ले की है। हाय-हाय, उसकी माँ बेचारी ने रोते-रोते आँखें अंधी कर लीं।

उत्तेजना की आग को बुझने देने को कोई तैयार नहीं। जरा फीकी

पड़ी कि गवाह-सवूत का नया जलावन डाल देते — आग फिर दप् से लहक उठती। उसी में हाथ-पाँव सेंककर सब आराम पाते।

लोगों की जबान पर घूमते-घूमते आखिर यह खबर साहब-मुहल्ले में पहुँची। वहाँ के चपरासी-अरदलियों ने इसे दूसरा ही रूप दिया। इसी बीच उन्हें मालूम हो गया था कि स्मिथ साहब किसी बंगाली लड़की को लेकर कहीं चले गए है। अब उन्होंने लूटपाट का जो किस्सा सुना, तो समझ गए, चोरी पर बटमारी हुई। स्मिथ साहब के मुँह के आहार को चील-गिद्ध उठा ले गए झपटकर। बात इसी रूप मे लिजा के कानों पहुँची। उसने सोचा, रेशमी को चाहे कोई साहब ही ले गया हो, चाहे नेटिव लोग, सारांश यह हुआ कि वह जॉन के हाथ से निकल गई। ईश्वर के इस न्याय से मन ही मन ईश्वर की पीठ ठोंकती हुई वह यह सुसमाचार मेरिडिथ को देने के लिए चल पड़ी। पिछले इतवार को भगवान से असहयोग करके वह गिरजा नहीं गई थी।

मेरिडिथ, सुना तुमने सुसंवाद ?

नकली उमंग से मेरिडिथ ने कहा, क्या ? मिस्टर और मिसेस आ पहुँचे शायद ?

आः, मजाक छोड़ो। मि० स्मिथ तो जल्द ही लौट आएगा, ऐसी आशा है। लेकिन यह गाँठ बाँध लो कि मिसेस स्मिथ अब नहीं आने की।

अब वास्तविक जिज्ञासा से मेरिडिथ ने पूछा, बात क्या है ? स्मिथ की 'बंडल ऑव सिल्क' हाथ से निकल गई।

इंडियन सिल्क बड़ी कीमती होती है. ऐसा ही होना संभव है। लेकिन हुआ क्या है सो खोलकर कहो।

लिजा ने जो कुछ सुना था, कह सुनाया। कहा, मैं शुरु से जानती थी, ईश्वर ऐसा अनाचार हरगिज नहीं होने देंगे।

मेरिडिथ बोला, इतना ही विश्वास जब तुम्हें भगवान पर था, तो इतनी मायूस क्यों हो गई थी ?

लिजा ने कहा, इसलिए कि भगवान और आदमी के बीच में कभी-

कभी वह शैतान जो आ जाता है।

उसी शैतान ने शायद सोने का सेब दिखाकर जॉन को मोहित किया था। खैर, अब तो तुम्हारे भगवान की जीत हुई।

उसके बाद जरा रुककर बोला, अच्छा, सच-सच बताओ लिजा, खुशी किस बात की है — भगवान की जीत की या तुम्हारी अपनी जीत की ?

तुममें यही बहुत बड़ा दोष है मेरिडिथ ! भगवान की बात आते ही तुम मजाक शुरू कर देते हो।

तो सुनो, सच बताऊँ। तुम्हारा भगवान एक सुन्दर धोखा है।

छि-छि मेरिडिथ, ऐसा नहीं कहना चाहिए। अच्छा, तुम सोचो बैठकर मैं चलती हूँ। साँझ को मेरे यहाँ आना न भूलना।

जरूर आऊँगा, बशर्ते कि बीच मे शैतान न आ पहुँचे।

लिजा ने हँसकर कहा, नहीं, वह नहीं आएगा। चलती हूँ।

जॉन के अचानक चले जाने के बाद से लिजा मनमरी-सी थी। इतने दिनों के बाद आज उसके होंठों पर हँसी आई।

उस रात वह जॉन का इन्तजार कर रही थी। सोच रक्खा था, रेशमी की बात खूब बढ़ा-चढ़ा कर उससे कहेगी। कहेगी कि मेरे घर आकर रेशमी मुझे ऐसा-ऐसा सुना गई है, जो न भूतो न भविष्यति। बाप-माँ यहाँ तक कि तुम्हें भी भला-बुरा कहने मे नहीं चूकी। लिजा को विश्वास था कि आँसू से भिगाकर कह पाने से जॉन का इरादा बदल जाएगा, रेशमी का नशा उतर जाएगा। साथ ही साथ उसके व्याह की भी चर्चा करनी होगी। कई खूबसूरत लड़कियों (अपने से कम) का नाम भी ठीक कर रक्खा था उसने। ऐसा निष्क्रिय है जॉन कि जब तक परोसकर थाली उसके मुँह के पास नहीं रख दी जाती, उसके लिए खाना भी असंभव है। 'भाई-बहन का पुनर्मिलन' या 'रेशमी-पराजय' नाटक का रिहर्सल पूरा करके जब वह हर पल जॉन की प्रतीक्षा कर रही थी, तब जॉन के बदले आया चपरासी। जॉन ने लिखा था, मित्रों के आग्रह से उसे शिकार

में सुन्दरवन जाना पड़ रहा है। लौटने में दो-चार दिन की देरी होगी।

चिट्ठी पढ़कर लिजा हताश तो हुई, दुखी नहीं हुई। सोचा, ठीक ही हुआ, दो-चार दिन तो वह रेशमी के प्रभाव से दूर रहेगा।

लेकिन दो ही एक दिन में असली बात प्रकट हो गई। दफ्तर के मुंशी अरदली का हाव-भाव देखकर उसके मन में कैसा तो संदेह हुआ। संदेह होने से उसने एक पुराने कर्मचारी से जिरह करके असली बात जान ली कि जॉन और रेशमी ने दो रातें दफ्तर में बिताई, तीसरे दिन सवेरे नाव से जाने कहाँ चले गए। किसी को पता नहीं।

लिजा दौड़ी-दौड़ी मेरिडिथ के पास गई।

मेरिडिथ ने कहा, खैर, ग़नीमत है।

सो क्या ?

शादी कर लेता तो उस लड़की को हमें स्वीकार करना ही पड़ता।

और अब ?

अब जब तक जी चाहे, मौज करे। कबूल करने को हम मजबूर नहीं हैं।

तुम उस शैतान को जानते नहीं, शादी हुए बिना वह हरगिज जॉन के हाथ नहीं आएगी।

लिजा की बात पर मेरिडिथ हँसा।

हँस रहे हो ?

स्त्रियों की प्रतिज्ञा बालू का बाँध है। वे जब मुँह से 'ना' कहती हैं, मन में उनके 'हाँ' होता है।

तो तुम मुझे भी इसी कोटि की समझते हो क्या ?

मेरिडिथ हँसा।

क्यों, हँस रहे हो ?

अपनी ही बात याद करके। औरतें जब मुँह से ना कहती हैं, मन में उनके 'हाँ' होता है।

लिजा ने कहा, बड़े बदतमीज हो तुम।

नाराज न हो ! अरे, उसके साथ जॉन को दो चार-दिन रह लेने दो। आस मिट जाएगी तो आप ही लौट आएगा।

लिजा ने हँसकर कहा, तुम्हारा अनुभव मानना चाहिए।

जरूर। अपने भगवान को धन्यवाद दो कि विपत्ति थोड़े मे ही कट गई।

मेरिडिथ लिजा के पास सदा 'तुम्हारा भगवान' कहा करता था।

लिजा हँसकर बोली, मेरे भगवान तुम्हारे मुँह से अपना नाम सुनकर कृतार्थ हुए।

रेशमी और जॉन के निकल भागने से लिजा ने उसे अपनी हार समझी। फिर भी मेरिडिथ से यह सुनकर जी कुछ हलका हुआ कि नशा, कुछ ही दिनों में उतर जाएगा। खैर, वही हो···उतर जाए नशा भगवान — लिजा ने प्रार्थना की।

उस समय वह यह नहीं सोच पाई थी कि वे लोग व्याह करने के लिए ही भागे हैं।

मेरिडिथ ने उससे यह भी कह दिया था कि जॉन लौटे तो तुम बक-झक मत करना। कुछ ऐसा भाव दिखाना, गोया कुछ हुआ ही नहीं। कम से कम रेशमी की बात तो हरगिज मत उठाना। लिजा मान गई थी कि ऐसा ही होगा। जॉन को कष्ट नहीं दूँगी मैं।

वह उसी रूप में अपने मन को तैयार करके घर लौटी।

घर लौटकर देखा, बैठके में चिराग टिमटिमा रहा है और जॉन चुप-चाप बैठा है। उसके इतनी जल्दी लौट आने की उसे आशा नहीं थी। जॉन को देखकर सच ही वह खुश हुई।

जॉन, कब आए ?

बस, आ ही रहा हूँ।

सब ठीक तो है ? हाँ, शिकार कैसा रहा ?

शिकार ! जॉन चौंक उठा। उसने खुद ही शिकार में जाने की बात लिख भेजी थी, इसे वह कतई भूल गया था। उसने सोचा, लिजा

को रेशमी के भागने की बात हो न हो मालूम हो गई है। इसीलिए वह व्यंग कर रही है।

नाराज होकर जॉन ने तमक कर कहा, शिकार! इसमें शिकार की बात कहाँ से आई?

उसे अब भी पहली बात नहीं याद आई।

लिजा अवाक् हो गई। रेशमी की चर्चा न करने की नीयत से ही उसने शिकार की बात उठाई थी। उलटा ही नतीजा निकला। फिर भी वह शान से बोली, क्यों, तुम शिकार में नही गए?

जॉन ने कहा, बड़ा घिनौना है तुम्हारा मजाक, लिजा।

घिनौना मजाक! अब लिजा भी रंज हो गई। व्यंग का तीर मारते हुए बोली, शिकार हाथ से निकल गया, क्यों!

लिजा, जितना बड़ा मुंह नही, उतनी बड़ी बात!

और शिकार उससे भी बड़ा।

लिजा, नाहक ही अपमान मत करो।

अपमान मैं कर रही हूँ या तुम?

किसे?

मुझे ही नहीं, अपने माँ-बाप को, पूरे गोरे समाज को।

जॉन ने अचरज से पूछा, कैसे?

यही अगर समझ सकते तो ऐसा आचरण ही क्यों करते?

बातों का धर्म है, वह अपने ही ताप से उत्तप्त होकर सीमा से बाहर चली जाती है।

लिजा कहती गई, तुम्हें मान-अपमान का ख्याल होता तो एक वेश्या नेटिव छोकरी को लेकर भागते नहीं।

सावधान लिजा, वह मेरी वाग्दत्ता वधू है। अपमान मत करो!

हजार बार करूँगी — हजो! वेश्या!!

जॉन कुर्सी से उठ खड़ा हुआ! बोला, अगर अपने ही घर में मुझे ऐसा अपमानित होना है तो मै यह घर छोड़कर चला जाता हूँ।

जाओ। देखो जाकर, तुम्हारी वाग्दत्ता वधू अब तक दूसरे बड़े शिकारी की अंकशायिनी हो चुकी है।

निर्वाक् जॉन दरवाजा खोलकर चला गया।

गुस्से के झोंक शांत न होने से जाते हुए जॉन को सुनाकर लिजा रेशमी के माता-पिता और समाज को जो-जो सुनाने लगी; उनमें से बहुत तो शेक्सपियर के भाषा-ज्ञान से भी परे थी।

रात को अकेली लेटी-लेटी लिजा सोचने लगी, किस सूचना का यह कैसा उपसंहार हो गया!

अपने इस अबोध भाई के लिए लिजा की दुश्चिन्ता का अन्त नहीं था। दोनों की उम्र में बहुत ज्यादा का अन्तर नहीं था। दोनों पीठ पर के भाई-बहन। बचपन में झगड़ा और मार-पीट की थी, जैसा कि आगे-पीछे के भाई-बहन करते हैं। लेकिन किशोरावस्था में माँ के चल बसने से लिजा रातों रात जॉन की अभिभाविका बन बैठी। तभी से उसे दुश्चिन्ता होनी लगी। उसके बाद बाप के मर जाने पर जिम्मेदारी जब और बढ़ गई — तब यह अभावित घटना सामने आई। जॉन को स्नेह से अपनाने के लिए ही वह आई थी, लेकिन उलटा हुआ। लिजा लेटी-लेटी सोचने लगी, ऐसा होता क्यों है? मुँह और मन के आचरण में ऐसा हेर-फेर क्यों? उसने संकल्प किया कि मैं जाकर जॉन से क्षमा माँग लूँगी और उसे वापस बुला लाऊँगी। वह जानती कि जॉन ऑफिस के सिवाय और कहीं नहीं जाएगा।

जॉन घर से ऑफिस ही गया सीधे। उसके पिता के जमाने का बूढ़ा मुंशी कादिर अली वहीं रहता था। उसने जॉन बाबा कहकर उसका स्वागत किया। एक आदमी का स्नेह-स्पर्श पाकर अभिमान की भाफ जॉन की आँखों से आँसू होकर वह निकलने को आई। इसी स्नेह-स्पर्श की आशा से वह लिजा के पास गया था।

कादिर अली ने लोगों से सारी घटना सुनी थी। जॉन को दिलासा देते हुए उसने कहा, फिक्र न करो, जैसे भी हो, मैं रेशमी बीबी को ढूंढ़ निका-लूंगा। उसे अगर जिन्न भी उठा ले गया होगा, तो भी पकड़ लाऊँगा

तुम्हारे पास।

कादिर अली ने यों ही दिलासा नही दिया, दूसरे ही दिन इसके लिए उसने आदमी भेजा।

बिंबवती

सौरभी! ओ सौरभी! उठो, देर हो गई।

पुकार सुनकर रेशमी जग पड़ी। नई जगह, नया मुखड़ा — एक पल के लिए उसे भ्रम हुआ। समझ नहीं सकी कि कहाँ आई है — सामने यह कौन है। कुछ ही देर में रात की बात याद आ गई। उसके इस अच-चकाने को औरों ने भी गौर किया है, यह सोचकर वह अप्रतिभ हँसी हँसी। बोली, बेला इतनी चढ़ आई, पहले ही क्यों नहीं जगा दिया दीदी?

टुशकी ने कहा, लगभग रात बीत चुकी थी, तब तो तुम सोई। एक बार आई थी जगाने। देखा, तुम बेखबर सो रही हो। सोचा, सो रही है तो सोने दो।

फिर कहा, उठो। मुँह धोकर खा लो। जरूर खूब भूख लगी होगी।

रेशमी ने संक्षेप में कहा — खू — ब।

हाथ-मुँह धोकर वह बगल के कमरे में गई। दूध, चिउड़ा और केले का कटोरा बढ़ाते हुए टुशकी बोली, लो। खा लो।

रेशमी ने कहा — और तुम?

मैं सवेरे कुछ नहीं खाती।

रेशमी को सच ही बड़ी भूख लगी थी। कल दोपहर के बाद से ही खाना नसीब नहीं हुआ। खाते-खाते उसकी दोनों आँखें भर आई। लाख जब्त करने के बावजूद आँसू गाल पर बह आए।

रो क्यों रही हो वहन ? टुशकी ने पूछा ।

रेशमी ने कुछ छिपाने की कोशिश नही की । सरल भाव से कहा, बहुत दिनों से किसी ने इस तरह से नहीं खिलाया, खाने को नहीं कहा ।

इस बात का भी उत्तर सम्भव था भला ! और फिर टुशकी यह समझ गई थी कि इसने बडी छोटी उम्र से ही बहुत दु:ख पाया है । वह चुप रही । लेकिन कुछ कहना भी जरूरी था । बोली, अभी तो तुम खा लो वहन । तुम्हारी सब बातें फिर सुनूँगी ।

इस नए आश्रय मे रेशमी की एक रात और बीत गई । वह और टुशकी एक ही बिस्तर पर साथ सोती । वह समझ नही पा रही थी कि यह गिरस्ती कैसी ? घर मे न तो कोई पुरुष, न कोई आदमी । एक दाई बर्तन-बासन माँज जाया करती । तीसरे पहर दाई और टुशकी में जो बातें हुई उसका कुछ-कुछ भाग रेशमी के कानों पहुँचा ।

यह लडकी कौन है माँ जी ?

दूर के रिश्ते की वहन है मेरी ।

शकल से मुझे भी लगा था । मगर पहले तो कभी देखा नहीं ।

पहली ही बार आई है ।

रहेगी कुछ दिन, क्यो ?

रहेगी नहीं ! कलकत्ता आकर एक ही दो दिन में कौन लौट जाता है । यहाँ इतनी-इतनी चीजे है देखने की ।

हाँ, रहे । लेकिन उमर तो हो गई है, शादी क्यों नहीं हुई ?

हम कुलीनो के यहाँ का यही रवैया है, दुलहा मिलते-मिलते उमर बढ जाती है ।

और ब्याह ही हुआ तो क्या । ब्याह करके अगर स्वामी का घर नहीं कर सकी तो ब्याह करना न करना समान है । तुम्हारा हाल देखकर रुलाई नहीं मानती माँ जी !

प्रसंग बदलकर टुशकी ने कहा, अच्छा हाथ का काम निपटा ले ।

टुशकी की बात से रेशमी ने एक साथ ही कृतज्ञता और करुणा का

अनुभव किया। कृतज्ञता का कारण थी रेशमी की अपनी अवस्था की सहज-बोध्य व्याख्या और करुणा का अनुभव किया उसने टुशकी के लिए — अहा, व्याह के बाद भी बेचारी बाप की गिरस्ती कर रही है — कुलीन दुलहा जाने कहाँ घूमता फिर रहा है — शायद हो कि दस-बीस शादियाँ और कर ली हो। हो सकता है, कभी-कदाच आ जाता होगा, हो सकता है आता ही न हो।

उसे गाँव की मुक्ता दीदी की याद आ गई। उसने व्याह की रात के बाद फिर कभी अपने दुलहे को नहीं देखा। सारी उम्र उसकी मैके में बीत गई। दाँत टूट गए, बाल पक गए — मगर माँग का सिंदूर वैसा ही चौड़ा, उतना ही लाल।

छोटे-छोटे बच्चे मजाक करते तो कहती, [असल में मुझे इस सिंदूर को छोड़कर तो कुछ है नहीं, सो उसे खूब चौड़ा करके लगाती हूँ।

मरने से कुछ दिन पहले उसकी माँग का सिंदूर और भी चौड़ा हो उठा। बच्चों ने कहा, नानी जी, धीरे-धीरे सिंदूर और चौड़ा हो उठा जो।

मुक्ता दीदी ने कहा, भैया, दीए का तेल खत्म होता आ रहा है न, इसलिए बत्ती को उसका देती हूँ। मगर इसी को अंत न समझो। यह सिंदूर चिता में धू-धू जल उठेगा।

रेशमी सोचने लगी, लेकिन यह कैसा! टुशकी दीदी की माँग में सिंदूर क्यों नहीं, कपाल में टीका क्यों नहीं, कलाई मे सुहागिन का चिह्न क्यों नहीं?

सोचती, हो सकता है, पति के मरने का संवाद मिला हो। लेकिन तुरन्त ख्याल आता, वही कैसे हो सकता है। पहनावे मे कोरवाली साड़ी है, मछली खाती है, पान खाती है। वह समझ ही नहीं पाती कि टुशकी सधवा है या विधवा या कुमारी। और फिर तभी उसे लगता, मैं ही क्या हूँ! मुझे इतना सोचने-विचारने की क्या पड़ी है? यह आश्रय नहीं देती तो न जाने क्या गति होती मेरी।

बात दरअसल यह थी कि जमाने से पादरियों के साथ रहते-रहते उसके संस्कार के बहुत-से धागे मन से टूट गए थे। नहीं तो कहा नहीं जा सकता, टुशकी की इस अभिनव गिरस्ती को किस भाव से लेती। लेकिन साफ-साफ कुछ पूछने का साहस भी नहीं होता। परिचय पूछने से ही परिचय देने का भी तो दायित्व आ जाता है। इसलिए वह चुप रह जाती।

रात बगल में सोई रेशमी जब ऐसा सोचती, तो बगल में टुशकी की विचारधारा भी ठीक उसी किनारे बहती होती।

सोचती, यह कौन है? गाँव का नाम-धाम, डाकू का लूट लाना — सब कुछ हो सकता है, लेकिन फिर भी मन को पूरा यकीन नही आता। बार-बार यही जी में आता, कहीं कुछ गुप्त जरूर है। लेकिन खोलकर पूछने की हिम्मत नहीं थी — अपना भी तो पूरा परिचय नहीं दिया।

दो-एक दिन बाद रेशमी ने कहा, टुशकी दीदी! आखिर और कब तक यहाँ रहूँगी?

लेकिन तुम जाओगी भी कहाँ बहन?

अपने गाँव लौट जाऊँ?

जो तुम्हें एक बार गाँव से चुरा लाए, वे दुबारा भी वैसा कर सकते हैं। फिर तुम्हारा गाँव भी तो कुछ पास में नही है।

तो क्या यहीं रह जाऊँगी?

हर्ज क्या है?

सब दिन खाना-कपड़ा दोगी?

सदा कौन किसे खिलाता-पहनाता है? कोई दुलहा ठीक करके ब्याह कर दूँगी।

हँसते-हँसते रेशमी बोली, मतलब कि डकैत के जिम्मे कर देना चाहती हो?

टुशकी हँस पडी। कहा, खैर, नहीं दूँगी डकैत के पाले। कुछ दिन रहो तो सही। संगी मिल जाएगा तो गाँव भेज दूँगी।

इस लड़की के लिए टुशकी वास्तव में उलझन में पड़ गई थी।

सोचती, इस समय कायथ दा होते तो कोई किनारा हो जाता। मगर वह जो श्रीरामपुर गए हैं सो आज भी गए हैं, कल भी। आने का नाम ही नहीं। एक दिन टुशकी ने नाड़ा की खोज की। पता चला, वह राम बसु के लड़के को लेकर श्रीरामपुर चला गया है। लाचार यह सोचकर रह गई, खैर, अभी रहने दो, बाद में जो होगा किया जाएगा।

उधर रेशमी ने सोचा, जॉन के नाम से चिट्ठी लिखकर ऑफिस के पते पर भेज दूं। वह समझती थी, जॉन निश्चय कलकत्ते लौट आया होगा। यह भी समझती थी कि वह जरूर ही उसको तलाश कर रहा होगा। लेकिन चिट्ठी लिखना आसान न था। कागज-कलम कहाँ ? और मिले भी तो चिट्ठी लिखते देख टुशकी को शुबहा होगा और लिख भी लूं तो भेजूंगी किसके मार्फत ? एक बार तो यह सोच लिया कि मैं खुद ही जॉन के ऑफिस में पहुँच जाऊँ। लेकिन टुशकी को क्या बताऊँ ? फिर यह सोचते ही रोंगटे खड़े हो जाते कि आस-पास कहीं चंडी बख्शी का आदमी हो ! सोचती, ऐसे मौके पर कायथ दा मिल गए होते तो सारी दुश्चिंता का भार उनपर सौंपकर निश्चिंत हो जाती। किन्तु कायथ दा कहाँ ? आ भी जाएँ कलकत्ते तो उन्हें ढूंढ़ निकालने का क्या उपाय है ? सो सोचती, जैसा चल रहा है, चलने दो। देखा जाएगा।

तीन-चार बार साक्षात् मौत के मुँह से निकल आने के कारण घटना चक्र की गतिविधि पर उसका विश्वास बढ गया था।

यहाँ का जीवन उसे बुरा नहीं लग रहा था। इतनी अनिश्चयता के बीच भी कैसा तो एक आराम और स्वच्छंदता का अनुभव करती थी। मदनाबाटी का जीवन याद आता, साहब-मुहल्ले का जीवन याद आता। उन जगहों में नित्य नए अनुभव की प्रेरणा थी। मन को उसने चंचल बना रक्खा था, कभी निश्चिंत नहीं होने दिया। उन जगहों में वह झरना थी, यहाँ बन गई है सूना एक पोखरा। अब तक वह प्रत्यंचा-तना धनुष थी, जरा चोट लगते ही शिरा-उपशिरा टंकार उठती — आज घटना के हाथों ने वह डोरी उतार दी है, वह चुपचाप निस्तेज होकर आराम से पड़ी है।

सुबह टुशकी के साथ जाकर वह गंगा नहा आती, दिन भर उसके साथ घर के काम-काज करती।

टुशकी कहती, फिर क्यों आई तुम ?

रेशमी कहती, भला चुप भी बैठा रहा जा सकता है, हाथ-पाँव में जंग लग जाएगा।

नहीं बहन, नाहक तकलीफ मत करो, काम ही कितना है !

इतने थोड़े-से काम में तकलीफ भी क्या ? रेशमी कहती।

नहीं-नहीं। दो दिन के लिए तो आई हो। पीछे कहोगी, दीदी के यहाँ दो दिन को गई थी, साँस लेने का मौका नही मिला।

तब मैं क्या कहूँगी, सुनने थोड़े ही जाओगी ! तो फिर काहे का डर ! और फिर यही किसने कहा कि दो ही दिन के लिए आई हूँ ?

मुँह से होती चलती बात, हाथ से होता चलता काम। टुशकी हरगिज काम नही करने देगी और रेशमी जरूर काम करेगी।

घर के काम-धन्धों मे स्त्रियाँ व्यक्तित्व के विकास का अवसर पाती हैं; इसलिए काम कितना ही श्रमसाध्य क्यों न हो, वे हार नही मानना चाहती।

दोपहर को भोजन के बाद दोनों सिलाई लिए बैठती। टुशकी कहती, इतनी सुन्दर सिलाई तुमने कहाँ सीखी ? यह काम तो देशी हाथ का है नहीं।

टुशकी ने ठीक ही पकड़ा था — विदेशी सुई-शिल्प रेशमी ने मदनाबाटी मे रहते हुए कैरी की पत्नी से सीखा था। मगर यह बात तो वह बता नही सकती थी। कहा, देशी है या विदेशी कौन जाने ! जो जी में आता है, काढ़ देती हूँ।

अपराह्न में दोनों गंगा के घाट पर जाती। कितने लोगों की भीड़। कोई नहाता है, कोई कपड़ा फीचता है, कोई आह्निक करता है तो कोई यों घूमता-फिरता है। नौकाओं की भीड़। कोई भरी हुई तो कोई भरी जा रही है, कोई खाली की जा रही है तो कोई खाली पड़ी है। नावों के

आने-जाने का विराम नहीं। तट और पानी, आदमी और नावों का चिरंतन मेला। कुछ देर के बाद, जब उस पार धुंधला हो आता, आसमान की आभा फीकी पड़ने लगती, दोनों मदनमोहन के मन्दिर मे आरती देखने के लिए चली जातीं।

किसी दिन अगर कारणवश टुशकी नहीं आ पाती, तो वह अकेली ही आ जाती गंगा किनारे।

अकेली जाऊँ दीदी ?

जाओ, जाओ। कोई खतरा नहीं।

खतरा नहीं है, जानती हूँ। फिर भी पूछ लेना चाहिए।

टुशकी कहती, जल्दी लौट आना। दोनो एक साथ मन्दिर जाएँगी। इतने मे मेरा काम भी हो जाएगा।

रात दोनों साथ सोतीं और अपने को बचाकर अपनी-अपनी जीवन-कहानी कहतीं। दोनों ही समझतीं कि वह बहुत कुछ छिपा रही है, लेकिन खोलकर पूछने की हिम्मत नहीं पड़ती। अपने भी तो बहुत कुछ छिपा लेती है।

फिर जाने कब दोनों सो जातीं। ऐसे ही चल रहा था जीवन।

एक दिन अचानक दोनों चौंक उठीं।

तीसरे पहर गंगा किनारे जाने के लिए रेशमी आईने के सामने खड़ी बाल सँवार रही थी। टुशकी के यहाँ एक आदमकद आईना था। उसमें एक दूसरा मुखड़ा प्रतिबिंबित हुआ — दोनों मुखड़ा हूबहू एक ही साँचे मे ढला। दोनों साथ ही चौंकीं और वह चौंकाहट निर्मल काँच पर स्पष्ट हुई — चौंकने का ढंग भी एक। एक क्षण उनमें से किसी से बोलते न बना। अन्त में रेशमी ने कहा, चौंक क्यों उठी टुशकी दीदी ?

तुम भी तो चौंकी सौरभी ?

उसके बाद टुशकी ने कहा, मेरी दाई राधारानी भी तुम्हें देखकर इसी तरह चौंक उठी थी; पूछा था, यह लड़की तुम्हारी कौन होती है माँ जी ? मैंने कहा, बहन है।

वह हँसकर बोली, देखते ही मैं समझ गई, एक ही सा मुँह है।

रेशमी ने कहा, यह बात उसने मुझसे भी कही थी, लेकिन आज से पहले मैं समझ नही सकी थी कि तुमसे मेरा मुंह इतना मिलता है !

उसके बाद बोली, परछाईं से लगा मानो मेरी दीदी ही बगल मे आ-कर खड़ी हो गई।

तुम्हें क्या दीदी थी ?

सुना है थी। मुझे याद नहीं आती उसकी, मेरे होश में आने से पहले ही मर चुकी थी। नानी को मैंने कहते सुना है, हम दोनों की शकल बड़ी मिलती थी। हठात् मुझे लगा, वही अशरीरी आईने पर अपनी परछाईं डाल रही है।

टुशकी क्या तो कहना चाहती, लेकिन क्या कहे, समझ नहीं पा रही थी। रेशमी क्या तो करना चाहती, लेकिन ख्याल नहीं आता। दोनों के ही मन के अतल में स्मृति के अगोचर क्या तो रहस्य दबा पडा है — है जरूर लेकिन याद नहीं आना चाहता। पानी के नीचे अनोखा उपलखंड पड़ा है, मगर जितना ही हाथ क्यों न बढ़ाओ, पहुँच से बाहर रह जाता है। बस जरा और बढ़ा हाथ कि मिला ! न: तो भी पकड़ से बाहर, मगर वह रहा, झलमल कर रहा है।

उस रात दोनों सोकर स्मृति की सुरंग में घुस पड़ीं — दोनो बिंबवती का रहस्य खोजने को मौन रहीं। दोनों ही चुपचाप सोचती रहीं, काश, यह मेरी बहन होती !

पुलिस का परवाना

मोती राय जैसा धनवान था, वैसा ही बुद्धिमान। कभी-कभी ये दोनों

गुण साथ मिलते हैं। रेशमी-हरण के मामले को उसने पीट-पिटाकर मन-मुताबिक बना लिया। उसके लिए औरत दुर्लभ नहीं — रेशमी जैसी एक मामूली स्त्री की कमी वह सहज ही पूरी कर ले सकता था। लेकिन इसलिए नहीं, दूसरे ही कारण से रेशमी का उद्धार जरूरी था। उसका शिकार हाथ से निकल गया है या किसी और ने उसे छीन लिया है — यह उसकी सामाजिक मर्यादा के लिए हानिकर था। इसी बीच उसका पट्टीदार माधव राय ने इस घटना को अपने ढंग से रँगकर लोगों में फैलाना शुरू कर दिया था। उसके लोग कहते फिर रहे थे, अजी अपने आयन घोष पर बड़ी विपदा आन पड़ी, बेचारे की प्रेयसी राधिका को कलियुग का कृष्ण चुरा ले भागा। आयन घोष गले में बाँधकर डूब मरने के लिए डोरी-कलसी ढूँढ़ रहा है।

माधव राय की तरफ के लोग ये बातें फैलाकर ही निश्चिन्त न रहे, उन्होंने घटना की ताल रखने को जुगत किया। एक दिन सवेरे मोती राय के बैठके के सामने डोरी और घड़ा पाया गया। घड़े में कोलतार से लिखा था, 'लो, हम लोग आ गए। चलो, तुम्हें अब गंगा जी ले चलें।'

मोती राय ने श्रीरामपुर भेजा अपना आदमी। वहाँ से पता लगवाया कि वहाँ कैरी, टॉमस, वार्ड, मार्शमैन, फेलिक्स आदि पादरी हैं। साथ में जॉन है, रामराम बसु है।

इस खबर के बाद मोती राय मामले की गोटी बैठाने लगा। कैरी और टामस को उसने असामी बनाना ठीक नहीं समझा। इसलिए कि वे यहाँ बहुत पहले आए हैं, कलकत्ते के गोरे समाज से वे परिचित हैं। उन्हें असामी बनाने में समर्थन नहीं मिलेगा। जॉन का नाम भी इसी कारण से छोड़ दिया गया। राम बसु को भी मोती राय ने छोड़ दिया। देखा, एक तो वह बंगाली है, फिर निहायत मामूली आदमी है; उसने मोती राय के खिलाफ किया है, यह बात कबूल करने में भी शर्म थी। सो असामी बनाया गया वार्ड, मार्शमैन और उनके पालित प्यादों को।

अब असामी के नाम तै कर लिए गए तो घटना बनाने में देर न

लगी। चंडी बख्शी रेशमी और उसकी नानी को लेकर गंगा नहाने आया था। वार्ड और मार्शमैन अपने लठैतों की मदद से रेशमी को छीनकर नाव से ले भागे। गवाहों की क्या कमी। घाट की सारी भीड़ ने देखा। कहने की जरूरत नहीं कि जिन लोगों को गवाह खड़ा किया गया, वे सब के सब मोती राय के आदमी थे।

घटना को ढंग से बनाकर मोती राय का दीवान रतन सरकार अभियोग करनेवाले चंडी बख्शी को लेकर कलकत्ते के पुलिस अधीक्षक स्पीकर साहब की कोठी पर हाजिर हुआ।

रतन सरकार ने साहब से बताया, अभियोगकारी चंडी बख्शी को ही मानना होगा, क्योंकि भगाई जानेवाली लड़की की नानी पर्दानशीं है। सारा हाल बयान करके रतन सरकार ने साहब से मिन्नत की कि साहबों को गिरफ्तार तथा लड़की के उद्धार के लिए फौरन परवाना जारी करने का हुक्म फरमावें।

रतन सरकार ने यह भी कहा, हुजूर, मेरे मालिक मोती राय हिन्दू समाज के प्रधान है — हिन्दुओं के धर्म की रक्षा करना उनका कर्तव्य है। इसीलिए उन्होंने हमें हुजूर के पास भेजा है।

अभियोगकारी के पीछे मोती राय के होने से अभियोग की गुरुता सौ गुनी बढ़ गई। अभियोग करनेवाला कोई ऐसा-वैसा होता और असामी अँगरेज होते तो क्या होता कौन जाने। हो सकता है, नतीजा उलटा होता।

स्पीकर साहब ने कहा, मार्शमैन और वार्ड को तो कंपनी के राज में आने की मनाही कर दी गई है। छूटते ही रतन सरकार ने कहा, आप ही देखें हुजूर, इन पादरियों की हिम्मत कितनी बढ़ गई है।

साहब ने अर्थपूर्ण गर्जन किया, हम्।

रतन सरकार बोला, और वह भी दिन दहाड़े हुजूर!

साहब फिर गरजा — हम्।

भरोसा पाकर रतन सरकार ने कहा, वह भी हुजूर होली मदर गँजेज

मे रिलीजस वेदिंग के वक्त —

साहब ने मुंह का चुरट रखकर कहा, मोती राय जी से जाकर कह दो, मै जल्दी से जल्दी इसका उपाय करता हूँ।

सलाम बजाकर रतन सरकार विदा हुआ। चंडी बख्शी खड़ा-खड़ा मोती राय का प्रभाव देखकर अचम्भे में आ गया था। उसने खूब समझ लिया, साहब, सत्य और घटना-क्रम — सब मोती राय के वश मे है।

उसके पहले दिन रतन सरकार स्योकर साहब को काफी रुपया खिला गया था।

सभी घाट बाँधकर आगे बढ़ना मोती राय जानता था। यह भी जानता था कि अभियोगकारी को भी मुट्ठी मे करके रखना जरूरी है, नहीं तो वे उलट जाएँ तो सब ठप्प।

रहने की जगह की सुविधा कर देने के बहाने मोती राय चण्डी और मोक्षदा को अपने एक मकान मे ले आया। वास्तव में वे नजरबन्द हो गए। आसार अच्छे नहीं है, यह देखकर मृत्युंजय पहले ही खिसक गया था।

उस रोज शाम को रेशमी अकेली ही गंगा के किनारे गई थी। दुशकी काम निबटाने के लिए घर ही रह गई थी। कहा, तुम हो आओ सौरभी, पास ही तो है। डर कैसा!

रेशमी ने कहा, नहीं, डर किस बात का।

तो फिर जाओ। जल्दी ही लौट आना।

किनारे बैठकर रेशमी गंगा में नावों का आना-जाना देख रही थी, जैसा वह रोज देखा करती थी। ऐसे में ढिंढोरा पीटने की आवाज आई। पलटकर उसने देखा। देखा, ढोलवाले के साथ कंपनी के कुछ सिपाही है — पीछे-पीछे भीड़ बटोर गई है। ढोलवाला रह-रहकर ढोल पीटता है और क्या तो ऐलान करता है।

रेशमी फिर गंगा की ओर देखने लगी। लेकिन कान का ध्यान कुछ-कुछ पीछे की ओर भी रहा। हठात् उसे ऐलान में अपना नाम सुनाई पड़ा। उसने कान खड़े कर लिए। अब उसने पूरा ऐलान सुना। सुनकर उसका चेहरा सूख गया। हाथ-पाँव काँपने लगे। लगा, सारे लोग संदेह से उसी को घूर रहे हैं। क्या करें, कुछ ठीक नहीं कर सकी। ढोलवाला कुछ आगे बढ़ा कि वह उठी। शुरू में जरा देर तो वह धीरे-धीरे चली, फिर मानो भागकर ही घर पहुँची। हाँफने लगी।

टुशकी ने पूछा, हाँफ क्यों रही हो बहन ?

एक साँड़ था, पीछे दौड़ रहा था।

मत पूछो, महाराज नवकृष्ण के वृषोत्सर्ग के साँड़ों के मारे कलकत्ते की घाट-बाट पर चलना मुश्किल है।

फिर बोली, मदनमोहन का मन्दिर नहीं चलोगी ? आरती का समय हो गया।

रेशमी ने कहा, मेरा जी ठीक नहीं है। तुम्हीं जाओ।

रात उसने ठीक से खाया नहीं। तंद्रा मे वह ढिंढोरे की आवाज सुनती रही — 'रेशमी नाम की लड़की को जो भी ढूंढ़कर निकालेगा, उसे पाँच सौ सिक्का रुपया इनाम दिया जाएगा।' सपने में वह देखने लगी, उसे बाँधकर ले जाया जा रहा है। आगे-आगे मोती राय है, पीछे-पीछे चंडी बख्शी। सामने चिता जल रही है। आँख खुल गई। रास्ते की हर आहट उसे बड़े कठोर अर्थ से भरी लगने लगी। इस तरह सपना, तंद्रा और जागरण की खींचा-तानी में उसकी रात के पहर कटे। अपने अजानते ही वह एक बार बोल उठी, मदनमोहन, मुझे बचाओ।

दिनों बाद देवता का नाम लेने से उसकी आँखों से आँसू की धारा बह चली। रात बीत गई।

मोती राय का जाल

सुबह अँधेरा रहते-रहते ही टुशकी और रेशमी रोज की भाँति गंगा नहा आई। और दिन कुछ देर घर का काम-काज करके दोनों बाजार जाया करती थीं। आज टुशकी को अकेले ही जाना पड़ा। रेशमी हरगिज न गई। कहा, मेरी तबीयत ठीक नहीं है।

तीसरे पहर दोनों कुछ देर के लिए गंगातट पर जाया करती थीं। तबीयत खराब के बहाने आज रेशमी न गई। इसलिए टुशकी भी न गई। हाँ, अँधेरा हो जाने के बाद मदनमोहन के मन्दिर मे दोनों गई। जाने के बाद भी रेशमी आरती-दर्शन में ध्यान न दे सकी। भीड़ में दुबकी रही। रेशमी की दिन भर की यह सकपकाहट टुशकी से छिपी न रह सकी। घर लौटकर पूछा, सौरभो! बात क्या है? आज दिन भर यों उदास-सी क्यों हो?

रेशमी ने कहा, अभी रहने दो। सोने के बाद बताऊँगी।

रात जब सोने गई तो टुशकी ने पूछा, अब बताओ कि बात क्या है?

रेशमी पुलिस और ढिंढोरा की बात तो पचा गई। क्योंकि उसका जिक्र करने से तो बहुत बात बतानी पड़ेगी। लेकिन अपना सही परिचय वह नहीं बताना चाहती। और टुशकी को अपने डर का हिस्सा दिए बिना भी कैसे चले? सो कुछ हिस्सा बचाकर बोली, दीदी, कल जब मैं गंगा किनारे गई थी, मैंने उन लोगों में से एक को देखा।

टुशकी ने पूछा, किन लोगों मे से?

जो लोग मुझे चुरा लाए थे।

एँ! उसने तुम्हें देख लिया था क्या?

मैं भीड़ में थी। जहाँ तक मेरा ख्याल है, उसने मुझे नहीं देखा। वे लोग आस-पास चक्कर काट रहे है। सोचती हूँ, अब दिन को मैं नहीं

निकला करूँगी।

टुशकी ने कहा, ये लुटेरे तुम्हे यहाँ से नही उठा ले जा सकेंगे।

क्यों ?

क्यों क्या ! यह कंपनी का राज है। पकड़ाई पड़ जाएगा तो गर्दन पर सिर भी रहेगा उनके ?

रेशमी ने मुंह मे तो कहा, खैर, तब तो डर नही है। लेकिन मन से उसके डर जरा भी नही गया। क्योंकि उसने तो ढिंढोरा पिटवाते कंपनी के सिपाही को ही देखा था।

टुशकी ने कहा, तो भी कुछ दिन दिन मे न ही निकलो।

मैने भी यही सोचा है दीदी ! रात रहते ही गंगा नहा आया करूँगी और शाम को अँधेरा होने पर मदनमोहन की आरती देखने जाया करूँगी।

उसके बाद पूछा, अच्छा दीदी, यह मोती राय कौन है ?

चौंककर टुशकी ने पूछा, तुमने मोती राय का नाम कैसे जाना ?

रेशमी ने कहा, पहले उसका परिचय बताओ, फिर कहती हूँ।

मोती राय इस मुहल्ले का बहुत बड़ा जमीदार है। उसके चलते मुहल्ले की बहु-बेटियो का इज्जत बचाकर यहाँ रहना मुश्किल है।

सरल रेशमी ने पूछा, कंपनी के राज मे ऐसा हो सकता है ?

रुपए से क्या नहीं हो सकता बहन ! पुलिस-मजिस्टर सब मोती राय की मुट्ठी में है।

मोती राय का परिचय सुनकर रेशमी की नसों मे खून जम जाने को आया। वह चुप रही।

टुशकी ने पूछा, लेकिन उसके परिचय की एकाएक तुम्हें क्या जरूरत पड़ गई ?

रेशमी ने कहा, लुटेरे जब मुझे चुराकर ला रहे थे, तो मुझे सोई समझकर आपस मे बातें कर रहे थे।

क्या बात कर रहे थे ?

यही कि वे मुझे मोती राय के महल-बाग मे ले जाएँगे।

टुशकी ने संक्षेप में कहा, सर्वनाश !

सर्वनाश तो मोती राय का हुआ। रेशमी ने कहा।

कैसे ?

मैं तो भाग गई।

हाय राम, उनकी तो पुलिस से साँठ-गाँठ है।

रहे साँठ-गाँठ। मैं तो तुम्हारे यहाँ हूँ। पता कैसे चलेगा ?

पता लगाना ही तो पुलिस का काम है।

पुलिस क्या घर के अंदर से पकड़ ले जाएगी ?

नहीं, ये काम मोती राय के लठैत करेंगे।

और पुलिस ?

पुलिस यह देखती रहेगी कि उन्हें कोई रुकावट न डाले।

फिर कम्पनी और नवाब की पुलिस में फर्क क्या रहा ?

यही कि नवाब की पुलिस खुद खींच ले जाती थी, यह पुलिस वैसा नहीं करती।

तो फिर यह कहो कि यह राज कंपनी का नहीं, मोती राय का है।

टुशकी ने कहा, राज सदा उन्हीं का है।

किनका ?

जिनके पास रुपया है।

इसके बाद कुछ कहा नहीं जा सकता। इसलिए प्रसंग बदलकर रेशमी कहने लगी, बहुत चुपके से लेकिन — अच्छा दीदी, कल घाट पर लोग आपस में बात कर रहे थे, कंपनी की पुलिस किसी को खोजने के लिए ढिंढोरा पिटवा रही है।

ऐसा ढिंढोरा तो पिटवाती ही रहती है।

तुमने कुछ नहीं सुना ?

कितना सुनूं, हमें तो ये बातें सह गई हैं।

रेशमी निश्चिन्त हुई। निश्चिन्त हुई कि कम से कम उसका असली नाम टुशकी के कानों नहीं पहुँचा है। लेकिन इससे भी दूना डर उसके मन में

मोती राय का सही परिचय जगाने लगा। और यह सुनकर कि पुलिस से उसकी साँठ-गाँठ है, रेशमी को लगा, पुलिस मोती राय के ही हवाले कर देने के लिए उसकी खोज कर रही है।

टुशकी सो गई थी। रेशमी को भी सो जाने की इच्छा हुई। नींद आने से इस चिंता से फिलहाल तो पिंड छूट जाएगा। मगर नींद आ नहीं रही थी।

टुशकी ने झूठ नहीं कहा था। मोती राय का प्रताप असीम था। पुलिस से साँठ-गाँठ होने से वह प्रताप राजकीय सर्वशक्तिमत्ता पर जा पहुँचा था। पुलिस जिसकी मुट्ठी में हो, नाम से वह जो भी क्यों न हो, वह राजा नही तो और क्या है? लेकिन पुलिस से चूंकि घनिष्ठता थी, इसीलिए मोती राय को यह मालूम था कि पुलिस की दौड़ कहाँ तक है। उसे यह भरोसा नही था कि पुलिस के लोग उस लड़की को खोजकर उसके जिम्मे कर देंगे। फिर भी उसने पुलिस को खबर दी थी, इसकी वजह थी। उसे मालूम था, इस मामले में कुछ गोरे लोग शामिल है। अब बात पुलिस के कानों पहुँच गई है, इससे पादरी लोग सतर्क हो जाएँगे — फिर उस लड़की को वहाँ से निकालने की कोशिश नहीं होगी। सिर्फ इसी भरोसे मोती राय पुलिस की शरण में गया था। वह समझ गया, अब पादरियों के हमले का खतरा नही रहा। उसने बस इतनी ही उम्मीद पुलिस से की थी। वरना पुलिस की निष्क्रियता से उसे मोह होने का कारण नहीं था, वह तो पुलिस के बड़े साहब को अँगूठा दिखाकर जीता है। लड़की को ढूँढ़ निकालने का भार उसने अपने ऊपर लिया।

जो मल्लाह और प्यादे-लठैत रेशमी को उठा लाने गए थे, उन्हें बुलाकर मोती राय ने पूछा, तुम लोगों ने तो उस लड़की को देखा था?

सबने कहा, जी मालिक!

देखने से पहचान लेगा?

क्यों नहीं हुजूर! जरूर पहचान लूंगा।

मोती राय ने हुक्म दिया — तो उसे ढूंढ़ निकालं। जहाँ भी मिले,

२५

पकड़कर सीधे काशीपुर के बाग-महल मे ले जा।

उन्हे आगा-पीछा करते देख कहा, पुलिस की परवा मत कर। वह सब मैने ठीक कर लिया है।

उसके बाद उनके उत्साह की जड़ को सीचते हुए कहा, ढूंढ निकालेगा तो सौ रुपया इनाम मिलेगा।

लंबा सलाम बजाकर वे चल दिए।

सच बात तो यह थी कि अब रेशमी को वे पहचान पाएँगे या नहीं, संदेह है। रात के अँधेरे मे उसे देखा था। लेकिन देखा, बाल की खाल निकालनेवाला विचार करने जाओ तो सौ रुपए का इनाम हाथ से निकल जाएगा। इसलिए यह तय कर लिया कि उस उमर की जो भी लड़की हाथ लग जाएगी, उसी को ले जाकर बगीचे मे पहुँचा देंगे, उसके बाद बख्शी बाबू विचार करेंगे कि वह छोरी रेशमी है या सूती? विशल्य-करणी न मिले तो गंधमादन को उठा ले जाने मे क्या हर्ज है?

चंडी बख्शी को मोती राय ने पहरे मे बगीचे मे रखवाया था। कह रक्खा था, मेरे लोग लड़कियों को पकड़ लाएँगे, तुम शिनाख्त करना कि उनमे से कौन-सी वह है।

चंडी को मानना ही पड़ा। इन्ही कई दिनों में वह खूब समझ गया कि अब वह नजरबन्द है! ना करने से क्या गत होगी, इसके बारे मे उसे गलत धारणा न थी।

मोती राय के गुंडों के उत्पात से टोले की कम उम्रवाली बहू-बेटिय का राह चलना असंभव हो उठा।

ऐसे किए बिना मोती राय के लिए भी चारा न था। उन दिनों कामिनी-कंचन की तौल पर कुलीनता का विचार होता था। महाराज नवकृष्ण बहादुर ने अपनी माँ के श्राद्ध मे नौ लाख रुपया खर्च किया था। अवश्य यह केवल मातृ-भक्ति की प्रेरणा से ही नहीं किया था। यह उन दिनों धन का विज्ञापन था। विज्ञापन का वैसा ही एक उपाय था रखैलों की संख्या और उनकी कद्र। इसमें गोपनीयता कुछ नहीं थी — छुपाव

को खोलकर कसौटी करके धनियो की मर्यादा स्थिर होती थी। मोती राय का कामिनी-कंचन के घोड़े से जुता रथ अचानक रेशमी-हरण की घटना से ठोकर खा गया, मोती राय छिटककर राह पर जा गिरा, वदन पर निंदा का कीचड़ लग गया।

उस रोज दरवाजे पर डोरी और घड़ा रक्खा मिला। मोती राय समझ गया, यह माधव राय के पिछ-लग्गू लोगो की कारस्तानी है। अपने लोगों से उठवाकर उसने उसी समय डोरी-घड़ा को पानी मे फिकवा दिया। लेकिन दुनिया मे आखिर एक ही डोरी, एक ही घड़ा तो नहीं। ये दोनों चीजें तब से रोज उसकी डेवढ़ी के सामने सवेरे रखी मिलने लगी। एक दिन डोरी-घड़ा रखते हुए माधव राय के लोगो को मोती राय के लोगों ने पकड़ लिया। पकड़ लिया तो उनका सिर मुड़वाकर उन्हे भगा दिया। तीसरे पहर माधव राय की तरफ से जुलूस निकला। एक आदमी को मोती राय बनाया गया, उसके गले में डोरी और घड़ा बँधा — बाकी लोग ढोल-मजीरा बजाते हुए उसे गंगा जी ले जा रहे थे। यह जुलूस मोती राय की डेवढ़ी के पास पहुँचा कि इसके लोग लाठी-सोटा लेकर उन लोगों पर टूट पड़े। दोनो दलों के बहुतेरों का सिर फटा। ऐसे उपद्रवो से मुहल्ले की शांति भाग खड़ी हुई, मगर कौन आपत्ति करे? शांति चाहनेवालों पर दोनों तरफ की लाठी तैयार।

उधर बगीचे मे नए सिरे से धुलाई-रँगाई शुरू हो गई। मोती राय की इच्छा थी, रेशमी मिल गई तो बड़ी धूम-धाम से नाच-गान का समारोह होगा, ताकि सब लोग यह समझ लें कि मोती राय की इज्जत फिर से प्रतिष्ठित हुई। परन्तु रेशमी का पता कहाँ!

मोती राय के गुंडे जिस लड़की को भी पकड़ लाते, चंडी बख्शी कहता, उँहूँ, यह तो वह नहीं है।

अन्त तक वे गुंडे चण्डी बख्शी पर बिगड़ उठे। कहा, अजी ओ बख्शी बाबू, इतना विचार किस बात का? अरे, किसी को भी मान लो बाबा। लड़की की भी जात बचे और हम गरीबों को भी इनाम नसीब हो।

चण्डी ने जीभ निकाली, राम कहो ! मुझसे झूठ नहीं कहा जाएगा।

संसार के आठ अचरजों मे से एक यह है कि मौके पर परले सिरे के झूठे के मुँह से भी कोई झूठ बात नही निकलना चाहती।

उन प्यादे-लठैतों ने जाकर मोती से शिकायत की, हुजूर, यह बख्शी बाबू जो है, कुछ सहज आदमी नही है !

क्यों ?

अपनी लड़की की इज्जत बचाने के लिए शिनाख्त ही नही करना चाहते वह, हम तो कोशिशों मे कोई कसर नही रख रहे हैं।

मोती राय गुस्से से चीख उठा — ऐं, उस कम्बख्त की यह हिमाकत ! मेरे बगीचे में उसके यहाँ की लड़की की जात जाएगी। कम्बख्त बख्शी को गिनकर पचीस जूते लगाओ।

जब इस महत् उद्देश के लिए वे लोग बगीचे मे पहुँचे तो देखा, बख्शी जी गायब हो गए हैं। सोचा, चलो ठीक ही हुआ। अब किसी भी लड़की को हलफ उठाकर रेशमी बना देने से चल जाएगा।

इधर रेशमी और टुशकी के दिन तो घर मे बन्द रहकर कट जाते, मगर रात नहीं कटना चाहती। रोज नए उत्पात की खबर आती, लड़की पकड़ने का नित्य नया संवाद नमक-मिर्च लगकर पहुँचता। रेशमी रुआँसी होकर कहती, दीदी ! यह सर्वनाश लोगों का मेरे ही लिए हो रहा है।

टुशकी उसे दिलासा देकर कहती, नहीं बहन, यह सर्वनाश सदा होता ही आया है, देखते-देखते बूढ़ी हो गई।

उस रोज काफी रात बीतने पर किसी असहाय नारी को चीख से दोनों की नींद उचट गई।

रेशमी ने पूछा, यह क्या है दीदी ?

उनींदी-सी टुशकी बोली, और क्या होगा। किसी हतभागन को मोती राय के लोग पकड़कर ले जा रहे हैं !

अबूझ रेशमी ने कहा, जबर्दस्ती ?

और नहीं तो इस तरह रोती क्यों ?

कोई उसकी मदद नहीं करेगा ?

किसकी गर्दन पर दो माथा है बहन ?

असहाय चीख मुहल्ले की नींद तोड़कर सर्वशक्तिमान के दरबार में प्रार्थना पहुँचा देती। पता नहीं सर्वशक्तिमान का आसन किस मौके से डोलता है। वे तो य है।

धीरे-धीरे खोती हुई उस करुणा भरी चीख का अनुसरण करते हुए रेशमी सोचती रहती — हाय, मेरे बदले वह बेचारी बलि होने जा रही है। जाना तो मुझे था !

सोचती, इसका कोई प्रतिकार ही नहीं ? क्या प्रतिकार हो सकता है, सोच नहीं पाती। टुशकी को उसने हिलाया, वह सो गई थी। रेशमी को नींद नहीं आ रही थी। वह जगी ही बैठी रही।

पथ-निर्देश

नाव की चाल इतनी चुप और चिकनी होती है कि चढ़नेवाला जान भी नहीं पाता कि वह खुली या नहीं, या कहाँ तक पहुँची। कभी एकाएक चौंककर देखता है कि किनारा कहाँ छूट गया और साथ ही यह भी देखता है कि दूसरा किनारा किस अभावित रूप से कितना पास आ गया है। रेशमी की ठीक यही दशा हुई। उसका ख्याल था, वह स्थिर और निश्चल है। लेकिन अन्दर ही अन्दर जो परिवर्तन हो रहा था, उसका पता भी था ! एक दिन जब उसकी नजर इधर-उधर गई तो पता चला, उसका एक किनारा तो दूर जा पड़ा है और दूसरा एक किनारा करीब आ

गया है। उसे धुँधला-सा पुराना तीर दीखा, कितने छोटे हो गए हैं वहाँ के लोग-बाग! जॉन, लिजा, रोज एलमर, कैरी दंपति — सब भाफ के पुतले-से हो गए हैं। और दूसरे तट की टुशकी, मदनमोहन — वे सब कितने उज्ज्वल और स्पष्ट हो उठे हैं। चौंककर उसने सोचा, यह कैसे हुआ? लेकिन तब तक नाव की पतवार उसकी मुट्ठी में नहीं रह गई थी — जो धुँधला था सो अब और भी धुँधला, जो छोटा था सो और भी छोटा ही होता चला गया; स्पष्ट जो था सो और भी स्पष्ट, बड़ा जो था सो और भी बड़ा ही होता गया। उसके जीवन में असहाय भाव से दूसरे तट की लीला चलती रही। विमूढ़ की नाईं घटनाचक्र के आगे घुटने टेक देने के सिवाय और कोई उपाय न रहा।

बाहरी दुनिया से सिर्फ दो जगह उसका सम्बन्ध रह गया था — सवेरे अँधेरा रहते ही गंगा नहाना और साँझ को मदनमोहन की आरती। ये दो बातें उसके मन के ऊपर पुण्य के स्पर्श की नाईं सादा रंग फेर देने लगीं — अब तक जो तसवीरें वहाँ धीरे-धीरे उगी थीं, सब ढँक जाने लगीं। जानें कब गायब हो गई मदनाबाटी की जिंदगी। छिपती जा रही है कलकत्ते के साहब मुहल्ले की यादें; लिजा की ईर्ष्या से जलती हुई दो आँखों में से एक शायद अभी भी दीख रही है और अभी तक संपूर्ण नहीं छिप पाई है जॉन की प्रेमाकुल, आर्त, असहाय आँखें; हाँ, उसपर रंग की एक पतली परत पड़ गई है — वह शरत के निर्मल मेघ से ढँके चाँद जैसा मनोहर है अभी भी। लेकिन दूरी में? चाँद तो दूर ही की वस्तु है! अबोध शिशु की नाईं कभी उसे पास सोचा था, दूर का वह चाँद दूर ही है। रंग की परत क्रमशः गाढ़ी होती जा रही है। कुछ देर ही में बिलकुल मिट जाएगा, यह सोचकर मन उसका मसोस उठा। लेकिन निरुपाय मनुष्य घटना के अधीन है।

पहले-पहल गंगा-स्नान में खास कोई विशेषता नहीं पाई उसने। झट-पट कुछ डुबकियाँ लगाकर निकल आती। लेकिन उसका प्रभाव कब जो चुपचाप उनके जीवन पर आ पड़ा, वह जान भी न सकी। नहाने में उसे

धीरे-धीरे ज्यादा समय लगने लगा। पहले नहाकर कपड़ा बदल करके वह टुशकी का इन्तजार किया करती थी। देखती थी, गले तक पानी मे खड़ी हो हाथ बाँधे टुशकी गंगा का स्तव कर रही है। देखती, उतने सवेरे और भी बहुत-से लोग स्तव कर रहे है, पूजा-आह्निक कर रहे हैं; फूल, बेल का पत्ता, दूध गंगा को चढ़ा रहे हैं। उसके बाद से वह भी तब तक गंगा में खड़ी रहने लगी, जब तक कि टुशकी की पूजा न खत्म हो ले। रोज-रोज सुनते-सुनते स्तव उसे याद हो गया था। पानी में खडी-खड़ी मन ही मन उसका पाठ करती; जोर से कहने में शर्म-सी होती। लगता जॉन या कैरी सुन न ले कहीं।

एक दिन नहाकर टुशकी ने कहा, साजी मे फूल कम लग रहा है?

रेशमी ने दोषी की नाईं कहा, मैंने गंगा को चढाया है दीदी।

मन ही मन खुश हो टुशकी ने कहा, अच्छा ही किया है। कल से ज्यादा ले आया करूँगी।

रेशमी की लाजुकता का भाव पूरा मिटा न था। बोली, हूँ, मेरा भी फूल चढाना। मैं मन्तर ही नहीं जानती।

टुशकी ने कहा, गंगा की पूजा में भी मन्तर की जरूरत है! कहावत नहीं सुनी, गंगा जल से ही गंगा पूजा। तुम चाहे जो भी सोचकर दो, गंगा मैया ठीक समझ लेंगी।

दूसरे दिन से दोनों फूल-बेल पत्ता बाँटकर चढाने लगीं।

तब से गंगा में गोता लगाने पर रेशमी की आँखों से आँसू बह आता। जल से जल मिल जाता, कोई देख नही पाता।। ऐसी कितनी ही असहाय अभागिनों की आँखों के पानी से ही तो गंगा इतनी बढ़ी, वरना कितना-सा संबल लेकर वह गोमुखी से चली थी।

उस दिन नहाकर लौटते हुए रेशमी ने कहा, गंगा नहाने से शरीर बड़ा पवित्र लगता है दीदी।

बेशक लगता है बहन! गंगा पापनाशिनी, पतितपावनी जो है।

सब पाप धुल जाता है न? सरला रेशमी ने पूछा।

जरूर।

मेरे पाप भी दूर कर देंगी गंगा ?

अचरज से टुशकी बोली, जरा सुन लो इसकी। अरे, गंगा क्या नहीं कर सकतीं ? और फिर तुमने जिंदगी में पाप ही ऐसा क्या किया है ? सगर राजा के बेटे कपिल मुनि के शाप से जल गए थे, उनका उद्धार गंगा ने किया।

रेशमी को अपनी चिता से भागने की बात याद आई। सोचा, मुझे भी तो जल ही जाना था।

इसके बाद दिन भर वह घर में बन्द पड़ी रहती। टुशकी इधर-उधर जाती-आती। काम-काज के लिए उसको निकले बिना उपाय न था।

रेशमी ने कहा, दीदी, होशियारी से जाना-आना।

क्यों ?

मोती राय के गुंडे हैं।

नहीं-नहीं। मुझे कोई खतरा नहीं। — कहकर वह चली गई।

रेशमी अकेली बैठी रहती।

बीच-बीच में आसमान को चीरनेवाली असहाय कंठ की चीख उसकी स्मृति को फाड़कर गूंज उठती — अरी ओ, तुम लोग उनसे कह देना, मुझे जबर्दस्ती भगा ले जा रहे हैं, वे जिसमें मुझे छीनकर ले आएं।

ऐसे संकट के समय भी सती के मुँह से पति का नाम नहीं निकलता।

रेशमी सोचती, नाम भी मालूम होता तो इस बेचारी की पुकार उनसे कह आती जाकर। उसे लगता, इसकी जिम्मेदारी खास तौर से उसी की है। उसी के लिए लोगों पर यह आफत आई है। लाज और भय से वह इत्ती-सी हो जाती। यदि बिलकुल मिल जा सकती शून्य में तो उस करुण तीखी चीख की चुभती हुई वेदना से मुक्ति पाती। लोगो, मुझे बचाओ !

सोच रही थी कि राधारानी आई।

रेशमी ने पूछा, राधारानी, आज मुहल्ले की क्या खबर है ?

जूठे बर्तन मांजते-मांजते सिर उठाकर वह बोली, मुहल्ले की तो बस

एक ही खबर है।

समझ जाती तो भी न समझने का भान करके पूछती, क्या ?

और क्या, मुहल्ले की बहू-बेटियों की इज्जत बचना मुश्किल है।

क्यों ?

कच्ची उम्र की लड़की देखी नहीं कि पकड़ ले गए मोती राय के बगीचे में।

अचानक ऐसा ?

अचानक नहीं, सदा से यही होता आया है। लेकिन आजकल मानो अती पर है।

जभी तो पूछती हूँ, अचानक बढ़ क्यों गया यह ?

कैसे कहूँ दीदी जी, सुनती हूँ कौन तो एक कलमुँही रेशमी है, उसी की खोज में यह आफत आई है मुहल्ले पर।

उसके बाद बर्तनों को सम्हाल में लाकर बोली, कैसी तो कहावत है न, ठग खोजने में गाँव उजाड़ ! वही।

रेशमी ने एक नजर देख लिया, दुशकी नहीं है। पूछा, रेशमी कौन ?

जोर से माथा झटकाकर राधा बोली, मैं कैसे बताऊँ, कौन है ? उसे मोती राय के लोग शायद पकड़कर ला रहे थे, भाग गई है।

इसके लिए जिसको-तिसको पकड़ ले जाएँगे ?

नहीं ले जाएँगे ? मुँह का कौर छीना गया, बाबू की इज्जत खतरे में है। क्या करे, कहो ?

ताज्जुब से रेशमी ने कहा, तेरी बात से तो लगता है, मानो मोती राय का कोई दोष नहीं।

दोष क्या है उसका ? बड़े लोग ऐसा करते ही हैं।

तब दोष क्या उनका है, जिन्हें पकड़कर ले जा रहे हैं ?

दोष मुँहजली रेशमी का है — कहकर वह झामा से कड़ाही माँजने लगी जोर से।

रेशमी का मुँह सूख गया। तो भी बोली, उसका क्या दोष है ?

सिर उठाए बिना अपना काम करते-करते राधारानी कहती गई, दोष क्यों नहीं ? उसे वह पादरी के हाथ से छीन लाया था, उसका धरम बचाया था।

लेकिन बगीचे में ले जाना तो धरम बन जाता ?

कपाल पर हाथ रखने को अदा करके बोली, हाय मेरा नसीब ! उन लड़कियों का भी धरम है ! कितने घाटों का पानी पिया है, पूछ देखना।

अपने बारे में लोगों की धारणा का आभास मिला रेशमी को।

बर्तनों को कुएँ के पानी में धोते हुए राधारानी ने कहा, मालूम है मुहल्लेवालों ने क्या सोचा है ? कहीं वह मिल गई तो झोंटा पकड़कर लोग उसे मोती राय के बगीचे में रख आएँगे।

क्यों ?

इसलिए कि इसके बिना बहू-बेटियों को बचाने का उपाय है क्या ?

काम खत्म करके जाने से पहले राधारानी ने रेशमी की ओर ताककर कहा, जरा होशियारी से रहना दीदी जी !

रेशमी क्या कहे, कुछ सोच न पाई।

राधारानी ने उसकी व्याख्या की — जरा आईने में अपनी शकल देख लो। इतना रूप तो सहज ही नहीं दीखता कहीं। मोती राय के आदमी की निगाह में पड़ी कि खैर नहीं।

रेशमी का सूखा हुआ चेहरा और भी सूख गया। उसकी अंतरात्मा काँपने लगी। सोचा, गंगा मइया पास ही है — पतितपावनी।

राधारानी चली गई। रेशमी ने दरवाजा बन्द कर लिया।

टुशकी रहती है तो इतनी बातचीत नहीं होती। फुसफुसाकर दो-एक बात पूछ लेती, ऐसा ही जवाब मिलता है।

रात को अचानक आँखें खुल जातीं रेशमी की। लोगो, मुझे बचाओ ! यह पुकार उसकी नींद तोड़ देती। उस दिन की सुनी यह पुकार गीत की टेक की नाई रह-रहकर उसके कानों में बजती रहती। दिन की चैन, रात की नींद दोनों गईं उसकी।

आजकल टुशकी उसे जब-तब पूछा करती, सौरभी ! इतनी उदास क्यों हो ? डर गई हो न ?

रेशमी कहती, न:, डर किस बात का ?

यही तो मै भी कहती हूँ, घर से न निकलो, तो डर कैसा ? और फिर यह जानता ही कौन है कि तुम यहाँ हो ?

रेशमी सोचती, डर क्या सिर्फ बाहर ही है, रास्ते पर ? रास्ते की आवाज जो कानों मे आती है, उसे तो नही रोका जा सकता ।

और भी याद आया उसे, उस अभागिन की चीख जब खो गई, तो मुहल्ले के लोगों का गुजन भी तो नही रोका जा सका । मुहल्ले की शिकायत को वह अभी भी सुन पाती है ! 'किस लंकादाही ने यहाँ आकर यह गत की ।' 'एक बार देख पाएँ तो हरामजादी का झोटा पकड़कर खींचते हुए उसे मोती राय के बगीचे मे रख आए ।' 'अरे, तुम भी जैसे ! देखो जाकर, इस समय वह किसके बगीचे में मौज मार रही है ।' 'भागकर अपना सतीत्व दिखलाया और इधर मुहल्ले का सत्यानाश !'

इन बातों की याद रह-रहकर उसके मन मे गड़ती रहती ; राधारानी भी इसी ढंग से बोला करती । उसे लगता, चारों तरफ से अभियोग को उँगली उसी पर तनी है । कभी-कभी उसे अचरज होता, आख़िर सारा दोष क्या उसी का है ? इस मोती राय को तो कोई दोष नही देता । संसार का विचार भी विचित्र है ।

वह कैसे जाने, कमजोर के कंधे जिम्मेवारी थोपकर दाय-मुक्त हो जाना समाज का नियम है । समाज दुर्बल होता है, व्यक्ति प्रबल ।

सोई टुशकी के चेहरे पर थोडी-सी चाँदनी आ पड़ी थी । कितना सुंदर यह निश्चिंत मुखड़ा । टुकुर-टुकुर देख रही थी रेशमी । फिर जाने कब मन ही मन मदनमोहन को प्रणाम करके सो गई । इस बार नींद आने मे देर न हुई ।

साँझ की सांत्वना उसे मदनमोहन की आरती थी, जैसे सवेरे का गंगा-स्नान ।

शुरू-शुरू वह वक्त काटने के ख्याल से टुशकी के साथ जाया करती थी। धूप-दीप, शंख-घंटा, जनता का भक्ति-गद्गद् भाव कैसा अवास्तव तो लगता था उसे। वह तमाशा देखने की नजर से यह सब देखा करती थी। बचपन मे गाँव में ठाकुर का दर्शन जरूर करती थी, लेकिन उम्र का मोड़ बदलते ही अवस्था पलट गई — ईसाइयों के साथ आ पड़ी, तब की स्मृति दब गई। उसके बाद के कई साल बीते देवताहीन होकर। पादरियों के मुँह से बार-बार 'बुतपरस्ती' सुनते-सुनते मूर्ति पूजा के लिए, क्या कहे, ठीक अभक्ति तो नही, उदासीनता का भाव भर गया था मन में। उसका मन सूना-सा था, देवी-देवता नही रहे और ईसा मसीह भी प्रतिष्ठित न हुए वहाँ, ऐसे समय जीवन मे आ पहुँचा जॉन! जॉन उसके जीवन का पहला पुरुष था। फिर दशा बदली, देवी-देवता पास आ गए जॉन जाने कहाँ चला गया।

पीछे क्यों बिटिया आगे बढ़ जाओ।

उलटकर रेशमी ने देखा, कहनेवाली प्रौढ़ विधवा थी। उसे लगा, वह आगे जाना चाहती है। बोली, आप आगे आ जाएँ। कहकर वह पीछे हटने लगी।

उस महिला ने टोक कर कहा, आगे ही तो जाना चाहती हूँ, जा कहाँ पाती हूँ।

मैं हट जाती हूँ, आप आगे हो जाइए।

वह महिला करुण हँसकर बोली, सामने बढ़ने से ही क्या आगे जाया जाता है?

रेशमी ने पूछा, तो?

उसके लिए भक्ति चाहिए। मेरे मन में भक्ति कहाँ?

भक्ति नही है, तो आती किस लिए है?

कहीं मदनमोहन की दया हो जाए।

इस बात का कोई उत्तर नही था। रेशमी चुप रही।

दूसरे दिन उस महिला पर नजर पड़ी। रेशमी ने पूछा, यहाँ आने ही

से मदनमोहन को दया होती है ?

यह कैसे हो सकता है बिटिया। वेश्यागामी भी तो आते है।

तो क्या मदनमोहन चुन-चुनकर दया करते है ?

उनकी शरण मे आ जाने से वे दया करते है।

रेशमी की बात से उस महिला को कुछ अचंभा हुआ। पूछा, तुम कौन हो बिटिया ?

रेशमी ने संक्षेप में कहा, मैं एक दुखिया हूँ।

तो मदनमोहन तुमपर दया करेंगे।

आपने कैसे जाना ?

दुखियो पर इनका खास ख्याल है ! ये दुखियों के ही देवता है।

रेशमी बोली, मुझे लगता है, आप भी दुखिया है ?

महिला ने कोई जवाब नही दिया, रेशमी ने देखा, उसकी आँखें आँसुओं से भर गई है।

जनता के पीछे बूढ़ी विधवाओं की भीड़। जब तक आरती होती रहती, वे सब जप करती रहतीं। उन्हें देखकर रेशमी सोचती, टूटी नावों का काफिला संसार के अंतिम बन्दरगाह पर आ लगा है। उसके जी मे आया, जिस कारीगर ने इन्हे बनाया था, अब इन्हे तोड़कर लकड़ियाँ फाड़ेगा। चोट पड़ने लगी है। ये दया की भीख मांग रही है। लगा, वह भी शायद कम ही उम्र में अंतिम बन्दरगाह पर पहुँच गई हैं।

धीरे-धीरे वह मदनमोहन के प्रति आकर्षण का अनुभव करने लगी। एक नशा-सा। पहले टुशकी उसे तकाजा किया करती, सौरभी, आरती का समय हो गया, चल। अब वही ताकीद करती है, दीदी, चलोगी नहीं ? आरती शुरू हो गई।

टुशकी कहती, ठहर, हाथ का काम चुका लूं।

रेशमी कहती, आकर कर लेना, चलो। मदनमोहन की मूर्ति में रेशमी पहले कोई माधुर्य नहीं पाती थी — अब मूर्ति मोहक लगती है। पादरियों से मूर्ति-पूजा पर काफी निंदा-मजाक सुना था उसने। उसे ऐसा लगा था

कि मूर्ति-पूजा की निरर्थकता उसने समझ ली। समझे या न समझे, ईसाई बनने को वह तैयार हो गई थी। आज वह बात सोचकर उसे कैसा तो अचरज होता है। उस दिन उसने स्वप्न में भी यह नहीं सोचा था कि किसी पुतले में भी उसे इतना जीवन-रस मिलेगा। उसे लगा, उस रोज की रेशमी और ही कोई थी। जब तक आरती चलती रहती, वह एक-टक मदनमोहन की ओर ताकती रहती; जप-तप नहीं जानती, मन में सिर्फ वह नाम लेती रहती।

वह गौर किया करती, एक बुढ़िया नियम से रोज एक कोने में बैठी रहती। सबसे पहले आती, सबके पीछे जाती। किसी से कुछ बोलती नहीं। चुपचाप आती, चुपचाप चली जाती। एक दिन रेशमी उसके पास गई। पूछा, तुम क्या सोचती रहती हो बुढ़िया माँ?

बुढ़िया ने जीवन में मानो ऐसी बात कभी नहीं सुनी, इस ढंग से उसकी ओर ताकती हुई बोली, तुम किस घर की बेटी हो?

क्या सवाल और क्या जवाब! और समय होता तो रेशमी हँस पड़ती गोकि बात-बात पर हँसने की बीमारी अब नहीं है उसे।

रेशमी बोली, मैं कायस्थ परिवार की हूँ।

बुढ़िया ने संक्षेप में कहा, ओ तो यह कहो।

रेशमी फिर सोचने लगी, किस सवाल का क्या जवाब।

अब की रेशमी ने घुमाकर सवाल किया, मुझे लगता है, मदनमोहन ने तुम पर कृपा की है।

दया किए बिना उपाय है भला!

रेशमी को कौतुक हुआ, बाप रे, यह जुल्म!

जुल्म नहीं! मैंने सब कुछ सौंपा और वे दया न करें, ऐसा भी हो सकता है?

रेशमी ने कहा, सब कुछ सौंपना कोई आसान बात है! तुम्हें घर-गिरस्ती है न?

वही तो कह रही थी। घर-गिरस्ती इन्होंने रहने कहाँ दी?

क्यों ?

हैजे मे एक ही रात घर के सारे चिराग गुल हो गए। मै ठाकुर के कदमो पर आ गिरी। कहा, एक पाँत बाती बुझाई है, एक पाँत जला दो, नही तो रही मै पड़ी यही।

उसके बाद ?

फिर क्या ? ये देवता दुष्टों के सरताज ठहरे, जुलुम किए बिना इन्हें पकड़ना सहज है ? माँ यशोदा को कितना सताया, ओः ! तुमने सुना नहीं ?

अनुभवों की इन छिटपुट बातों को सुनते-सुनते धीरे-धीरे रेशमी के मन में मदनमोहन कैसे तो सत्य हो उठे। इस परिवर्तन के सूत्र का अनुसरण करना उसके वश की बात न थी। उसने सिर्फ इतना ही समझा कि खिलौना आदमी हो गया और आदमी हो गया आत्मीय। मन्दिर से जब वह लौटती, तो उसके मन में मदनमोहन की हँसी की स्मृति उसी तरह जगी रहती, जैसे अँधेरे आसमान के कोने मे तीज की चन्द्रकला। ऐसी मधुर होती है हँसी।

शुरू में तो ऐसा हुआ कि घर का काम-काज करते हुए भी वह हँसी, उन अंगो की भंगिमा, मुरली की बाँकी अदा वह देख पाती और गुनगुन गाने लग जाती — ढल ढल काँचा अंगेर लावनि अवनी बहिया जाय।

बगल के कमरे से टुशकी ने हँसकर कहा, क्यों री सौरभी ! मदनमोहन तो तुम पर हावी हो गए।

रेशमी ने कहा, नहीं दीदी ! बहादुरी है तुम्हारे मदनमोहन की।

सो क्या ?

रेशमी की जबान पर सहसा आ गया था — नहीं तो मेरी जैसी पादरियों के पल्ले पड़ी लड़की के जी मे —

उसने सम्हाल लिया, नहीं तो मेरी जैसी संगदिल लड़की के मन मे —

सौरभी, तुम संगदिल हो और यह तुम मुझे समझाना चाहती हो ?

संगदिल नहीं तो क्या ?

हो सकता है। लेकिन पत्थर में भी तो झरना होता है — फिर कहा, बहन! संपूर्ण मन मदनमोहन को मत देना।

आखिर थोड़ा-सा किसके लिए बचाकर रक्खूं ?

और एक कोई आएगा जो। अवश्य वह भी मदन ही होगा, किन्तु बहन, दिल [-समें साफ हो।

बहुत दिनों के बाद रेशमी को कौतुक का अवसर मिला। बोली, जी हाँ, धोबी के धोए कपड़े जैसा। क्यों ?

क्या बुरा है ?

तो काला दुलहा ही क्या बुरा है ?

टुशकी ने कहा, देवता काला भी ठीक, आदमी लेकिन जरा गोरा चाहता है।

कम से कम तुम चाहती हो दीदी, यह कहो।

चाहती तो हूँ, मिलता कहाँ है ?

रेशमी ने ज्यादा खोद-खाद न की, क्या पता उत्स से कब आँसू बह निकले। इन कई दिनों के अनुभव से उसने यह समझा था कि आँखों के पानी के समुद्र में ऊपर-ऊपर हलकी परत पड़ी है और हम उसी पर निडर विचरण कर रहे है। जरा भी असावधानी हुई कि नीचे का रुका पानी वेग से बाहर वह आता है। दुनिया नए कदम की प्रत्याशी है।

टुशकी का कहना सच ही सही निकला। पहले अनजानते और फिर जानते में ही रेशमी मदनमोहनमय हो गई। जिस प्रेम को उसने जॉन के लिए सहेजकर रख दिया था, घटना के आघात से उस प्रेम की कलसी मदनमोहन के चरणों पर लुढ़क गई।

रेशमी, मेरी बाँसुरी क्यों छिपा रक्खी है, दो।

वाह, मैं तुम्हारी बाँसुरी क्यों छिपाने लगी भला।

चालाकी। उस जनम की आदत इस जनम में भी नहीं भूली।

किस जनम की ? रेशमी ने पूछा।

मदनमोहन ने कहा, उस जनम में राधा थी, इस जनम में रेशमी

हुई हो। मेरे लिए क्या कुछ भी अजाना है?

खैर, दे दूँगी बाँसुरी। पहले अपने कुज को राह दिखाओ।

यह बात! तब बाँसुरी दोगी?

जरूर।

दो। मैं राह बात दूँगा।

उँहूँ! चालाकी नहो चलने की। पहले राह बताओ।

वह देखो, वह रही मेरे कुज की राह।

शोरगुल से एक ही साथ रेशमी और टुशकी की नींद टूट गई। दोनों को गगा के तट पर ढोल के साथ बहुतेरे लोगो का स्वर सुनाई दिया। अपने सपने की बात भूलकर रेशमी ने पूछा, इतनी रात को यह क्या हो रहा है दीदी?

टुशकी ने झरोखे से झाँककर कहा, कोई पुण्यवती स्वर्ग चली।

मर गई, न!

नहीं री। पति की चिता पर जलने जा रही है।

अचरज से रेशमी बोली, सहमरण।

लग तो ऐसा ही रहा है।

चलो, देख आएँ। — दोनो गंगा-तट पर गईं।

गंगा के किनारे सजी हुई चिता पर नए वसन से लिपटी एक युवक की लाश। रोते हुए सगे-सम्बन्धियों के बीच लाल कपड़ा, गले मे माला पहने किशोरी वधू खड़ी थी। इधर-उधर लोगो की भीड। उसी के एक ओर जाकर ये दोनो खड़ी हुई।

रेशमी को अपने उस दिन की याद आई, जिस दिन वह मौत के डर से चिता पर से भाग आई थी। लेकिन आज इस किशोरी के चेहरे पर भय का कोई चिह्न ही उसे नहीं दिखाई दिया। उसने सोचा, चूँकि अपने युवक पति को छोड़कर अपने जीवन को वह बेमानी समझ रही है, इसी लिए इसे कोई डर नही है, मेरे भी स्वामी युवक होते तो शायद मैं भी ऐसी ही निर्भय होती। लेकिन क्षण-भर के परिचित हुए बूढ़े के लिए मैं क्यों

मरने जाती। आखिर मरने की भी तो कोई सार्थकता होनी चाहिए।

किशोरी वधू ने भक्तों को प्रणाम किया और लावा तथा कौड़ी की लूट के साथ वह अडिग-सी चिता पर सवार हुई। शंख बजा। ढोल-ढाक बज उठा जोर से। चिता में आग लगाई गई। आग की लपटों में एक बार उसका झुका हुआ मुखडा नजर आया। रेशमी को उधर ताकने का साहस नही हुआ। वह गंगा की तरफ देखने लगी। पानी में आग का पुल-सा हो गया था।

उसे याद नही, टुशकी कब उसका हाथ पकडकर उसे घर खींच लाई। बिस्तर पर लेटने के बाद उसे सपने की बात याद आई। लगा, मदनमोहन ने सपने मे पथ का वास्तव मे निर्देश दिया। उसने सोचा, यही तो मेरी राह है। उसके बाद उसे मुहल्ले की लड़कियों की बदनसीबी याद आई। तब उसे लगा, मेरे लिए दो ही रास्ते हैं — या तो मोती राय जैसे आदमी का महल-बाग या कि चिता। इनमे से एक चुनना होगा। चिता की आग अगर सदा के लिए बुझ गई हो, तब तो महल-बाग ही एक रास्ता रह गया है। — और ऐसा ही क्या-क्या सोचते हुए वह कब तो सो गई।

जीवन में सुख-सौभाग्य महज एक ही बार आता है। सुख की पुनरावृत्ति नहीं होती। रेशमी उसी असंभव की आशा कर रही थी।

दूसरा दिन उसने चुपचाप काट दिया। शाम को आईने के सामने खड़ी होकर वह चौंक उठी। चिता की लपट ने उसे छू लिया क्या? ऐसा बदरंग और सूखा-सा क्यों है चेहरा?

मदनमोहन के दर्शन को गई तो वह मन में बार-बार यही कहती रही — देवता, ओ मेरे देवता! या तो मुझे शांति दो या राह बता दो। नही तो मैं चरणों पर सिर पटककर मर जाऊँगी। वहीं, उसी बुढिया ने हाथ पकड़कर उसे अपने पास बिठाला। कहा, क्या सोच रही हो बिटिया?

आँसू भरी आँखों से रेशमी असहाय की नाई उसकी ओर ताकती रह

गई, क्या जवाब दे ?

बुढ़िया ने कहा, मैं समझ गई बिटिया, इतनी ही उम्र में तुमने बहुत दुःख पाया है। देवता तुम्हें जरूर शांति देंगे, जरूर देंगे। हाँ, उनको कसकर पकड़ना पड़ेगा लेकिन।

उसके बाद स्नेह की हँसी बिखेरती हुई बोली, यह दुष्टों का सरताज है न ! लेकिन ऐसा दयालु भी नही मिलता।

इस बात के समर्थन मे रेशमी की आँखो से आँसू बहने लगा।

हंसदूत

जॉन के मुंशी कादिर अली ने उसे नाहक ही दिलासा नही दिलाया था। उसने दफ्तर के दरबान-चपरासी और छोकरों को रेशमी की खोज के लिए कह रक्खा था। सभी रेशमी को चीन्हते थे, क्योंकि वह दो-तीन दिन तक दफ्तर मे रह चुकी थी। उन सबको कादिर अली ने यह भी कहा था, पता लगा दोगे तो जॉन साहब इनाम देंगे। इनाम के लोभ से सभी अवकाश के वक्त चारो तरफ छान-बीन करते फिरते थे। आखिर एक दिन गंगाराम नाम के एक छोकरे ने उसे मदनमोहन मंदिर के पास टुशकी के घर में देख लिया। देखते ही लंबा सलाम बजाकर वह रेशमी के सामने खड़ा हो गया।

रेशमी ने कहा, अरे, गंगाराम !

गंगाराम ने कहा, जी हाँ माई जी।

उसने बड़ी विनम्रता और भद्रता के साथ रेशमी से बातें करनी शुरू कीं। कादिर अली से उसने जॉन से उसके संबंध के बारे मे सब सुन रक्खा था।

रेशमी ने पूछा, इधर कहाँ आए थे गंगाराम ?

गंगाराम बोला, और कहाँ, आप ही को ढूंढने। कब से हम सब लोग खोजते फिर रहे हैं।

मुझे खोजने के लिए ?

रेशमी को कैसा तो आश्चर्य-सा लगा। फिर लगा, अभी तो सभी लोग उसकी खोज में हैं। इधर मोती राय, उधर जॉन! सो आश्चर्य में गौरव का भाव भी मिल गया।

कहा, मुझे किसलिए ढूंढ रहे हो ?

आपकी भी बात। आपके लिए साहब बावले हो रहे हैं।

कौन, जॉन साहब ?

और नहीं तो कौन ? गंगाराम ने कहा।

रेशमी के मन में सूखे पत्ते के नीचे फूल खिलना शुरू हो गया। मन के इस उतावलेपन को दबाकर उसने उदासीन भाव में पूछा, साहब का हुक्म क्या है ?

हुक्म है, मिलते ही आपको पालकी से लेकर वहाँ पहुँचाऊँ।

रेशमी ने पूछा, ले आए हो पालकी ?

आपका हुक्म होते ही ले आऊँगा।

रेशमी बोली, अभी तो जा नहीं सकूंगी।

गंगाराम का चेहरा फीका हो गया, शायद इनाम हाथ से गया। फिर भी उसने पूछा, तो कब लाऊँ पालकी ?

उसे रुखसत करने के इरादे से रेशमी ने कहा, यह मैं फिर बताऊँगी।

गंगाराम के अचरज का ठिकाना न रहा। फिर सोचा, दोनों में प्रेम-कलह हुआ है शायद! उसने सुना है, ऐसा होता है। याद आया, हरिराम की माँ को विदा करने के पहले उसने उससे कितनी बार झगड़ा किया, गाली-गलौज करके उसे विदा कर दिया किन्तु अन्त तक बिना उससे ब्याह किए कहाँ रह सका। अपने ही उदाहरण से उसका मन थोड़ा हलका हुआ। समझ गया, इनाम हाथ से नहीं जाएगा। हाँ, यहाँ बात कुछ ज्यादा बढ़ी

है। बड़ों की बड़ी बात।

उसने कहा, तो एक चिट्ठी लिख दीजिए।

नहीं, चिट्ठी भी नहीं लिखूंगी।

गंगाराम जैसे माटी में गड गया। उसकी दयनीयता देखकर रेशमी ने कहा, कल इसी वक्त आना। चिट्ठी लिख रक्खूंगी।

लाचार गंगाराम फिर लम्बा सलाम बजाकर चला गया।

इस समय टुशकी घर पर नहीं रहती, बाजार जाया करती। भाग्य से गंगाराम ऐसे ही वक्त आया था।

बहुत दिन पहले देखे सपने की तरह रेशमी को जॉन की बात याद आ गई। इन कुछ दिनों के व्यवधान से वह स्मृति कितने युग पीछे जा रही। आदमी एक ही समय हजार काल में वास करता है, कोई कुंडली बनाए साँप जैसा इत्ता-सा और कोई साँप-सा इतना बड़ा लम्बा। काल आखिर नाग है न।

गंगाराम के चले जाने के बाद अपने मन की हालत पर विचार करने के लिए रेशमी जाकर अकेले में बैठी। टुशकी अभी तक लौटी नहीं थी। जॉन अभी तक उसे भूला नहीं है, उसके लिए बावला बन गया है, उसे ढूंढने के लिए तमाम आदमी भेजे हैं। उसके इशारा करते ही वह आकर पैरों पर लोट पड़ेगा, यह सोचकर उसे आनन्द-मिश्रित गर्व हुआ। उसे द्रौपदी का भेस बदलकर राजा विराट के यहाँ रहना याद आया। वह मानो द्रौपदी हो, इधर-उधर कीचक की कमी नहीं और फिर उसको बचानेवाला भी है। निरी निरुपाय नहीं है वह, बिलकुल बेबस नहीं। आः कैसी सांत्वना, कैसा आनन्द! जॉन की स्मृति दूर और धुंधली हो गई थी, एक ही झटके में वह करीब आ गई। स्मृति के दूसरे दिगंत में वह देख पाई कि प्रत्यक्ष का किनारा कितनी दूर है। यह टुशकी कौन? कौन है यह मदनमोहन? और यह मोती राय ही कौन? ये सारे लोग कुछ दिन पहले तक कहाँ थे? कैरी और राम बसु ने ही तो उसे निश्चित मृत्यु के मुँह से बचाया है, भरण-पोषण किया है, शिक्षा दी है, नहीं तो आज क्या

गति होती उसकी ? बेचारी रोज एलमर । गर्मी के गुलाब-सी सूख गई । और जॉन ! बालक जैसा असहाय, यौवन से दीप्त, शिशु जैसा पर-निर्भर, प्रेम में करुण । उसकी हर बात, हर भंगिमा स्मृति के रंग से दमककर उसे दिखाई देने लगी । बोलते वक्त उसके दोनों होठों के किनारे गड्ढा-सा पड़ता, नीलाभ सूरज की किरणें चुनकर झकमका उठतीं उसकी आँखें, लाल होंठों पर चुम्बन के जो फूल खिलते उसकी खुशबू और काँटे ने उसे उद्भ्रांत कर दिया । उस काँटे तक ने ।

एक दिन जॉन ने उससे कहा था, तुम मेरे लिए सब कुछ छोड़ने जा रही हो रेशमी ?

रेशमी ने कहा था, है क्या मुझे जो छोडने जा रही हूँ ।

पैतृक धर्म ।

मेरा धर्म तुम हो ।

मैं ! — अचरज से जॉन ने कहा ।

हर आदमी नए सिरे से अपने धर्म को पाता है, मैंने तुम्हे पाया है ।

लेकिन पैतृक धर्म नाम की क्या कोई चीज नहीं ?

रेशमी ने कहा, पैतृक धर्म से स्वधर्म बड़ा है ।

इतनी बातें रेशमी के जानने की थीं नहीं, लेकिन मन में प्रेम की गीता खुल जाने से निरक्षर भी प्रज्ञा लाभ करता है ।

रेशमी ने कहा, धर्म से प्रेम बड़ा है ।

कहा, प्रेम के लिए ही धर्म है । मैंने अगर एक ही उछाल में धर्म को लांघकर प्रेम को पा लिया है, तो यह तो बहुत बड़ा लाभ है ।

चकित होकर जॉन ने कहा था, ऐसे गम्भीर तत्व की बातें तुमने कैसे जानी रेशमी ? तुम्हारे यहाँ के लोगों के लिए दुरूह दार्शनिक तत्व बहुत सहज है ।

रेशमी ने कहा, बात ऐसी नहीं है जॉन, असल में हृदय में प्रेम के प्रवेश करने से सब कुछ सहज हो जाता है । जिसे इसकी अभिज्ञता नहीं प्रयोजन उसी को होता है । जिसे नजर है, वह स्वयं

देखता है, अंधे को दिखाना पड़ता है।

जॉन के दिमाग में इन बातों का जवाब नहीं आया, वह चुप रह गया।

रेशमी बोली, और मेरे लिए तुम जो त्याग करने पर उतारू हो —

टोककर जॉन बोला, मैंने क्या त्याग किया ?

मुझसे ब्याह करने पर तुम्हारे अपने-सगे तुम्हें छोड़ देंगे, शायद हो कि समाज में भी तुम्हे जगह न मिले।

लेकिन उसके बदले में मै क्या पाऊँगा, यह भी सोचा है ?

ऐसा क्या पाओगे ?

जॉन अपना मुँह आगे ले आया। रेशमी ने मतलब नहीं समझा हो, यह नहीं। कौतुक से वह पीछे हट गई।

उस दिन के उस व्यर्थ चुम्बन ने नल के हंसदूत की नाईं दोनों सादे, गरम और कोमल डैनों को समेटकर अपना मृदु-मुलायम गला रेशमी के गले पर रक्खा। रेशमी का सारा बदन झनझना उठा, नशा-सा छा गया, वह वेदनामय आनन्द की नीहारिका से आच्छन्न हो गई। व्यर्थ चुम्बन दुर्भाग्य जैसा ही निदारुण होता है।

उसने तै किया, समय मिलते ही जॉन को चिट्ठी लिखेगी।

मदनमोहन की तसवीर बनाने के लिए उसने टुशकी से कागज-स्याही मँगवा रक्खी थी।

काफी रात गए रेशमी की नींद टूटी। उसने नारी-कंठ की वही करुण पुकार सुनी। सोचा, आह, इसका क्या कभी अंत नहीं होगा ? उस करुण पुकार के खो जाने पर मुहल्ले के घरों से दबी आवाज उठी, जाने कौन मुँहजली मुहल्ले में आई ! जला डाला मुहल्ले को ! नजर आ जाए तो झोटा पकड़कर उसे मोती राय के बगीचे में पहुँचा दें। मुहल्ले में शांति हो !

एकाएक रेशमी के मन मे आया, घर-घर आग लगाकर अब क्या उसे जॉन के पास लौट जाने का अधिकार है ? और फिर उसी समय जो

मे आया, इस कुकर्म की जिम्मेदारी मोती राय की है, वह इसे अपने ऊपर लेकर अपना सुख-सौभाग्य क्यों छोड़े ? जीवन में सुख कितना विरल है, आज अगर उस सुख-सौभाग्य ने जॉन के साथ हाथ बढ़ाया हो तो उसे लौटाना उचित होगा क्या ? मोती राय का ऐसा •व्यवहार कुछ नया तो नही, पहले भी होता आया है, आगे भी होता रहेगा — इसमें उसका क्या कसूर ? रेशमी ने संकल्प किया, न:, अब देर नहीं करने की। कल गंगाराम आएगा तो जॉन को लिख भेजूंगी कि मुझे यहाँ से ले जाने की व्यवस्था करे। इतने में फिर नारी-कंठ की वही चीख। वह कैसी तो दुविधा में पड गई और फिर जाने कब सो गई।

सोई-सोई उसने सपना देखा। देखा कि वह और जॉन पास-पास सोए हैं। खुशी से खिला हुआ है जॉन का मुखड़ा। वह सिर उठाकर उसका मुंह चूमने ही जा रही थी कि देखा, मसहरी में आग लग गई है। एक क्षण ठक-सी रही और जॉन से कहा, जॉन, उठो-उठो, आग। जॉन नहीं उठा, हिला भी नहीं। वह झटपट खाट से नीचे उतरी। हाथ पकड़कर जॉन को खींचा, किन्तु जॉन निश्चल। उसकी आँखों के सामने ही खाट समेत जॉन जल गया। आग किसने लगाई ? घर मे चिराग तो था नही ? कोई बाहर से आया क्या ? ऐं, दरवाजा खुला कैसे ? हठात् दरवाजे पर नजर गई, वहाँ कोई खड़ा था। आगे बढ़कर देखा तो मदनमोहन !

आग क्यों लगी ?

तुमने कितने घरों मे आग लगाई है ?

सुनो-सुनो —

आगे और कुछ भी न कहकर रहस्यमय हँसी हँसते हुए मदनमोहन चले गए।

रेशमी की नींद टूट गई। कैसा बुरा सपना ! फिर लगा, यह सपना है या सपने का इंगित। रेशमी बिस्तर पर उठ बैठी। मदनमोहन पर कैसे तो एक विद्वेष का अनुभव किया उसने। लेकिन देवता तो अदृश्य थे, इसलिए उनके प्रति होने वाला विद्वेष लौटकर अपने ही जी पर चोट कर

गया। अपनी ही आँखों मे खुद वह घृणित लगने लगी। लेकिन क्यों ? दोष क्या है उसका ? चिन्ता का सूत्र उसे बताने लगा, शायद जॉन के पास उसका लौट जाना मदनमोहन को पसन्द नही। सो जॉन को पत्र देकर अपनी इच्छा जताने का संकल्प उसका ढीला हो आया।

सवेरे टुशकी जब बाजार चली गई, तो वह जॉन को खत लिखने बैठी। मुख्तसर चिट्ठी, लिखने मे खास देर नही लगी। लिखा —

जॉन,

तुम मुझे भूल जाओ। इतने दिनों के बाद मैने मदनमोहन को पाया है। अब वही मेरे सुख, शान्ति और स्वामी है। किसी भी दूसरे आदमी से अब मेरा कोई सम्बन्ध सम्भव नहीं। मै प्रार्थना करती हूँ, तुम ब्याह करके सुखी होओ। बहुत-बहुत धन्यवाद।

रेशमी।

इधर लिखना खत्म हुआ और उधर गंगाराम आ पहुँचा। यह सोचकर कि कहीं फिर संकल्प न बदल जाए, रेशमी ने तुरंत उसे चिट्ठी दे दी। जॉन साहब से अब इनाम मिल ही जाएगा, इस खुशी में हँसता हुआ गंगाराम ऑफिस की ओर चल दिया। और रेशमी कमरे में जाकर गले मे अँचरा डाले प्रणाम करने जो गई सो रुलाई से टूट पड़ी।

रेशमी-संवाद

जॉन ने कादिरअली के वचन को वैसा महत्त्व नही दिया था। समझा, यह महज सांत्वना देना है। और सच तो यह है कि वह इसे भूल ही गया

था। इधर कई दिन उसने रात भी दफ्तर में ही काटी, दिन तो विताए ही वहाँ। लिजा उसे घर लौटा ले जाने के लिए दो-तीन बार वहाँ आई, क्षमा माँगी, घर चलने की आरज़ू-मिन्नत की, लेकिन जॉन ने कुछ नहीं सुना।

लिजा ने कहा, तुमने मुझे गलत समझा जॉन।

जॉन ने कहा, भाषा का ज्ञान कम से कम आप लोगों जैसा तो है मेरी, लिहाजा गलत समझने की गुंजाइश कहाँ है?

लिजा बोली, भाषा-ज्ञान की वजह से नहीं, चूँकि तुम्हारा मन वेकल था, इसलिए तुमने गलत समझा।

मन के वेकल होने की बात आई तो वह और वेकल हो उठा। कहा, मन वेकल क्यों होने लगा और यह तुमने समझा ही कैसे?

लिजा समझ गई, ज्यादा तर्क से कलह होगा। इसलिए उसने अपनी भूल मान ली। कहा, मानती हूँ, मुझसे भूल हुई है। अब घर चलो। घर तुम्हारा है।

मेरा!

विक्षुब्ध होकर जॉन बोला, जहाँ मेरा अपमान हो, वह घर मेरा है?

लिजा ने कहा, तुम्हारा अपमान भी हुआ हो, तो घर का क्या दोष है?

अजीब परेशानी है। घर को दोष कौन दे रहा है? घर क्या बात करता है?

अगर मुझसे कसूर हुआ है, तो मैं बार-बार क्षमा माँग ही रही हूँ।

जॉन ने उसकी क्षमा-प्रार्थना पर ध्यान नहीं दिया। कहा, तुमसे अगर कसूर हुआ हो।

निश्वास में सारा जोर 'अगर' शब्द पर जाकर पड़ा। जॉन ने सिगरेट सुलगाई। जलती हुई सिगरेट बहुत-सी समस्याओं को दबा सकती है।

उस दिन बात यहीं तक रही।

और भी दो दिन दोनों में इसी तरह की बातें हुई! लेकिन जॉन का

मन नहीं डिगा।

जॉन का मन सच ही बेकल हो गया था, वरना वह ऐसी कठोर प्रकृति का नहीं था। वह डावाँडोल चित्त का युवक था। डावाँडोल प्रकृति ऐसी ही होती है। जब कठोर होती है तो बेतरह कठोर होती है।

हार मानकर लिजा सलाह के लिए मेरिडिथ के पास गई। मेरिडिथ ने कहा, दो-चार दिन रहने ही दो न, पानी में थोड़े ही है।

पानी में नहीं है तो घर छोड़कर रहेगा?

हर्ज ही क्या है? दफ्तर में सब तरह का आराम है ही।

सो है। लेकिन उसके बाहर रहने से लोग मुझे क्या कहेंगे?

लोग जॉन को जो कह रहे हैं, तुम्हें उससे ज्यादा बुरा नहीं कहेंगे।

लिजा ने पूछा, लोग जॉन के बारे में कहने-सुनने लगे?

न कहें भला? ऐसा मौका मिल गया!

क्या कह रहे हैं, बताओ। मैं कई दिनों से कहीं गई नहीं।

मेरिडिथ ने कहा, तुम कहीं जाती भी तो क्या लोग तुम्हारे सामने कुछ कहते?

तुम्हारे सामने तो कहते हैं। बताओ, क्या कहते हैं?

लोग यही कह रहे हैं कि लिजा और मेरिडिथ ने साजिश करके जॉन को घर से निकाल दिया है।

लिजा चौंक उठी। तुम्हारे साथ साजिश करके? मैं तुम्हारे साथ साजिश क्यों करने लगी?

इसलिए कि मैं तुमसे ब्याह कर रहा हूँ, ऐसे में जॉन को रुखसत कर सकूँ, तो जायदाद हम दोनों की हो जाएगी।

लिजा ने बिगड़कर कहा, ऐसा कहनेवाले नर्क में जाएँ।

जो ब्याह को कहते हैं; उन्हें भी?

लिजा ने कहा, तुमने उन लोगों को बढ़ावा दिया है।

ब्याह के बारे में नहीं।

नहीं तो जायदाद भोगने के बारे में दिया है।

ब्याह के बिना जायदाद भोगने की बात ही नहीं आती।

मजाक छोड़ो मेरिडिथ!

मजाक कौन-सा है?

सभी।

शादी की बात भी? ओ माइ गॉड!

लिजा हँस पड़ी। कहा, गनीमत है कि गॉड शब्द तो मुँह से निकला!

जानतीं नहीं, जरूरत पड़ने पर शैतान भी शास्त्र की दुहाई देता है।

तुम शैतान हो?

वह योग्यता कहाँ! हाँ, उसका चेला बनने की ख्वाहिश रखता हूँ।

लिजा बोली, तुम कह क्या रहे हो मेरिडिथ!

मेरिडिथ ने कहा, ठीक ही कह रहा हूँ। शैतान के चेले तुम्हारे इन धर्मध्वजियों से कहीं अच्छे हैं।

कैसे?

ऐसे कि यह सबको मालूम है, वे झूठ बोलते हैं। लेकिन इन धर्म का ढोंग करनेवालों की तरह कभी सच और कभी झूठ बोलकर लोगों को भटकाया नहीं करते।

खैर, जाने दो इन बातों को। अभी जॉन का क्या करूँ मैं?

कुछ भी मत करो। ऐसी परिस्थिति में यही सबसे अच्छा उपाय है।

तत्काल के लिए लिजा ने मेरिडिथ की बात मान ली। लेकिन दो दिन के बाद फिर जॉन के पास पहुँच गई।

इसका भी कोई नतीजा नहीं निकला।

जॉन ने यह उम्मीद छोड़ दी थी कि रेशमी अब ढूँढ़े मिलेगी। उसे ऐसी धारणा हो गई थी कि रेशमी मर गई या फिर किसी ऐसी जगह जा पहुँची है, जहाँ से उसका लौट आना मुश्किल है। वह समझ गया था कि मैं अब कलकत्ते के गोरे समाज की हँसी का पात्र बन गया हूँ और कृपा का ऐसा पात्र होकर कलकत्ते में रहना मेरे लिए संभव नहीं।

लेकिन कौन-सा उपाय किया जाए? यह सोचते-सोचते उसे एक राह सूझी। आर्थर वेलेस्ली के दखल देने से मैसूर की लड़ाई खत्म जरूर हो गई थी, लेकिन ऐसे आसार दिखाई दे रहे थे कि पेशवा से जल्द ही लड़ाई छिड़ जाएगी। और सचमुच ही लड़ाई छिड़ गई। वह ऐसी कोशिश करने लगा कि नन-कमीशन्ड अफसर के रूप में लड़ाई में जा सके। उसे लगा, युद्ध के दौरान कुछ दिनों इधर-उधर से घूम आने पर यह ग्लानि दूर हो सकती है और कहीं वहीं खेत रहे तो सारी बला ही साफ। उस समय उसके लिए जीवन से मौत ही प्रिय हो रही थी।

उस रोज वह सरकारी दफ्तर से पूछताछ करके लौटा। आशा पूरी होने की आशा दिखाई दी, इससे वह थोड़ा आश्वस्त था कि ऐसे में गंगाराम को लेकर कादिर अली आकर हाजिर हुआ।

क्यों कादिर, क्या खबर है?

यह सवाल जॉन ने यों ही किया, जैसा किया जाता है। उसे कादिर अली को दिलासा याद न थी।

हुजूर, रेशमी बीबी का पता चल गया है।

सुनकर भी जॉन ने जैसे नहीं समझा। पूछा, क्या चल गया है?

जी, रेशमी बीबी का पता।

मूढ़ की नाईं जॉन ने उन शब्दों को दुहराया, रेशमी बीबी का पता।

जी हुजूर!

दो-चार क्षण तो उसे उन शब्दों के अर्थ समझने में लगे, उसके बाद ही वह व्याकुल होकर चिल्ला उठा, कहाँ है वह? ले आए हो? जल्द बताओ, कहाँ है?

कादिर ने विस्तार से उसे खोज का सारा विवरण बताया कि उसने यों ही दिलासा नहीं दी थी। खोज के लिए कलिंगा बाजार, डिंगाभांगा, डिही, भवानीपुर, पटलडांगा, बागबाजार — तमाम जगह अपने आदमी भेजे थे। कहा, मेरे लोगों ने खोज में बेहद तकलीफ उठाई। कई दिनों से उन्हें सोना या खाना नसीब नहीं हुआ है।

जॉन ने बीच ही में उसे रोक दिया, यह सब छोड़ो अभी। य
बताओ कि वह है कहाँ ?

कादिर अली ने फिर शुरू किया। गंगाराम ने देखा, मियाँ कादिर तो उसका सारा किया-कराया हेजम कर जाने को है। शायद हो कि इनाम भी हड़प ले। सो वह बोल उठा, जी बागबाजार में है।

किसने देखा।

कादिर कुछ कहने ही जा रहा था कि गंगाराम कह उठा, जी मैंने।

तो उसे ले क्यों नहीं आए ?

गंगाराम को तुरंत इस बात का जवाब नहीं सूझा।

उसकी मूढ़ता के छोर को पकड़कर कादिर अली ने आरंभ कर दिया, जी, बीबी जी को अब यों ही लाना क्या संभव है ? वह तो डाकुओं के चंगुल मे है। नजरबंद है।

यह बात कादिर ने जॉन से ही सुन रक्खी थी कि रेशमी को लुटेरे जबर्दस्ती छीन ले गए हैं।

डाकुओं के चंगुल मे ? नजरबंद ?

जॉन का लहू उबल पड़ा। मेज की दराज से पिस्तौल निकालकर बोला, मैं अभी जा रहा हूँ।

कादिर ने कहा, जी, हंगामा होगा। डाकू भी तो गोली चलाएँगे —

जॉन गरज उठा, नॉनसेन्स !

कादिर ने कहा, बीबी जी को भी गोली लग सकती है।

जॉन ने पिस्तौल मेज पर रख दी। कहा, तो फिर ?

बोलने को तत्पर गंगाराम को रोकते हुए कादिर ने कहा, जरा चालाकी खेलनी होगी।

कैसी चालाकी ?

यह बीबी जी कल अपने खत मे बताएँगी।

चिट्ठी लिखने भर की बात गंगाराम ने बताई थी, बाकी सारी की सारी बातें कादिर के दिमाग की उपज थी। कादिर को दोष भी नहीं

दिया जा सकता। जब बीबी ने चिट्ठी लिखने की कही है, तो चिट्ठी में भाग निकलने की साजिश के सिवाय और क्या लिखेगी।

जॉन ने सीधे गंगाराम से पूछा, बीबी जी ठीक है ?

गंगाराम बोला, जी, तबीयत तो ठीक है, लेकिन —

आगे क्या कहे, नहीं सूझी ! कादिर ने अधूरी बात पूरी की, लेकिन मन ठीक नही है।

जॉन का चेहरा खिल उठा। उसने गंगाराम से कहा, कल खूब सवेरे जाकर बीबी जी की चिट्ठी ले आना। इनाम मिलेगा।

इनाम को बीच मे ही लोककर कादिर बोल उठा, इसके लिए हुजूर को फिक्र नही करनी होगी। मेरे जिम्मे देने से मै सबको ठीक-ठीक बाँट दूँगा।

जाते-जाते गंगाराम ने सोचा, गजब है। काम कोई करे, इनाम कोई ले !

उन सबके चले जाने के बाद जॉन ने कमरा बंद कर लिया। घुटने टेककर प्रार्थना करने लगा। लेकिन प्रार्थना करे तो क्या कहकर ! वह मेरिडिथ की जात का आदमी था, जिसके लिए गिरजा, भगवान, प्रार्थना, धर्म सब कुछ सुनी हुई किंवदंती-से थे। उसने समझा, प्रार्थना की रीति-नीति उससे नहीं चलने की। उसने बाइबिल के पन्ने उलटाए, और उसे रूथ की कहानी सामने मिल गई।

वह मूढ की भाँति पढने लगा। शब्द मुँह से आगे बढ़ने लगे, अर्थ लँगड़ाते हुए पीछे चलने लगा। उसके मन और मुँह का मेल जाता रहा। सुन्दरी रूथ की शादी विदेश में हुई थी। कुछ ही दिनों मे उसका पति चल बसा। सास ने कहा, देखो, मुझमें तुम्हारे भरण-पोषण की क्षमता नही है। तुम अपने मायके लौट जाओ। रूथ ने कहा, वहाँ अब मेरे लिए जगह कहाँ ? इसके बाद दोनों जने खेत में काम करने लगीं। खेत के मालिक का बेटा रूथ से ब्याह करना चाहने लगा।

पता नहीं, किस अज्ञात नियम से यह पौराणिक कहानी आधुनिक

वास्तविकता से मिल गई। रूप रेशमी हो गई। जॉन मुँह से कथ कहने लगा और मन में सोचने लगा रेशमी। जाने कब मन से वह शब्द होंठों पर आ गया — रेशमी! कान में इस शब्द के पहुँचते ही जॉन सजग हो उठा। बाइबिल रखकर उठ खड़ा हुआ। आईने पर परछाईं पड़ी।

अपनी पोशाक देखकर वह सिहर उठा। इतने दिनों से इसी वेश में वह शहर में घूम-फिर रहा है! कोट-पैंट मैले। कैसा तो अभागा-सा लग रहा था।

वह पोशाक बदलकर आईने के सामने आया। चेहरे पर हँसी। उसे देखकर रेशमी के होंठों पर जो हँसी फूटती थी, उसी हँसी की प्रतिच्छवि। रेशमी की याद आई।

रेशमी कहा करती, तुम्हारी हँसी बड़ी मीठी है जॉन!

तुमसे भी ज्यादा? जॉन पूछता।

बेशक! औरतों से मर्दों की हँसी ज्यादा मीठी होती है।

बिलकुल उलटी बात!

कतई उलटी नहीं। रेशमी कहती, औरतें स्वभावतः मीठी होती हैं, हँसी ज्यादा मीठी कैसे हो सकती है? पुरुष स्वभाव से कठिन होते हैं, लिहाजा उनकी हँसी होती है अप्रत्याशित, और इसीलिए मीठी होती है।

और कोमल स्वभाववाली औरतों का गुस्सा शायद ज्यादा मीठा होता है? जॉन पूछता।

ठीक समझा है। कोमल उँगली पर हीरे की अँगूठी ही मानो।

जॉन के अचरज का ठिकाना नहीं रहता, इतना जानती है रेशमी!

सुबह गंगाराम रेशमी की चिट्ठी लाएगा। उद्वेग से जॉन की लम्बी रात कटना नहीं चाहती। बार-बार घड़ी देखता, यकीन नहीं आता घड़ी पर, लाख हो, घड़ी आखिर आदमी की बनाई हुई है, निर्भूल नहीं। खिड़की से आसमान के तारों को देखता, तारे तो भूल नहीं। कहीं उसके मन को

समर्थन नहीं मिलता। आदमी से लेकर ग्रह-नक्षत्र तक मानो उसके खिलाफ साजिश कर रहे हों। अन्त में खोजकर उसने एक किताब उठा ली। दो पन्नों के बाद कहानी की दीवार में दरार पड़ी, चौड़ी होती हुई उस दीवार में धीरे-धीरे एक करुण-कौतुक से चमकता मुखड़ा दिखाई दिया।

क्या देख रही हो रेशमी ?

देख रही हूँ, आदमी कितना बेवकूफ हो सकता है।

तमाम दिन मुझे बेवकूफ कहकर तंग क्यों करती हो ? ऐसा क्या बेवकूफ हूँ मैं ?

यह कहकर नही बताया जा सकता।

तो फिर छोड़ो, जरूरत नहीं बताने की। और कहने से तुम्हें अगर खुशी होती हो तो कहो, बाधा न दूँगा।

खैर, यह बात फिर भी बुद्धिमान जैसी है। रेशमी ने कहा।

तब तो भूल हो गई फिर बेवकूफ जैसा व्यवहार करें—

यह कहकर रेशमी का हाथ पकड कर खींचा। रेशमी पीछे हटने लगी। कुछ देर दोनों में खींचातानी होती रही। अन्त में रेशमी ने आत्म-समर्पण कर दिया। यह इच्छा अगर कम होती तो बहुत पहले ही पकड़ में आ जाती। बाधा देकर जॉन के मन को उबाल खिलाना चाहती थी वह।

आः ! छोड़ो-छोड़ो !

छूटी तो उसकी शकल वैसी ही हो गई; जैसी आँधी से झकझोरे हुए वसंत के बगीचे की होती है। पेड़ के नीचे बिखरे पलाश और लाल कनेर, कुंज से छूटी माधवी लता जमीन पर लोटती हुई, पत्ती में बँधे फूलों के गुच्छे दुष्ट हवा के हाथों रौंदे हुये, पांडुकपोल चंपा छिन्न-भिन्न।

जॉन सोचने लगा, रेशमी लौट आये तो उसकी दीक्षा अब यहीं कलकत्ते में होगी, लुक-छिपकर और कहीं नहीं। शादी होगी सेंट जॉन गिरजे में, गोरे और देशी समाज की नजरों के सामने। देखें सब लोग। देखता हूँ, कौन रुकावट डालता है और ब्याह होते ही दोनों रिसड़ा जाएँगे, पहले

से हो वारेन हेस्टिंग्स का बगीचा किराए पर लेकर रक्खा जाएगा, हनी-मून के पन्द्रह दिन वहीं बिताये जाएंगे।

जगते हुए ही सपने देखने लगा जॉन। दिन और रात जैसा ही तो स्वप्न और वास्तव मे बँटा हुआ है मनुष्य का जीवन!

आखिर सवेरा हुआ।

बैठके में वह गंगाराम के इन्तजार मे बेसब्री मे चहलकदमी करने लगा, कोई दस बजे गंगाराम आया और हँसते हुये सलाम बजाकर खड़ा हो गया।

बीवी जी ने चिट्ठी दी?

जी हुजूर! गंगाराम ने चिट्ठी बढ़ा दी।

चिट्ठी को जॉन ने रोक लिया और गंगाराम की ओर एक मुहर फेंक दी। तेजी से अपने कमरे में जाकर अन्दर से उसने दरवाजा बन्द कर लिया।

मनुष्य को अगर मन की सारी गति-विधि का पता होता तो दुनिया शायद दुःखों को ऐसी उपत्यका न होती। विश्व की रचना करके विधाता-पुरुष जब आत्मप्रसाद का अनुभव कर रहे थे, जाने किस शैतान ने सब की नजर की ओट मे उसमे मन की एक बूंद डालकर सारी निरर्थक जटिलताओं की सृष्टि कर दी। देखते ही देखते सुख का शिखर दुःख की उपत्यका हो गया!

जॉन को चिट्ठी लिखने के बाद रेशमी सोच रही थी, चलो सब टंटा चुका दिया। अब अपने को मदनमोहन के चरणों में सौंप दिया है।

लेकिन शाम को जब मदनमोहन के मन्दिर में पहुँची तो मन मे खटका-सा लगा। उसने अनुभव किया, और दिनों की तरह तबीयत लग नहीं रही है, बेबस मन पिंजडे की फाँक से रह-रहकर उड़ जाता है।

लेकिन तब तक भी वह मन की उस अवाच्यता के कारण को समझ नही पाई थी। उसे अनमनी-सी देख उस बुढिया ने पीछे से पूछा, आज जी नही लग रहा है बिटिया, क्यों?

रेशमी ने मान लिया। कहा, हां माता जी नही लग रहा है।

यानी मन में अभी तक हिस्सा-बँटवारा है।

रेशमी चौंकी। क्या सच ही हिस्सा-बँटवारा है? किसने हिस्सा लगाया? उस समय कोई कहता भी कि हिस्सा जॉन ने बँटाया है तो उसे हरगिज यकीन नहीं आता।

आरती हो चुकी। टुशकी ने कहा, सौरभी, चलो चलें।

आते समय रास्ते मे टुशकी ने कहा, मर्दों की जात बडी नमकहराम होती है।

एकाएक यह बात कैसे याद आई?

टुशकी ने कहा, आज जब बाजार गई थी तो खेन्ती दीदी से एक कहानी सुनी। तब से तमाम दिन वह बात मेरे मन मे चक्कर काट रही है।

कौन-सी कहानी, कहो न दीदी।

खेन्ती दीदी कल ही अपने मायके से लौटी है। उसी ने सुनाई, सुनकर मेरी तो छाती फटी जा रही है।

खोलकर कहो दीदी।

गोविंद जोआद्दार अपने गाँव का बढता हुआ गृहस्थ है। बहुत दिन पहले एक भटकते हुए लडके ने उसके यहाँ आकर पनाह ली थी। उसने उसे अपने बेटे की तरह पाला-पोसा। वह बड़ा हुआ तो जोआद्दार ने अपनी बेटी से उसका ब्याह कर देने की सोची, अपनी ही जात का था लड़का, कोई बाधा न थी। लडकी ने भी सोच लिया था, जब माँ-बाप चाहते है तो वह उसी से ब्याह करेगी। जब सब कुछ तै-तमाम हो-हवा गया तो वह लड़का भाग गया और जाकर उसने पड़ोस के गाँव की एक लड़की से शादी कर ली। जोआद्दार की

लड़की घृणा से गंगा में डूब मरी।

रेशमी ने कहा, सच दीदी, बड़ा नमकहराम था वह।

सिर्फ वही नहीं बहन, मर्दों की जात ही नमकहराम है। तुम्हारी तकदीर अच्छी है कि ऐसे नमकहराम के पाले नहीं पड़ी।

तब तक दोनो घर पहुँच गई। किस्सा तो खत्म हुआ, लेकिन उसका असर रेशमी के मन मे जागता रहा और तब उसे मन की अवाध्यता का कारण मिल गया, जॉन भी तो कम नमकहराम नही है। क्यो न हो, आखिर मर्द जो ठहरा। साधारण तौर पर मर्द के नाम पर सिर्फ एक ही मर्द उसके मन के रंगमंच पर आकर खड़ा हुआ। उसने जॉन के प्रति क्रोध, घृणा, धिक्कार, दया — एक मिले-जुले भाव का अनुभव किया। रेशमी यदि मनोवैज्ञानिक होती तो समझ जाती कि इन्ही प्रतिकूल भावों के औजार से मन की दीवार मे सेंध काटी जाती है! उसके दरवाजा लगे मन के अन्दर सुरंग की राह जॉन ने प्रवेश किया। उसने सोच रक्खा था कि जॉन से सारा सम्बन्ध तोड़ लिया है। लेकिन अब लगा, अजीब मुसीबत है। मन में हर जगह जॉन ही जॉन है। इसमे कोई शक नही कि यह उसका अनधिकार प्रवेश है, लेकिन जो कमजोर हो, वह आततायी के सामने इस सत्य को घोषित कैसे करे? नींद टूट जाने पर चोर को देखकर कोई जैसे सोया हुआ-सा पड़ा रहकर ही चोर की गतिविधि देखता रहता है, सोचता है देखे अंत तक क्या होता है, मन मे यह भरोसा रखता है कि आखिर सन्दूक की कुन्जी उसे नहीं मिलेगी — उसी तरह असहाय की नाई रेशमी जॉन के पैरों की गति देखने लगी।

नमकहराम! नमकहराम!!

उसके मन के अंतस्थल में रहनेवाले ने कहा, मगर उसका क्या कसूर? नाता तोड़ने का खत तो तुम्हीं ने लिख दिया है उसे।

मगर खत का जवाब तो दे सकता था।

उस खत के जवाब से खुशी होती क्या। उस चिट्ठी का जवाब रुसा के सिवाय और क्या होता?

क्यों, मैने ऐसा रूखा क्या लिखा ?

नहीं-नही, ऐसा रूखा क्या ? मरने से बड़ी गाली नही और वही गाली तो दी है बस ।

तो क्या हुआ, वह भी वही गाली देता ।

आखिर झगड़ा करना सबका स्वभाव थोडे ही होता है ।

जॉन ही क्या कुछ कम झगड़ालू है । बहन से झगड़कर वह घर से चला नहीं गया है ?

किसके लिए झगड़ा किया ? उसने किसके लिए घर छोड़ा ? नमक-हराम कौन है ?

जॉन, जॉन, जॉन !

यह तो गुस्से की बात हुई ।

गुस्सा न करूँ ? वह घुसा क्यो मेरे घर मे ?

हो सकता है वह इसे अपना घर समझता हो ।

अपना घर ! देख नही रहे हो, दरवाजा बन्द है ।

दरवाजा बन्द होने से क्या मालिक लौट जाता है-?

मगर क्या सेंध मारकर दाखिल होगा ?

लाचारी ? और फिर सेंध मारने का औजार उसे दिया क्यों ?

औजार किसे कहते हो ?

वही राग, द्वेष, घृणा । सुरंग खोदने का यही तो औजार है ।

दिया है, अच्छा ही किया है ।

तो जॉन ने भी अन्दर घुसकर अच्छा ही किया है ।

कौतूहल के साथ रेशमी ने यह देखा कि दो होकर उसका मन स्वयं जॉन के बारे मे सवाल-जवाब कर रहा है और वह निरपेक्ष विचारक-सी निर्विकार बैठी कौतुक का अनुभव कर रही है । बड़ा मजा आ रहा था । मन की सूक्ष्म गतिविधि के बारे मे उसका यही पहला अनुभव था । वादी-प्रतिवादी के वकीलो ने जब जरा देर के लिए जिरह बन्द की तो निर-पेक्ष विचारक ने छोटा-सा एक सवाल किया, अच्छा चिट्ठी का जवाब पाने

का वक्त क्या गुजर ही गया ? जॉन को चिट्ठी मिली है, पढ़ेगा, अच्छा-बुरा जो भी हो, उसका जवाब लिखेगा। तब तो भेजेगा।

उसके मन में जॉन का वकील बोल उठा, बिलकुल सही है। फिर रेशमी को चिट्ठी पहुँचाने का भी एक खास समय है। चिट्ठी सवेरे उस समय पहुँचानी होगी, जब टुशकी बाजार गई होगी। जरा भी इधर-उधर हो कि मुसीबत। रेशमी ने उसका समर्थन करके कहा, तो फिर नाहक ही क्यों दोष दे रही हो जॉन को ?

इस पर उसका मन जबरन जॉन के प्रति अनुकूल हो उठा। उसे अफसोस हुआ कि वह अकारण जॉन की निंदा कर रहा है। जॉन के प्रति वह अपने को एहसानमंद मानने लगी कि असमय में जवाब भेजकर जॉन ने उसे आफत में नहीं डाला। और, देखते ही देखते आशा के पूर्वराग ने मन का दिगंत लाल हो उठा।

चर-अचर में मनुष्य का मन एक अजीब आश्चर्यजनक वस्तु है। यही शायद भगवान के अस्तित्व का सबसे बडा सबूत है।

रेशमी ने अपनी कल्पना से देखा, उसकी चिट्ठी से मर्माहत जॉन बेचैन हो रहा है। इस दृश्य ने जाने कैसा तो आनंदित कर दिया उसे, जैसे अपने तीर से घायल हुए शिकार को तड़पते देख शिकारी को आनन्द होता है। यही पीडा क्या इस बात को साबित नहीं करती कि वह जॉन को कितना प्यार करती है ! उसके बाद कल्पना में उसने यह भी देखा कि सारी रात जाग कर जॉन ने लम्बा जवाब लिखा, वह जवाब निहोरा-विनती, अनुराग और खुशामद, वायदों से आदि-अन्त तक भरा था। चिट्ठी लिखकर जॉन ने गंगाराम को देते हुए कहा, जाकर जल्दी दे आओ, बीबी जी इनाम देंगी।

रेशमी सोचने लगी, क्या इनाम देगी गंगाराम को, कुछ भी तो नहीं है उसके पास।

इसी तरह रात कट गई। रात दुख की भी कट जाती है, सुख की भी।

टुशकी वाजार चली गई। वह दरवाजे पर खड़ी इन्तजार करने लगी। गंगाराम के आने में कोई शंका नहीं थी उसके मन में।

दुनिया में अप्रत्याशित का यथासमय आविर्भाव साधारणतया ज्यादा नहीं होता। लेकिन यही हुआ। रास्ते के मोड पर गंगाराम नजर आया।

सारी रात कट गई मगर यह इतना-सा समय नही कटने लगा। वह कई कदम आगे बढी। गंगाराम से पूछा, चिट्ठी कहाँ है ?

गंगाराम ने उसे चिट्ठी दी। चिट्ठी देकर वह लौटा जा रहा था। रेशमी ने कहा ठहर जा।

वह अन्दर गई। कुछ मिठाई ला कर दी। कहा, खाते-खाते जाना और कल सवेरे जरूर आ जाना। हाँ ?

गंगाराम तो अवाक् रह गया। उसने कादिर से पहले ही सुन लिया था कि चिट्ठी में अच्छी बात नही है। इनाम माँगते न बनेगा। लेकिन यहाँ तो अप्रत्याशित अनुकूलता देखी। सोचा, इन बड़ों की बात ही जुदा है। ये कब खुश होंगे कब नाराज, इसे गंगा मैया ही जानती है। वह झटपट लौट चला।

चिट्ठी को छाती से चिपकाए रेशमी बिस्तर पर पडकर हाँफने लगी। आशा के दवे आनन्द के उद्दाम छंद से उसका कलेजा हथौड़ी-सा पिट रहा था।

चिट्ठी को मुट्ठी में दवाकर वह जॉन के कोमल हाथ का अनुभव कर रही थी। उस छोटी-सी चिट्ठी के माध्यम से एक लम्बे अरसे के बाद उसने जॉन का सान्निध्य पाया। माधुर्य, करुणा, प्रेम और प्रत्याशा से उसके मन के किनारे छलक पडे, स्वर्ग की गंगा का प्रवाह वह चला। कभी-कभी चिट्ठी पढने की बेतावी हो आती थी, लेकिन वह उत्सुकता को रोक लेती। क्या होगा पढकर ? जॉन ने चिट्ठी भेजी है, यही क्या पर्याप्त नहीं ? और बड़ी देर के बाद जब उसने चिट्ठी को पढने का निश्चय किया तो बाहर टुशकी के पैरों की आहट सुनाई दी। उसने झट चिट्ठी को अपने जूड़े में छिपा लिया और प्रिय-समागम के अनुभव से रँगा हुआ

चेहरा लिए वह बाहर निकली तो टुशकी ने कहा, आज तुम बड़ी सुन्दर दीख रही हो बहन !

रेशमी ने अस्वीकार नहीं किया। कहा, और पहले क्या मैं देखने में बदसूरत थी ?

नहीं-नहीं, वैसा क्यों, लेकिन आज कुछ खास बात है।

फिर दोनों अपने काम में लग गईं। प्रसंग वहीं दब गया।

पत्र पढ़ना

रेशमी की चिट्ठी लेकर जॉन कमरे में जो दाखिल हुआ, सो साँझ से पहले निकला ही नहीं। उसके यों छिप जाने से दफ्तर के लोगों में आलोचना हुई। किसी-किसी ने तो उद्वेग भी दिखाया। इस पर कादिर अली ने भूली हुई जवानी की हँसी से पकी हुई दाढ़ी को हिलाते हुए कहा, तुम लोग बेशक बेवकूफ हो।

कहा, प्रियतमा की चिट्ठी पाने से ऐसी मस्तानी दशा हो ही जाती है। उदाहरण स्वरूप उसने अपना जिक्र किया ! बताया, जवानी में जब उसे बीवी का खत मिलता था तो उसे छाती से लगाए सारी रात बिता देता था। न तो खाना खाता, न सोता।

गंगाराम अपढ़ था। उसकी बीवी भी। लिहाजा ऐसी घटना उसके अनुभव से परे थी। उसने सोचा, बचपन से पढ़ा-लिखा होता तो पता नहीं जीवन में और कितना रस मिलता। यह सोचकर उसका आश्चर्य चरम सीमा पर पहुँच गया कि बड़े लोगों के जीवन में रस कितना है। लेकिन इस आश्चर्य ने अंतिम चोटी को तब छू लिया जब शाम को जॉन अचानक दरवाजा खोलकर बाहर निकल आया। गंगाराम ने हँसकर स्वागत

किया। हँसना था कि जॉन गरज उठा, अबे उल्लू, हँस क्यों रहा है ?

जॉन ने लात चलाई। लगी नहीं लेकिन।

भागकर गंगाराम ने यह किस्सा कादिर अली से कहा।

कादिर अली ने दाढ़ी पर हाथ फेरकर कहा, अबे, यह तो होना ही है। साहब अभी प्रेम में मस्त हो गया है।

गंगाराम ने सोच लिया, साहब चाहे मस्त हो, चाहे पागल, उनके पास न फटकना ही अक्लमंदी है।

जॉन चिट्ठी लेकर अन्दर गया, एक झटके में उसे खोला और एक ही साँस में पढ़ गया। छोटी और तीखी बात धार चढ़ाई हुई छुरी की तरह कलेजे में घुस गई। वह लेट गया और शाम से पहले निकला ही नहीं।

उसे लगा, चीन्ही-जानी दुनिया भूकंप से टूटकर बिखर गई है। आने-जाने का रास्ता बन्द हो गया है और दबकर भी वह किसी प्रकार जिन्दा है।

जी में आया, यह वही रेशमी है। उसी की है यह चिट्ठी ! तब तो लिजा का अनुमान गलत नहीं है ! लिजा ने बार-बार उसे चेताया था, कहा था। नेटिव औरत कभी अपनी नहीं हो सकती। मौका मिलते ही वह चम्पत हो जाएगी।

जॉन ने कहा, यह कैसे हो सकता है ? शादी हो गई — उस नाते को वह कैसे तोड़ेगी ?

लिजा ने कहा, छिः ! इनसे नीति की उम्मीद ! देखा नहीं है, बीसियों ब्याह करते हैं ये।

जॉन इन दलीलों को अस्वीकार नहीं कर सका, लेकिन बोला, औरों की बात जो हो, रेशमी वैसी नहीं है। वह एक जमाने से पादरियों के साथ है। उसका मन संस्कारों से मुक्त हो गया है।

लिजा ने कहा, जॉन ! पागलपन छोड़ो। हिंदेनों का मन कुत्ते की दुम-सा होता है। छोड़ दो कि टेढ़ी की टेढ़ी। तुम्हारी रेशमी और

जैसा ही है।

लिजा का कहना जॉन को अक्षरशः सत्य लगा। नहीं तो वाग्दत्ता होने के बावजूद जॉन को छोड़कर उस बेहयाई से वह मदनमोहन को कैसे अपना पति कबूल करती! और लिखा कैसा है, अब से यह मदनमोहन ही मेरा आश्रय, शांति और स्वामी है! उसके नीति-ज्ञान ने उसके कानों में कह दिया, वाग्दत्ता का दूसरा पति कैसे हो सकता है, उपपति कहो! उसने सोचा, आज मदनमोहन मर जाए तो बहुत अच्छा हो। रेशमी को उसके साथ चिता में जल मरना होगा। अब की उसे बचाने के लिए वहाँ फेरी नहीं रहेगा। ऐसा ही जाने कितना क्या अनाप-शनाप सोचता रहा वह। उद्भ्रांत प्रेमी का दिमाग कुहासे की दुनिया होता है — वहाँ का हर कुछ अजीबो-गरीब, असंभव और अवास्तव होता है। सब कुछ कार्य-कारण की संगति से दूर।

कई बार चिट्ठी को फाड़ फेंकने की इच्छा हुई। फाड़ते-फाड़ते वह रुक गया। जतन से उसे रख दिया। सोचा, यह एक दस्तावेज ही है। मुझ जैसे अभागों को चेताने के काम आएगा कभी। और तब वह जवाब लिखने बैठा। बहुत बार लिखा और फाड़ा, बहुत बार काट-छाँट की, मन के बहुत सारे बढ़े-चढ़े विद्वेष को घनीभूत रूप देकर, सान-चढ़ी छुरी पर पड़ती जोत की तीखी चौंध देकर आखिर उसने चिट्ठी समाप्त की। लिखा,

'डियर लेडी,

लिजा का ख्याल गलत नहीं। हिंदुओं में नीति-ज्ञान नाम की कोई चीज नहीं है। यदि होती, तो तुम इस तरह से दूसरे को अपना उपपति न बनाती। अपने पिछले पति की चिता पर तुम्हारा जल मरना ही अच्छा था। खैर, अबकी उपपति की चिता पर जल मरने की हिम्मत से वंचित न होना। आशा करता हूँ, इस बार तुम्हारी जैसी घृणित स्त्री को कोई नहीं बचाएगा। क्योंकि तुम एक बाजारू वेश्या हो और तुम्हारा उपपति एक छँटा हुआ आवारा। ईश्वर को इसके लिए अशेष

धन्यवाद है कि तुम जैसी शैतान औरत की माया से मेरी जान बची।

— जॉन स्मिथ।

चिट्ठी लिखने के बाद मन थोड़ा हल्का हुआ। दो घंटे सो लिया। सवेरे उठकर उसने गंगाराम को चिट्ठी दी। कहा, दे आओ। जवाब लाने की जरूरत नहीं।

उस दिन शाम को तबियत की नासाजगी का बहाना करके रेशमी आरती देखने नहीं गई। टुशकी अकेली ही गई। लेकिन रेशमी के शरीर या मन में अस्वस्थता का कोई लक्षण नहीं था। आज का तमाम दिन उसका किसी सुगति संगति-सा कट गया। बीच-बीच में जूड़े को टटोलकर वह देखती रही कि उसमें चिट्ठी है या नहीं। अदेखे फूल की खुशबू से सारा वन जैसे महमहा उठता है, उसका सारा मन आज वैसा ही पूर्ण था। शाम को बाल सँवारने के लिए जब वह आईने के सामने खड़ी हुई तो चौंक उठी, चेहरे पर यह कैसी चमक! चाँद मेघ से ढँक गया है, तो भी लावण्य छलक रहा है। उसी ढँके चाँद से आज उसने एक खास ढंग से साड़ी पहनी, कपाल पर कत्थई टीका लगाया और उसके बाद जब गोधूलि के हल्के अँधेरे ने गंगा के पश्चिमी तट को रसमय कर दिया, शुक्ला तृतीया के चाँद के क्षीण होंठ जब आसमान के छोर पर कौतुक बरसाने लगे तो चिराग जलाकर उसने अपनी गोद पर रखकर चिट्ठी को खोला। काली पंक्तियों की दो आँखें उसकी झुकी हुई दोनों आँखों से मिलीं। चार आँखों का कैसा बहुप्रतीक्षित मिलन!

एक नजर में चिट्ठी को पढ़कर साँप काटे हुए-सी चीख उठी रेशमी। फूल की उस माला में, जिसे अब तक अपने जूड़े में वह जतन से छिपाए हुए थी, साँप था। लेकिन अपनी आँखों पर विश्वास करने को जी नहीं चाहता। फिर-फिर पढ़ा। जोर-जोर से पढ़ा उसे। अब तक जो आँखों से देख रही थी, उसे कानों से सुना। कोई-कोई बात ऐसी होती है, जो मात्र एक इन्द्रिय की गवाही से विश्वास करने योग्य नहीं होती। इसके लिए एक से अधिक गवाहों की आवश्यकता होती है।

'इस तरह से दूसरे को अपना उपपति नहीं बनाया होता।'''' अबकी उपपति की चिता पर जल मरने की हिम्मत से वंचित न होना'''तुम एक बाजारू वेश्या हो'''पंक्तियाँ छुरी की नोक-सी कलेजे में चुभीं। आत्महत्या की चेष्टा करनेवाले को जब झोंक आती है, तब वह जिस प्रकार बार-बार अपने को आघात करके उन्मत्त उल्लास का अनुभव करता है, रेशमी को वे पंक्तियां पढ़कर वैसा ही अनुभव होने लगा। उसने उपपति बनाया है, वह जल मरे, वह बाजारू वेश्या है!

उसकी चिन्ता-शक्ति बिलकुल खो न गई होती, तो वह इन बातों के झूठ-सच का विचार करती और तब शायद समझ सकती कि इसमें गलतफहमी है, लोगों में जो बात फैली है उसका हाथ है। लेकिन विचार करने की शक्ति उसमें न थी। आगे-पीछे का सूत्र बिखर गया था उसका, वह मानो बहुत ऊँची चोटी से अतल गहराई में गिर पड़ी थी — असह्य वेग से नीचे गिरती ही चली जा रही थी। इससे कहीं बेहतर था भूतल पर गिरना और मरना।

उसे पता नहीं, कब तक वह इस प्रकार मूढ़ की नाईं बैठी रही। आपे में आई तो उसे टुशकी की आवाज सुनाई दी। झट उसने चिट्ठी को फिर से जूड़े में छिपा लिया। मानो, परीक्षित की नाईं तक्षक को मस्तक में धारण किया, उसी की नाईं जिससे क्षण भर में मुट्ठी भर भस्म में परिणत हो जाए अस्तित्व उसका—कोई निशानी ही न रह जाए कि रेशमी नाम की भी कोई कभी कहीं थी।

जैसी लकड़ी वैसा लकड़हारा

कलकत्ते के पुलिस सुपरिंटेंडेंट मि० स्पोकर ने एक दिन मोती राय के

दीवान रतन सरकार को बुलवाकर कहा, सरकार, बडी ज्यादती हो रही है, जरा सम्हल कर चलना है।

रतन सरकार ने कहा, हुजूर, हम तो बहुत फूंक-फूंक कर चलते है, मगर बेवकूफ लड़कियाँ, चिल्लाकर आसमान सर पर उठा लेती है।

उनसे आप क्या उम्मीद करते है? उन्हे आप पकड़कर ले जाएँ और वे चुप रहे।

रतन सरकार अप्रतिभ होनेवाला आदमी न था। जमीदार की नायवी करके आदमी यम से भी नही डरता। बोला, उचित तो वही है हुजूर। ख्वाहमख्वाह चीखकर अपनी शर्म की बात का प्रचार करने से क्या लाभ?

स्पोकर ने कहा, सो सही है और फिर किसी की चीख से डरना भी नही चलता। लेकिन बीच में बड़ा आदमी जो आ जुटा है।

दूसरे बड़े आदमी के बीच आ पडने की बात से सरकार चौका··· दूसरा कौन आ जुटा?

माधव राय। — स्पोकर ने कहा।

हुजूर, इस माधव राय पर विश्वास मत करें। यह परले सिरे का झूठा है।

रतन सरकार की शिकायत ऐसी सत्य बातो से भरी थी कि पुलिस सुपरिटेडेट को भी हँसी आ गई। उसने कहा, मैने उसकी बात पर यकीन जरूर नहीं किया। लेकिन मुसीबत क्या हुई है बताऊँ, वह कम्बख्त मेरे पास नही आया, उसने सीधे लाट-कौंसिल के सदस्यो को पकड़ा है। उसने शिकायत की है कि मोती राय के जुल्म से मुहल्ले की औरतो की इज्जत जा रही है, पुलिस कुछ नही करती।

स्पोकर को जोश मे लाने के लिए, सरकार ने कहा, यह तो घोड़े को लाँघकर घास खाना हुआ हुजूर!

सिर्फ घोड़ा ही नहीं सरकार! घुड़सवार को भी लाँघकर। लेकिन उपाय क्या है? अब अपना उत्पात बन्द करो, वरना मुझ पर आफत आएगी।

रतन सरकार ने लम्बा सलाम ठोक कर कहा, यह बात ! लीजिए फौरन हुक्म देता हूँ।

रतन सरकार उठ खड़ा हुआ कि स्पोकर उसके पास जाकर धीमे से बोला, बिलकुल रोक देना नही है। मैं जानता हूँ कि मोती राय के सम्मान को धक्का लगा है — अब उस लडकी को खोजकर सबको जब तक दिखा नही देते, उनका सम्मान फिर से प्रतिष्ठित नही होने का। सो करो, मगर ऐसा करो कि ज्यादा हो-हल्ला न हो।

वैसा ही भरोसा देकर रतन सरकार विदा हुआ।

अब यहाँ बीच की घटना कह देने की जरूरत है। प्रत्यक्ष लड़ाई मे मोती राय को जब हराना संभव न हुआ, तो माधव राय सीधे राधाकांत देव के पास पहुँचा। राधाकात देव उस समय तरुण युवक ही थे। लेकिन युवक होने से क्या हुआ ! शोभाबाजार के राजवंश के ठहरे, अँगरेज सरकार मे उनकी बेरोक पहुँच थी, काफी इज्जत थी।

माधव राय ने कहा, हुजूर, अगर आप ध्यान न देगे तो यह हिंदू-समाज तो रसातल मे चला जाएगा।

राधाकांत देव ने शुरू से अंत तक सब जानना चाहा।

जो हुआ, जो हो सकता है और जो होना असम्भव है — सबको बताकर माधव राय ने उनसे निवेदन किया।

राधाकांत देव बोले, तुम्हारे मुहल्ले में ऐसा पैशाचिक काड हो रहा है, यह तो मैं नही जानता था। खैर, चिंता न करो। मै कौसिल के मेंबरों से कहता हूँ।

राधाकांत देव की नालिश कौसिल के सदस्यो के कानो पहुँची और तब स्पोकर साहब सावधान हुआ। स्पोकर और रतन सरकार संवाद उसी के बाद की घटना है।

रतन सरकार ने सारा कुछ जाकर मोती राय को सुनाया। खेद और विरक्ति सने स्वर मे मोती राय ने कहा, इस कम्बख्त माधव के मारे टिकना मुहाल हो गया। अच्छा, अभी तुम जाओ रतन। मैं जरा सोच

देखूं।

दूसरे दिन मोती राय ने कहा, सुनो, उस कम्बख्त चंडी बख्शी को ढूंढ लाना होगा। ये लोग उस लड़की को नही पहचानते। लिहाजा, जिसको-तिसको इनाम के लोभ से पकड़कर टंटा खड़ा कर रहे है। चंडी को पकड़ लाओ।

चंडी कलकत्ता छोड़कर गया नही था। खोजते-खोजते मिल गया। लोगों ने उसे हुजूर के पास हाजिर किया।

एकांत में ले जाकर मोती राय ने कहा, तुम्हे कोई खतरा नही। तुम नाहक ही भाग गए।

चंडी ने जीभ निकालकर कहा, राम कहिए! मै भागा नही था हुजूर! एक योग था, शव-साधना के लिए श्मशान चला गया था। तीन पुश्तो से हम तांत्रिक है न।

वाह! मै तो ऐसे ही निडर लोगो को चाहता हूँ। मोती राय बोला।

देखो चंडी, तुम्हारे वहाँ की लड़की म्लेच्छो के कब्जे मे पड़ी रहे यह क्या कोई अच्छी बात है!

जी उसी का उपाय निकालने के लिए तो शव-साधना कर रहा था। और उसने मन ही मन कहा; अब साला म्लेच्छ मरेगा!

शव-साधना कर रहे हो, ठीक ही है, मगर सारा भार दैव पर ही छोड़ देने से तो नहीं चलता। कुछ चेष्टा भी करनी पड़ती है।

जी, बेशक। दो पहिए के बिना कहीं गाड़ी चलती है?

क्या खूब कहा बख्शी, गाड़ी चलने के लिए दो पहिए चाहिए और फिर पहिया अगर चाँदी का हो तो गाड़ी कैसी चले।

इसके बाद गंभीर होकर मोती राय ने कहा, खामखा यहाँ बैठे रहकर क्या करोगे, कुछ रुपए कमाओ। पहचान दो उस लड़की को।

जरा देर रुक कर फिर बोला, और यह अगर न करना चाहो तो यह भी याद रक्खो, शव-साधना करना मैं भी जानता हूँ। अपने हाथ से जीते आदमी की गरदन उतार कर शव तैयार करना ही मेरा तरीका है।

दूसरे ही क्षण हँसी से चेहरे का प्रसन्न करके बोला, अरे, उसे खोज दो वख्शी जरा, मौज-मजा रहे। समझ ही सकते हो, कभी तुम्हारी भी तो मेरी जैसी उमर होगी।

मोती राय ने आवाज दी, अरे, कौन है? वख्शी के लिए जरा बढ़िया तम्बाखू भर कर हुक्का-चिलम ले आ।

लेकिन हजूर, वह लडकी अगर यहाँ न हो?

यह भी कोई बात हुई वख्शी? वह यहाँ नही है तो तुम यहाँ किस उम्मीद से वैठे हो?

पल भर मे प्रसंग वदल दिया। कहा, नवाबी अमल की किरच तुमने देखी है वख्शी? उससे एक वार में हाथी की गरदन उतार दी जा सकती है। मेरे यहाँ वैसी किरच कोई आठ हैं! देखोगे?

चंडी वख्शी ने कुछ कहा नहीं, लेकिन उसके हाव-भाव से यह भाव जाहिर हुआ कि इतने दिनो के वाद उसे जोड़ मिला है। जैसी लकड़ी, वैसा लकड़हारा। जहाँ ऐसे दो जने मिलते है, वह जगह संसार-रसिकों का तीरथ है।

चडी ने विनम्रता से कहा, अपने घर की लड़की को मैं पकड़वा दूँ, लोग मुझे कहेगे क्या हुजूर!

वेशक! वेशक!! — कहते हुए ढेरों खुशबूदार धुआँ उगला मोती राय ने। उसके वाद देर तक धुएँ की कुंडली को ताकता रहा, गोया वही इस समस्या का समाधान हो। उसके वाद तकिए के सहारे शरीर को जरा ऊपर उठाकर वोला, मगर पता किसे होगा वख्शी?

और फिर तुरत ही कहा, तो तुमने मान लिया। वहुत अच्छा। अरे कौन है। वख्शी के नहाने-खाने का इंतजाम करो, अव देर हो चुकी है, कहाँ जाओगे अभी। क्या ख्याल है?

उसके वाद गभीरता पर धार चढाकर वोला, नवावी जमाने में एक वड़ा ही अच्छा तरीका था। कसूरवार को कुत्तों से नुचवाया जाता था। अपने यहाँ भी मैंने वह तरीका देखा है पहले। कंपनी के राज में यह

सुन्दर रीति उठ गई है। लेकिन वैसे कुत्ते अभी भी मेरे पास है। देखोगे बख्शी ?

मोती राय के मांसल मुखड़े पर मीठी चमक और बिजली की कौंध, एक ही साथ कैसी सोहती है — चंडी बख्शी हैरान होकर देख रहा था। उसने खूब समझ लिया कि मोती राय की बात न मानने मे कुत्तों के पेट मे चाहे न जाऊँ, लेकिन खून-कतल होते क्या लगता है। वह बोला, जी, इधर की बात से मैं बाहर नहीं हूँ, पर यह बात जाहिर न हो। छोकरी मिली तो मैं दूर से दिखा दूँगा — आपके लोग पकड़ ले आएँगे। इतनी दया मुझ पर करनी होगी।

जरूर ! दिखा देने से ही तुम्हे छुटकारा, मेरे लोग तो है ही।

तो अब इजाजत हो।

इजाजत क्यों ? मेरे घर मे क्या तुम्हारे लिए थोड़ी-सी जगह नहीं ?

मेरे साथ वह बुढिया भी है न !

यह भार मेरा है। तुम यहीं रहोगे। — मोती राय ने चंडी का भार खानसामा पर सौंपा।

चंडी समझ गया, पहले नजरबंद था, अब पूरी कैद।

मोती राय ने रतन सरकार को बुलवाया। कहा, सुन रक्खो, जिन छोकरियो को पकड़ो उन्हे शहर से खीचतान करते हुए मत ले जाया करो। इसी से बात फैलती है। वे चीखती-चिल्लाती हैं। अब से पकड़ते ही सीधे घाट पर ले जाकर नाव पर सवार करो और काशीपुर चल दो। घाट के पास ही बगीचा है। किसी के जानने का खतरा नही।

रतन सरकार ने कहा, यही हुक्म दे दूँगा हुजूर।

हाँ, मकान की सफाई-पोताई हो गई ?

सरकार ने बताया, जी, हो गई।

फिर क्या है ! जलसे का सारा इंतजाम कर रक्खो। वह छोकरी

पकड़ मे आई कि....बात पूरी नही की। जरूरत नही हुई उसकी।

फिर पूछा, आमंत्रण के लिए सूची बना रक्खी है ?

जी।

माधव राय हर्गिज न छूटे। देखता हूँ, उसका मेवर-ससुर क्या कर लेता है।

कहकर मुंह मे हुक्के की नली हटा कर मोती राय हो-हो करके हँस पड़ा। मारे डर के कार्निस पर बैठे सारे कबूतर उड़ भागे।

आमने-सामने

मनुष्य के और सारे सहारे जब चुक जाते है, तो एक ही सहारा रह जाता है, वह है आँसू। आँसू का अंत नही — जानें किस अजाने चिर-हिमानी शिखर मे है उत्स उसके ! रेशमी के दिन का सूरज आँसू से धुँधला होकर उगता और आँसू के कुहासे मे ही डूबता। उसके जीवन के मौन पहर आँसू के प्रवाह मे ही वह जाते। बरसते सावन की पूर्णिमा के चाँद जैसी वह बारिश को ठेलती हुई आगे बढ़ती। अब वह समझ सकी कि दुनिया में रोने के क्षण थोड़े नही होते। गंगा मे डुबकी लगाकर रोती — आँखों का पानी गंगाजल मे मिल जाता। धूएँ के बहाने रोती — भाप से भाप मिल जाती। आईने के सामने खड़ी होकर रोती, छाया-काया मजे में मिल जाती। तकिए मे मुँह गाड़कर रोती — आँसू बिस्तर मे सूख जाते। लेकिन जब वह सपने में रो उठती, तो सोचने लगती हाय भगवान, यह क्या किया ! निरे अभागे के लिए भी तुमने सपने के सुख की व्यवस्था कर रक्खी है — मुझसे तुमने वह भी छीन लिया !

इतना-इतना आँसू तो छिपाया जा नही सकता। दुशकी ने पूछा,

तुम्हे हुआ क्या है बहन ! इतना दुःख किस बात का ? कहो ?

क्या कहे रेशमी ? कहना हो तो पूरी रामायण ही सुनानी पड़े। इच्छा नही होती, लेकिन रोने का कोई कारण तो बताना ही था।

उसने कहा, घर की याद आती है दीदी !

बात असंगत न थी। टुशकी ने कहा, अगर जाना ही चाहती हो, तो बताओ। मै खोज देखती हूँ, कोई साथी-संगी मिल जाए।

रेशमी ने तो सही बात छिपाई थी, इसलिए साथी-संगी के लिए उसने कोई आग्रह नहीं दिखाया।

टुशकी ने कहा, खैर, न सही। मै पता करती हूँ, अगर कोई तुम्हारे गाँव की तरफ जाता हो तो उसके हाथ चिट्ठी भेज देना।

रेशमी ने इस पर भी खास कोई रुझान नही दिखाया। आग लगे जंगल की हिरनी जिधर भी जाती है, उधर ही आग।

हाँ, आत्मसमर्पण किए बिना कोई उपाय नही रहता। टुशकी ने कहा, देखो बहन, उमर मेरी तुमसे ज्यादा है। दुःख एक ऐसी चीज है जो बाँटने से कम होती है और सुख ऐसा कि बाँटने से बढ़ता है।

रेशमी ने कहा, दीदी ! सुख का हिस्सा लेने वाले बहुतेरे मिलते है, दुख कौन बाँटे ?

टुशकी बोली, पगली ! यह दुनिया अजीब जगह है, यहाँ दुख का हिस्सा लेने वाला भी मिल जाता है।

जरा रुककर फिर बोली, भला विधाता ने वैसा आदमी बनाए बिना ही क्या दुःख को बनाया है।

तुम लोगी मेरे दुःख का हिस्सा ? रेशमी ने पूछा।

अगर देना चाहो।

मगर क्यो बाँटोगी पराया दुख ?

चाहो तो मै अपने दुःख का भी हिस्सा तुम्हें दे सकती हूँ।

उसके बाद हँसकर कहा, दुनिया मे दुःख की कमी क्या पड़ी है बहन !

तो एक कहानी सुन लो। — टुशकी ने फिर शुरू किया — उस बार मैं सुन्दरवन गई थी। बहुत दिन पहले की बात है। गाँव का नाम था नौपाड़ा। गाँव और जंगल — कटा-सटा! कहाँ गाँव खत्म हुआ है और कहाँ से शुरू हुआ है जंगल, यह जानने का उपाय नहीं। मैंने सोचा, उपाय नहीं है तो न सही। मेरे लिए तो अच्छा ही हुआ। जंगल देखने ही आई हूँ, देखूँ। घूमती रही खूब। घर की बूढ़ी मालकिन, जिसके यहाँ ठहरी थी, ने मेरा रवैया देखकर कहा, देखो बिटिया, ऐसा न करो। अकेली जहाँ-तहाँ मत जाओ।

क्यों? मैंने पूछा।

यहाँ हर झाड़ी-झुरमुट में बाघ रहता है।

दिन में भी?

दिन में भी। आखिर दिन में बाघ कहाँ जाएँगे?

टुशकी ने लंबी उसाँस भरकर कहा, दुनिया में हर झाड़ी-झुरमुट में दुःख है, जगते में भी, सोते में भी। लोग जब कहते हैं कि सो जाने से दुःख से छुटकारा मिलता है, तो मुझे उस बुढ़िया की बात याद आ जाती है — आखिर दिन में बाघ कहाँ जाएँगे? सो ही जाओ तो दुःख कहाँ जाएं। सोते में वे दुबक कर आते हैं और गरदन पर उछल पड़ते हैं।

हठात् अपने मन को झटके से जगाकर रेशमी ने कहा, मेरी सारी बात सुनोगी दीदी?

टुशकी ने कहा, जरूर!

सुनने के बाद मुझे भगा तो नहीं दोगी घर से?

टुशकी ने हैरान-सी होकर कहा, भगा क्यों दूँगी भला?

हो सकता है, मुझे अपने घर रहने देने के अयोग्य समझो!

टुशकी मन ही मन हँसी। अपने मन में बोली, तुमने इस छोटी उमर में ऐसा कौन-सा पाप किया है, नहीं जानती। लेकिन मेरी सब सुन लो और तुरत यह घर छोड़कर चल न दो तो मेरा नाम नहीं।

टुशकी को चुप देखकर रेशमी ने पूछा, तो भगा दोगी मुझे ?

जरा मजा देख लो ! मामला सुने बिना ही फैसला ?

फैसला क्या होगा, समझ सकती हूँ। मगर फिर भी कहूँगी।

कोई धुक-धुक हो जी में तो रहने भी दो।

न दीदी, अकेले इतना बोझा अब नहीं ढोया जाता।

ठीक तो है। हिस्सा दो उसका। मैं भी अपना कुछ बाँटूंगी। आखिर क्या सोचती हो तुम, दुःख कुछ एकतरफा होता है।

रेशमी ने कहा, तुमने मुझे बहन की तरह, माँ की तरह आश्रय दिया। और मैं तुमसे सब छिपाए बैठी हूँ, बड़ा दुःख होता था इसका। जाने कितनी बार सोचा, तुमसे सब कुछ कह दूँगी। लेकिन डर लगा, मेरी कलंक-कहानी सुनकर मुझे घर से निकाल दो तो मैं कहाँ जाऊँगी ?

टुशकी ने कहा, पगली कहीं की। आदमी क्या कभी दोष-गुण विचार करके प्यार करता है ? पहले प्यार कर बैठता है और उसके बाद खोज-खोज कर गुण निकालता है। प्यार ऐसी चीज है कि उससे दोष भी गुण ही लगता है। देखा नहीं है, माघ के ओस-कण पर सूरज की किरणें पड़ती है तो मोती जैसी लगती है।

रेशमी ने कहा, आज रात खोलकर सब बताऊँगी।

ठीक तो है ! दुःख को बाँट लिया जाएगा ! मैं भी लूँगी हिस्सा। देखूँगी, किसके दुःख का बोझ भारी है, किसके कलंक की कालिमा गाढी है।

दोनों ने रात को एक-दूसरे की सुनने की सोची।

शाम को मदनमोहन की आरती देखने के लिए टुशकी अकेली ही गई। इधर कई दिनों से रेशमी ने जाना छोड़ दिया था। टुशकी भी उसे इसके लिए तंग नही करती। आज रेशमी का जी खासा हल्का था, फिर भी नही गई वह। वह आमने-सामने होने के पहले अपने मन को सँवार लेना चाहती थी। मन के मालखाने में अनसँवरे ढेर-सा पड़ा था सब। सहेज नहीं लेने से खुद ही चलना मुश्किल है तो दूसरा कोई कैसे अंदर जाएगा ?

सोचते-सोचते रेशमी सो गई थी। जगी तो देखा, बत्ती बुझ चुकी है। समझ गई, रात काफी हो चुकी है। सोचा, टुशकी समय से लौट आई है। निंदासे में इसने भी किसी समय उसके साथ खाना खा लिया होगा। याद भी कैसे आए! टटोलकर देखा, टुशकी विस्तर पर नही थी। सूनी थी उसकी जगह। गई कहाँ आखिर?

उठकर उसने बत्ती जलाई। देखा, घर मे वह कही भी नही है। रसोई मे दोनों का खाना वैसा ही ढँका पडा था। दरवाजा वाहर से बंद! समझ गई, वह वापस ही नही लौटी। इतने मे मदनमोहन के मंदिर मे डंका बज उठा। रात बीत चली। मौन आकाश के नीचे हाथ मे चिराग लिए वह मूढ-सी खडी रही। टुशकी उस रात नही लौटी।

रेशमी (?) हरण

उस रोज तीसरे ही पहर से बारिश शुरू हो गई थी। शाम होते-होते जम गई। टुशकी जब मंदिर मे पहुँची तो मंदिर खाली-सा था। मंदिर मे नाम के लोग थे। आरती समाप्त होने के पहले बारिश ने फिर जोर पकडा। पानी बंद होने के आसरे वह खडी रही। मंदिर लगभग खाली हो गया। आखिर पानी कम हुआ। रात काफी हो चुकी, ज्यादा देर रुकना ठीक नहीं — यह सोचकर वह मंदिर से निकल कर अँधेरे रास्ते पर उतरी कि तीन-चार आदमी उस पर टूट पडे। एक ने अँगोछे से उसका मुंह बाँध दिया और दो आदमी उसे उठाकर चल पडे। सारा रहस्य तुरंत उसके आगे साफ हो गया। ऐसा कुछ रहस्यमय था भी नही यह। वह समझ गई, ये सब मोती राय के लोग है और उसे वही लड़की समझकर काशीपुर के बगीचे मे ले जाया जा रहा

है। उसने गुंडों से छूटने की जरा कोशिश न की, सामर्थ्य न थी और न ही शायद इच्छा थी। उसने होनी के हाथों अपने आपको सौंप दिया। उसे एक नाव पर चढ़ाया गया। मुंह उसका उस समय भी बँधा ही था। आँखें लेकिन खुली थीं। वह सब कुछ देख सकती थी। उसने देखा, तीन आततायी तो नाव पर सवार हुए, चौथा किनारे ही खड़ा रहा। नाव ज्वार में भाग चली। आसमान के अपार अँधेरे की तरफ वह ताकती रही। सोचने लगी, जाने सौरभी कब तक उसकी राह देखती हुई जगी रहेगी।

खिसकने वाला चौथा आदमी था चंडी बख्शी! मोती राय के कहे-चमकाए वह रेशमी की शिनाख्त के लिए राजी हो गया था। उसे यकीन था, रेशमी कलकत्ते में ही है और साहब टोले के बजाय इधर ही कहीं छिपी हुई है। उसका ख्याल था, मदनमोहन के मन्दिर में वह मिलेगी और वही सत्य भी हुआ। वह दो दिनों से मन्दिर में रहा था, लेकिन रेशमी से भेंट नहीं हो रही थी। आज आँधी-पानी में भी आया। ऐसे दुर्योग का दिन ऐसे कामों के लिए सुविधाजनक होता है। हाँ, थोड़ी गलती जरूर हो गई। लेकिन यह गलती लोग दिन के प्रकाश में भी करते हैं, यह तो रात का अँधेरा ठहरा। उसने टुशकी को रेशमी समझ लिया। उसने दूर से ही इशारे से बता देने की कही थी, सामने नहीं जाना चाहता था। लाख हो, है तो आखिर गाँव की ही लड़की।

रास्ते में खड़े-खड़े मन्दिर के रोशनी-अँधेरे में टुशकी को देखकर वह चौंक उठा। रेशमी! एक बार जी में आया, नहीं बताए तो क्या। पकड़ लेने पर लोग उसकी जो गत करेंगे, बख्शी को इसके बारे में भूल धारणा न थी। फिर सोचा, उसके लिए इतनी फिक्र भी क्यों? उसे चाहे बाघ खाए, चाहे मगर, खाकर ही रहेगा। और फिर जो चिता से उठकर भागी है, उसका सतीत्व क्या और कुमारीपना क्या? चंडी को पक्का विश्वास हुआ कि रेशमी के लिए जॉन और मोती राय के बिस्तर में कोई फर्क नहीं। साथ ही उसे मोती राय की नशे से चूर घूरती हुई

आँखें याद आ गईं। बख्शी उस कोटि के लोगों मे नहीं, जो जान की परवा न करके कोई अच्छा काम करता हो। उसने दूर से रेशमी को दिखा दिया और आप दुबका रहा। जब वह नाव पर निर्विघ्न चढा ली गई तो वह अँधेरे मे चुपके से खिसक पड़ा।

कुछ देर के बाद नाव किनारे लगी। गुडों ने खींचकर टुशकी को नाव से उतारा और साथ ले चले। दो ही चार मिनट मे वे एक बाग-महल मे पहुँच गए। टुशकी समझ गई, यह मोती राय का वह मशहूर बगीचा है। अब तक वह कुछ भी नही बोली, सिर्फ देखती रही चुप-चाप। उसे निचली मंजिल मे छोड़कर एक आदमी ऊपर गया। लौट कर उसने इशारे मे बताया और सब मिलकर उसे ऊपर ले गए। एक बहुत बडे कमरे में उसे छोड़कर दरवाजा बाहर मे बंद करके सब खिसक पडे।

दिए की टिमटिमाती रोशनी मे उसने देखा, एक पलँग पर मोती राय अधलेटा पड़ा है। मोती राय को वह पहचानती थी।

शराब से लडखडाती आवाज मे मोती राय ने कहा, खड़ी क्यो हो, उस चौकी पर बैठो।

टुशकी बैठी नहीं। जैसे खड़ी थी, वैसे ही खड़ी रही।

तकिए के सहारे जरा सँभलकर बैठते हुए मोती राय ने कहा, बैठो रेशमी।

टुशकी ने अबकी बात की। इतनी देर मे वह यही पहली बार बोली। कहा, मैं रेशमी नही हूँ।

गद्गद् कंठ से मोती राय ने कहा, रेशमी न सही, पशमी तो हो?

मेरा नाम वह भी नहीं।

रेशमी नहीं, पशमी नही — सूती? खासा मजाक रहा, यह सोच कर मोती राय हँस उठा।

टुशकी सिहर उठी। कैसी भयंकर हँसी, जैसे नर्क का दरवाजा खोलने जंजीर बजती हो।

तो तुम्हारा क्या नाम है?

टुशकी !

वाह, बड़ा मीठा नाम है ! जरा ठहरो, देखूं तुम्हारे नाम का तुक क्या-क्या मिलता है। टुशकी, घुसकी, चुसकी, फुसकी — आज दिमाग खूब खुला है। हरू ठाकुर होता तो खुश हो जाता।

अब तक मोती राय आप ही आप बकता चला जा रहा था। अब उसने टुशकी को लक्ष्य करके कहा, तुम जरूर, समझ नहीं रही हो। सोच रही होगी, यह शख्स क्या अंड-बंड बक रहा है। तो सुनो, मैं हरू ठाकुर से गीत लिखना सीख रहा हूँ। हरू ठाकुर का कहना है, गीत बनाना हो तो तुक को पहले सोच लेना चाहिए। और उनके कहे ऐसा हुआ है कि कोई शब्द सुना और उसके सारे तुक तुरत सूझ गए। टुशकी, खुसकी, चुसकी .... फुसकी .... उहूँ, यह फुसकी नही चलेगा।

उसके बाद वह उत्तेजित हो उठा — क्यों नही चलेगा ? हजार बार चलेगा। हरू ठाकुर अगर एतराज करेगा तो उसकी तनखा नही बद करा दूँगा ! अलबत् चलेगा — बाप-बाप करके चलेगा। जरा सुनो तो सही, अभी तुरत कैसा गीत तैयार कर देता हूँ —

टोले में जिसकी कनफुसकी
उस छोरी का नाम टुशकी
होंठों मे अमरित की चुसकी
हँसना है जरदा ज्यों मुशकी

आप ही अपने को वाहवाही देते हुए बोल उठा, वाह-वाह, कमाल का बन गया ! कल हरू ठाकुर से इसकी धुन ठीक करानी होगी। क्या ख्याल है ?

अचानक टुशकी ने हिम्मत बटोर कर इस बार कहा, आप जिस लडकी की खोज में है, मैं वह नहीं हूँ।

वह नहीं हो ? अरी, चालाकी रक्खो चंद्रमुखी। यही सुनते-सुनते इन कै दिनों में कान पक गए ! आज ही तो असली लड़की मिली है। — और वह गुनगुनाने लगा — आज रजनी हम भागे पोहाइनु पेखनु प्रिय-

मुख चंदा ।

टुशकी ने दृढ़ता से कहा, मैं रेशमी नहीं हूं । मैं हूँ मदनमोहन तल्ला की टुशकी ।

गंभीर स्वर से मोती राय बोल उठा, तुम बेशक जोडामऊ गाँव की हो !

टुशकी के मन में स्मृति का झीना परदा हिल उठा ।

तुम बेशक जोडामऊ गाँव की रेशमी हो, चंडी बख्शी ने तुम्हें पह-चाना है····

स्मृति का परदा और जोर से हिलने लगा टुशकी के मन में ।

तुम बेशक जोडामऊ गाँव की रेशमी हो । चन्डी बख्शी ने तुम्हारी शिनाख्त की है । इस पर भी एतबार न आए तो वहाँ की मोक्षदा बूढी से भी शिनाख्त करा सकता हूँ । अब तो आया यकीन कि मैं जिसे चाहता था, वही इतने दिनों में मिली है ?

स्मृति का परदा टुशकी के मन में पूरा उठ गया ।

और भी सुनना चाहती हो ? किरीस्तान लोग तुम्हें ब्याह करने के लिए श्रीरामपुर ले गए थे । मेरे लोगों के साथ चन्डी बख्शी तुम्हें छीन लाया । और उस दिन तुम जो गंगा के घाट से भाग निकली सो आज ही मिली हो ! कहो, मैं शुरू से अन्त तक तुम्हारा इतिहास जानता हूँ या नहीं, कहो ?

टुशकी के मन में संदेह का एक दूसरा परदा हिल उठा । उस दिन जिस लडकी ने अचानक आकर उसके यहाँ जगह ली, बताया कि मुझे डकैत ले जा रहे थे, भाग निकली हूं — तो क्या वह सौरभी ही रेशमी है ? जोडामऊ गाँव की रेशमी ? मोक्षदा बुढ़िया, चन्डी बख्शी, जोड़ामऊ गाँव — ये नाम उसके मन में स्मृति का सोने का घंटा बजाने लगे । तब तो सौरभी उसकी सहोदरा है — अपनी बहन । तभी उसे दोनों के मिलते चेहरे की याद आई । इतनी मिलती-जुलती शकल देखकर राधारानी ने पूछा था, यह तुम्हारी कौन होती है माँ जी ? आईने में पास-पास अपनी

शकल देखकर वे दोनों भी कितनी बार चौंक उठी है। हो-न-हो सौरभी ही रेशमी है — उसकी बहन ! उसके मन मे स्मृति की बिजली कौंधती रही, दिगंत और दिगंत खुलते रहे। पिछली यादों मे आई हुई विपदा भुला गई। उससे और खड़ा नही रहा गया। चौकी पर बैठ पड़ी।

मोती राय बोल उठा, हाँ, यह बात रही। पहले खडा रहना, फिर बैठना और फिर सोना। — उसने हाथ बढा कर टुशकी का आँचल खीचा। टुशकी ने बाधा नही दी।

पलंग पर जाते-जाते टुशकी ने सोचा, कितनो को जानें कितनी बार शरीर-दान देने को मजबूर हुई हूँ, आज अपनी बेकसूर बहन को बचाने के लिए ही देह दी अपनी, तो क्या हर्ज है। शायद यही मारे अपराधो का प्रायश्चित्त हो।

प्रभात चिंता

रात बीत चली, तो टुशकी जगी। देखा, बिस्तर खाली है। दरवाजा खुला, कमरा अँधेरा। खुली खिड़की से शरत की उषाकालीन हवा, अधखुली आभा ने उसे सुध दी। रात की बातें धीरे-धीरे याद आईं। कपड़ा सम्हाल कर वह बैठ गई।

पहले तो भाग जाने की इच्छा हुई। तुरन्त मोती राय की मनाही याद आई, खबरदार, भागने की कोशिश मत करना। मारी जाओगी। पहरा तो है ही, दो जंगली कुत्ते भी खोल कर रखे गए है। वे कुत्ते न रेशमी मानेंगे न पेशमी, बोटी-बोटी फाड डालेंगे। धीरे-धीरे बहुत-सी बातें याद आईं उसे। नशे में रहते हुए भी मोती राय मर्यादा की बात नहीं भूला। कहा था, रेशमी, तुम्हारे भाग जाने से मेरा पट्टीदार — वह सदा से ही

मेरा दुश्मन है — यह उड़ाता फिर रहा था कि तुम्हें साहब लोग लूट ले गए हैं। मेरे मान-सम्मान पर आ बीता। तुम्हें ढूंढ निकालने के लिए मैंने बेहिसाब खर्च किया — यह हुक्म दिया कि रुपया जितना भी लगे, रेशमी को ढूंढ निकालो।

दुलारी चुप-चाप सुनती गई।

मोती राय कहता गया, आज तुम मिली। कल यहाँ बहुत बड़ी महफिल होगी। शहर के जाने-माने सबको बुलाऊँगा — मेरे वे पट्टीदार भी नहीं छूटेंगे! नाच, गीत, बाजा। खासी धूमधाम। निकी बाई जी को सौ मोहर पेशगी दे रक्खी है, विदेशी शराब से तीने का एक कमरा भरा है, आतिशबाजी का भी इन्तजाम है। सब कुछ है, एक तुम्हारी ही कमी थी, अब वह भी पूरी हो गई। समझ गई?

दुलारी चुपचाप सुनती रही।

तमाम लोग आकर यह देख जाएँ कि बाघ के मुँह का शिकार छीना जा सकता है, किन्तु मोती राय की पसन्द की औरत को छीने ऐसी मजाल किसी में नहीं। समझ गई, बड़े आदमी को मान-मर्यादा रखने में कितनी कठिनाई है! जो चाहे तो उसके दूसरे ही दिन तुम जोड़ासाँकू चली जाना। मोक्षदा बुढ़िया और चंडी तो है ही।

नशे में जाने ऐसी कितनी ही बातें वह कहता गया। दुलारी सुनती रही। इतना ही समझा उसने, ग्लानि के अंतिम छोर पर पहुँचे बिना उसे छुटकारा नहीं।

रात के अंतिम पहर में नींद खुल जाने से वे बातें याद आने लगीं, याद आने लगी पुरानी स्मृतियों की छिटपुट बात। इन सबको सँवार लेने के ख्याल से वह बिस्तर छोड़कर खुली खिड़की के पास जा बैठी।

शरद के सवेरे लगभग खिले हरसिंगार की खुशबू से स्मृति की मन-मन खुल गई — माता के आँचल की तरह उसके छोर ने जाकर दुलारी को छुआ। बदन के रोएँ खड़े हो गए। मोती राय से उसने रेशमी का जो ब्योरा सुना, उसमें जरा भी संदेह न रहा कि मौरसी रेशमी है और वे

दोनों बहनें हैं। अतीत का बंद ढक्कन हट गया। छुटपन मे वह घर के बगीचे मे शेफाली चुनने जाया करती थी, पीछे-पीछे लड़खड़ाती चलती थी रेशमी। माँ मना करती''''इतने तड़के घाम मे मत जा, तबीयत खराब हो जाएगी। लेकिन कौन तो सुने ! खाँड़चा भर जाने पर रेशमी को फूलो का हिस्सा देना पड़ता, नही तो वह हरगिज नही छोड़ती। बरामदे पर नन्हा-सा भाई घुटनो के बल चलता होता, फूल देखते ही खिलखिला कर उस पर झटपता। अरे छोड़-छोड़ —रेशमी हटा ले उसे। पूजा का फूल है यह।

दूर से ही माँ हँसती। कहती, टूनी बड़ी धार्मिक होगी। ठाकुर के लिए इतना खिचाव।

आज सुबह के हरसिंगार की सुगंध ! जाने क्यों — मन के किस कोने को छू गई, उस दिन की याद स्पष्ट हो उठी। गंध से गध का यह कैसा गहरा संयोग !

उसका असली नाम था टूनी। जीवन की धारा नए तटों के बीच आ बही तो नाम को बदल कर कर लिया टुशकी। केवल पहला अक्षर माता के आशीर्वादो निर्माल्य को तरह उसने सर पर खोंस कर रख लिया।

नया जीवन शुरू करने के बाद अपनी माँ की भविष्यवाणी याद करके वह रोया करती — 'टूनी बड़ी धार्मिक होगी, ठाकुर के लिए इतना खिचाव !' आज फिर उसकी छाती फट कर रुलाई छूटी, दोनों आँखें बह चली। आज अचानक दूर, निकट जो हो आया था।

उस दिन की बात आज भी साफ याद आती है उसे, महज उस दिन की हो जैसे। कितना पहले मगर कितना करीब ! मनुष्य का मन समय के बँधे नाप पर थोड़े ही चलता है।

जाड़े के दिनों एक रात स्नान के लिए गंगासागर जा रहे थे वे नाव पर — बाप-माँ, टूनी और छोटा भाई नाड़ू। रेशमी को नानी ने हरगिज नही जाने दिया। कहा, ऐसी दुबली लड़की — रास्ते मे ही मर

जाएगी। टुशकी का ददिहाल और ननिहाल एक ही गाँव मे था। गाँव के और भी कुछ लोग साथ जा रहे थे। टुशकी अब तक इन बातो को सोचना नही चाहती थी, मन के स्मृति-कक्ष के दरवाजे को जोर करके बंद कर रक्खा था। आज याद की हवा मे वह दरवाजा खुल गया और घटना का प्रवाह बाँध तोड़कर बरबस निकल पडा। गंगासागर से नहाकर लौटते समय शाम को नाव मे उथल-पुथल! जगकर लोग सोचने लगे; बाढ तो नही आ गई। नही, बाढ़ नही थी। समुद्री लुटेरों का हमला था। उसके बाद कुछ ही क्षणो मे कहाँ से क्या हो गया, अँधेरे में पता नही चला। हाथ-पाँव और मुँह बँधा — इस हालत मे वह लुटेरों की नाव पर एक कोने मे पडी रही। दो दिन बाद कलिगा बाजार, कलकत्ता मे एक आदमी के यहाँ वह लाई गई। पता चला, उसे यहीं रहना होगा। उफ् कैसा काला और कितना मोटा था वह आदमी। उसने कह दिया, भागने की कोशिश मत करना, काट कर दो टुकडे कर दूँगा। इसके पहले उसने कलकत्ता भी नही देखा था और कलिगा बाजार का नाम नहीं सुना था। वह जान भी नही सकी कि उसके माँ-बाप का क्या हुआ, क्या हुआ उसके भाई का, उन लुटेरों की बातों से लगा, वे सब डूब मरे। गाँव के और जो दो-तीन जने थे, वे लुटेरो को बाधा देने मे मारे गए। उस दिन की याद से आँखें आँसुओं से बह गई, जैसे उस दिन आँसुओ से बही थीं आँखें। आँसुओ पर काल का चिन्ह पड़ता है?

उसके बाद उसके दु:ख का जीवन शुरु हुआ। दु:ख और लज्जा का। उस आदमी ने उसे चीतपुर के किसी आदमी के हाथ बेंच दिया। चीतपुर वाले उसी आदमी ने उसे यह घर बनवा दिया था, कुछ रुपए दिए थे और दिया था यह टुशकी नाम। टूनी, टुशकी के नीचे दब गई। अच्छा ही हुआ, टूनी मर गई। कुछ दिनों के बाद वह बाबू भी गुजर गया। टुशकी आजाद हो गई। चाहती तो जोड़ामऊ लौट सकती थी, लेकिन इस इच्छा को उसने बल नही दिया। मरी हुई टूनी का फिर से जीना संभव नहीं। ऐसे में उसका राम बसु से परिचय हुआ। राम बसु हुआ कायथ-

दा। कलकत्ते मे आकर यही पहली बार उसे स्नेह का स्वाद मिला। स्नेह का समावेश हुआ, इसीलिए उनका यौन-संपर्क विकृत नही हुआ। औरतें स्नेह-प्रेम जरूर चाहती है, लेकिन सबसे ज्यादा ऐसा आदमी चाहती हैं, जिस पर पूर्णतया निर्भर रह सकती हो। ऐसे पुरुष के लिए नारी का कुछ भी अदेय नही रहता। उसके बाद सौरभी के वेश मे आई रेशमी — उसकी बहन। वह सोचती, उसके भाई-बहन सबका भाग्य क्या एक ही सा है, दुःख का।

फिर दूने वेग से रुलाई आने लगी। गालो से आँसू बहने लगे। कपड़ा भीग गया। लेकिन जो दुःख उसके मन मे स्तंभित पड़ा था, उसके मुकाबले यह क्या था, कितना-सा! हिमालय की सारी बर्फ अगर गल जाती तो छटाँक भर भी जमीन क्या रह सकती थी!

याद आया, अजीब निष्ठुर परिहास है अदृष्ट का। सौरभी ने आज ही रात अपना परिचय देने की कही थी, उसने भी सोच रक्खा था कि वह भी अपना परिचय बतायेगी। और दो घंटा भी समय मिल जाता तो दो विभिन्न परिवेश मे दोनो बहनें आमने-सामने होती। लेकिन अब? अब क्या वह घर लौट सकेगी? मोती राय की धाक जैसी कड़ी है, वैसी ही दुर्जय है उसकी वासना।

हरसिंगार की सुगंध और गाढ़ी हो उठी। सोचा, सारे फूल अब फूल गये। झाँक कर देखा, सच तो सारा आसमान जोत से भर गया था। सुबह की रोशनी के सामने वह शर्म से इत्ती-सी हो गई। सोचा, सबसे अच्छा था रात का अंधकार। इसमें कोई शक नहीं कि मोती राय की कामना से बनी — लेकिन उस शर्म को ढँकने के लिए अँधेरे की भी तो कमी नही। हठात् सौरभी की याद आई — जाने वह क्या कर रही है।

उनीदी रेशमी की आँखों मे दिन की आभा फूट उठी। सोचने लगी, किससे पूछूँ, कहाँ खोज करूँ इसकी दीदी की।

आठ बजे के लगभग राधा रानी आई।

उसका सूखा हुआ चेहरा देखकर उसने पूछा, रात सोई नहीं क्या दीदी ?

नहीं !

तबीयत खराब थी ?

दुशकी दीदी आरती देखने गई थी, अब तक नहीं लौटी।

अभी तक नहीं लौटी ? अचरज से राधारानी बोली।

कह सकती हो, कहाँ गई ?

राधारानी ने कपाल से हाथ छुआकर कहा, नसीब जल जाने पर जहाँ जाती है कोई, शायद वहीं।

रेशमी ने गंभीर होकर पूछा, मतलब ?

और भी खोलकर बताना होगा ? हो सकता है, मोती राय के गुण्डों के चंगुल में पड़ गई हो।

विश्वास नहीं करने को क्या था। रेशमी समझ गई, आज तक जिस आग में पड़ोस के घर जल रहे थे, उसकी चिनगी अब अपने ही घर पर पड़ी। वह क्षण भर स्थिर खड़ी रही, फिर बाहर निकलने को तैयार हुई।

अरे, कहाँ चली ? राधारानी ने पूछा।

कोई जवाब न देकर, पीछे मुड़कर ताके बिना ही रेशमी उत्तर की तरफ चलती रही।

राम वसु की वापसी

जिस रोज रेशमी दुशकी के घर चली गई, ठीक उसी दिन सुबह सबेरे राम वसु जॉन के ऑफिस में हाजिर हुआ। उसने पहले ही जॉन

लिया था कि जॉन इन दिनों ऑफिस में रहता है।

राम बसु को देखकर चकित जॉन ने पूछा, अरे! मुंशी! एक जमाने के बाद कहाँ से? आपकी तो उम्मीद ही छोड़ दी थी लगभग।

राम वसु ने कहा, एक जमाना न सही, महीना भर तो हुआ ही।

इतने दिन रहे कहाँ, क्या करते रहे?

ठहरो, एक-एक कर सब बताता हूँ। उसने कहना शुरू किया, आप सब लोग तो चल दिए, लेकिन मैंने रेशमी की आशा नहीं छोड़ी! जहाँ-जहाँ उसके जाने की संभावना थी, मैं सब जगह गया — यहाँ तक कि मदनाबाटी जाने में भी कसर न की। मगर सब बेकार हुआ, कहीं पता नहीं चला उसका।

जॉन बोला, भला वह जहाँ है नहीं, वहाँ उसे कैसे पाया जा सकता है। लेकिन एक बात कह दूँ, रेशमी के लिए अब मुझे कोई आग्रह नहीं।

यह कोई ताज्जुब की बात नहीं। जो मिल नहीं सकी, उसका आग्रह न रखना ही ठीक है।

मिली नहीं, यह कहना सही नहीं है। रेशमी का पता मिला है।

आनंद और अचरज से वसु बोल उठा, मिला है रेशमी का पता! कहाँ है वह? कैसे पता चला, सब बताइए।

जॉन ने कहा, उसके पहले मुझे बताइए कि मदनमोहन कौन है?

हक्का-बक्का होकर राम वसु ने कहा, मदनमोहन; मैं कैसे बताऊँ?

राम वसु ने जॉन को गौर से देखा। कहा, आप ऐसे क्यों दीख रहे हैं। कहिए तो, हुआ क्या है।

जॉन ने रुष्ट होकर कहा, पहले यह कहिए कि आप मदनमोहन नाम के किसी रास्केल को जानते हैं या नहीं?

राम वसु ने जरा देर सोचकर कहा, उँहूँ! इस नाम के किसी आदमी को तो याद नहीं आती। मगर बीच में यह मदनमोहन कौन आ टपका अचानक। रेशमी के बारे में तो कहिए।

जॉन उठकर चहलकदमी करते हुए बोला, यह आपकी रेशमी जो

है वेश्या है और यह मदनमोहन है एक आवारा।

कुछ समझ नहीं सका, सो राम वसु चुप खड़ा रहा। जॉन कहने लगा, बड़ी-बड़ी खोज-ढूँढ़ के बाद रेशमी का पता चला, लेकिन पता न चलना ही ठीक था।

वसु कुछ कहना चाह रहा था, लेकिन बाधा देकर जॉन ने कहा, पहले सुन तो लीजिए सब, तब समझेंगे कि वह कितनी शैतान है।

जॉन ने और दो-चार बार चहलकदमी की। फिर बोला, रेशमी का पता चला और जब उसे लाने का इन्तजाम करने लगा तो उस शैतान ने लिख भेजा, मैं नहीं जाऊँगी, मैं मदनमोहन से व्याह करूँगी। अब से मदनमोहन ही मेरे आश्रय, शांति और स्वामी है! उसका चिता में जल मरना ही बेहतर था। उसे बचाकर आप लोगों ने बड़ा अन्याय किया। ऐसे जघन्य जीव को जिंदा रहने का अधिकार नहीं है। सुन लिया न! हो गया। जान गए कि आपकी रेशमी है क्या चीज।

राम वसु ने कहा, देखिए मनुष्य के लिए सब कुछ संभव है। मगर तो भी रेशमी के बारे में ये बातें विश्वास करने योग्य नहीं लगतीं।

विश्वास योग्य क्यों नहीं? इसलिए कि उसका मुखड़ा सुन्दर है?

नहीं, बल्कि इसलिए कि उसका मन सरल है।

उसकी सरलता साँप की सरलता है, जानलेवा। लेकिन जब उस कुलटा पर आपको इतना ही भरोसा है तो लीजिए, इस चिट्ठी को पढ़ देखिए। — वह मेज के पास गया। रेशमी की जो चिट्ठी जतन से रक्खी थी, दो उँगलियों से उसे उठाकर उसने नफरत के साथ राम वसु की ओर फेंक दिया।

राम वसु बड़े चाव से एक ही आग्रह में उस चिट्ठी को पढ़ गया। और बोला, आपने इसका जवाब दे दिया है?

जरूर दिया है जवाब।

मैं जानना चाहता हूँ। क्या लिखा?

जो लिखना चाहिए। लिखा, तुम बाजारू वेश्या हो। तुम्हारा उप-

पति मदनमोहन एक लंपट है। लिखा, अबकी जरूर तुम अपने उपपति के साथ जलकर मर सको। तुम्हें इसके पहले ही जल मरना चाहिए।

हक्का-बक्का राम बसु बोला, ये बातें लिखी है, ये मार्मिक बातें।

क्यों न लिखूं।

बड़ा बुरा किया।

क्यों ?

क्योंकि आपने उसकी चिट्ठी का मतलब गलत समझा।

वसु की अडिगता से जॉन का विश्वास लडखड़ाया। बोला, चिट्ठी कुछ दुरूह तो है नही।

आप जैसे गोरों के लिए तो दुरूह ही है।

आखिर आप क्या अर्थ लगाना चाहते है इस चिट्ठी का। लगता है, आप उस शैतान के वकील है !

जॉन, मैं शैतान का वकील नही, बल्कि बेवकूफी का शैतान आपके सिर पर सवार है। मदनमोहन कोई आदमी नही है, एक देवता का नाम है वह। कलकत्ते का कोई भी हिन्दू इस नाम को जानता है — यह एक डेटी है।

जॉन का मन डिगा, लेकिन झुका नही। बोला, आप शायद गलती कर रहे हैं; मदनमोहन अगर डेटी है, तो उससे ब्याह करने की बात कैसे कही उसने ?

यह रूपक है, ऐलिगिरी ! भगवान को हम कभी पिता कहते है, कभी माता और कभी स्वामी के रूप मे भी उसकी कल्पना करते है। आपने ऐसा सुना नही क्या ?

सुना तो है। जॉन ने कहा।

आपकी चिट्ठी रेशमी को मिल गई है ?

गंगाराम उसके हाथ मे दे आया हूँ।

खूब किया है ! खूब ! निर्बोध, नही जानते कि आपने किया क्या।

जॉन ने अब समझा कि उसने भारी भूल की है।

वह है कहाँ ?

यह गंगाराम जानता है।

गंगाराम को बुलाया गया। राम बसु ने पूछा, रेशमी कहाँ है ?

जी, मदनमोहन तल्ला में।

मदनमोहन तल्ला ! राम बसु चौंका। कहा, अभी चलो मेरे साथ।

जॉन ने कहा, मुंशी, मैं भी साथ चलूंगा। क्षमा माँगूंगा उससे।

क्षमा माँगेंगे ! बड़ी उदारता आ गई ! मगर आपकी क्षमा-याचना सुनने के लिए अब तक वह जिंदा भी है या नहीं, नहीं कह सकता।

क्यों ?

फिर पूछते है, क्यों। इस ढंग की चिट्ठी पाने के बाद भी कोई स्त्री जिंदा रहती है। यकीन न हो तो अपनी बहन लिजा से पूछ देखिए।

राम बसु गंगाराम के साथ निकल गया।

जॉन कमरे में आ गया। उसे रुलाई छूटने लगी। बिस्तर पर वह पड़ गया। कैसा आनन्दमय दुःख !

गंगाराम मदनमोहन तल्ला के एक मकान के सामने खड़ा हो गया। राम बसु चौंका ! अरे ! यह घर तो टुशकी का है।

गंगाराम ने कहा, टुशकी है या खुशकी, सो मैं नहीं जानता। मगर वह इसी घर में है।

दरवाजा खुला था। टुशकी को पुकारते हुए राम बसु अन्दर चला गया।

सामने आई राधारानी। कहा, अरे आप ! इतने दिनों बाद ?

रेशमी के निकल जाने के कुछ ही देर बाद राम बसु पहुँचा था। राधारानी उस समय तक काम-काज कर ही रही थी। वह सोच नहीं सकी थी कि और क्या करना चाहिए।

मजे में हैं राधारानी तू ? टुशकी कहाँ है ?

बैठिए, बताती हूँ। मैं आज सुबह काम करने आई तो पता चला, वह कल जो आरती देखने गई शाम को तो लौटी ही नहीं।

नही लौटी ! ऐं ! रेशमी कहाँ है ?

रेशमी ? यह फिर कौन ?

वही लड़की, जो यहाँ रहती थी ?

ओ, सौरभी की कह रहे हैं ?

तेज वुद्धि वाला राम बसु तुरन्त ताड गया कि उसने इसी नाम से अपना परिचय दिया होगा यहाँ। कहा, हाँ-हाँ सौरभी ! कहाँ गई ?

वह तो अभी ही वाहर चली गई।

वाहर चली गई। कहाँ ?

सो मैं क्या जानूं। सुवह आई तो देखा, दीदी जी उदास चेहरा लिए खड़ी हैं। पूछा, क्या वात है दीदी जी। वताया, टुशकी दीदी कल आरती देखने गई है, सो अब तक नहीं लौटी !

तो उसी को खोजने चली गई ?

लगा तो ऐसा ही।

लेकिन कुछ कह नही गई कि कहाँ जा रही है ?

वह वड़ी लम्बी दास्तान है कायथ दा ! आप वैठिए तो वताती हूँ।

मैं ठीक ही हूँ, जो जानती है, वता।

राधारानी ने उसे मोती राय के जुल्म की वात वताई। लेकिन चूँकि वह साफ-साफ यह जानती न थी कि मोती राय का निशाना रेशमी ही है, इसलिए टुशकी के गायव होने और रेशमी के अचानक घर से चल देने का रहस्य वह समझ न सकी।

राम वसु समझ गया, राधारानी से इससे ज्यादा नहीं जाना जा सकता।

उसने और कही खोज लेने की सोची। कहा, राधारानी, काम हो जाए तो दरवाजा वाहर से लगाकर तू चली जाना। मैं फिर लौटकर आऊँगा।

राम वसु गगाराम को साथ लेकर निकल पड़ा।

टुशकी के घर के पास ही राम पंडित की दूकान थी। अपने

चाणक्य श्लोक, दाताकर्ण उपाख्यान, शुभंकरी और गंजी खोपडी तथा बड़ी नाक के महात्म से राम पंडित दूकान के एकान्त मे पाठशाला खोलकर पंडिताई करते थे। जात के ब्राह्मण थे और राम वसु के बहुत दिनो के परिचित। मुहल्ले की सारी खबरें उनकी दूकान पर पहुँचती है, राम वसु को यह मालूम था। राम वसु उन्ही की दूकान पर पहुँचा।

पालागी पंडित जी ?

अरे रे, दोस्त ! आओ-आओ। बड़े दिनो मे आए। कहाँ रहे इतने दिन ? कुशल तो है ?

बैठते हुए राम वसु ने उनकी बातो का जवाब दिया।

अरे ओ, वह कायथ वाला हुक्का दे जा। एक ने जलता हुआ चिलम चढा कर हुक्का ला दिया।

तो, टोले की खबर क्या है मित्र !

मत पूछो दोस्त, अभी तो मुहल्ले मे सुभद्रा-हरण चल रहा है। — राम पंडित जोरो मे हँस पडा। हँसी की ताल पर नाक काँपने लगी।

सो क्या ?

राम पंडित ने एक बार सतर्क होकर चारो तरफ देख लिया और आवाज धीमी करके कहा, सब की जड है, मोती राय। उसे तो जानते ही हो तुम।

राम वसु ने कहा, उसे कौन नही जानता। इतना बडा शैतान तो इस भूभारत में नहीं है।

फिर तो जानते ही हो। कोई महीना भर पहले उसके गुंडे कही से रेशमी नाम की किसी छोकरी को उठा लाए।

राम वसु कान खडे करके सुनने लगा। पूछा, कहाँ से लाये, पता है कुछ ?

ठीक ठीक तो नही कह सकता, लेकिन सुना कि श्रीरामपुर के पादरी लोग ईसाई बनाने के लिए चुरा कर ले जा रहे थे। बीच में चोरों पर

बटमारी। मोती राय के लोगों ने बीच ही में छीन लिया।

घटनाएँ क्रम से शृंखलाबद्ध होकर वसु के सामने आने लगीं।

फिर ?

वह लड़की गंगा घाट से भाग निकली।

वसु ने मन ही मन चैन की साँस ली। रेशमी के साहस को वाह-वाही दी। यह तो वास्तव में सुभद्रा-हरण ही हुआ। फिर क्या हुआ ?

इधर वह लड़की भागी और उधर माधव राय ने तमाम मोती राय की निंदा फैलानी शुरू की — अब मोती राय के दिन लद गए, नहीं तो वह लड़की हाथ से निकल कैसे भागती ? फिर क्या था, मोती राय गरज उठा।

मोती राय की काल्पनिक गरज की नकल में राम पंडित हठात् ऐसे जोर से गरज उठा कि पढ़ने वाले लड़के काठ हो गये। कोई-कोई तो फुक्का फाड़कर रो उठा।

अरे, तुम लोगों पर नहीं गरज रहा हूँ, तुम लोग पढ़ो। कह कर राम पंडित फिर कहने लगा, समझ गए दोस्त, बस उसी वक्त से पुलिस वालों से साँठ-गाँठ हुई और मुहल्ले पर उसका जुल्मो-सितम शुरू हो गया।

मगर मुहल्ले पर जुल्मो-सितम किसलिए ?

आखिर उस लड़की को तो खोज निकालना है न ?

मुहल्ले वाले क्या जानें रेशमी को ?

तो फिर जुल्मो-सितम क्यों कहा ? कम उमर की लड़की मिली नहीं कि उस लड़की के धोखे पकड़ ले गए।

राम वसु बोला, यह तो संजीवनी न मिली तो गंधमादन पर्वत ढोना हो गया।

बिलकुल वही भैया। राम पंडित ने कहा, कल रात से शायद तुम्हारी टुशकी भी लापता है।

मैंने भी यही सुना है।

तब समझ लो कि उसे लोग पकड़कर काशीपुर के बगीचे में ले गये।

अब किया क्या जाए। — निरुपाय-सा राम वसु ने कहा।

और जो चाहे करो दोस्त, सनक में काशीपुर के बगीचे में मत जा पहुँचना। मोती राय ने संगीनधारियों का चौकस पहरा बिठा रक्खा है।

जो जानना था, राम वसु ने जान लिया। उठ खड़ा हुआ। राम पंडित से विदा होकर गंगाराम के साथ जॉन के आफिस की ओर चल पड़ा।

समझ गया, सौरभी ही रेशमी है। भागकर वह किसी तरह टुशकी के यहाँ जा पहुँची थी। यह भी समझ गया कि कल रात मोती राय के लोग टुशकी को पकड़ ले गये हैं। राम वसु ने सोचा, रेशमी ने मामले को समझा है और वह या तो काशीपुर चली गई या सीधे मोती राय के पास ही पहुँचेगी। रेशमी के चरित्र और साहस को राम वसु से ज्यादा कोई नहीं जानता। उसने समझ लिया कि ऐसे में टुशकी और रेशमी को बचाना उसकी शक्ति के बाहर है। एक ही भरोसा है जॉन, क्योंकि वह अंगरेज है।

पैदल जाने में देर होगी, इसलिए दोनों एक फिटन पर सवार हुए। कोचवान से कहा, कसाईटोला।

रेशमी का आविर्भाव

अपने खास कमरे में गुड़गुड़ी की नल मुँह में लगाए मोती राय तकिये के सहारे पट लेटा था। नीचे एक छोटी-सी चौकी पर बैठा था चंडी बख्शी! चंडी बख्शी ने इससे पहले ही घर लौटने की दरख़ास्त पेश की थी, कोई जवाब नहीं मिला था। उसने फिर उसी प्रसंग को उठाया, हुजूर, अब मुझे घर लौटने का हुक्म दीजिये।

एकाध बार हिलडुल कर मोती राय ने कहा, क्या कह रहे हो बख्शी,

आज तो तुम्हारा जाना हरगिज नही हो सकता। आज तो बगीचे मे नाच-गान है। शहर के जाने-माने लोग पधारेंगे, अपने साथो को भी बुलवाया है, और फिर ढाई हजार की आतिशबाजी है। यह सब देखे बिना कहाँ जाओगे ? और तुम्हारे ईनाम की बात सोच देखनी है। क्या दें न दें, अभी तक कुछ नही सोचा है।

चंडी बख्शी ने विनम्रता मे कहा, लेकिन हुजूर, घर छोडे बहुत दिन हो गए। खबर मिली है, वहाँ सब कुछ चौपट हो रहा है।

सो तो है, मगर महज एक ही दिन तो और। एक ही दिन मे कितना क्या बिगड़ेगा तुम्हारा ?

मोती राय ने प्रसंग बदल दिया। कहा, यो जो कहो बख्शी, तुम्हारी रेशमी जो है, है बड़ी तैयार लडकी। पहले तो जरा ना-नू किया। समझो बख्शी, पहले जरा आपत्ति नही करने से दर नही बढ़ती। लेकिन अंत मे........और मोती राय ने रात के अनुभव का जो वर्णन शुरू किया विस्तार से कि सुनकर बख्शी जैसे पाखंडी ने भी सिर झुका लिया। वह चुपचाप कार्पेट के नक्शो को गिनने लगा।

हठात् मोती राय का ध्यान उधर गया। बोला, अच्छा तुम्हें शर्म आ रही है।

तुरन्त उसने दिलासा देते हुए कहा, तुमसे उसका लहू का सम्बन्ध थोडे ही है, फिर ऐसी शर्म कैसी ?

बख्शी कुछ कहने जा रहा था कि मोती राय ने उसे रोक दिया। कहा, खैर, उस बात को छोडो। अब यह बताओ कि शाल-दुशाला और रुपया ईनाम लोगे कि थोडी-बहुत जमीन ?

चंडी को पूरा सबक मिल चुका था ! अब वह उसके चंगुल से निकल सके तो जान बचे। उसने मुस्तसर मे कहा, हुजूर की जैसी इच्छा।

पक्की बात, न हो तो दोनो लेना। मगर रेशमी नही मिलेगी वापस, वह मेरे पास रहेगी। ऐसी लडकी कभी-कभी ही मिलती है।

चंडी चुपचाप बैठा रहा, हाँ-ना कहने का साहस नही था। किस बात

का क्या मतलब होगा, यह वह नही समझ सकता था।

ऐसे मे ड्योढ़ी के पास कुछ शोरगुल-सा हुआ। ठहरो-ठहरो अन्दर जाना मना है; इत्तला किये बिना कैसे जा सकती हो?

साँझ होते ही हंगामा! खीज के साथ उठ-बैठने की कोशिश की मोती राय ने। परन्तु पूरी कामयाबी मिलने से पहले ही बिखरे बालो, अस्त-व्यस्त कपडो, आवेग और धूप से लाल हुआ चेहरा लिए सामने आ खड़ी हुई रेशमी। दुःख के थपेडो मे उसकी सुन्दरता मानो हजार आँख खोले जाग उठी थी। धूप मे चमकते हीरे की दमक जैसी उसकी खूबसूरती तीखी होकर चमक रही थी। ताकना मुश्किल नजर फेर लेना और भी मुश्किल।

मोती राय हाँ किए ताकता रह गया।

मै जोड़ासाँकू गाँव की रेशमी हूँ, आप मेरी तलाश कर रहे है। कहिये क्या चाहते है आप, मै हाजिर हूँ।

मोती राय के मुँह से बात नही फूटी। अग्निमय रूप की उस मदिरा को वह आँखो से पीने लगा।

क्रोध, अपमान, लज्जा और परिश्रम से खून सवार हो गया था रेशमी के माथे पर। इस दुस्साहस के लिए चरित्र की सारी शक्ति उसे खींच लाई थी। मोती राय की मौन लुब्ध दृष्टि ने उस शक्ति की अन्तिम अंजलि को तरंगित कर दिया। वह बोल उठी, स्त्री का रूप क्या कभी देखा नही आपने? नही देखा तो देखिए। और वह क्या करने जा रही है, यह समझने से पहले ही उसने छाती का कपड़ा उतार दिया। पसीने से गीले, धूप से लाल सीने मे चिकने स्तन के थाले के हिस्सो मे एक ऐसी सहज स्वर्गीय चमक और पवित्रता थी कि उसके जैसा पापी भी उधर ताकता न रह सका, आँख झुका ली उसने!

रेशमी जैसे आई कि दो ही मिनट मे सपने सा सब गायब हो गया। आखिर मोती राय अपने मे आया, उस घटना ने अन्दर ही अन्दर से उसकी सुध मानो खाली नही की थी। उसे उस हाल मे जरा भी भान न

रहा कि जिस लड़की की उसे खोज थी, वह यही है। लेकिन करना क्या चाहिये, यह स्थिर करने का मौका ही न मिला उसे—रेशमी की बातों के आवेग मे उसकी चिन्ता की कड़ी टूट-टूट जाती थी।

रेशमी समझ कर कल तब उसने किसका भोग किया? मोती राय हैरान रह गया।

उससे भी ज्यादा हैरान हुआ बख्शी। रेशमी के भ्रम मे उसने कल किसे पकड़वा दिया था?

लेकिन वे ज्यादा सोच नही पा रहे थे। रेशमी के अनर्गल वाक्यों मे उनकी चिंता का सूत्र छिन्न हो गया था।

आप इस नारी-देह का भोग करना चाहते है, बस तो? मिलेगी। मगर उससे पहले आप मेरी बहन को छोड़ दे। बताइये, आपने उसे रक्खा कहाँ? कैसी है वह? उसे लौटाइये, बदले मे आपकी राक्षसी भूख मिटाई जाएगी।

मोती राय पाखंडी था, मगर निर्बोध नही। जरा देर के लिए वह किंकर्त्तव्य विमूढ जरूर हो गया था, लेकिन यह भाव उसका ज्यादा देर तक नही रहा। वह ताड़ गया कि चंडी बख्शी ने वाहियात माल देकर उसे ठग लिया है! उसके घर जाने की जल्दी का मतलब भी साफ समझ मे आ गया — राज खुलने से पहले ही वह खिसक पड़ना चाहता था।

मोती राय चिल्ला उठा, बुद्धन सिंह।

बुद्धन सिंह ने दरवाजे के पास आकर सलाम बजाया।

इस हरामजादे को गिनकर पचास जूते लगाओ और भागने मत दो।

जी हुजूर!

बुद्धन सिंह, बख्शी को खींचकर ले गया।

इतनी देर के बाद रेशमी ने जाना कि यहाँ और एक आदमी बैठा था और वह था चंडी बख्शी।

इतनी देर मे रेशमी की भी झोंक उतर चुकी थी। उसने समझ

लिया कि जिद से वह पिंजरे मे आ गई है, अब इसका जहरीला फल निगले बिना कोई चारा नही। अँचरे को छाती पर रखकर वह बुत बनी खडी रही।

मोती राय ने आवाज दी, खुदीराम !

एक काला-कलूटा, लँगड़ा बूढा-सा आदमी आकर द्वार पर खड़ा हो गया। खुदीराम मोती राय का खास खानसामा है, उसके सभी दुष्कृत्यों का सहायक और साक्षी।

खुदीराम ने कहा, हुकुम बाबू जी।

इस लड़की को पालकी से बगीचे लिवा जा। नहाने-खाने का इन्तजाम कर देना। कड़ी चौकसी रखना, भाग न निकले। बडी शैतान है।

उसके बाद रेशमी से कहा, देखो भागने की चेष्टा हरगिज मत करना नहीं तो जंगली कुत्तों से नुचवा डालेगे। अपनी बहन से कहना — उससे तुम्हारी वही मुलाकात होगी — गलत माल देकर मोती राय को ठगने से मोती राय उसे कभी नही भूलता। वाहियात माल देने का क्या अंजाम होता है, देख लिया न ?

पास ही कही चंडो बख्शी चीख रहा था।

आज शाम को भेंट होगी। तब देखूंगा, तुम दोनों मे कौन रेशमी है, कौन टूनी।

खुदीराम को उसने फिर से एक बार होशियार कर दिया और दूसरे कमरे मे चला गया।

युद्ध की तैयारी

राम बसु की जबानी शुरू से आखिर तक सब सुनकर जॉन बोल

उठा, तो आप क्या यह कहना चाहते हैं कि इस मोती राय नाम के आदमी ने बुरी नियत से रेशमी को बन्द कर रखा है ?

राम बसु ने कहा, अच्छी नियत से कब कौन किसे बन्द करता है। फिर कहा, लेकिन इतना तय है कि रेशमी पनाह देने वाली को छुड़ाने के लिए गई और जाकर बन्दी हुई।

तो मैं जाता हूँ—यह कहकर मेज की दराज से पिस्तौल निकालकर जॉन खड़ा हो गया।

अब चले कहाँ ?

रेशमी को छुड़ाने।

यह बेवकूफी करने का समय नहीं है। सोच-विचार कर रह-सह कर काम करना होगा!

और इस बीच रेशमी की इज्जत जाय।

नहीं, आज रात से पहले तक वैसी आशंका नहीं।

लेकिन मैं तब तक इंतजार करने को तैयार नहीं। जॉन अधीर होकर चहलकदमी करने लगा।

राम बसु ने कहा, उसके लिए मैं भी तैयार नहीं, लेकिन अकेले से होगा क्या ?

मोती राय भी तो अकेला ही है।

नहीं, वह अकेला नहीं है। उसके बहुत लठैत हैं, प्यादे हैं।

रहने दो। इतना जान रखिए, मैं अँग्रेज हूँ और यह मुल्क कंपनी का है।

होने से क्या हुआ। आप अकेले गए तो वह मार डालेगा। उसके बाद कम्पनी शायद उसे फाँसी दे, जैसे नन्दकुमार को दी थी, लेकिन इसमें रेशमी बच पाएगी ?

जॉन ने बात समझी। मेज पर पिस्तौल रखकर कहा, तो क्या करना होगा, कहिए।

करना यह होगा कि दल-बल, अस्त्र-शस्त्र के साथ बगीचे को घेर कर

रेशमी और उसको आश्रय देनेवाली को वहाँ से छुड़ाना पड़ेगा।

यह सलाह सुन कर जॉन ने कहा, ठीक है। यह सलाह अच्छी है। मैं वैसी ही कोशिश करता हूँ।

उसने कादिर अली को बुलाया। बुला कर हुक्म दिया, मेरे ऑफिस और घर में जितने लोग घोड़े पर चढ़ना जानते हों, उन सबको तैयार रहने के लिए कहो। मैं घोड़ों का इंतजाम करता हूँ।

कादिर अली ने गंगाराम और राम बसु से सारी घटना सुनी—अब साहब का हुक्म मिल गया। जी हुज़ूर कहकर उसने जॉन को सलाम किया और बाहर निकल गया।

जॉन ने सोचा, साथ में दो-चार गोरे रहें तो हमले का महत्त्व बढ़ेगा। मेरिडिथ की याद आई उसे। उसने तुरत मेरिडिथ को पत्र लिख कर भेजा कि तुम्हारे यहाँ जितने लोग घोड़े पर चढ़ सकते हों, उन्हें साथ लेकर जितनी जल्दी हो सके, मेरे दफ्तर में आओ। तुरत एक ऐडवेंचर में जाना है। यह भी लिख दिया कि जाने का उद्देश्य बहुत आदर्श है, लिहाजा आगा-पीछा मत करना।

जरा ही देर में मेरिडिथ का जवाब आ गया। उसने लिखा, युद्ध-यात्रा का आह्वान मिला। मगर किसके खिलाफ? टीपू सुल्तान तो हार चुका, क्या पेशवा के खिलाफ? या कि खास दिल्ली के बादशाह के विरुद्ध? खैर चाहे जिसके भी विरुद्ध हो, मैं सहर्ष तैयार हूँ। मेरा ख्याल है पचासेक आदमियों को घोड़े पर चढ़ा सकूँगा। यह आशंका जरूर है, पचास घोड़े चाहे मैदान तक पहुँचें, पचासों आदमी नहीं भी पहुँच सकते हैं। उनमें से बहुतेरे रास्ते में ही गिरकर घायल होंगे! उन्हें लड़ाई में ही घायल हुआ मानना होगा। लड़ाई के शास्त्र का यही नियम है। जो भी हो, खातिर जमा रक्खो। अपराह्न से पहले ही मैं तुम्हारे दफ्तर में पहुँच जाऊँगा।

फिर 'पुनश्च' में लिखा था, अगर दो-चार उत्साही अँग्रेज मिल गए तो उन्हें साथ ले लूँगा।

मेरिडिथ के पत्र से जॉन का हौसला बढ़ा कि वह अकेला नहीं है।

इधर जॉन के लोग जमा होने लगे। घर से अरदली, चपरासी, भिस्ती आदि बुला लिए गए थे। सबको काफी ईनाम का लोभ दिया गया। जॉन के पास लगभग पचीस घोड़े थे। और भी पचीस घोडे किराए पर मँगवाने की व्यवस्था की गई। ढाल, तलवार, भाला भी जुटाये गये। बंदूके जॉन ने अपने जिम्मे रक्खी, चुने-चुने लोगो को देगा।

राम वसु के नाढा ने जोरो से पगड़ी बाँधी और ढाल-तलवार लेकर तैयार हो गया।

उसे राम वसु खोजने गया तो पता चला, नाढ़ा और गंगाराम ढाल-तलवार लिए पैतरा बदल रहे है। राम वसु ने कहा, अभी रहने भी दो। समय पर देखूंगा, कौन कितना बडा उस्ताद है।

दोनों जने एक साथ बोल उठे, आप छोड़िए कायथ दा, पहले इस कंबख्त मोती राय का काम तमाम कर दूँ।

इतने मे करीब बहुत-से घोडो की टाप सुनाई दी। मामला क्या है ?

सब ने छत पर चढ कर देखा, चौरंगी होकर घुड़सवारों की एक टुकडी आ रही है — सबसे आगे मेरिडिथ तथा और दो-एक गोरे है। उन्हे देखकर जॉन के लोग खुशी से चिल्ला उठे। उस ओर से भी उल्लास का शोर हुआ। दोनो तरफ बिगुल बज उठे। दो ही चार मिनट मे मेरिडिथ अपनी टुकड़ी लिए आ पहुँचा।

आगे बढ कर जॉन ने हाथ मिलाया।

मेरिडिथ ने अपने दोनों साथियो से परिचय कराया — ये है मिस्टर प्रेस्टन और ये अगलर — और ये रहे मिस्टर स्मिथ इस लड़ाई के कमांडर-इन-चीफ।

मगर मामला क्या है जॉन ?

चलो, अन्दर चलो। सब खोल कर कहता हूँ। जॉन तीनों को अंदर ले गया। आबदार दो बोतल ब्रांडी और चार ग्लास मेज पर रख कर सलाम करके चला गया।

मेरिडिथ ने कहा, अब बताओ बात क्या है।

जॉन ने कहा, पहले बोतल का मुँह खोल लेने दो, फिर अपना मुँह खोलता हूँ।

परिचय

जिसकी उम्मीद न थी, उस मिलन का विस्मय जब कट गया, तो पहले रेशमी ने बात की। कहा, दीदी! आखिर तुम्हे भी उस रेशमी के लिए कर्ज चुकाना पडा।

टुशकी समझ गई, रेशमी को अभी भी उसका परिचय नहीं मालूम हो सका है। परिचय दिया कैसे जाए? कुछ समझ मे नहीं आ रहा था। फिर सोचा, छोड़ो भी, बातो-बातों मे आप ही निकल आएगा। पहले से कोशिश करने से क्या लाभ।

दुनिया मे कौन किसका कर्ज चुकाता है बहन, मनुष्य की मजाल क्या है कि पराया कर्ज चुकाए।

मैं तत्त्व को बड़ी बातें नहीं जानती दीदी, लेकिन इतना निश्चित समझती हूँ कि तुमने जिस ढंग से कर्ज चुकाया, वह रेशमी की सगी बहन भी होती, तो नहीं चुका सकती।

टुशकी ने देखा, असली बात कहने का यही मौका है, लेकिन मुँह से पहले आँखो में आँसू आ गये, दोनों गीले हो गए।

रेशमी ने समझा, ये आँसू रात के अनुभव के कारण है। उसकी भी आँखें भर आई। सोचा, टुशकी को यह अपमान मेरे ही लिए सहना पड़ा। तो अब इससे अपने को छिपाना क्या। ऐसे उपकारी से भी अपने को छिपाना चाहिए भला! फिर सोचा, कल रात परिचय देने की तै तो कर ही चुकी थी। फिर कैसी झिझक? मगर वह झिझक जा नहीं रही थी।

उसे इस भार से उबार लिया टुशकी ने। कहा, तुमने कैसे जाना कि अगर तुम्हारी अपनी बहन होती तो इस ढंग से कर्ज नही चुकाती ?

कैसे जानूं होती तब तो।

कभी नहीं थी ?

रेशमी जरा भी हिचके बिना बोली, नहीं, नहीं थी।

टुशकी ने सोच रक्खा था, धीरे-धीरे बातों-बातों में चोट सहाते हुए अपना परिचय देगी। लेकिन रेशमी के इनकार कर जाने से उसका सारा धीरज टूट गया — कीड़ों का खाया पेड़ एक पल मे गिर गया। मनुष्य संभवतः सब कुछ सह सकता है, एक बात नही सह सकता है, बेनामी कृतज्ञता।

वह एक बार फफक कर रो पड़ी।

रेशमी ने पूछा, रो क्यों रही हो टुशकी दीदी ?

अरी टुशकी नहीं, टुशकी नहीं, टूनी दीदी कह।

टूनी ! रेशमी एड़ी-चोटी तक कांप उठी। क्या कहे, सोच न सकी। टुशकी ने यह नाम कैसे जाना ?

मजबूत बाँध मे पहले छेद से जब चुल्लू भर पानी बह आता है तो कारीगर सोचता है, मरम्मत कर देने से काम चल जाएगा। लेकिन तभी यहाँ-वहाँ दरारें दिखाई दे जाती है और उसकी तादाद तथा विस्तार बढ़ जाता है। थोड़ी देर के बाद बाँध का अस्तित्व ही नहीं रह जाता।

अबकी बाँध की एक चट्टान टूट गिरी। टुशकी ने कहा, छोड़, मत अब छिपा। कल जब दुष्ट मुझे पकड़ लाया तो सोचने लगी, भगवान, तुमने मुझे किस कसौटी में डाला। लेकिन जब मैंने सुना कि मुझे रेशमी समझ कर पकड़ा है—

सभी को यही समझ कर लाता है—

लेकिन सब तो उसकी अपनी बहन नहीं होती—

कहती क्या हो तुम।

टुशकी चीख उठी, अरी ओ रेशमी, अब तक तू अपने को छिपाए क्यों रही, क्यों नहीं बताया कि तू मेरी सगी बहन है, रेशमी है तू !

रेशमी को अनसोचे की चौंक लगी। कहा, यह सब क्या कह रही हो तुम ? खोलकर बताओ।

लेकिन खोलकर कहना क्या आसान था ! यह तो दु:ख की बात थी, शर्म की। जो जीवन जमीन से नीचे दबा पड़ा था, उसे निकाल कर कहने की बात थी। फिर भी कहना पड़ा।

अच्छा रेशमी याद है तुझे, तेरी एक बहन थी टूनी ?

रेशमी की आँखों, चेहरे पर बिजली भरा मौन उतर आया।

तुम टूनी हो ? रेशमी और कुछ न कह सकी।

मैं टूनी हूँ, हाँ ! जोड़ामऊ गाँव की। तू रेशमी है, जोड़ामऊ गाँव की रेशमी।

वह बार-बार यही कहने लगी। जीवन्मृत व्यक्ति जैसे बार-बार बदन पर चोट करके देखता है कि शरीर में सचमुच जीवन की अनुभूति है या नहीं।

रेशमी का विस्मय जा नहीं रहा था। वह बोली, तुम टूनी दीदी ! तो माता जी, पिता जी, नाड़ू कहाँ है ? उनकी बात याद जरूर नहीं आती लेकिन चूँकि छुटपन से ही सुनती आयी हूँ, इसलिए सब मानो साफ देख पाती हूँ।

वे सब कोई नहीं रहे बहन ! मैं भी न रही होती, तो अच्छा था।

गहरी खान के किनारे पाँव फिसल कर गिरने से ठीक पहले यह कैसा अंतिम रहस्यमय परिचय। दो क्षण और नहीं होता परिचय तो क्या हर्ज था। आश्चर्य है यह जीवन !

अब तक एक ही घर में दोनों का जीवन समानांतर चल रहा था, जल की दो धाराओं का कहीं मिलन नहीं हुआ। आज दु:ख की बाढ़ में

तीर से छलक कर दोनों नदी एकाकार हो गई।

दोनों बहनें एकांत मे बैठी अपनी-अपनी राम कहानी सुनाने लगीं। टुशकी ने गंगासागर की यात्रा, समुद्री लुटेरो का हमला, सबकी मृत्यु और अपने कलकत्ते आने की बात बताई। कलकत्ते के बारे मे कहते समय बहुत-बहुत बातें छूटी रह जाती, जिन्हे भाँप लेने मे रेशमी को देर नही लगती — आखिर उसका भी तो परिचय हुआ है जीवन से।

फिर रेशमी ने आप बीती सुनाई। एक मरते हुए से विवाह, चंडी बख्शी का लोभ, चिता से उठ भागना, कैरी का आश्रम, मदनावाटी, कलकत्ता आना, रोज एलमर, — सब! जॉन से अपना सम्बन्ध भी वह छोड़ नही सकती थी, छोड़ती तो श्रीरामपुर की घटना भी छोड़नी पड़े, मोती राय की बात भा छूटे।

टुशकी और रेशमी, दोनो ने यह आविष्कार किया कि परिचय के बहुत पहले से ही वे दोनो धागो से बँध गई है — वे धागे है राम बसु और नाढा।

दोनो ने ही मन मे सोचा और अंत मे कहा भी, कायथ दा होते तो कोई किनारा होता इसका। पता नही, कहाँ चले गए वे।

यह भी सोचने लगी, काश, यह नाढ़ा उनका भाई होता।

लेकिन वे यह कैसे जानें कि उपन्यास मे जिस प्रकार सारे बिखरे सूत्र सहज ही जुड़ जाते है, जोवन मे वैसा नही होता! दो-चार बिखरे धागे अन्त तक बेसहारे-से झूलते ही रह जाते है।

लज्जा और दुःख से भरी उनकी कहानी आखिर तक खत्म हो आई और उन्हे भविष्य की चिंता होने लगी।

दोनो कुछ देर तक चुप बैठी रही, उसके बाद अचानक टुशकी बोल उठी, तो तुम जॉन से ब्याह क्यो नहीं कर लेती रेशमी?

बनावटी अचरज से रेशमी ने कहा, वह ईसाई जो है।

टुशकी ने वास्तविक विस्मय के साथ कहा, तो क्या हुआ, ईसाई जॉन क्या हिन्दू मोती राय से बुरा है?

असली बात रेशमी बता नहीं पा रही थी। जॉन में अपने व्याह का आभास उसने जरूर दिया था, लेकिन आगे चलकर जॉन ने उसे छोड़ दिया, तोहमत लगाई — यह सब छिपा गई थी। कौन-सी लड़की ये बातें जाहिर करना चाहेगी?

लेकिन जॉन की चर्चा आ जाने से इस संकट से छुटकारे का एक उपाय दीखा। बातें करते-करते ही रेशमी, टुशकी को छुड़ाने का उपाय सोच रही थी। कल रात टुशकी ने अपने को रेशमी बताकर उसे बचाया है, आज रेशमी क्या उसे नहीं बचा सकती?

जॉन का प्रसंग आने से लगा, अब शायद उसकी तरकीब मिल जाएगी। कहा, इतने दिनों से मैं लापता हूँ, हो सकता है, जॉन ने व्याह का इरादा छोड़ दिया हो।

टुशकी ने कहा, पता चलते ही फिर वह इरादा अचल हो उठेगा।

लेकिन उसे पता कैसे चलेगा दीदी? वह कैसे जानेगा कि हम लोग यहाँ कैद हैं।

हाँ यह तो सही है। टुशकी चुप हो गई। जॉन को खबर भेजने का उपाय नहीं सूझ रहा था।

रेशमी ने कहा, एक काम करो दीदी। मैं गाँव का पता देती हूँ। तुम उसे जाकर कहो तो वह जरूर कोई उपाय करेगा।

रेशमी को मालूम था, जॉन के मन की जो दशा है कि उससे कोई उम्मीद नहीं की जा सकती। और उसने यह प्रस्ताव भी उस इरादे से नहीं किया था। वह चाहती थी, इसी बहाने टुशकी को वहाँ से बाहर जाने को राजी करना। अपना कर्त्तव्य वह एक प्रकार से स्थिर कर चुकी थी।

रेशमी की बात सुनकर टुशकी ने कहा, लेकिन यहाँ से जाने का हर रास्ता बन्द जो है।

तुम भी क्या कहती हो! जब तक साँस, तब तक आस। कोई न कोई उपाय करना ही होगा। आखिर जीना है न!

और तुम!

तुमसे सब कुछ सुनने के बाद अगर जॉन आ पहुँचा तो ठीक ही है और न भी आया, तो मैं निकल भागूंगी।

टुशकी के चेहरे पर संशय की छाप पड़ी रही। रेशमी ने कहा, मैं भागने की खूब आदी हो गई हूँ दीदी! चिता से भागी, मोती राय के गुंडों के चंगुल से निकल कर भागी — फिर भाग जाऊँगी।

टुशकी ने सरलता से विश्वास कर लिया। लेकिन तो भी पूछा, लेकिन उपाय?

वह देखो, उपाय आ रहा है।

इतने मे खुदीराम आया। बोला, स्नान-भोजन नही होगा?

भूखे रहने से कहीं मुँह-आँख धँसी दीखी तो मालिक मेरा एक न बाकी रक्खेंगे। शाम को दोनों की जोड़ी खूब मिलेगी।

खुदीराम हँस पड़ा।

टुशकी ने घृणा से मुँह फेर लिया। लेकिन रेशमी का भाव और ही रहा। वह स्नेह से हँसती हुई बोली, तुम्हारा भी नहाना-खाना अभी नहीं हो पाया है खुदीराम भैया?

खुदीराम भैया जरा नर्म पड़ा। बोला, मेरे नहाने-खाने की न पूछो। तुम लोगों की चौकसी कर रहा हूँ।

अहा, तब तो तुम्हें बड़ी तकलीफ है।

बीस साल से ऐसा ही चल रहा है।

बीस साल! कहते क्या हो भैया, बीस साल से नहीं खाया? तुमने तो लछमन को मात दे दी। वह तो सिर्फ बारह बरस नही खाकर रहा था।

खुदीराम हँसने लगा।

टुशकी चुपचाप खुदीराम को देख रही थी। उसे वह बड़ा घिनौना दीखा! नीचे से ऊपर तक स्याही-सा काला, एक पाँव टूटा हुआ — और वह काला रग सर के सफेद बाल से, सफेद भवों से, सफेद दाँतों से, आँखों के सादे हिस्से से और गाढा लग रहा था। सफेद की आभा ने

काले रंग को चमका दिया था।

टुशकी सोचने लगी, इस घिनौने पाषाण से रेशमी का व्यवहार कैसा सदय है।

खुदीराम ने रेशमी के मजाक का जवाब दिया, खैर लछमन तो बारह बरस बिना खाये रहा था, मगर सीता तो भूखी नहीं थी। उठो, नहा-खा लो। उधर फिर रावण आएगा।

रेशमी ने हँसकर कहा, रावण के लिए तैयार बैठी हूँ।

अलबत्! यही चाहिए। मगर यह रावण धँसी आँखें नहीं पसन्द करता। तिस पर तुम्हें देखने के लिए आज शहर के बड़े लोगों की भीड़ जमेगी। सबको न्योता दिया गया है।

रेशमी ने आग्रह के साथ कहा, तब तो जरूर नहा-खा लेना चाहिए। उतने-उतने लोगों के सामने सूखी-फीकी सूरत लिए जाने से मालिक तुम्हारी फजीहत करें शायद।

सिर्फ़ फजीहत! मारे चाबुक के चमड़ी उधेड़ देंगे! यह देखो — खुदीराम ने अपनी पीठ के कुछ दाग दिखाए।

दाग देखकर रेशमी को सचमुच दुःख हुआ।

खुदीराम ने कहा, मुझे रखा क्यों है, जानती हो दीदी? मेरे इस काले रंग के लिए। यह रंग चाबुक के निशान छिपा लेता है।

छोड़ क्यों नहीं देते हो यह काम?

शौक से भी कोई ऐसा काम करता है?

फिर?

छोड़ना चाहूँ तो कुत्ते की मौत मार डालेंगे।

क्यों?

क्यों का क्या कहूँ? इस बगीचे का बहुत-सा राज जो मालूम है मुझे। मालिक सोचते हैं, यहाँ जब तक हूँ, तब तक तो मुँह सिला हुआ है, काम से अलग हुआ कि जबान खुलेगी।

तुम्हें सचमुच बड़ा कष्ट है खुदीराम! रेशमी ने उसाँस ली।

राक्षस मोती राय का फरमाबरदार खुदीराम कुछ कम राक्षस नहीं।

मगर कोई भी राक्षस सोलहो आना राक्षस ही नहीं होता। उसे बनाते वक्त सृष्टि करने वाले की उँगली का जहाँ स्पर्श होता है राक्षस-शरीर पर वही बंधन थोड़ा ढीला रह जाता है। रेशमी के सदय व्यवहार ने उस बंधन को कुछ और ढीला कर दिया।

रेशमी ने कहा, तब तो अब नहाने-खाने की तैयारी करूँ। नहीं तो तुम्हारी दुर्गत न करे कहीं। मगर तुम एक काम क्यों नहीं करते खुदीराम भैया, इस टुशकी को छोड क्यों नही देते?

सो कैसे हो सकता है।

क्यों नही हो सकता! खुद मालिक के ही मुँह से तुमने सुन लिया कि असली रेशमी मैं हूँ।

यह तो बेशक सुना है।

फिर इसे रोक कर रखने से क्या लाभ?

लेकिन छोड देने को तो कहा नहीं है।

नही, छोडने को नही कहा है — यह तो समझने की बात है। समझे न, और कोई होता तो वे खोलकर कहते, तुम्हारे जैसे चतुर को कहना फिजूल है, यही समझ कर नही कहा।

अपनी तारीफ से खुदीराम खुश हुआ। बोला, हाँ, सो तो है।

फिर क्या है। छोड दो इसे। चलो, मुझे नहान-घर दिखा दो।

क्यों, नही कहा जा सकता, दीनतम आदमी का मन भी ज्ञानी से ज्ञानी के लिए अजाना रहता है। खुदीराम टुशकी को छोड देने के लिए राजी हो गया।

टुशकी दीदी, तो तुम जाओ। — कहकर खुदीराम आगे बढ़ गया। लेकिन अन्त मे टुशकी अड़ गई। रेशमी से कहा, मैं तुम्हें अकेली छोड कर नही जा सकती।

रेशमी ने समझाया, एक साथ दोनो का चल देना मुमकिन नहीं। तुम चल दो। जॉन से सारा हाल कहो; कायथ दा से भेंट हो तो उसे

भी सब कहना। मेरे छुटकारे का इसके सिवाय दूसरा उपाय नहीं है। उठो, चल दो तुम। नही तो फिर कोई आ जाएगा। सारा गुड़ गोबर हो जाएगा।

बहुत मना-मनू कर जॉन का ठिकाना बताकर टुशकी को किसी तरह से विदा किया। वह रोती हुई गई। कहती गई, मैं जल्द ही उन मंत्रों को लेकर आती हूँ, इतनी देर तुम होशियार रहना।

रेशमी ने हँसकर कहा, तुम मेरे लिए फिक्र मत करो दीदी। मैंने अपना कर्त्तव्य ठीक कर लिया है।

उसके अन्तिम शब्दों का मतलब टुशकी ने डूब कर नही देखा। रेशमी को छुड़ाना है, यह संकल्प लेकर वह खुदीराम के पीछे चल दी।

रेशमी का संकल्प

रेशमी ने तै कर लिया, मैं मरूँगी। जियूँ किसलिये? आदमी आशा से जीता है। मुझे कौन-सी आशा है?

वह टुशकी को अपनी मौत की संगिनी या गवाह नहीं बनाना चाहती थी, इसलिए किसी बहाने उसे उसने विदा कर दिया वहाँ से। इस बात को रेशमी से ज्यादा कौन जानता था कि जॉन से मदद की कोई उम्मीद नहीं है। एक युग के बाद अपनी खोई हुई बहन को पाया, मगर यह पाना न पाना समान था। दो-एक दिन पहले उसे पाया होता तो पाना कहाता। लेकिन यह पाना तो वैसा ही हुआ, खान में किसी गिरते हुए को पाना। यह पाना, नही पाने-सा ही नहीं है क्या? और मदन-मोहन! ऐसे दुर्दिन में वे दगा देंगे, यह कौन जानता था। उस बूढी औरत ने बताया था, दुष्टों के सरताज है ये। धोखा देने में इनकी मिसाल नहीं।

सब कुछ छोड़कर उन्हे न पकड़ो तो वे पकड़ मे नहीं आते। रेशमी उसे सच ही सब छोड़ कर नही पकड़ सकी। जॉन को पता चला कि बंधन ढीला हुआ और मदनमोहन खिसक गए। जॉन, टुशकी, मदन-मोहन — तीनों ही कुल गए उसके, फिर आशा कौन सी रही ? क्यों जिंदा रहे वह ? हाथ की पाँचो उँगलियाँ मौत का इशारा करती है।

मौत की बात आने पर उसे फुलकी की याद आई। उसने कहा था मैं मरना नही चाहती और मौत से डरती भी नहीं। आसमान की ओर दिखाते हुए उसने कहा था, उस मेघ के टुकडे-सी जाने कब खो जाऊँगी। फिर डरना कैसा ?

रेशमी बोली थी, मौत के बाद क्या हागा, यह सोचकर डर नही लगता ?

फुलकी हँसकर बोली, मृत्यु से पहले क्या है, यह तो देख ही लिया। मरने के बाद इससे बुरा क्या होगा ? न, मुझे डर नहीं लगता।

फुलकी के प्रसंग मे और भी बहुत-सी बातें याद आई उसे। फुलकी ने कहा था, ये मर्द बेतरह लोभी होते हैं। मिठाई पर नजर पड़ते ही खाउँ-खाउँ करने लगते है। पहरा भी कितना दिया जाए ? सो थोड़ा-सा दे देती हूँ चखने के लिए, खुश होकर चला जाता है।

रेशमी सोचने लगी, यह मिटाई तो लेकिन जिसको-तिसको दे देने की है नही। यह तो एक ही के लिए निवेदित है। निवेदित न भी हो चाहे, जिस-तिस को कैसे दे दे ? यहीं पर फुलकी मे रेशमी का मेल नही बैठता।

नहान-घर मे टब के पानी से अपने आँसू को मिलाती हुई बैठी सोचती रही वह। इतने में किसी ने दरवाजा खटखटखाया — अरी ओ रेशमी दीदी, हो गया ? बेला झुक आई।

कपड़े बदल कर निकल आई। खुदीराम ने कहा, अब कुछ खा लो।

रेशमी ने कहा, नहीं ! इस समय नही खाऊँगी।

खुदीराम ने दो-चार बार कहा। आखिर लौट गया। दुमंजिले पर

से नीचे के तल्ले मे होते हुए काम-काज की हलचल का आभास मिल रहा था। कमरो मे झाड़-फानूस की व्यवस्था हो रही थी। नाचघर का जो हिस्सा वहाँ से दिखाई दे रहा था; उसमे सफेद चादर, जरी का तकिया, फूलों की भरमार; बरामदे के एक ओर आतिशबाजी का ढेर लगा था; बगल के कमरे मे शराब की बोतलें कतार से सजी रक्खी थीं। खिड़की से बाहर झाँका। मारे बगीचे ने एकाएक जैसे एक विशाल विलास का दुःस्वप्न देखना शुरू कर दिया।

यह इतनी तैयारियाँ उसी के लिए। रेशमी मन ही मन हँसी, लेकिन समझ नहीं सकी कि उस हँसी मे उसके अजानते ही जरा गर्व भी मिला हुआ था।

खुदीराम आया। उसने रेशमी के सामने एक पिटारा रख दिया।

क्या है उसमे ?

खुदीराम ने कहा, उसमे पेशवाज है, अँगिया है, ओढनी है, घुंघरू है और है सोने के गहने!

ये सब किसलिए ?

जरा सुनो इसको ! अरे, तुम क्या पुराने कपड़े पहन कर महफिल में जाओगी ? तुम्हे देखने के लिए आज शहर के बड़े लोग टूट पड़ेंगे।

संक्षेप मे रेशमी ने कहा, क्यों नहीं !

फिर क्या सजो-सँवरो।

उसके बाद कहा, तुम्हारी बारी मे अभी देर है। पहले निकी बाई जी का गाना होगा, उसके बाद तुम्हारी बुलाहट होगी। समझ लो, दस बजे से पहले नहीं।

रेशमी ने कहा, खैर ! तुम जाओ। मैं ठीक समय पर सजी-गुजी निकलूंगी।

पिटारे को लेकर दरवाजा अन्दर से बन्द कर लिया।

युद्ध-यात्रा

तीसरे पहर बिगुल बज उठा। देखते ही देखते गोरे-काले सौ से ज्यादा आदमी जॉन के दफ्तर के सामने जमा हो गए। घोड़े भी सौ से ज्यादा ही थे। इस फौज मे पैदल चलने को कोई राजी न था — सब घुड़सवार! जॉन, मेरिडिथ, प्रेस्टन, अगलर और राम वसु ने सबको कतार मे खड़ा करना शुरू किया। जॉन, मेरिडिथ, प्रेस्टन और अगलर अगल-बगल, उनके ठीक पीछे राम वसु। उनके बाद दो पंक्तियो मे सौ के करीब घुड़सवार — उनमे नाढ़ा और गंगाराम भी थे।

ऐसी अजीब फौज का संचालन करना न तो क्लाइव को नसीब हुआ, न नेपोलियन को! जात, शिक्षा, पोशाक, हथियार, घोडे सब में वैचित्र्य का चरम। अंगरेज, बंगाली, ईसाई, हिंदू, मुसलमान — कोट-पतलून, धोती-पजामा — बंदूक, पिस्तौल, लाठी, भाला — रेस का घोडा, कीमती अरबी घोड़ा और फकीर का टट्टू — क्या नहीं था। मुहल्ले के लोग अवाक्। रास्ते के कुत्ते भी भौंकना भूल गए जुलूस की इस विचित्रता से।

कादिर अली पगड़ी बाँध रहा था! लोगों ने कहा, मियाँ, तुम क्यों? उमर हो गई, घर ही रहो।

जवाब में सामरिक हँसी हँस कर कादिर अली ने कहा, भाई जान, बूढ़ा हुआ तो क्या, रुस्तम आखिर रुस्तम ही है! लडाई का दमामा सुनकर वह भला घर मे बैठा रह सकता है?

घोड़ा मिल गया?

मिल गया है एक जैसा-तैसा।

समय आने पर नजर आया, कादिर अली एक गधे पर सवार है।

यह कैसा घोड़ा है मियाँ?

अजी, घोड़ा और गधा एक ही जात के होते है।

बहुत खूब! मगर सबसे पीछे जो रह गए?

कादिर ने कहा, लौटती बेर सबसे आगे रहूँगा। अजी साहब, अल्लाह-ताला ने दुनिया बनाई, आगे और पीछे को बनाया आदमी ने। अल्लाह की निगाहों मे सब समान है।

ऐसी तत्व ज्ञान की बात कौन काटे ! सब चुप रहे। विजयी कादिर अली फिर सामरिक हँसी हँसा।

नाढा और गगाराम की उमर कुछ कम थी। उन्होने समझा, पोशाक के मामलों मे लोग मुँह देखादेखी करेंगे, सो वे एक चीन्हे जाने जात्रा वाले की दूकान पर गए और साज-पोशाक, अस्त्र-शस्त्र से सजे-सजाये लौटे। ठीक लड़नेवाले बहादुर जैसे ! आँखें चौंधिया जाती देखकर।

फौज को एक बार देखकर जॉन ने इशारा किया कि बिगुल बज उठा। कूच करने का आदेश हुआ। एक साथ पचीस बन्दूक की आवाज़ हुई। फौज काशीपुर की तरफ चल पड़ी।

जॉन, मेरिडिथ, प्रेस्टन और अगलर ने गाना शुरु किया,

नन बट दी ब्रेव
नन बट दी ब्रेव
नन बट दी ब्रेव डिजर्व्स दी फेयर

साहबों ने गाना शुरु किया तो देशी लोग कैसे चूकें। अजीबो-गरीब सुर में इधर भी शुरु हो गया। पलासी के युद्ध के समय की कुछ कड़ियाँ उस समय लोगों की जबान पर थी। वही गाने लगे —

तिलंगे सब छोटे-छोटे
लाल अँगरखा बाँधे
तीर छोड़ते घुटना गाड़े
मीर मदन को साधे।
मीर मदन गिर पड़ा, खड़ा है
डटकर मोहन लाल,
जाफर की बेइमानी से
हो गया नवाब बेहाल।

किसी-किसी को पलासी की लड़ाई के इतिहास से संतोष न हुआ। वह तड़प कर क्लाइव से हेस्टिंग्स के जमाने में आ गया —

हाथी पर हौदा घोड़े पर जीन,
जल्दी चलो, जल्दी चलो वारेन हेस्टीन।

गीत भी चलता रहा, पाँव भी चलते रहे। फौज कसाईटोला से चीतपुर रोड पर जा निकली। सड़क के किनारे के मकानों की खिड़कियाँ खुल गई — जा कहाँ रहे हैं ये लोग?

किसी ने कहा, साहब लोग शिकार खेलने जा रहे हैं तो किसी ने कहा, सुखचर में पड़ाव पड़ेगा। ज्यादातर लोग कुछ भी न बोले, चुपचाप ही रहे।

इतने में गंगाराम जोर गले से गा उठा —

पामकिन कद्दू कोंहड़ा, कोकोवर खीरा।
ब्रिजल्न बैंगन, डाइमंड हीरा।

इस गीत को युद्ध का गीत नहीं कहा जा सकता, किन्तु उसने समझ लिया था कि देश काल पात्र के हिसाब से अंगरेजी गाना ही गाना चाहिए। पूंजी जो थी उसमें, यही अंगरेजी गीत के ज्यादा करीब पड़ता था। उसके अंगरेजी गीत से जितना ही चकित होने लगे लोग, उसका गला उतना ही ऊँचा उठने लगा —

ब्रिजल्न बैंगन, डाइमंड हीरा!

जो अंगरेजी नहीं जानते थे, जलन से कानाफूसी करने लगे।

अरे, रट के आया है, नहीं तो विद्या-बुद्धि में उसकी दौड़ कहाँ तक है, हम खूब जानते हैं।

विशुद्ध अंगरेजी या बंगला गीत से गंगाराम का खिचड़ी गीत इस खिचड़ी टुकड़ी द्वारा ज्यादा अभिनंदित हुआ, यह देखकर नाढा ने ठुमरी, ताल और खमाच रागिनी में शुरू कर दिया,

राइट दाएँ लेफ्ट बाएँ
अंडर नीचे

कट फाटो कॉट खाट
फॉलोविंग पीछे।

वाह भाई, क्या कहने।
तुम लोग नहीं होते तो क्या जमता ऐसा !
दोनों में लगे होड़।

पाँत तोड़कर सब उन दोनों को घेर कर खड़े हो गए। समझिए कि लड़ाई की यात्रा नाटक-यात्रा मे बदल गई। जॉन गरजा, चाबुक फटकारा उसने। महफिल तो उससे टूट गई, लेकिन गीत ज्यों का॰त्यो चलता ही रहा !

जॉन ने कहा, मुंशी, आप कैसे चुप है ? गाइये कुछ।

मै तो जंगी गीत जानता नही। क्या गाऊँ।

ऐ आप जगी गीत नही जानते है ! आप लोगो की गॉडेस काली तो ग्रेटेस्ट वारियर है। उसी का गीत गाइए कोई।

खैर, तो सुनिये। वसु ने शुद्ध रामप्रसादी सुर मे शुरू कर दिया,

आ माँ समर सावन में
माँ या वेटा कौन जीतता है
देखें तो रण में।

वास्तविक लड़ाई मे आध्यात्मिक युद्ध का सुर मिल जाने से एक अनोखी ही आवहवा की सृष्टि हुई ! उस सगीत मे सो घोड़ों के चार सौ पैरों की ताल ! सभी तन्मय होकर सुनने लगे।

जॉन, अनुवाद करके समझा दूँ क्या ?

मेरिडिथ बोल उठ", ऐसी कोशिश भी मत कीजिए मुन्शी। ये दैवी संगीत अनुवाद के [illegible] मे नहीं टिकते।

तुमने कैसे जा[illegible] ? प्रेस्टन और अगलर ने पूछा।

तो एक अनुभव बताऊँ। जब मुल्क मे था तो हे-मार्केट थिएटर की एक अभिनेत्री के रूप पर मै मुग्ध हो गया था। नाटक मे वह ग्रीक पुराण

की देवी बना करती थी। ओह, क्या रूप था उसका, कैसी पोशाक! बड़ी-बड़ी आरजू-मिन्नत और बहुत-बहुत पैसे देकर एक रात उसके पास रहने का मौका मिला था।

रहने दो, रहने दो! जॉन बोल उठा।

रहने क्यों दूँ! अनुवाद के मानी क्या है, भाषा की पोशाक खोल लेना। यही तो? उस ग्रीक देवी के अनुवाद से मुझे मिला एक ककाल बुढ़िया! धरमदंड देकर खिसक आया। तभी से अनुवाद से मुझे वितृष्णा हो गई है। खासकर देवी-देवता के सम्बन्ध में।

सभी ठठा कर हँस पड़े।

राम बसु ने कहा, तो फिर छोड़िए। लेकिन तर्ज कैसा लगा?

बिलकुल जगी। हर गिरकिटी में संगीन का खोंचा।

जॉन की फौज जब जोड़ासाको की गली के पास पहुँची तो उधर से आती हुई एक खूबसूरत-सी गाड़ी को बाधी हुई।

गाड़ी गली के रास्ते पर निकल रही थी। फौज के शोरगुल से गाड़ी से दो खूबसूरत युवकों ने बाहर झाँका।

द्वारिक बाबू, क्या मामला है?

कैसे कहूँ दीवान जी?

ठीक है। कलकत्ते में यह रोजमर्रे की घटना है।

हो रोजमर्रे की, लेकिन आज कुछ ज्यादा है।

यों जो कहो द्वारिक बाबू, रंगपुर में हम मजे में है। वहाँ ऐसी अशांति नहीं है।

इन साहबों की हिमाकत बढ़ रही है दीवान जी।

इसका क्या प्रतिकार है, मालूम है? अपनी हिमाकत को और बढ़ा लेना।

वैसी आशा करने लायक चौड़ाई नही है छाती की।

हो जाएगी, हो जाएगी चौड़ाई द्वारिक बाबू! जब एक चिड़िया बोली है, तो हजार भी बोलेंगी। सुबह होने में अब विलंब नही है।

फौज आगे बढ गई। गाडी गली मे निकल कर दूसरी गली में पूरब की ओर मुड गई।

कुछ देर मे जॉन दल-बल सहित मदनमोहन तल्ला पहुँचा।

राम बसु जॉन को मदनमोहन का परिचय देने जा रहा था कि नाढा चीख उठा, कायथ दा, टुशकी दीदी!

टुशकी जॉन के दफ्तर के लिए ही निकली थी। भीड़ देखकर एक किनारे खड़ी हो गई। नाढ़ा ने उसे देख लिया।

उसने जोर से कहा, बटालियन हा....ल्ट।

घोड़े से उतर कर राम बसु टुशकी के पास गया। जॉन ने राम बसु से रेशमी को आश्रय देनेवाली टुशकी का नाम सुन रक्खा था। लिहाजा उसने समझा, घटना अब चरम परिणाम की ओर मुड़ी।

जलसे का निमन्त्रण पत्र पाते ही माधव राय दौड़ा गया शोभा बाजार — राधाकांत देव के पास। कहा, हुजूर, आज काशीपुर के बगीचे में औरतों पर अत्याचार होने की संभावना है। यह देखिए चिट्ठी।

राधाकांत देव ने चिट्ठी पढी। बोले, इसकी हिमाकत तो खूब है। यह तो राघो डकैत की तरह सूचना देकर जुल्म ढाता है। खैर! एक काम करो। मेरी चिट्ठी लेकर लाट-कौंसिल के सेक्रेटरी मैकार्थी के पास जाओ।

माधव राय उनकी चिट्ठी लेकर मैकार्थी के पास गया। मैकार्थी ने स्पोकर के नाम एक चिट्ठी लिखकर माधव राय को दी। चिट्ठी में लिखा, फौरन पुलिस लेकर काशीपुर के बगीचे में पहुँचो! औरतों पर जिससे जुल्म न हो पाये।

भीतर-भीतर स्पोकर को मोती राय से सहानुभूति थी। लेकिन होने से क्या होता, लाट-कौंसिल के सेक्रेटरी की चिट्ठी मोती राय के जुल्म से

ज्यादा महत्त्व की थी। वह लगभग पचीस सिपाहियों के साथ फौरन काशीपुर रवाना हो गया।

माधव राय को माँगी मुराद मिली। वह अपने घर लौट गया।

सब ने पूछा, आप काशीपुर नही जाएँगे ? बगीचे के जलसे मे ?

माधव राय बोला, बाप रे, मोती भैया का न्योता, बिना गए खैर है भला।

तो फिर यह लोक-लस्कर क्यों साथ लिए चल रहे हैं ?

अरे बाबा; राजा के न्योते पर राजा जैसा हो जाना चाहिए।

फिर हँसकर बोला; राजा न सही, राजा का भाई तो हूँ।

पचीस के करीब प्यादे-सिपाही लेकर माधव राय ब्रूहम पर सवार होकर काशीपुर चल पड़ा।

सारा कलकत्ता शहर ही आज काशीपुर की ओर जा रहा था।

टुशकी ने संक्षेप मे पिछले एक महीने का किस्सा राम वसु को बताया। सौरभी ही रेशमी है और उसकी सगी बहन है — सब खोल कर बताया। छिपाया कुछ भी नहीं।

स्थिति स्वाभाविक होती, तो इन बातों के कहने-सुनने मे थोड़ा समय लगता। लेकिन जल्दी थी, सो बातें भी जल्द ही खत्म हुई। संकट के समय आदमी एक डग में दस डग पार करता है।

राम वसु और नाढ़ा काठ के मारे-से सुनते रहे खड़े-खड़े। किस्सा खत्म हो जाने के बाद भी उनके मुंह से बात नहीं फूटी। पहले नाढ़ा ही बोला, यह तो परियों की कहानी हो गई। अब वह खोया भाई मिल जाय तो बस किस्सा खतम पैसा हजम।

बहुदर्शी राम वसु ने कहा, दुनिया की परियों की कहानी इतनी जल्दी खत्म नहीं होती और पैसा भी इतनी आसानी से हजम होनेवाला नहीं।

राम वसु ने टुशकी से कहा, चल, जॉन से तेरा परिचय करा दूँ। यों राम वसु ने जॉन और दल-बल के रवाना होने की बात टुशकी से पहले ही कह दी थी। टुशकी ने भी कहा कि मैं जॉन ही के पास जा

रही थी। तुमसे भेंट हो जाने की आशा कतई न थी।

राम वसु ने जॉन से कहा, जॉन, यह रेशमी की सगी बहन है। इनके जीवन में कामेडी आफ एरर्स बहुत है, बहुत रोमांस है — वह सब फिर कभी बता दूंगा। फिलहाल इतना ही। हाँ, यह रेशमी की खबर देने के लिए आपके ही पास जा रही थी।

जॉन ने टुशकी का अभिवादन किया। कहा, आपसे रेशमी की खबर मिली, इससे बहुत कुछ निश्चिंत हुआ। लेकिन जब तक उसे उस दुष्ट के चंगुल से छुड़ा कर नही ले आता, तब तक पूरी तरह निश्चिंत हो सकना सभव नही।

जॉन ने मेरिडिथ, गेस्टन आदि को टुशकी का परिचय दिया।

मेरिडिथ ने गेस्टन और अगलर को एकांत मे ले जाकर कहा, उषा की सुन्दरता प्रभात के सौंदर्य की सूचना दे रही है। जॉन ठगाया नहीं है।

गेस्टन ने कहा, ऐसी लड़की के लिए लड़ाई लड़ने मे आनंद है।

अगलर ने कहा, महज लड़ाई क्यों, मरने मे भी आनद है। नही तो इलियट काव्य नहीं लिखा जाता।

राम वसु ने कहा, अब विलंब करना ठीक नही। बटालियन अटे-न्शन — बटालियन मार्च! जॉन ने कहा।

मदनमोहन तल्ला और बागबाजार को विस्मित-चकित करती हुई वह टुकड़ी फिर रवाना हुई।

राम वसु ने पूछा, तू साथ चलेगी टुशकी?

और नहीं तो क्या, यहाँ रहूँगी।

मगर तू घोड़े पर जो नहीं चढ सकती।

पैदल ही चलूँगी।

पैदल! घोड़ों के साथ पैदल कैसे चल पाएगी?

कादिर मियाँ ने मसला सुलझा दिया। बोला, बीबी अगर उसके घोड़े पर बैठें, तो वह अपना घोडा दे सकता है!

दुशकी बोली, मगर यह घोड़ा कैसा है कायथ दा।

कादिर अली ने भर मुँह हँसकर कहा, सवार के गौरव से कंवख्त का गधा-जन्म छूट जाएगा।

राम वसु ने कहा, मियाँ की जवानी अभी गई नहीं है।

खूब कही मुंशी जी। बहादुर आदमी की जवानी और वीरता कभी जाती नहीं।

लाचार दुशकी घोड़े पर सवार हुई।

राम वसु ने कहा, कम्बख्त का गधा-जनम छूट गया। अगले जनम में उच्चैश्रवा होकर कार्तिक-गणेश को पीठ पर चढ़ाए दौड़ता फिरेगा।

दुशकी बोली, कायथ दा, ऐसी विपत्ति के समय भी ऐसा मजाक आता है आपके मन में।

सुनी कादिर अली की बात, बहादुर आदमी का रस और रंग कभी जाता नहीं।

रास्ता खत्म हो आया। चक्का भी अस्त होने को है। पास ही काशीपुर का महलबाग दिखाई देने लगा।

अग्नि देव

महलबाग के एकतल्ले वाले लंबे-चौडे नाच घर में पाँच-पाँच फानूसों की जोत में सफेद जाजिम पर लेटे, अधलेटे बाबुओं की सोने की जंजीर, हीरे की अँगूठी, चूननदार चादर-कुरता, घुघराले बाल, गंजी खोपड़ी, खुली-अधखुली सुर्ख आँखें अजीब शोभा बढ़ा रही थीं। साथ ही साथ फूलों की माला, इत्र-गुलाब और शराब की गंध हाथ से खींचे जाने वाले पंखे की ताल-ताल पर थिरक रही थी। निकी बाई जी बैठी हुई तानपूरे पर

गा रही थी—बाजे पायलिया झनन-झन। बहुत-से बाबू तो अभी से ही स्थान-काल-पात्र का हवास गँवा बैठे थे। जिनकी चेतना अभी तक महा प्रलय में डूब नहीं गई थी, वे तकिए पर ताल देने की कोशिश कर रहे थे और ताल बजाने की कोशिश में कोई-कोई समझने से पहले ढुलक पड़ते थे; कोई-कोई लड़खड़ाती आवाज में कुछ कहना चाहते थे, मगर नशे से जबान लाचार हो उठी थीं। छोटे-बड़े शिखरों जैसे इन बाबुओं के बीच मोती राय कंचनजंघा जैसा विराज रहा था। मोती राय शराब का नीलकंठ ही हो मानो, सबसे ज्यादा पीने के बावजूद वह बिलकुल होश में था। उसके हाथ की आठेक अँगूठियों में, हीरे की बटनों, सोने की जंजीर और चिकनी गंजी खोपड़ी में बिजली खेल रही थी। लाल हुई आँखें मंगल ग्रह की नाईं निर्निमेष थीं। छः रिपुओं ने उसके सारे चेहरे पर बहुत-से दाग दे रक्खे थे—हाथों-हाथों घूमती हुई चिट्ठी में जैसा होता है। रात का पहला पहर।

बेचाराम बाबू बोल उठे, राय साहब, रहने भी दीजिए यह सब पाय-रिया-टापरिया, अब बाघ के खेल शुरू कराइए।

बाघ शब्द ने किसी बाबू की सोई चेतना को गुदगुदी लगा दी। वह जग उठा। बाघ शब्द उस समय भी उसके दिमाग में चक्कर काट रहा था। वह चीख उठा—बाघेर विक्रम सम माघेर हिमानी। नशे से लड़खड़ाती हुई उसकी आवाज से बहुतेरे बाबुओं की नींद उचट गई। सब ने बेचाराम की बात की ताईद की। बोले हाँ-हाँ, बाघ का खेल शुरू हो। आज हम सब निकी बाई जी का गाना सुनने के लिए नहीं आए हैं।

बाघ का खेल सर्कस का आखिरी खेल होता है। यहाँ मतलब था कि अब रेशमी का आगमन हो।

मोती राय ने कहा, बस थोड़ा और इंतजार करें, माधव राय आ ले।

बेचाराम बोला, सो क्यों बाबा, माधव से आयान घोष का दावा कुछ कम है क्या?

सब ने एक स्वर से समर्थन किया, बेशक माधव राय से आयान घोष

का दावा ज्यादा है ।

बेचाराम ने गाना शुरू कर दिया — राधा तुई रेशमी होली कोलकता ते, जीवने सुख कि वल ना पड़ली यदि आमार पाते ।*

वल्लाह, क्या कहने है ।

कमाल है ।

और इस पर बाबुओं ने रेशमी के रूप, गुण, उम्र तथा और-और बातों की आलोचना शुरू कर दी ।

किसी ने कहा, अरे भई, यह माल मिला कहाँ ?

किसी ने कहा, चोरी पर बटमारी और क्या ।

किसी ने कहा, लडकी खाटी फिरंगी है । चंदननगर से चुरा कर लाई गई है ।

सब एक साथ बोल उठे, राय साहब, अब तो सब्र नहीं किया जा रहा, अब अपने रेशमी खिलौने को निकालिए आप ।

मोती राय ने कहा, बस, जरा देर । माधव राय को आ जाने दीजिए ।

इतने में बाहर बंदूक की आवाज हुई ।

रेशमी दुतल्ले के कमरे में दरवाजा बंद किए बैठी थी । खुदीराम उसे बार-बार बाहर से ताकीद करता रहा, सज-सँवर लो, जल्दी, बाबू लोग बैठे हुए हैं ।

रेशमी ने हर बार कहा, बस हो गया । तब तक लोग निकी बाई का गाना सुनें ।

रेशमी खुद भी ठीक-ठीक नहीं समझ रही थी कि वह आखिर देर क्यों कर रही है । कहना फिजूल होगा, साजबाज से क्या वास्ता, महज अपनी साड़ी पहन रखी थी उसने ।

कमरे के दक्खिन-पच्छिम खिड़कियाँ थीं । दक्खिन की खिड़की से

---

*राधा, तू कलकत्ते मे रेशमी हुई । मगर जीवन मे सुख ही क्या अगर मेरे हिस्से नहीं पड़ी ।

कलकत्ते की ओर देखा जा सकता था, पच्छिम की खिड़की से सामने दीखती थीं गंगा।

वह दक्खिन के झरोखे पर खड़ी थी। मन में कुछ आशा-भरोसा था क्या उसके? टुशकी से खबर पाकर दलबल के साथ जॉन उसे छुड़ाने के लिए आएगा, यह आशा पागलपन ही थी। लेकिन संभवतः ऐसी एक क्षीण-सी आशा थी उसे फिर भी — मौके पर आदमी पागल होता है। लता को सहारे की जरूरत होती है, कम से कम किसी पतली टहनी की भी। आशा-लता के लिए इसकी भी आवश्यकता नहीं। मगर दक्खिन की तरफ दलबल तो क्या, एक भी आदमी नहीं नजर आया। उसने सोचा, चलो, अच्छा ही हुआ। टुशकी बच गई। और जॉन! जॉन की याद आते ही उसकी दोनों आँखें भर आईं। ऐसे समय ऐसे आदमी की याद से आँखों में आँसू! प्यार का रास्ता एकतरफा ही होता है।

वह पश्चिम के झरोखे के सामने खड़ी हुई जाकर। उस पार जनशून्य तरुशून्य क्षितिज पर बड़े समारोह से सूरज डूब रहा था। मेघों की परत पर परत, विशाल महल-सा बना रहा था बादल। जो काला था, सफेद हो उठा, सफेद हो उठा चमकीला और धीरे-धीरे सब उज्ज्वल, समुज्ज्वल हो उठा। सूरज के स्पर्श मात्र से रंग का परिवर्तन हो गया। देखते-देखते, महल से महल, शिखर से शिखर, इस छोर से उस छोर तक आग छिटक गई। दैवी शिखा से किसी रूपकथा की राजपुरी जलने लगी। टुकड़े-टुकड़े होकर, चूर-चूर होकर महल, छज्जे, कंगूरे, खिड़कियाँ टूट कर गिरने लगीं। गंगा पर सोने का सेतु फैल गया, उसका छोर आ पहुँचा इस पार महलबाग के घाट तक और धीरे-धीरे सब मुरझा गया, निस्तेज हो गया, निष्प्रभ हो गया। रेशमी लेकिन तो भी ताकती रही। सूरज का यह कैसा महान संकेत, मृत्यु का, मुक्ति का कैसा पथ-निर्देश।

इतने में बन्दूक की आवाज से वह चौंक उठी, उसी आवाज से, जिससे नीचे के बाबू लोग चौंक उठे थे।

मोती राय ने एक मुसाहब से कहा, लगता है, साथब आ गया। उसे

स्वागत करके लिवा लाओ।

मुसाहब गया। जाते न जाते एक शोर-सा उठा, खासा जोर का शोर। अन्दर के बाबू लोग बोल उठे, यह कैसी हरकत है माधव राय की? लगता है, डकैतों का हमला हुआ हो।

बाहर घोड़ों की हिनहिनाहट हुई! अरदली-प्यादे की चीख-पुकार से अन्धेरा मथा गया मानो।

माजरा क्या है।

बाबू लोग चौकन्ने हो गए। कोई-कोई अपनी देह को किसी तरह घसीट कर दरवाजे के पास जाकर खड़े हुए। अब तक नजरबंद चंडी बख्शी एक ओर बैठा था। मौका जो मिला, सो वह चुपके से चंपत हो गया।

बाहर बगीचे में स्पोकर ओर माधव राय के जवानों से, आए हुए बाबुओं के अरदली-चपरासियों से भिड़ंत हो गई थी। सभी संघर्षों की सूचना का इतिहास अंधकार से आच्छन्न रहा है। कुरुक्षेत्र की लडाई से लेकर गाँव में बेल के पेड़ के लिए जो हंगामा होता है, कोई भी पूर्व-परिकल्पना से नहीं। लड़ने वाले दो दलों का आमने-सामने हो जाना ही असल बात है, बाद की मारकाट तो रात के बाद दिन के आने की तरह सुनिश्चित है।

माधव राय और स्पोकर के पचासेक आदमी थे — जिनमें बहुत-से घुड़सवार ही थे — उनके बगीचे में आते ही एक हलचल-सी मच गई। ये लोग कौन आ पहुँचे? हो सकता है, घोड़े बिगड़ उठे हों या कि प्यादों में तू-तू मैं-मैं हुई हो, हो सकता है, अरदलियों ने जरा कड़ी जबान में बात की हो। फिर क्या था, ठन गई। स्पोकर ने बंदूक चलायी।

मोती राय के प्यादों ने भी गोली से जवाब दिया। उन्हें यह पता नहीं था कि कंपनी के सिपाही आए हैं। दोनों तरफ से बंदूकें दगने लगीं। गनीमत यही थी कि सारे ही खाली फायर थे। गोलियों की आवाज से फिटन के घोड़े इधर-उधर भाग गए। पालकी के कहार मुक्ति देने

वाली गंगा मे कूद पड़े। चारों तरफ की अवस्था और व्यवस्था डावांडोल हो गई।

इसी मौके पर और भी बहुत-से घोड़ों की टापें सुनाई पड़ीं — ये फिर कौन ?

जॉन की टुकड़ी आ धमकी।

रेशमी इन सबका मतलब समझ नही सकी। शोर-गुल उसके कानों में पहुँचा जरूर, मगर उसका कारण नहीं। डूबते हुए को यह विश्वास करने का साहस नहीं होता कि उसे बचाने का उपाय किया जा रहा है। और फिर अपने संकल्प को पूरा करने के लिए रेशमी अपने कमरे से बाहर चली गई थी।

टुशकी ने जान को इशारे से ऊपर का कमरा बता दिया कि रेशमी उसमें है।

इशारा करना था कि जॉन, मेरिडिथ, प्रेस्टन, अगलर, राम बसु और नाढ़ा इस कमरे की तरफ दौड़ पड़े। राह दिखाती हुई टुशकी चली साथ।

बेचाराम बाबू और उनके साथी, जिनकी जिधर से सींग समाई, गंगा की तरफ भाग चले। हिंदुओं का अंतिम आश्रय गंगा है।

अँधेरे मे भागते-भागते बेचाराम गाने लगा।

बेचाराम जन्मजात कवि था, मुसीबत की घड़ी में भी कविता करता।

सब चले गये। गया नहीं एक मोती राय। वह एक लमहे में इस झमेले का मतलब समझ गया। ओ, यह हरामजादा माधो मेरा शिकार छीन ले जाने आया है। अच्छा, ठहर जा पाजी !

मोती राय ऊपर के कमरे की तरफ लपका। वह और जॉन इत्यादि ठीक एक ही साथ दो तरफ से कमरे में दाखिल हुए।

कमरा खाली था।

इतने में टुशकी चीख उठी, वह देखो, मोती राय।

मोती राय ! जॉन ने झपट कर उसे एक लात जमाई — रेशमी कहाँ है, बता ?

लेकिन जवाब दे तो कौन ? लात खाकर मोती राय सीढ़ी से नीचे लुढ़का जा रहा था।

आग ! आग !

चारों तरफ से चीख उठी — भागो, भागो ! आग !

जॉन आदि जरा देर के लिए भौंचक्के हो रहे। फिर देखा, सचमुच ही निचली मंजिल में आग लग गई है।

लोग भाग रहे हैं। जॉन ने सोचा, रेशमी यहाँ से जरूर निकल गई है। वे सब भी जल्दी-जल्दी निकल पड़े।

मोती राय के लोगों ने मोती राय को खींचकर बाहर निकाला।

मगर रेशमी ? कहीं तो नहीं दीखती। इस भीड़ में कहीं हो भी तो अँधेरे में खोज निकालना कठिन था। राम बसु, टुशकी, नाढ़ा, नाम ले-ले कर रेशमी को पुकारने लगे। लेकिन इस शोरगुल में उस आवाज का रेशमी के कानों पहुँचना मुश्किल था।

आग ! आग !

सारी निचली मंजिल में आग फैल गई। सभी दोस्त-दुश्मन की बात भूलकर उस फैलती हुई आग की तरफ ताकने लगे।

कैसे लगी आग ? किसने लगाई ? शराब के भंडार में आग, नाचघर में आग, आतिशबाजी में आग। सब धू-धू जल उठा। खिड़कियों से, दरवाजों से, इधर-उधर जहाँ भी फाँक थी उनसे लपटों की हजारों लाल जिह्वाएँ बाहर लपलपा रही थीं — आसमान धुँए से भर गया।

लौकियाँ, जो जहाँ पड़ी थीं, वहीं चिनगी के झरने लुटाने लगीं। आसमानी तारे अँधेरे में भटकने लगे। झाड़-फानूस, तसवीरें टूट-टूट कर गिरने लगीं।

जरा देर के लिए सारी भीड हत-सी हो गई। जॉन आदि रेशमी की बात भूल गए। वे यह सोचकर निश्चित थे कि आग देखकर रेशमी निकल भागी होगी कहीं आसपास ही।

इतने में नाढ़ा ने आसमान की ओर दिखाते हुए कहा, टुशकी दी,

ज़रा इन आसमानी तारों की बहार देखो !

एक आतिशबाजी के ऊपर फटते ही शून्य में आग के हरूफ ने लिख दिया — रेशमी मिलन । फिर, फिर, फिर ! आसमान आग से लिखे रेशमी नाम से भर गया ।

उसी की चमक में तिमंजिले की छत की ओर ताकती हुई टुशकी चिल्ला उठी — कायथ-दा, वह रही रेशमी, वहाँ !

रेशमी ? उतर आ नीचे ।

अब रेशमी की निगाह पड़ी । जिस रोशनी में लोगों ने रेशमी को देखा, उसी रोशनी में रेशमी ने इन लोगों को देखा । देख लिया कि राम बसु, टुशकी आदि आ पहुँचे हैं ।

और, तब तक जॉन की करुण पुकार भी उसके कानों में पहुँची — रेशमी ! उतर आओ ।

अब तक रेशमी निश्चल थी । बुत जैसी ! जॉन की आवाज सुनते ही वह पत्थर पिघला । बोल उठी, जॉन ! तुम आए हो !

मैंने गलत समझा था रेशमी, भूल की थी । उतर आओ ! रेशमी ने कहा, जॉन तुम आ गए ! मुझे फिर से जीने की इच्छा हो रही है, फिर तुम्हारी छाती में लौट जाने को जी चाह रहा है, मगर यह शायद न हो सके ।

जॉन चीख उठा, अभी भी समय है, उतर आओ । उतर आओ ।

अब समय नहीं है जॉन, आग मैंने अपने हाथों लगाई है, यह आग अब मेरी शक्ति के बाहर है ।

तो रुको, मैं आ रहा हूँ ।—कह कर जॉन दौड़ा ।

जॉन ! पागलपन मत करो । इस आग में जाने से जीने की कोई आशा नहीं ।

मैं जीना नहीं चाहता । मैं रेशमी को चाहता हूँ ।—वह आगे बढ़ गया ।

मेरिडिथ, अगलर और प्रेस्टन ने मिल कर उसे पकड़ लिया ।

जॉन उनके चंगुल से अपने को छुड़ाने की कोशिश करने लगा—तुम्हें मालूम नहीं रेशमी के बिना मेरा जीवन बेकार है। छोड़ दो मुझे।

जॉन को ऐसा करते देख रेशमी वहाँ से बोल उठी, जॉन, यहाँ आने से मर जाओगे। क्या लाभ मरने से। मैं भी अब मरना नहीं चाहती, लेकिन बच सकने का कोई उपाय नहीं है अब।

सब ने देखा, रेशमी ने गलत नहीं कहा। नीचे, ऊपर, तमाम फैल गई थी अचानक आग। भागने का रास्ता बंद करके आग की लपट छत पर रेशमी के पास जा पहुँची थी।

नाड़ा आग तड़प कर जाना चाहता था कि जख्मी हो गया। लोग उसे निकाल लाए। जॉन को उसके मित्रों ने हरगिज नहीं छोड़ा।

वह पागल की तरह कहने लगा, मेरिडिथ, प्रभु की दुहाई देकर कहता हूँ, मुझे छोड़ दो। मैं या तो उसे निकाल लाऊँ या हम दोनों ही जल मरें।

धुँए से रुँधते गले से रेशमी ने कहा, जॉन, बड़े ही दुःख के साथ मरने जा रही थी, अब बड़ी खुशी से मर रही हूँ। मैं कभी सोच भी नहीं सकी थी कि जीवन-प्याले के अंतिम घूँट में ऐसा अक्षय अमृत था। मरने से पहले मैं यह जान पाई कि तुम्हारे प्रेम को मैंने खोया नहीं है। जिंदा ही रहती तो इससे ज्यादा क्या पाती मैं!

जॉन उस समय तक भी अपने को छुड़ाने के लिए जूझ रहा था। टूशकी सर पीट रही थी। नाढ़ा को अपने जख्म की परवा नहीं थी, दुख के मारे वह जमीन पर लोटता हुआ रो रहा था। केवल राम बसु ही काठ की मूरत-सा अचल खड़ा था।

सारी भीड़ दोस्त-दुश्मन की चिंता भूले छत की ओर असहाय भाव से ताकने लगी। मृत्यु की आग-नागिन का कसाव धीरे-धीरे सँकरा होता गया और उसने रेशमी को छू लिया। पैर के नाखून से चोटी तक एक-एक रेखा झलक उठी, मौत के लाल कमल के मधुकोष पर खड़ी उस मूर्ति की कैसी कमनीय कांति थी; आसमान ढँके अँधेरे की पृष्ठभूमि पर दमकती

हुई यह मूर्ति ही मानो आज सभी चर-अचर के लिए एकमात्र देखने की वस्तु थी।

इकट्ठे हुए सभी लोगों की हाय-हाय में आग की लपट ने रेशमी को लपेट लिया। आग के बुने हुए विवाह-वसन से उसके दिव्य अंग मंडित हो गए, बाहु में अग्निशिखा का नर्तन, कान में लोल लपट का कुंडल, माँग में लौ का सिंदूर, गले में अग्नि-शिखा का स्वर्ण-हार और अंत में अग्नि देव ने स्वयं उसके माथे सोने-सा दमकता हुआ मुकुट रख दिया।

एक बार बस चिल्लाई — जॉन ... उस दिन की वह बात ...

और कुछ नहीं सुनाई पड़ा, वह बात पूरी न हो सकी।

मनुष्य की यह अंतिम बात खत्म नहीं हुई कभी।

आग की दमक जैसे-जैसे ठंढी पड़ने लगी, तारों की जोत वैसे ही वैसे दमक उठने लगी। दुनिया में उन्हीं की भाषा सत्य है।

आग बुझ गई और चारों तरफ गाढ़ा अँधेरा छा गया। आतिशबाजी से सूने में आग के हरूफों से लिखा हुआ एकाध रेशमी नाम उस समय तक भी आकाश के पट पर चमक रहा था।

पाँचवाँ खंड

फोर्ट विलियम कालेज

बात क्या है, बड़ा सन्नाटा है चारों तरफ आज ! — कहते-कहते अपने मोटे-सोटे शरीर को किसी प्रकार खींचता हुआ मृत्युजय विद्यालंकार अंदर आया ।

मृत्युजय विद्यालंकार फोर्ट विलियम कालेज का पहला पंडित था । विशाल शरीर, विशाल पांडित्य । लोग कहा करते, उसकी उस बड़ी तोंद में ठूंस-ठूंस कर पांडित्य भरा है । कमरे के कोने में निश्चित जगह अपनी लाठी रखकर चौकी पर बिछी चादर पर बैठते हुए पंखा खींचने वालों को लक्ष्य करके बोला, जरा जोर से खींचो भैया, पसीना सूखे ।

सुंघनी की डिबिया को हटाते हुए पंडित रामनाथ वाचस्पति ने कहा, आओ, आओ भाई । मगर तुम्हें तो इसकी बू तक बर्दाश्त नहीं होती ।

बर्दाश्त नहीं होती है क्या शौकिया ! इस चीज को सूँघते रहने से नाक से फूल की खुशबू लेना कठिन हो जाता है ।

कठिन ही हुआ तो क्या ! इसकी खुशबू कुछ बुरी तो नहीं होती ।

चादर के छोर से कपाल पर का पसीना पोंछते हुए विद्यालंकार ने कहा, अगर देवता के निर्माल्य की सुगंध न मिली, तो जीवन बेकार है ।

उसके बाद प्रसंग बदल कर बोला, आज बड़ा सन्नाटा है, बात क्या है?

मामला तो मेरी समझ में भी नहीं आ रहा है — आया, तो देखता हूँ सब खाँ-खाँ कर रहा है! न कोई आदमी है, न आदमजात।

यह सब रहस्य जानना मेरे-तुम्हारे बस का नहीं रामनाथ। वसुजा कहाँ है? राजीवलोचन को नहीं देख रहा हूँ।

रामनाथ ने कहा, राजीवलोचन की तो नहीं कह सकता, लेकिन वसुजा पादरी कैरी के कमरे में है। उसी के आने पर सब कुछ मालूम होगा, तब तक के लिए धीरज रक्खो।

ठीक ही कह रहे हो, उफ्, क्या सिद्दत की गर्मी है — मृत्युंजय चादर की कोर हिलाकर पंखे की हवा को बढ़ाने की कोशिश करने लगा।

रामनाथ ने कहा, ये जो फिरंगी यहाँ पढ़ते हैं, उन्हें तुम्हारी उस लाठी का बड़ा डर लगता है।

जोर से हँसते हुए मृत्युंजय ने कहा, लाठी तो लाठी ही है यह। इसी से मैंने गेंहुअन के बच्चों को काबू कर रक्खा है।

मगर भई, काम यह अच्छा नहीं। दो दिन के बाद तुम्हारे ये चेले कंबख्त ही जज-मजिस्टर होंगे और तब उन्हीं के हाथों यह लाठी होगी।

यह तुम्हारा गलत ख्याल है वाचस्पति। छात्र जीवन के शासन को लोग आगे चलकर याद नहीं रखते। एक उदाहरण बताऊँ, उस दिन साँझ को कसाई टोला से लौट रहा था कि सामने एक फिटन गाड़ी रुकी। गाड़ी से उतरा इसी कालेज का — जिसे तुम विराट राजा की गोशाला कहते हो — एक पुराना फिरंगी छात्र। उसने श्रद्धा से मुझे प्रणाम किया।

कहो तो कौन था?

थैकरे। छोकरे को मैं अच्छी तरह पहचानता था। औहट्ट में हाथी पकड़ने वाला जो थैकरे था, वह इसका चाचा या ऐसा ही कुछ लगता था।

होगा। इन फिरंगियों का चाचा, मौसा, फूफा सब अंकल ही होता है। जैसी इनकी जात, वैसा ही सम्बन्ध-विचार।

मैंने पूछा, आजकल क्या करते हो? बोला, चौबीस परगने का कलक्टर हूँ। सोच देखो, याद तो रक्खा उसने। एक दिन उसी की मैंने बड़ी फजीहत की थी — मगर कैसी विनम्रता से बोला।

खैर! ऐसी लाठी चाँद सौदागर के ही हाथों सोहती है। मेरा क्या ख्याल है, मालूम है? मन ही मन कैरी साहब भी तुम्हारी इस लाठी से डरता है। वह लो, कैरी साहब और वसुजा आ रहे हैं।

वे दोनों आए।

रामनाथ उठ खड़ा हुआ और विद्यालंकार ने चौकी पर ही जरा हिलडुल कर सम्मान जताया।

कैरी ने दोनों को नमस्ते की।

कैरी पहले गुड मॉर्निंग कहा करता था, अब विद्यालंकार की सलाह से देशी ढंग से नमस्ते कहता है।

विद्यालकार ने कहा, ऐसा सन्नाटा क्यों है आज! सारे पढ़ने वाले कहाँ चले गए?

कैरी ने बैठते हुए कहा, उन्होंने आज हमें छुट्टी दी है।

चौंक कर विद्यालंकार ने कहा, सो क्या?

कैरी ने कहा, आज उन्होंने हड़ताल की है।*

यह फिर क्या होती है? विद्यालंकार ने पूछा।

कैरी ने समझा कर कहा, अधिकारियों का आदेश या व्यवस्था पसन्द न आने पर हाथ-पाँव समेट कर आपत्ति जाहिर करने को हड़ताल या स्ट्राइक करना कहते हैं।

---

*यह कुछ कल्पना नहीं है लेखक की। तत्कालीन कलकत्ते के श्वेतांग समाज के इतिहास में स्ट्राइक के एक से ज्यादा दृष्टांत मिलते हैं, बेशक, हड़ताल शब्द का व्यवहार नहीं होता था।

समझ गया, मगर यहा को कौन-सी व्यवस्था पसंद नहीं ?

यह बताने के लिए पहले का इतिहास बताना पड़ेगा। पहले सिवि-लियन राइटर्स चाहे जहाँ मकान किराया लेकर शहर में रहा करते थे। इससे कामिनी-कांचन संबंधी दुर्नीति बढ़ती जा रही जी। इस पर लार्ड वेलेसली ने यह नियम कर दिया कि सबको राइटर्स बिल्डिंग के दुतल्ले पर ही रहना पड़ेगा।

मृत्युंजय ने कहा, यह तो बहुत पहले की बात है। इतने दिनों के बाद एकाएक आज वे कैसे सजग हो उठे ?

छोकरे तो अंदर ही अंदर बहुत दिनों से सजग थे, लेकिन चूंकि आश्रय की कमी थी, इसलिए वह प्रकट नहीं हो पाया।

आश्रय कौन देगा, शासन तो राजा का है।

पंडित जी, राजा के ऊपर भी राजा है। यहाँ का सर्वेसर्वा है गवर्नर जनरल, लेकिन विलायत में जो बोर्ड ऑफ डाइरेक्टर्स है, वह उससे भी ऊपर है।

है तो क्या हुआ ?

हुआ यही कि इस कालेज पर खर्च बहुत बैठ रहा है, इसलिए बोर्ड ऑफ डाइरेक्टर्स इसे बंद कर देना चाहता है। वेलेसली जैसा जबर्दस्त आदमी न रहा होता तो इसे कब का बंद करवा दिया होता। बड़ा लाट वैसा तेज आदमी नहीं। विलायत का बोर्ड फिर कालेज को उठा देना चाह रहा है।

लेकिन उससे इस हड़ताल का संबंध समझ में नहीं आता।

समझा देता हूँ, ठहरो। यहाँ की लाट-कौंसिल के कोई-कोई सदस्य उस बोर्ड से सहमत है। उन्हीं के इशारे से यह हड़ताल हुई है।

क्यों ?

इसलिए कि कुछ हलचल हो, हो-हल्ला मचे तो कालेज को बंद कर देने का रास्ता सुगम होगा।

छात्रों को इतना सारा मालूम है ?

स्पष्ट नहीं मालूम हैं, लेकिन आभास-इंगित से जानते हैं कि बखेड़ा करने से प्रभुवर्ग नाराज न होगा।

लेकिन उन्हे इससे लाभ क्या है?

लाभ तो सोलहो आना है। कालेज मे पढने की सुविधा नही है, धूप-हवा नहीं मिलती — ये सब बहाने बनाकर वे फिर म रानी मोदि-आइन को गली मेंगो लेन मे किराये के मकान मे रहना चाहते हैं। उनको यह लाभ है कि इससे वे मनमाना कर पाएँगे और बोर्ड को यह लाभ होगा कि कालेज उठ जाने से बहुत खर्च बच जाएगा। तभी तो कहा मैंने कि लाभ तो सोलहो आना है।

और हमारा सोलहो आना नुकसान। हम बंगालियो की नौकरी चली गई तो रहा क्या?

मुशी, नुकसान सारे देश का है, अंगरेजी शासन का है। और बंगा-लियों की कहते हो? कहते हो कि नौकरी जाएगी तो उनका रह क्या जाएगा? दस साल यहाँ साथ रहकर हमने जो बंगला व्याकरण लिखा, कोश तैयार करके जो नीव डाली, उसी पर जो महल खड़ा होगा, वही होगा भविष्य मे बंगालियो का श्रेष्ठ आश्रय। वह महल आँधी मे नही टलेगा, भूकंप में नही हिलेगा, आग में नही जलेगा, अकाल से अकाल मे भी विचलित नहीं होगा। यही होगा बंगालियों का लाभ। इससे बडा लाभ और क्या हो सकता है, मैं नही जानता।

उत्साह से उठकर कैरी कमरे मे चहलकदमी करने लगा।

उसने कहा, लोकभापा के शब्द, विदेशी शब्द और संस्कृत शब्दो मे उस महल की चुनाई चल रही है। सस्कृत है नीव, लोकभापा के शब्द हैं ईंटें और विदेशी शब्द है चूना-सुरखी। इस महल के कारीगर हैं ईसाई, मुसलमान, हिंदू। दिन-दिन यह महल आसमान की ओर उठ रहा है। भाषा में तुच्छ, ग्राम्य, क्षुद्र नाम की कोई चीज नहीं रहेगी और एक दिन इसका सुनहला कंगूरा सूरज की किरणों से जगमगा उठेगा। और जब वह दिन आएगा, तो देश-विदेश के लोग अवाक देखते रह जाएँगे।

सोचेंगे, यह अनूठी कीर्ति किस मायावी-दानव की है।

कैरी राम बसु के पास आ गया और बोला, मुंशी, यही मंदिर बंगालियों की भावी पीढ़ी का रहेगा।

इसके बाद कैरी, विद्यालंकार के निकट जाकर बोला, जितने ही दिन बीत रहे हैं, मैं संस्कृत की महिमा को समझ रहा हूं — इसकी तुलना नहीं, डिवाइन, सिंपली डिवाइन!

दूसरे दिन पंडित, अध्यापक, शिक्षक सब समय पर कॉलेज आए लेकिन छात्रों का पता नहीं।

राम बसु ने कहा, लगता है, छात्रों ने आज भी हमें छुट्टी दे दी।

मृत्युंजय विद्यालंकार ने कहा, छुट्टी दी सो दी, मगर सब हैं कहां? लग नहीं रहा है कि दुमंजिले पर हैं। सन्नाटा है।

कैरी ने कहा, सो रहे हैं सब।

सो रहे हैं! इस समय? कैरी की बात से आश्चर्य हुआ विद्यालंकार को।

कैरी ने कहा, सोयेंगे नहीं तो क्या! रात भर जो उत्पात किया है!

उत्पात?

कैरी ने कहा, रात को ये यंग रास्केल्स शराब और औरत लाकर जो करते रहे कि पूछो मत। अंत में मुझे बुला लाए दरबान लोग।

कैरी तीन नंबर बहू बाजार स्ट्रीट में रहता था।

आकर मैंने देखा, दुमंजिले पर नाटकीय कृत्य चल रहा है। मुझे देखकर भी उन्हें शर्म नहीं आई। मैंने कहा, ऐसी हरकत करोगे तो इस मकान से तुम सबों को निकाल दिया जाएगा। यह सुनकर एक बोल उठा, यही तो चाहते हैं हम। रक्खा क्यों है हमें यहां? निकाल दो। हमने प्रेम बनर्जी का मकान ठीक कर रक्खा है।

मैंने उन्हें गिरजा दिखाते हुए कहा, गिरजा के इतने करीब रहकर भी तुम लोग ऐसा बेशर्म काम करते हो ? इस पर एक ने जवाब क्या दिया, जानते हो ? नीयरेस्ट टु चर्च इज फार्देस्ट फ्रॉम हेवन्, बेहया !

इतना कहकर कैरी चुप हो गया।

मृत्युंजय ने कहा, फिर इस समय सोए रहेंगे तो आश्चर्य क्या !

कैरी ने कहा, मैंने लाट-कौंसिल के मेंबर को कल सब कुछ खोलकर कहा है। उसने मुझे वचन दिया है कि आज वह कौंसिल में इसकी चर्चा करेगा। आशा करता हूँ, बहरहाल यह सब रुक जाएगा। लेकिन बीमारी की जड़ गहरी है।

राम बसु ने कहा, जिस बीमारी की जड़ स्वभाव में होती है, वह सहज ही दूर हो जाती है, लेकिन जिसकी जड़ होती है चरित्र में, वह दुस्साध्य होती है।

कैरी ने कहा, बात बहुत सही है।

उसके बाद प्रसंगवश मनोविज्ञान, धर्मतत्त्व और समाजतत्त्व आ गया।

कैरी ने कहा, कुसंस्कार सभी देश में है। हमारे देश में भी, तुम्हारे देश में भी। इस कालेज का एक उद्देश्य इन कुसंस्कारों को दूर करना भी है।

मृत्युंजय बोल उठा, मगर ओझा पर ही तो भूत सवार हो गया। यहीं के छात्र अगर ऐसे हो उठे, फिर तो तमाम अँधेरा ही अंधेरा।

अंधकार है, जभी तो ज्ञान के प्रकाश की जरूरत है पंडित। स्वर्ग के के लिए पाठशाला अनावश्यक है।

आपने ठीक कहा है डाक्टर कैरी। लेकिन घाव तो सारे बदन पर है, दवा कहाँ लगाएँ ?

मन में पंडित, मन में। वहाँ दवा लगेगी तो उसका असर सारे शरीर पर होगा। वेलेसली ने इसी इरादे से कालेज कायम किया था।

और वेलेसली ने यह भार भी मुझे दिया था कि घाव के मूल स्थान का पता लगाएँ। मुझे आदेश मिला था कि मैं गंगासागर में बच्चे को चढ़ाना, सतीदाह-प्रथा आदि का ठीक-ठीक विवरण तैयार करूँ। चार सह-कर्मियों के साथ सन् १८०४ में कलकत्ते के इर्द-गिर्द तीस मील की रिंध में छानबीन से मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि साल मे लगभग २५ हजार प्राणियों की इस प्रकार से हत्या की जाती है। उसके बाद तो मेरे अनुरोध पर लोगो ने ही साबित कर दिखाया कि संतानविसर्जन, सह-मरण आदि शास्त्र-अनुमोदित नही है।

एकांत में बैठकर रामनाथ वाचस्पति ने धीमे से कहा, शास्त्र अनुमो-दित नही है। शुरू हो गई पादरीगीरी। हूँ; जैसे कितना शास्त्र पढ़ा है।

विद्यालंकार ने कहा, लेकिन उससे हालत कहाँ सुधरी ? उसके बाद भी तो पाँच-छः साल गुजर गए।

नहीं गुजरते — कैरी ने जोर देकर कहा — हम सब की रिपोर्ट और तुम लोगों का विधान देख कर वेलेसली ने निश्चय किया था कि कानून बना कर सतीदाह-प्रथा को रोक देंगे। सब ठीक-ठीक हो चुका था कि लाट साहब इस्तीफा देकर विलायत चले गए।

जभी तो मैं कह रहा हूँ डाक्टर कैरी। यथा पूर्वम् तथा परं। देश में जहाँ-तहाँ आज भी सतीदाह बेरोक चल रहा है।

व्याकुल होकर राम बसु बोला — कोई प्रतिकार नही है इसका ?

अभी-अभी तुमने ही तो कहा कि जिस रोग की जड़ चरित्र में है, वह दुस्साध्य है।

दुस्साध्य हो सकता है, असाध्य नहीं।

असाध्य किसने कहा मुंशी, हाँ कठिन है। लेकिन यह भी कहे देता हूँ मैं, तुम्हारे-हमारे रहते-रहते ही यह प्रथा मिट जाएगी। दवा पड़नी शुरू हो गई है।

कौन-सी दवा ?

अँगरेजी शिक्षा।

रामनाथ वाचस्पति ने फिर स्वगत भाव से कहा, रोग से दवा और भी उत्कट है।

ऐसा नही लगा कि कैरी के अभय देने से राम बसु को कुछ उत्साह हुआ। वह उदास बैठा रहा।

कालेज में पढाई बंद। लिहाजा सब घर लौटे।

राम बसु ने कहा, विद्यालकार, चलो, कुछ दूर तक तुम्हे छोड़ आऊँ।

ठीक तो है। बातें करते हुए चलेंगे।

लाल बाजार से आगे वे लोग एक गली से चले। आगे-आगे मृत्युंजय, पीछे-पीछे राम बसु। राम बसु, विद्यालंकार का चलना गौर करने लगा। उसका बायाँ पांव कुछ गड़बड़ था, सो लाठी और दाएँ पैर के जोर से बाये पांव सहित देह को झटका मार कर वह खीच ले जाता। सर चारों तरफ से घुटा हुआ, बीच मे चुटिया का गुच्छा। याद आया, चिकने ढलान कपाल पर सवेरे के आह्निक के चंदन की छाप है, कपाल के नीचे कच्चो-पक्की भौंहों के नीचे जलते हुए टीका-सी आँखें, ज्ञान की जरा हवा लगी नही कि दमक उठती — और दोनों आँखों के बीच विन्ध्य पहाड जैसी रोक लगा रक्खी थी एक शुकनासा ने। ऊँची ठोढ़ी अदृष्ट के तने हुए घूँसे की तरह मानो सब को प्रतिद्वंद्विता का आह्वान करती हो। राम बसु ने मन ही मन सोचा, अजीब है यह आदमी! तुरत उसे ख्याल आया, वह आश्चर्य कैरी को भी हुआ है। कैरी ने बहुत बार कहा भी; इस पंडित को देखने से, इसका पांडित्य, भारी-भरकम शरीर, मोटी लाठी, गंभीर चाल से मशहूर डाक्टर जानसन की याद आ जाती है — जिसे बचपन में मैने कई बार देखा है। कैरी कहा करता, डाक्टर जानसन को आपस

मे लोग श्रद्धा से 'भानु' कहा करते थे। यह पन्ति हाथी है, राज हाथी। राम बसु ने फिर सोचा, अजीब है यह।

तब तक वे चितपुर सड़क पर पास-पास चलने लगे थे।

एकाएक राम बसु पूछ बैठा विद्यालंकार, सहमरण के बारे में शास्त्र का क्या विधान है?

विद्यालंकार ने कहा, देखो बसुजा, शास्त्र में सब तरह की बात लिखी हुई है। अलग-अलग अर्थ जैसा चाहता है, उसका मतलब निकाल लेता है।

फिर कहा, अब तक का युग सतीदाह का समर्थक था, अब जो युग आ रहा है, उसमें परिवर्तन होगा, सतीदाह अब नहीं चलेगा।

आग्रह से राम बसु ने पूछा, लेकिन कब विद्यालंकार, कब?

जब युग की हवा प्रबल हो उठेगी।

तुमने तो हिंदूशास्त्र का मंथन किया है, सारा बंगाल तुम्हें जानता है, मानता है। उठाओ ऐसी हवा।

नहीं भया! जो काम जिसका नहीं है, उससे वह होने का नहीं। मैं ज्ञान की बात जानता हूं, वही कह सकता हूं। महज ज्ञान से हवा नहीं उठाई जा सकती, उसके लिए जरूरत है शक्ति की, जरूरत है उद्यम की। उसके लिए युग के यंत्र को चलाने का कौशल चाहिए।

ऐसा आदमी कहां मिलेगा? बसुजा ने पूछा।

वैसा आदमी चाहते हो तो मानिक तल्ला जाओ। पूछ देखो, वे कलकत्ते में हैं या नहीं। जमाने की रफ्तार वैसे ही आदमी पर निर्भर करती है।

ठीक है। जाऊंगा। कल रविवार है।

उसके बाद बहुत कुछ अपने तई ही कहा राम बसु ने, ज्ञान की बात सुन ली, शक्ति की भी सुनी — लेकिन हृदय की बात?

इस स्वगत उक्ति का स्वगत जवाब दिया मृत्युंजय ने — हृदय की बात हृदय जानता है — दूसरा क्या जाने!

राम वसु ने इस बात का उत्तर नहीं दिया।

मृत्युंजय ने कहा, भई वसु, बहुत दूर आ निकले तुम। अब लौट जाओ।

वहाँ से दोनों अपनी-अपनी राह लगे।

दस साल की बात

राम वसु अपने घर पहुँचा कि नारो ने कहा, बाबू जी, देखो, कौन है।

भरी साँझ में फिर कौन आया — कहते हुए अंदर गया और चौंक उठा।—अरे! टुशकी! तू कब आई? किसके साथ आई? तेरी नानी कहाँ है?

टुशकी ने हँस कर कहा, पहले प्रणाम कर लेने दो, फिर तुम्हारे सारे सवालों का एक-एक करके जवाब देती हूँ।

प्रणाम हो गया। दोनों जने बैठे।

राम वसु ने कहा, अच्छा अब बता सब। पहले यह बता कि मोक्षदा बूढ़ी कहाँ है?

टुशकी ने आँखें पोंछते हुए कहा, गोविंद जी ने उसे अपने चरणों बुला लिया।

ऐं! कितने दिन की बात है यह?

हो गए होंगे चार-पाँच महीने। तो मैंने सोचा, मैं गोविंद जी के चरणों में शरण पाऊँ, ऐसा भाग्य भी है अपना! खैर, पाऊँ न पाऊँ, चरण पकड़े पड़ी ही रहूँगी। लेकिन ऐसा करने से पहले एक बार कायथ-दा, नारो और नाडा को देख आऊँ।

आ गई, अच्छा ही किया बहन ! मगर आई किसके साथ ?

गोविंद जी ने संगी जुटा दिया, नहीं तो वृंदावन से कलकत्ते अकेली आ सकती थी भला।

उसके बाद उसने कहा, कुछ दिनों में सेहत बहुत गिर गई थी नानी की। सेहत का भी क्या कसूर, रात-दिन वही रेशमी की रट। रेशमी और रेशमी। न नहाना, न खाना। उसी की चिंता और उसी का नाम।

मैं कहती, नानी, गोविंद जी का नाम लो, राधाकृष्ण की चिंता करो, महाप्रभु को याद करो। जवाब में नानी क्या कहती, मालूम है? कहती, कैसे याद करूँ, उस सर्वनाशी ने सब डुबा दिया। रामकृष्ण का नाम जपने बैठती हूँ कि उसी का नाम मुँह से निकल आता है। उसी का मुखड़ा आँखों में तैरने लगता है।

और फिर नानी जोर से रो पड़ती, 'अरी सर्वनाशी! ऐसा भी सर्वनाश करके जाता है कोई!

टुशकी कहती गई, शरीर टूट गया और अंत में नाम रटते-रटते, यकीन मानो कायथ-दा, मैंने कान लगा कर सुना — राधाकृष्ण का नाम नहीं, रेशमी-रेशमी जपते हुए उसने गोविंद जी के चरणों पर देह रख दी।

उसके बाद वह हठात् पूछ बैठी, अंतिम समय में रेशमी नाम लेने से सद्गति होगी?

सद्गति क्यों नहीं होगी पगली। तूने सुना नहीं, भगवान के असंख्य नाम हैं। जिसे कोई प्यार करता है, वह नाम भी तो उन्हीं का है। तो सुन बहन, काफी उमर हुई मेरी, अब मैंने समझा कि यह नदी पार करना ही तो है, वही मसल है। कौन किस नाव से पार हुआ, इससे क्या आता-जाता है! विल्वमंगल शव को पकड़ कर नदी पार हुआ था।

लेकिन जिसके नसीब में शव भी जुटे?

राम वसु ने समझा, टुशकी की इस उक्ति में कितनी गहरी निराशा है।

कहा, 'आँख मूँद कर नदी में कूद पड़ना चाहिए। मन में भक्ति

होगी तो नदी की लहरें माँ की गोदी की नाईं उसे झुलाते हुए उस पार ले जाएँगी।

राम वसु की बातें सुनकर दुशकी ने कहा, कायथ-दा, तुममें बड़ा परिवर्तन आ गया है।

क्यों न हो। दस साल कुछ कम होता है। फिर कहा, खैर, खा-पीकर सो जा अभी। बहुत थकी है तू और रात भी बहुत हो गई।

बिस्तर पर लेटे-लेटे राम वसु को अपना ही कहा याद आया, क्यों न हो! दस साल कुछ कम होता है।

सच ही, दस साल कम समय नहीं होता और उस पर कहीं घटनाओं की गुरुता हो तो दस साल एक सदी के बराबर होता है। इन दस वर्षों में अदृष्ट ने राम वसु को ढाल कर सजाया — माल-मसाला तो पुराना ही था, सजावट नई।

उस दिन की बात क्या वह कभी भूलेगा? इस जनम में तो नहीं कम से कम। दूसरे जनम में क्या होगा, नहीं मालूम। बहुत संभव है, जन्मांतर के दिगंत को कभी-कभी रेशमी-दाह की शिखा अपनी औचक चमक से चमका देगी। आँखें बंद करने पर आज भी उसे असहाय वीर-सी जॉन की प्रचंड चेष्टा दीख पड़ती है, दिख जाती है नाड़ा की वह छटपटाहट, दुशकी का सिर पीटना और उद्भ्रांत जनता की हाय-हाय। सभी अवाक रह गए थे, अपनी बुत जैसी निश्चलता में वह आप भी कम अवाक नहीं हुआ था। सामान्य दुःख का ही प्रकाश संभव है, महान दुःख अप्रकट होता है। पहाड़ की तराई का हिम गलता है, शिखर का नहीं।

राम वसु ने सोचा, उन लोगों का क्या गया, क्षति ही कितनी हुई उनको! जॉन की प्रियतमा गई, दुशकी की बहन गई, नाड़ा की रेशमी दी गई — मगर उसकी? उसके जीवन की तो सारी आशाएँ, स्वप्न,

कल्पना जिस सुमेरु शिखर पर घूम-फिर कर केंद्रित हुई थी, वह सोने की लंका ही जलकर राख हो गई। रहा क्या उसके पास? इस नुकसान की असहनीयता को समझने के लिए रह गया बस ज्वार। राम बसु ने रेशमी से अपने संबंध को बहुत बार विचार-विश्लेषण करके देखने की कोशिश की है। उसे ऐसा लगा है कि वह संबंध कामज नहीं, प्रेमज नहीं, रक्त से संबंधित या सामाजिक नहीं, यह जैसे एक अलौकिक दिव्य भाव हो। यह मानो चाँद से समुद्र के आकर्षण-विकर्षण जैसा हो। चाँद के खिचाव से समुद्र मचल उठता है, ज्वार के कदम-कदम से बढ़कर वह चाँद की तरफ हाथ फैलाता है, किंतु वह फैला हुआ हाथ कभी चंद्रमा को नहीं छू सकता। रहस्यमय चंद्रमा अप्राप्यता की ऊँचाई पर बैठा समुद्र के मन को मथ देता है। रेशमी चंद्रमा है, राम बसु पारावार। दस साल पहले उसके जीवन, उसके भुवन, उसके गगन — सब कुछ को डुबाकर वह चंद्रमा आग की लपटों के दिगंत में डूब गया। उसके बाद से निस्तरंग, अनुद्वेलित समुद्र एकांत में प्रलाप करता है, उसकी आवाज अब चिता जैसी नीरव है, अपने ही कानों नहीं पहुँचना चाहती।

मदनाबाटी में जो अभिसार उसका विफल गया, उसी से उसने समझ लिया था कि यह लड़की हाथ आनेवाली नहीं। सो न मिल पाने के कुहरे से वह और भी लोभनीय, और भी रमणीय, और भी रहस्यमय हो उठी। उसके बाद से उसी को केंद्र मान कर घूमते हुए हैरान होता रहा है राम बसु का जीवन। ग्रीक पुराण की कहानी पढ़ी थी उसने। जाना था कि ग्रीस की सारी कल्पना एक अग्निशिखा में रूप लेकर प्रकट हुई थी, वह शिखा थी हेलेन। ग्रीस का काव्य, ग्रीस का पुराण, ग्रीस का जीवन उसी अग्निशिखा के चारों ओर पतंग की तरह बेदम चक्कर काटता रहा है। राम बसु का जीवन भी इन दस वर्षों तक रेशमी के चारों ओर घूमता रहा है। जब तक वह जिंदा रही, यह आकर्षण प्रबल रहा, उसके मर जाने से वह हो उठा प्रबलतर। रूपज और कामज प्रेम में तो ऐसा नहीं होता, यह प्रकृति शायद प्रेमज संबंध की भी नहीं। राम बसु ठीक-

ठीक समझ नहीं पाता कि यह है क्या ? समझने की बहुतेरी कोशिश की, नहीं समझ सका । आज जब प्राण में पुराने दिनों की हवा लिए टुशकी आई, तो उस झोंके में उसके मन का मुड़ा हुआ निशान बीते दिन की ओर खुल पड़ा, इशारा करने वाले उस निशान का लक्ष्य एकमात्र रेशमी था। वह मन ही मन जपने लगा — रेशमी ! रेशमी !! और जाने कब सो गया ।

राम बसु ने कहा, टुशकी जब आ ही गई तो अब वृंदावन मत जा । रह जा मेरे पास ।

उसने कहा, यह कैसी बात कह रहे हो कायथ-दा ? लोग अपने अंतिम दिन तीरथ में बिताते हैं और मैं अपनी उम्र के बीच में तो रही वृंदावन, अब अंतिम दिनों में मरूँ कलकत्ते में ?

क्यों, कालीघाट, गंगा — ये क्या तीर्थ नहीं है ?

छिः, ऐसी बात जबान पर न लानी चाहिए ! — टुशकी ने अपना हाथ सिर से छुआकर कहा, किसका तीरथ कहाँ है, कौन कह सकता है । गोविंद जी ने मुझे खींचा जो है ।

नहीं री पगली, गोविंद जी ने नहीं, तुझे मोक्षदा बुढ़िया ने खींच रक्खा था । वह मरी और वह खिंचाव भी गया, तुम कलकत्ते दौड़ी आई ।

टुशकी ने कहा, वास्तविक पाप मन के भी अगोचर होता है । हो सकता है, तुम्हारी ही बात सत्य हो !

फिर क्या है, रह जा यहीं ! आखिर घर-गिरस्ती देखने के लिए मुझे भी तो कोई चाहिए ।

मुझे तुम फिर संसार में बाँधोगे ? तुम्हें आदमी की क्या कमी ? नारी का ब्याह कर दो ।

भई, उसके लिए भी तो किसी की जरूरत है । लड़की खोजते फिरने

का समय है मुझे।

तुम्हारी बात मैंने कब नहीं मानी। लेकिन उसके पहले एक बार जोड़ामकु जाना चाहती हूँ।

क्यों, वहाँ किसलिए?

किसलिए? अपना जनम स्थान देखने को जी नहीं चाहता?

और चंडी बख्शी का धक्का खाने को भी जी चाहता है, है न?

चंडी चाचा क्या अब भी जिंदा ही होंगे?

सिर्फ जिंदा? खूब मजे में हैं। शैतान लोग बहुत दिन बचते हैं, नहीं जानती हो?

टुशकी ने कहा, जिंदा हैं तो रहें। मैं गाँव जाऊँगी तो उसे क्यों एतराज होगा।

जरूर होगा। तुम लोगों की जायदाद हड़पने बैठा हो और तेरे जाने से एतराज न होगा? न, यह इरादा छोड़ दे।

इस पर टुशकी ने सामयिक भाव से कहा, खैर, न सही। मगर तुम सवेरे-सवेरे कहाँ चले। आज तो तुम्हारी छुट्टी है।

राम बसु ने संक्षेप में कहा, हाँ, कालेज नहीं है। लेकिन एक काम है दूसरा। एक सज्जन से मिलने मानिक तल्ला जाना है।

लेकिन लौटने में देर मत करना। तुम्हारी आदत है, मन का आदमी मिल जाए तो नहाना-खाना तक भूल बैठते हो।

राम बसु ने दीर्घनिश्वास छोड़ते हुए कहा, इन दस वर्षों में मन के आदमी से भेंट नहीं हुई है! अब मैं नहाना-खाना नहीं भूलता हूँ।

राम बसु हँसा। उसकी हँसी ने टुशकी की हँसी को खींच कर निकाला। लेकिन दोनों की हँसी बड़ी मुरझाई हुई — इसमें तो आँसू की चमक ही तेज होती है।

जल्द ही लौट आऊँगा, कहकर राम बसु छाता और चादर लेकर निकल पड़ा।

जान बाजार के रास्ते से पूरब की ओर कुछ दूर चल कर मराठा-दिच

पारकर बहार नाम की जो नई सड़क बनी है उसी से राम बसु सीधे उत्तर की ओर चला। नहर मे उसने बड़ी-बड़ी नावें बँधी देखी। ये नावें सुंदरवन से आई थीं — जलावन की लकड़ी, हिरण की खाल और शहद के घड़ों से भरी थी। आँखों से ये चीजें दिखीं जरूर मगर मन कहीं और डूबा हुआ था। वह इस निष्कर्ष पर पहुँचा था कि रेशमी के मरने का कारण है, सहमरण प्रथा। अगर वह प्रथा इस कठोरता से नही फैली होती तो रेशमी का जीवन अपनी स्वाभाविक धारा मे बहता होता। वह सोचने लगा, माना कि वह विधवा हो गई, लेकिन विधवा होने से उसे पति की चिता पर जलना ही क्यों पड़ेगा? चिता से उठ कर वह भागी जरूर थी, लेकिन जाने उसके मन के किस अगोचर मे आग ने अपने ज्वालामय दावे का स्वाक्षर रख दिया था। अंत तक फिर आग ने ही उसकी जान ली। लेकिन वह अब यह नही सोच सकता था सिर्फ आग ही सक्रिय थी, रेशमी अक्रिय। राम बसु की यह धारणा हो गई थी कि आग के दावे ने ही रेशमी को घर मे आग लगाने के लिए उकसाया था। राम बसु जिस दिन काठ की मूरत-सा खड़ा-खड़ा वह दृश्य देख रहा था, यह बात उसी दिन उसके मन में कौंध गई थी। उसके बाद अपनी स्मृति मे वह दस साल से उस दारुण शोक को पालता रहा। स्मरण से वह शोक चिंता मे आया, चिंता से चेष्टा मे उतरा — इस सहमरण प्रथा को उठाना ही पड़ेगा जिसमे रेशमी की नाई किसी को चिता पर जलने को मजबूर न होना पड़े। वह जानता था कि रेशमी अब लौट कर नही आने की — लेकिन देश मे सहमरण की चिताग्नि अगर बुझ जाए तो रेशमी की आत्मा को शांति मिलेगी। वसुजा के मन में ऐसी ही एक धारणा जग गई थी। जाने कितने पंडितों के पास वह इसकी मीमांसा के लिए गया मगर किसी ने नहीं सुना। किसी-किसी ने उसे ईसाई कहकर दुत्कार दिया। कहा तुम्हारी बात सुनना भी पाप है। अंत मे उसने मृत्युंजय विद्यालंकार को सहारा-सा पाया। विद्यालंकार ने कहा, यह प्रथा शास्त्र अनुमोदित नहीं, लेकिन.... इस

लेकिन पर आकर रास्ता बंद। 'किंतु', 'यदि' ये सब रत्नाकर के अनुचर हैं; सारे शुभ संकल्पों के मोड़ पर खड़े होकर ये दुस्साहसी पथिक को लाठी से मार गिराते हैं। लेकिन राम वसु गिर जाने वाला आदमी नहीं। अभी वह बड़ी-बड़ी आशाए लेकर राममोहन के पास जा रहा था कि वहाँ भी इस 'किन्तु' की कोई काट मिलती है या नहीं।

कोई डेढ़ मील की दूरी तै करके राम वसु मानिक तल्ला पहुँचा। रास्ते के बायें तरफ बड़े फाटक वाले मकान को देखते ही पहचान गया। वह मकान के विशाल अहाते के अंदर पहुँचा।

एक चपरास वाले ने पूछा, किसे चाहते हैं आप?

मैं दीवान जी से मिलना चाहता हूँ।

अदब के साथ उस आदमी ने कहा — मेरे साथ चलिए।

दीवान जी का द्वार सबके लिए खुला था।

दीवान जी

राम वसु दरबान के साथ चला। विशाल हाता। हाते में फल का बगीचा। बगीचे के बीच में फैला हुआ एकतल्ला मकान। उस मकान के पीछे जाने के बाद भी राम वसु ने तरह-तरह के फलों के पेड़ों को देखा। देखा, मझोले आकार के एक पोखरे के पास लीची के एक बड़े-से पेड़ की छाया में संगमर्मर की छोटी-सी चौकी पर राममोहन बैठे हैं और दो पछाँह सेवक उन्हें तेल मालिश कर रहे हैं। राम वसु ने इससे पहले एकाध बार राममोहन को देखा था, थोड़ी-बहुत शकल भी पहचानता था। लेकिन देखा था उन्हें बाहर की पोशाक में यानी शाल के चोगा-चपकन में। अभी उन्हें नंगे बदन छोटी-सी धोती पहने देख बड़ा मजा आया।

दूर से विशाल शरीर का पहलवानी गठन दिखाई पड़ा। उसे 'रघुवंश' के दिलीप की याद आई।

समीप जाकर राम बसु ने ज्यों ही प्रणाम करना चाहा, राममोहन बोल उठे, नग्न तेल मले बदन में प्रणाम नहीं लेना चाहिए। वहाँ बैठो भाई!

कहते हुए उन्होंने एक छोटी-सी चौकी दिखा दी।

राम बसु बोल उठा, जी, मैं बड़े बेमौके आ गया।

नहीं-नहीं, कोई बात नहीं। समय सब ठीक है, बेमौका कोई नहीं। और अतिथि अगर समय का विचार करके आए, तो उसे अतिथि कैसे कहा गया?

थोड़ा रुककर बोले, क्या हाल है? और कुछ गीत बनाये।

सलज्ज हसी हँसकर बसुजा ने कहा, जी नहीं, नया कुछ नहीं लिखा।

कुछ साल पहले राम बसु अपने एक मसीही गीत को ब्रह्म सगीत बता कर सुना गया था उन्हें। उसमे खास कोई कष्ट नहीं उठाना पड़ा था उसे। जहाँ-जहाँ ईसा शब्द था, वहा-वहाँ सिर्फ ब्रह्म बिठा दिया था। राममोहन ने उस गीत की बड़ी तारीफ की थी।

राममोहन ने कहा, मैने तुम्हारा प्रतापादित्य चरित पढ़ा।

डरते हुए बसुजा ने पूछा, जी, कैसा लगा?

बसुजा यह जानता था कि बगला भाषा की करामात जरा की कि अंगरेज पादरी प्रशसा में पचमुख हो उठे। लेकिन ये तो अंगरेज पादरी न थे, थे एक शिक्षित बंगाली, वह भी बाघ-भालू!

राममोहन ने कहा, वह किताब तुम्हारे सिवा और कोई नहीं लिख सकता। तुमने कहानी में रस का सचार किया है। यह एक बहुत बड़ी खूबी है। मगर मै बताऊँ, वह जीवन चरित नहीं बन पडा, इति-हास हुआ है।

इस बात से बसुजा कहीं निरुत्साहित न हो, इसलिए सुधारते हुए कहा, जो हो बंगला गद्य की पहली रचना के रूप में यह किताब स्मरणीय

होकर रहेगी ।

इससे ज्यादा और क्या आशा कर सकता हूँ दीवान जी ?

तुम लोग फोर्ट विलियम कालेज में जो काम कर रहे हो, उसकी तुलना नहीं । कम्पनी यह सोच रही है कि राइटरों को बंगला भाषा सिखाई जा रही है, पादरी लोग सोच रहे हैं कि बाइबिल के अनुवाद करने योग्य भाषा तैयार हो रही है, लेकिन हो रहा है उससे कहीं ज्यादा ।

राममोहन कहते गए, पछांह सेवक जोर से उनकी चौड़ी छाती, चिकनी पीठ और युगन्धर कन्धे पर तेल मलते रहे और राम बसु देखता रहा राममोहन के शरीर का सौष्ठव और उसकी विशिष्टता । उसने गौर किया, चेहरे के अनुपात से उनकी आँखें छोटी हैं, लेकिन चमकती हुई, उनमें कैसा तो एक स्निग्ध भाव, धूप से चमकते हुए पानी में जैसे स्नेह पदार्थ फैला हो । सीधी-सी नाक के बीच में जरा असावधान सी ऊँचाई, ऊपर की पंक्ति के सामने का एक दाँत थोड़ा टूटा हुआ, ठोड़ी के नीचे चौड़ा-सा कटा दाग ।

बसु समझ गया, मन ही मन हँसा; बचपन में दीवान जी बड़े शांत-शिष्ट थे !

योग्य श्रोता पाकर राममोहन कहते गए और राम बसु देखता रहा । छोटे-छोटे कान उनके लगे थे देह से, रोएँदार छाती और हाँ, युग का अर्गल खोलने लायक लम्बी भुजाएँ और उन भुजाओं के अंत में लाल करतल से जुड़ी सुठाम, सुडौल अँगुलियाँ । दाएँ हाथ की अनामिका में लाल पत्थर की अँगूठी । बाएँ हाथ की अनामिका में शंख की । गले में माला-सा झूलता हुआ जनेऊ ।

यह कैरी एक अद्भुत आदमी है । ज्ञान, कर्म और हृदय का ऐसा संगम विरल है । राममोहन कहते गए, विधाता कहाँ किसके द्वारा कौन-सा काम करा लेते हैं, यह समझने की मजाल कहाँ मनुष्य को । विधाता ने एक हाथ से भेजा था क्लाइव को, दूसरे से भेज दिया कैरी को ।

उन्होंने एक हाथ से भेजा था हेस्टिंग्स को, दूसरे से भेज दिया हेयर को। इस देश को जगाने के लिए विधाता ने दोनों ही हाथ लगाये थे। क्लाइव और हेस्टिंग्स इस देश को शासन के जाल से बाँध रहे हैं और कैरी तथा हेयर इस देश को आत्मा के अधिकार में मुक्त कर रहे हैं। बन्धन और मुक्ति कैसा साथ-साथ चल रहे हैं, देखा है तुमने ?

राम वसु ने इतना नहीं सोचा था, इस समय कोई सोचना भी न था, इसलिए वह चुप हो रहा।

देख नहीं रहे हो, बंगला भाषा बन रही है, अँग्रेजी शिक्षा फैल रही है—और क्या चाहिए ! देखते ही देखते सारे कुसंस्कार, गंगासागर में सन्तान की भेंट, सतीदाह, बुतपरस्ती—यह सब पुराने भूत की तरह ही भाग जाएँगी। जरूर दूर होंगे। वसुजा, जरूर ! देखते नहीं, चारों तरफ के खिड़की-दरवाजे खुल गए हैं, पश्चिम की हवा घर में पैठकर नींद तोड़ती हुई मचलने लगी है। पाल में हवा लग रही है—अब पतवार थामे लक्ष्य ठीक करके धीरज से बैठना आवश्यक है। वसुजा धीरज चाहिए।

राम वसु का दिल बैठ गया—विद्यालंकार ने भी कहा था, धीरज चाहिए, यहाँ भी धीरज चाहिए—एक ही बात। लेकिन आदमी की आयु तो सीमित है। और कितने दिन जियूंगा—राम वसु ने सोचा। तो क्या रेशमी को आत्मा को शान्त देखे बिना ही मर जाना पड़ेगा। सोचा उसने, धीरज देवता की चीज है, जल्दी मनुष्य की।

लेकिन मन की बात मन में दबा कर उसने राममोहन का समर्थन करते हुए कहा, आपने जो कहा, वह सत्य है। कैरी, हेयर आदि पाँच गोरों को स्मरण करके लोग आज 'पंचकन्या' वाले श्लोक की तरह कहते हैं—

हेयर काल्विन पामरश्च
कैरी मार्शमेन साथा।
पंच गोरा स्मरेन्नित्यं
महापातक नाशनं।

राममोहन बोल उठे, वाह, खूब तो लिखा है। और, उन्होंने श्लोक

को दुहराया ।

राममोहन की स्मरण शक्ति देखकर राम-वसु दंग रह गया ।

राममोहन बोले, तुमने एक श्लोक सुनाया, तो मैं भी एक सुना दूँ लगे हाथ । सुनो,

मुराइ मेलेर कूल
　　वेटार वाड़ी आना कूल,
ओ तत्सत् वोले वेटा
　　वानिये छे एक स्कूल ।
ओ से जेतेरे दफा करले रफा
　　मजाले तीन कूल ।

राम वसु ने सुना और समझ लिया कि ये पंक्तियाँ राममोहन पर है । कुछ अप्रतिभ होकर वोला, ये सब वैसे ही लोगों की रचना है दीवान जी !

नाहक ही शर्मिंदा हो रहे हो मुंशी ! मैं वैसे लोगों की बात को अहम् देने वाला बदा थोड़े ही हूँ । तुमने चूँकि एक श्लोक सुनाया, इसलिए मैंने भी सुना दिया — बस ! लेकिन बात यों है कि मेरे साथ बहुतेरे विशिष्ट लोग है, जो मेरे दाएँ हाथ, बाएँ हाथ हैं । द्वारिक ठाकुर हैं, काशीनाथ राय हैं, रामकृष्ण सिंह हैं, तेलिनी पाड़ा के अन्नदा प्रसाद वंद्योपाध्याय हैं — और भी बहुतेरे है ।

उसके बाद बोले, आशा की बात यही है कि नए युग की हवा वही है, इसे रोके, यह साध्य किसी में नहीं । सबसे पहले सहमरण प्रथा के पीछे पड़ना होगा ।

आवेग के साथ मुंशी कह उठा, पड़िए पीछे दीवान जी, पड़िए । कलेजे में रोज आग जल रही है ।

यही तो चाहिए मुंशी — देश की आग का अनुभव कलेजे में हो तो फिक्र क्या । मेरे भी कलेजे में कुछ कम ज्वाला नहीं है — कुछ ही महीने पहले मेरे बड़े भाई की बहू सहमृता हुई है ।

राम वसु ने विद्यालंकार की बात की प्रतिध्वनि-सी करते हुए कहा, तमाम देश में फैली हुई इस प्रथा को दूर करने के लिए सक्रियता चाहिए, चाहिए कर्मकौशल, चाहिए युग के यंत्र को चलाने की पारदर्शिता। महज ज्ञान से कुछ नहीं होने का। वैसा आदमी तो आपके सिवा दूसरा नजर नहीं आता।

ठहरो, पहले कलकत्ते में मुझे जमकर बैठने दो, उसके बाद नारियों को निगलने वाले इस दानव से लड़ाई ठानूंगा।

ऐसे में एक नौकर सफेद पत्थर की थाली में फल, मिठाई और सफेद पत्थर के कटोरे में तरबूज का शरबत ले आया।

राम वसु ने कहा, अरे बाबा, असमय में यह सब क्यों। तबीयत खराब नहीं हो जायेगी?

राममोहन ने कहा, और मुंह मीठा किए बिना लौट जाने से गृहस्थ का अमंगल नहीं होगा?

राम वसु खाने लगा और राममोहन अपनी भावी-समाज-संस्कार परिकल्पना के बारे में बताने लगे।

खाते-खाते राम वसु ने राममोहन के नंगे बदन की कांति पर गौर किया। सोचने लगा, साज-पोशाक उतार देने से ज्यादातर लोग रोओं-नुची मुर्गी-सी दीखते हैं। मगर ये! साज-पोशाक ने मानो इनकी सच्ची विभूति को ढंक रखा था। वसुजा का मन बोल उठा, भूषण बिना जो महत दीखता हो, महापुरुष तो वही है।

समझे वसुजा, रंगपुर के कलक्टर डिगबी साहब मुझे छोड़ना नहीं चाहते। कहते हैं, दीवान, तुम्हारे जाने से दूसरा दीवान तो आसानी से मिल जाएगा, मगर दूसरा राममोहन तो नहीं मिलेगा! कहते हैं, समाज सुधार करना चाहते हो? तो रंगपुर से ही शुरू क्यों नहीं करते। यहाँ क्या कुछ कम जरूरत है। समझ गए वसुजा, बहुत कह-सुन कर मैंने उन्हें राजी कर लिया है। बहुत जोर तीन-चार साल और रहूँगा वहाँ। उसके बाद यहीं कलकत्ते में आकर स्थायी रूप से रहूँगा। तब तुम

लोगों को साथ लेकर यह लड़ाई छेड़ूंगा।

निराशा को दबाए राम बसु सुनता रहा। राममोहन ने कहा, एक ओर तो हमारे शत्रु हैं ये पादरी और दूसरी ओर हैं ये ब्राह्मण-पंडित। हमें दुहरी लड़ाई लड़नी होगी। धीरज धरो राम बसु, समय पर सब होगा।

समय पर सब तो होगा, लेकिन यह पुराना पिंजड़ा क्या उतने दिनों तक टिकेगा? राम बसु सोचने लगा।

अंत में उनसे विदा माँग कर वह उठा। राममोहन ने कहा, बीच-बीच में आ जाया करो। तुम जैसे उत्साही लोग हैं, यह जानने से बल मिलता है। हाँ, बंगला लिखने का अभ्यास मत छोड़ना। मुझे आ जाने दो, मैं भी बंगला लिखना शुरू करूँगा। अरबी-फारसी में मन की बात जाहिर करके तृप्ति नहीं होती।

राम बसु बाहर सड़क से घर की ओर लौटा। अब की उसकी चाल धीमी थी, कदम थके हुए-से। मन में बहुत आशा-भरोसा लेकर आया था वह — यहाँ भी धीरज धरने का उपदेश सुनकर दिल टूट गया। इंत-जार वही कर सकता है, जिसे ज्ञान की प्रेरणा है, कर्म की प्रेरणा है, लेकिन जी में जिसके आग जल रही हो, उसके लिए तो समय काटना कठिन है। लंबे निश्वास में मन का ताप निकल आया।

ऐसे ही समय लगा, कोई मानो उसे पुकार रहा है। हलो मुंशी!

किसने आवाज दी? मुड़कर राम बसु ने देखा, फिटन हँकाता हुआ मेरिडिथ आ रहा है।

फिटन करीब आ गया तो मेरिडिथ ने कहा, मुंशी, आओ फिटन पर। बहुत-सी बातें हैं। अभी-अभी जॉन की चिट्ठी मिली है।

जॉन का नाम सुनकर मुंशी चाव से गाड़ी पर सवार हो गया।

बहुत दिनों से भेंट नहीं हुई। क्या खबर है? बहुत टूट गए हो।

हँसकर मुशी ने कहा, उमर भी तो हुई।

ऐसी क्या उमर हुई है!

कम ही क्या! पचपन पार कर गया।

पचपन कुछ ज्यादा नहीं, लेकिन यह तो हठात बुढा गए। आँखें-मुंह आग से झुलसे हुए पेड-से लगते है।

राम बसु ने सोचा, आग से झुलसा हुआ पेड ही है! उसने प्रकट में कहा, तो जॉन का हाल कहो। कैसा है जॉन? कब लौटेगा? आह, उस बेचारे के लिए बड़ो तकलीफ होती है।

फिर पुरानी बातें उठानी पडी। रेशमी की मृत्यु के बाद जॉन कंपनी की नौकरी में बबई प्रेसिडेंसी चला गया। लिजा ने बहुत निहोरा-विनती की, खुशामद-बरामद की — रोई भी कम नहीं, लेकिन जॉन का संकल्प नही डिगा।

लिजा ने कहा, जॉन ब्याह कर लो। दुनियादार बनो।

जॉन ने कहा, एक नही, तीन-तीन बार तो परीक्षा हो चुकी। अब क्यों? ब्याह मेरे लिए नहीं है।

लिजा को कैरी, रोज एलमर, रेशमी की याद आई।

आखिर यह जायदाद कौन भोगेगा?

तुम भोग कर लो लिजा। अगर कभी लौटा, तो मैं भी करूँगा।

बंबई जाने से पहले निर्बोध जॉन ने एक बुद्धिमानी का काम किया कि उसने मेरिडिथ से लिजा का ब्याह कर दिया। मेरिडिथ से कहा, दोस्त, अपनी बहन को मै तुम्हें दे जाता हूँ। मेरे पास इससे मूल्यवान और कोई चीज नही — इसकी ओर से लापरवाही न करना, ऐसा नारी-रत्न दुर्लभ है।

मेरिडिथ ने कोई बात नही कही, जोर से उसके हाथ मे हाथ मिला कर उत्तर दिया।

जॉन पूना मे अंगरेज रेसीडेंट का एडीकांग हुआ।

यहाँ जरा आगे बढ़कर पीछे की बात कह लूँ।

सन् १८१८ मे तीसरे मराठा युद्ध मे जॉन की मृत्यु हो गई। पूना के उपकंठ मे उसका समाधि स्तंभ आज भी मौजूद है। समाधि पर सिर्फ उसका नाम लिखा है, जॉन स्मिथ। यह भी लिखा है, "यहाँ उसका शरीर दफनाया हुआ है, जिसकी सारी आशा-आकांक्षा बहुत पहले ही दफन हो चुकी थी।" और इस तरह कठिन परीक्षामय जीवन समाप्त हुआ अभागे जॉन का।

वसु ने पूछा, जॉन क्या लौटेगा नही ?

वैसी संभावना तो नहीं दीखती।

मिसेस मेरिडिथ एक बार अच्छी तरह से कोशिश कर देखें न।

तो क्या वैसी चेष्टा की नहीं गई ?

आखिर क्या कहता है जॉन ?

कहता है, कलकत्ते मे दूर आकर वहाँ का जख्म ठंडा है, गोकि शांति जीवन में नहीं मिलेगी कभी। लेकिन यह चैन ही क्या थोड़ा है ! लिखा है, कलकत्ता आने से ज्यादा दिन नहीं बचूँगा, मुझमे इस बात का आग्रह न करो।

राम वसु ने कहा, इस पर कहा भी क्या जा सकता है। खैर, जहाँ है, वहीं सुख से रहे।

लिजा भी यही कहती है। मुंशी, किसी दिन शाम को मेरे यहाँ पधारो। लिजा अक्सर तुम्हारा नाम लेती है। कहती है, जॉन को जितना मुंशी समझता था, उतना कोई नहीं।

मुंशी मन ही मन बोला, दोनों तो एक ही आग के झुलसे हुए हैं।

प्रकट मे बोला, मिसेस मेरिडिथ को मेरा बहुत-बहुत सलाम देना। मुझे उन्होने याद रक्खा है, इसके लिए धन्यवाद।

गाड़ी जॉन बाजार रोड पहुँची तो मेरिडिथ ने राम वसु को उतार दिया और आप फ्री स्कूल स्ट्रीट से बरियल ग्राउंड रोड की ओर चला।

कहा, समय मिले तो आना मत भूलना मुशी ।

मुंशी ने फिर धन्यवाद दिया । उसके बाद मन ही मन सोचते हुए चला, रेशमी ने बहुतों में बहुत परिवर्तन कर दिया — इस परिवार मे भी । नहीं तो ये लोग एक नेटिव को इस आदर से अपने घर नहीं बुलाते । और मेरिडिथ सोचता गया, मुशी देह से, मन से बिलकुल टूट गया है, शायद ज्यादा दिन जिंदा नहीं रहेगा । उसकी भी हालत जॉन ही जैसी है कि हठात् उसके मन में बिजली-सी कौंध गई — तो क्या मुशी भी रेशमी को प्यार करता था ? उसका मन कहने लगा, वैसी अनोखी लावण्यमयी नारी को प्यार न करना ही आश्चर्य है ।

एक नीरव अध्याय

लार्ड वेलेसली इस देश मे बादशाही मिजाज लेकर आया था । उसने समझ लिया था कि कंपनी के ऐडवेंचर युग की समाप्ति हो चुकी, अब बादशाही युग का आरंभ होगा । मुगल बादशाहत के बाद का अध्याय ईस्ट इंडिया कंपनी की बादशाहत का है । वेलेसली ने राज्य की नींव डालने मे मनोनिवेश किया । पठान और मुगल बादशाहों ने भी एक दिन समझा था कि शासन के स्वार्थ के ही नाते देशी भाषा की जानकारी जरूरी है । भाषाविदों का कहना है, पठान-शासको के समय में ही बंगला भाषा की चर्चा बढ़ी, बंगला साहित्य की उन्नति शुरू हुई । ऐसी ही प्रतिक्रिया वेलेसली के सिद्धांत में भी दिखाई दी । उस जमाने में पन्द्रह-सोलह साल के नाबालिग अंगरेज राइटर (बाद के सिविलयन) छोकरे यहाँ आया करते थे । वे न तो जानते थे यहाँ की भाषा, न जानते थे यहाँ का इतिहास, न जानते थे यहाँ के आईन-कानून । अंगरेजी भाषा और पाँच

रुपए माहवार के दुभासिये के सहारे ये जिस तरह से देश का शासन किया करते थे, वह कुशासन, अत्याचार और उनकी सनक का ही नामांतर था। वेलेसली ने समझा, इस प्रकार से और चाहे जो हो, बादशाही शासन का उत्तराधिकार लेना नहीं चल सकता। प्रजा की जबान पर राजा का मुनाम होना नितांत जरूरी है। इसलिए वेलेसली ने यह नियम कर दिया कि राइटरों को पहले देशी भाषा सीखनी पड़ेगी, तभी उन्हें शासन-कार्य का भार मिलेगा। उस समय दो-एक अंगरेजों ने देशी भाषा सिखाने के लिए सेमिनार खोल रखा था। वेलेसली को इच्छित कार्य की कोई व्यवस्था नहीं दिखाई दी, इसीलिए फोर्ट विलियम कालेज की स्थापना हुई। यह बात सन् १८०० की है। इस कालेज में संस्कृत, अरबी, फारसी, हिन्दी, मराठी, बंगला आदि भाषाएँ पढ़ाने की व्यवस्था की गई। यहाँ केवल बंगला भाषा का ही उल्लेख होगा।

तय पाया कि जब तक कालेज का अपना मकान नहीं हो जाता, तब तक राइटर्स बिल्डिंग में ही कालेज का काम चलेगा। नीचे के तल्ले में कालेज और पुस्तकालय, ऊपर छात्रावास। विलायत के बोर्ड आफ डाइरेक्टर्स की मनाही से गार्डेन रीच में कालेज की इमारत बनाने का सपना वेलेसली का सपना ही रह गया। कालेज जब तक रहा, उसका काम राइटर्स बिल्डिंग में ही चलता रहा। सन् १८५४ में वह कालेज बंद हो गया। कालेज के अंतिम दिनों खुद विद्यासागर भी उससे संबंधित हुए थे।

सन् १८०१ में कैरी कालेज में बंगला भाषा का प्रधान अध्यापक बनाया गया था। उसकी सिफारिश से कई मुंशी और पंडितों की बहाली हुई थी, जिनमें यश और भाषा की उन्नति की दृष्टि से मृत्युंजय विद्यालंकार और राम बसु प्रधान थे।

पठान शासकों के उत्साह से बंगला गद्य को नया जीवन मिला था, अब अंगरेज शासकों के उत्साह से बंगला गद्य की तरक्की हुई। सत्य के नाते यों कहना चाहिए, बंगला भाषा में यथार्थ साहित्यिक गद्य की नींव पड़ी। इस बात का विचार ऐतिहासिक लोग कि फोर्ट कि र्वलियम

कालेज की प्रतिष्ठा से अंगरेजी शासन की कितनी उन्नति हुई थी, लेकिन भाषा के विचारकों की राय में इस कालेज ने बंगला साहित्य का सही सूत्रपात किया। शासन-सौंदर्य के उपलक्ष्य को पार कर गई वेलेसली की आकांक्षा। हमारी इस कहानी के लिए कालेज का पूरा इतिहास बेकार है। कैरी और उसके मुंशी के नये कार्यक्षेत्र के रूप में जितना कहने की आवश्यकता है, उतना ही कहा गया।

मदनाबाटी में बंगला गद्य के लिए कैरी ने जो कुछ किया, वह उसका व्यक्तिगत प्रयास था। श्रीरामपुर मिशन में पादरियों का सहयोग मिला और फोर्ट विलियम कालेज में कैरी के उस प्रयास को राजकीय समर्थन मिला। और इन तीनों ही स्थानों में राम बसु उसका मुंशी रहा, प्रधान सहायक रहा।

लेकिन कैरी ने देखा, उसके मुंशी में कहीं। मानो परिवर्तन हो गया है। उसमें अब पहले का उत्साह, कार्यक्षमता नहीं रही; जिसने एक लंबे अरसे तक पादरियों को मुग्ध कर रखा था, वह अनोखी वाक्पटुता, वह तीखी सूझ-बूझ न रही। कैसा तो निस्तेज हो पड़ा है वह अनमना-सा। दो-एक किताबें लिखने के बाद ही जो उसकी कलम रुकी, सो लाख उत्साह-उत्तेजना से भी फिर नहीं सुगबुगाई। यह भी गौर किया कि कालेज के काम में उसे अब वह आग्रह नहीं है। नित्य नियमित नहीं आता। बहुत बार बहुत पहले ही चला जाता है।

एक दिन कैरी ने पूछा, मुंशी, तुम्हारी तबीयत क्या खराब है?

जी वैसी कोई बात नहीं। कहकर मुंशी कतरा गया।

कुछ दिन आराम क्यों नहीं कर लेते?

मुंशी की जो आवाज कैरी ने नहीं सुनी थी, उसी आवाज में वह बोला, अब एकबारगी आराम करूँगा।

कैरी ठीक समझ नहीं पाया था कि मुंशी के चोट कहाँ है और वह कितनी गहरी है। कैरी ने स्वयं भी जिंदगी में कुछ कम चोटें नहीं खाई, लेकिन इस तरह से कभी टूट नहीं पड़ा।

इसलिए ऐसे आदमी के लिए दूसरे के दिल टूटने का कारण और उसकी गहराई समझ सकना सहज नहीं।

कैरी और राम वसु की बनावट ही जुदा नही थी बल्कि वे दोनों दो अलग धातु के बने थे। मध्य युग के जीवन की भित्ति थी ईश्वर पर आस्था। वह आस्था डाँवाडोल होकर भी टूट नही पड़ती। और नए युग के जीवन की नींव था अपने व्यक्तित्व पर विश्वास। यह डाँवाडोल होते ही टूट पड़ता, अपने आप पर खड़ा नही रह सकता। कैरी का जीवन मुडकर भी खड़ा था और आश्चर्य मे डाल रहा था। लेकिन राम वसु का बिलकुल टूटा हुआ जीवन दर्शक के मन में करुणा जगा रहा था।

शेष अध्याय

टुशकी ने कहा, कायथ-दा आज स्कूल न जाओ तो क्या बिगड़ता है। तुम्हारी तबीयत ठीक नही लग रही है।

मैं ठीक ही हूँ। कहकर राम वसु कंधे पर चादर रखकर निकल पड़ा।

साँझ बीत जाने के बाद भी जब वह घर नहीं लौटा, तो नाढा उसकी खोज में निकला। बडी छान-बीन के बाद आखिर गंगा के किनारे से उसे घर ले आया। ऐसी घटना आजकल प्राय: घट रही थी।

कभी-कभी बहुत रात बीते किवाड़ खोलकर निकल पडता वह। दरवाजे को खुला देखकर टुशकी समझ जाती, कायथ-दा जाने कब निकल गए घर से। नारो और नाढा अँधेरे में ही उसे खोजने निकलते।

ऐसा रात दिन हुआ करता। घर में भी होता तो न तो रात सोता, न दिन। या तो चुपचाप बैठा रहता या मन ही मन गुनगुन गाता रहता।

टुशकी कहती, कायथ-दा ऐसे के दिन चलेगा। चलो न, कही से घूम आएँ।

टुशकी की ऐसी बात का कभी तो कोई जवाब ही नही देता वह, या कभी कहता, होगा भी क्या ? मन की आग साथ ही चलेगी।

मन की आग क्या अब बुझेगी नही ?

क्यों बुझेगी टुशकी, बुझेगी क्यों ?

उसके बाद कुछ सोचकर कहता, जिस आग मे वह जल मरी, उसकी जलन क्या उससे भी ज्यादा है ? उसके बाद एकाएक उत्तेजित होकर कह उठता, न, यह आग नहीं बुझने दूँगा, नहीं बुझने दूँगा यह आग। कभी नही।

हठात् हँस उठता। कहता, मै सहमरण मे जल रहा हूँ, उसके साथ सहमरण में जल रहा हूँ !

टुशकी सोचती, पागल हो जाने मे ज्यादा देर नहीं है। टुशकी उसकी पीडा को समझती, इसीलिए वसुजा कभी-कभी उसी से मन की बात कहा करता। और लोगों के पास चुप्प।

सब सोचते, बुड्ढा पागल हो गया। टुशकी जानती थी कि उसकी ज्वाला कहाँ है। वह भी तो उसी जलन की संगिनी थी।

काफी रात गए टुशकी ने नाढा को जगाया — कायथ-दा तो अभी तक नही लौटे, जरा देख न कहीं।

नाढा और नारी उसी क्षण निकल पड़े। उन्हें पता था कि उसे गंगा का किनारा बड़ा प्रिय है। दोनों उसी तरफ चले।

उस दिन शाम को राम वसु गंगा के किनारे टहल रहा था। उसे एक जगह भीड़ दिखाई दी। उस ओर बढ गया। देखता क्या है कि एक जवान लड़की को — रेशमी ही जैसी कच्ची उम्र की — लोग चिता पर चढाने की तैयारी कर रहे हैं।

'अरे रे, छोड़, छोड' — कहकर चिल्ला उठा वसुजा। उस लड़की ने जी-जान से राम वसु को जकड़ लिया। लेकिन लोगों ने मिल-जुल कर

उसे छीन लिया और जोर-जबर्दस्ती चिता पर चढ़ा दिया। राम बसु उस लड़की को चिता से निकाल लेने के लिए कूद पड़ा। लोगों ने हटा दिया उसे। कुछ तो आग की झुलस से और कुछ लोगों की खींच-तान से वह बेहोश-सा होकर गंगा के किनारे पड़ा रहा।

उसी हालत में नाढा और नारो ने उसे वहाँ देखा। वे उसे एक गाड़ी पर चढ़ाकर घर ले आए। राम बसु बेहोश था।

दूसरे दिन वैद आया। नब्ज देखकर बताया सन्निपात है यानी जिसकी अब कोई दवा नहीं।

नाढा ने जाकर कैरी साहब को खबर दी। कैरी डाक्टर लेकर आया। डाक्टर ने बताया, हालत अच्छी नहीं है!

तीसरे पहर कैरी फिर आया। बड़ी देर तक उसकी खाट के पास बैठा रहकर उदास लौट गया। कह गया, कल सवेरे फिर आऊँगा।

सारा दिन, सारी रात बेहोश पड़ा रहा राम बसु। बीच-बीच में उसका होंठ हिल-हिल उठता था।

नारो ने पूछा, बाबू जी, क्या कह रहे हो?

नाढा ने कहा, टुशकी दी, कायथ-दा क्या कह रहे हैं?

टुशकी चुप रह गई। वह समझ रही थी कि वह क्या कह रहा है।

रात के अंतिम पहर में बुझता हुआ दीया फिर दमक उठा। राम बसु को होश आया अचानक।

चारों तरफ निगाह दौड़ा कर उसने अचरज से पूछा — कहाँ है, कहाँ है वह?

कौन?

किसे खोज रहे हो?

और किसे! अभी-अभी जो आई थी।

एकाएक वह खूब जोर से चीख उठा, यह रही वह, अह! रेशमी, रेशमी, रेशमी —

उस नाम के अंतिम उच्चारण में ही जीवन की सारी आशा-आकांक्षा, सारा माधुर्य खत्म करके एक फूंक में दिया बुझ गया।

टुशकी ढाढ़ें मार कर रो पड़ी — कायथ-दा, अपने नाती और नाती को तुम किसके जिम्मे छोड़ गए!

सवेरा हुआ। गहरे शोक के दिन भी सूरज वैसा ही चमक रहा था, हवा उतनी ही मीठी, आसमान वैसा ही साफ-सुथरा। अजीब है यह जीवन! अजीब है यह दुनिया!

सन् १८१३ ई० का सातवां अगस्त।